

اسماءِ حسنیٰ

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ

سے محبت، انکا احصاء اور تقاضا

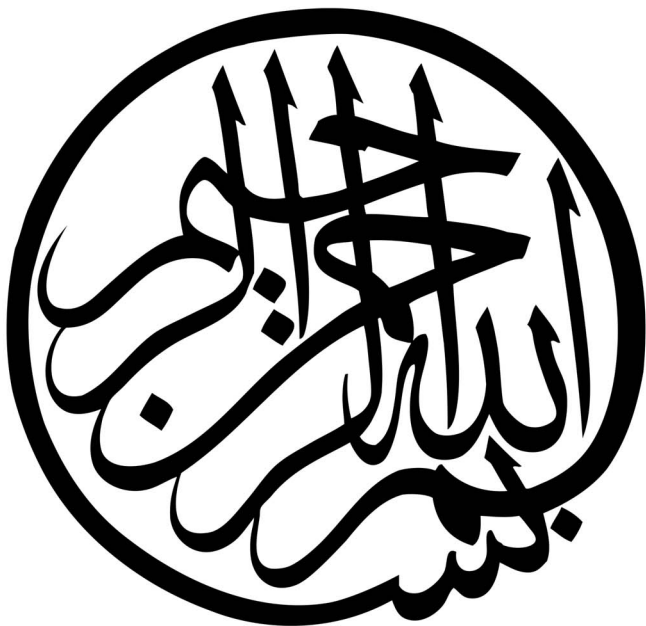


تقریظ

ترتیب، تخریج و اضافہ

تالیف

ابو حمزہ عبدالخالق صدیقی حافظ حامد محمود انصاری شامیت عبداللہ ناصر رحمانی



توحید کی فضیلت

35----- تفریط

فصل نمبر ۱: توحید کی فضیلت، اہمیت اور شروط

48----- توحید کی تعریف

48----- توحید کی اقسام

49----- ۱۔ توحید ربوبیت

51----- اثبات وجود الہ العالمین کے بارے اقوالِ ائمہ

51----- امام رازی رحمۃ اللہ علیہ

51----- امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ

52----- امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ

52----- امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ

52----- ابونواس رحمۃ اللہ علیہ

53----- ابن المعتز رحمۃ اللہ علیہ

54----- ۲۔ توحید الوہیت

56----- اشکال اور اس کا ازالہ

58----- ۳۔ توحید اسماء و صفات

59----- اسماء و صفات کے متعلق چند اہم قواعد اور بنیادی اصول

59----- پہلا قاعدہ

- 59-----◇ دوسرا قاعدہ
- 64-----◇ سبب اختلاف
- 68-----◇ تحقیق مزید
- 72-----◇ آدم برسرِ مطلب
- 73-----◇ تیسرا قاعدہ
- 76-----◇ دوسری فرع
- 77-----◇ تیسری فرع
- 78-----◇ چوتھی فرع
- 79-----◇ تمثیل اور تکلیف میں فرق

فصل نمبر ۲ اسماء و صفات کے متعلق منہج سلف

فصل نمبر ۳ کلمہ توحید ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی فضیلت

فصل نمبر ۴ کلمہ توحید ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی شروط

- 87----- (1) علم
- 88----- (2) یقین
- 89----- (3) اخلاص
- 89----- (4) صدق
- 90----- (5) محبت
- 91----- (6) تابعداری اور اطاعت شعاری
- 92----- (7) قبول کرنا

باب نمبر ۲

فصل نمبر ۱ اسماءِ حسنیٰ کا بیان

93----- حروفِ تہجی کے اعتبار سے ترتیب

فصل نمبر ۲ اسماءِ حسنیٰ کے معانی و معارف

96----- حرفِ الالف

96----- اَللّٰهُ

96----- معانی

97----- معارف

113----- اس اسمِ پاک کے ساتھ وارد شدہ دُعائیں

114----- ۲۔ اَلْاَحَدُ

114----- معانی

114----- معارف

115----- اس اسمِ پاک کے ساتھ مروی دُعا

116----- ۳۔ اَلْاٰخِرُ

116----- معانی

116----- معارف

116----- اس اسمِ پاک کے ذریعے دُعا

117----- ۴۔ اَلْاَعْلٰی

117----- معانی

117----- معارف

118 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

118 ----- ۵۔ اَلْاَكْرَمُ

118 ----- ◈ معانی

119 ----- ◈ معارف

119 ----- ۶۔ اَلْاِلٰهُ

119 ----- ◈ معانی

123 ----- ◈ معارف

130 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

131 ----- ۷۔ اَلْاَوَّلُ

131 ----- ◈ معانی

131 ----- ◈ معارف

131 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

132 ----- حرف الباء

133 ----- ۸۔ اَلْبَارِئُ

133 ----- ◈ معانی

133 ----- ◈ معارف

133 ----- ۹۔ اَلْبَاطِنُ

133 ----- ◈ معانی

134 ----- ◈ معارف

135 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

135 ----- ۱۰۔ اَلْبَدِيعُ

- 135 ----- معانی
- 136 ----- معارف
- 136 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 137 ----- ۱۱۔ اَلْبَرُّ
- 137 ----- معانی
- 137 ----- معارف
- 138 ----- ۱۲۔ اَلْبَصِيرُ
- 138 ----- معانی
- 138 ----- معارف
- 140 ----- حرف التاء
- 140 ----- ۱۳۔ اَلتَّوَابُ
- 140 ----- معانی
- 140 ----- معارف
- 141 ----- اس اسم پاک کے وسیلہ سے دُعا
- 145 ----- حرف الجیم
- 145 ----- ۱۴۔ اَلْجَامِعُ
- 145 ----- معانی
- 145 ----- معارف
- 146 ----- ۱۵۔ اَلْجَبَّارُ
- 146 ----- معانی
- 146 ----- معارف

147 ----- ◈ اس اسم پاک کے وسیلہ سے دُعا

148 ----- حرف الحاء

148 ----- ۱۶۔ اَلْحَافِظُ

148 ----- ◈ معانی

148 ----- ◈ معارف

149 ----- ۱۷۔ اَلْحَسْبُ

149 ----- ◈ معانی

149 ----- ◈ معارف

151 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

152 ----- ۱۸۔ اَلْحَفِیْظُ

152 ----- ◈ معانی

152 ----- ◈ معارف

153 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

154 ----- ۱۹۔ اَلْحَفِیُّ

154 ----- ◈ معانی

1 54 ----- ◈ معارف

155 ----- ۲۰۔ اَلْحَقُّ

155 ----- ◈ معانی

156 ----- ◈ معارف

157 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

157 ----- ۲۱۔ اَلْحَكْمُ

- 157 ----- معانی ◇
- 157 ----- معارف ◇
- 158 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 159 ----- ۲۲۔ اَلْحَكِيْمُ ◇
- 159 ----- معانی ◇
- 159 ----- معارف ◇
- 161 ----- ۲۳۔ اَلْحَلِيْمُ ◇
- 161 ----- معانی ◇
- 161 ----- معارف ◇
- 163 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 163 ----- ۲۴۔ اَلْحَمِيْدُ ◇
- 163 ----- معانی ◇
- 164 ----- معارف ◇
- 166 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 168 ----- ۲۵۔ اَلْحَيُّ ◇
- 168 ----- معانی ◇
- 168 ----- معارف ◇
- 169 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 172 ----- حرف الغاء ◇
- 172 ----- ۲۶۔ اَلْخَالِقُ ◇
- 172 ----- معانی ◇

- 172 ----- معارف ◇
- 174 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 175 ----- ۲۷۔ اَلْحَبِیْرُ -----
- 175 ----- معانی ◇
- 175 ----- معارف ◇
- 177 ----- ۲۸۔ اَلْخَلَّاقُ -----
- 177 ----- معانی ◇
- 177 ----- معارف ◇
- 177 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 179 ----- حرف الذال -----
- 179 ----- ۲۹۔ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ -----
- 179 ----- معانی ◇
- 179 ----- معارف ◇
- 180 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 180 ----- ۳۰۔ ذُو الطَّوْلِ -----
- 180 ----- معانی ◇
- 181 ----- معارف ◇
- 182 ----- حرف الراء -----
- 182 ----- ۳۱۔ اَلرَّبُّ -----
- 182 ----- معانی ◇
- 182 ----- معارف ◇

- 183 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 186 ----- ۳۲۔ الرَّحْمَنُ
- 186 ----- معانی
- 188 ----- معارف
- 192 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 193 ----- ۳۳۔ الرَّحِيمُ
- 193 ----- معانی
- 193 ----- معارف
- 200 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 201 ----- ۳۴۔ الرَّزَّاقُ
- 201 ----- معانی
- 201 ----- معارف
- 202 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 202 ----- ۳۵۔ الرَّفِيعُ
- 202 ----- معانی
- 203 ----- معارف
- 204 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 204 ----- ۳۶۔ الرَّقِيبُ
- 204 ----- معانی
- 204 ----- معارف
- 205 ----- ۳۷۔ الرَّؤُفُ

- 205 ----- معانی
- 205 ----- معارف
- 206 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 207 ----- حرف السین
- 207 ----- ۳۸۔ اَلْسَّلَامُ
- 207 ----- معانی
- 207 ----- معارف
- 210 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 210 ----- ۳۹۔ اَلْسَّمِيعُ
- 210 ----- معانی
- 211 ----- معارف
- 212 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 213 ----- حرف الشین
- 213 ----- ۴۰۔ اَلشَّاکِرُ
- 213 ----- معانی
- 213 ----- معارف
- 213 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 214 ----- ۴۱۔ اَلشَّکُورُ
- 214 ----- معانی
- 214 ----- معارف
- 217 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا



- 217 ----- ۴۲۔ الشَّهِيدُ
- 217 ----- معانی
- 217 ----- معارف
- 218 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 219 ----- حرف الصاد
- 219 ----- ۴۳۔ الصَّمَدُ
- 219 ----- معانی
- 219 ----- معارف
- 220 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 221 ----- حرف الظاء
- 221 ----- ۴۴۔ الظَّاهِرُ
- 221 ----- معانی
- 221 ----- معارف
- 222 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 224 ----- حرف العين
- 224 ----- ۴۵۔ الْعَالِمُ
- 224 ----- معانی
- 224 ----- معارف
- 224 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 225 ----- ۴۶۔ الْعَزِيزُ
- 225 ----- معانی

- 225 ----- معارف ◇
- 227 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 228 ----- ۴۷۔ اَلْعَظِيمُ
- 228 ----- معانی ◇
- 228 ----- معارف ◇
- 228 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 229 ----- ۴۸۔ اَلْعَفُوُّ
- 229 ----- معانی ◇
- 229 ----- معارف ◇
- 230 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 231 ----- ۴۹۔ اَلْعَلَّامُ
- 231 ----- معانی ◇
- 231 ----- معارف ◇
- 231 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 232 ----- ۵۰۔ اَلْعَلِيمُ
- 232 ----- معانی ◇
- 232 ----- معارف ◇
- 233 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 234 ----- ۵۱۔ اَلْعَلِيُّ
- 234 ----- معانی ◇
- 234 ----- معارف ◇



- 235 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 237 ----- ◈ حرف الغین
- 237 ----- ◈ ۵۲۔ اَلْغَافِرُ
- 237 ----- ◈ معانی
- 237 ----- ◈ معارف
- 237 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 238 ----- ◈ ۵۳۔ اَلْغَالِبُ
- 238 ----- ◈ معانی
- 238 ----- ◈ معارف
- 240 ----- ◈ ۵۴۔ اَلْعَفَّارُ
- 240 ----- ◈ معانی
- 241 ----- ◈ معارف
- 244 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 248 ----- ◈ ۵۵۔ اَلْعَفُورُ
- 248 ----- ◈ معانی
- 248 ----- ◈ معارف
- 249 ----- ◈ اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 250 ----- ◈ ۵۶۔ اَلْغَنِيُّ
- 250 ----- ◈ معانی
- 250 ----- ◈ معارف
- 252 ----- ◈ حرف الفاء



- 252 ----- ۵۷۔ اَلْفَاطِرُ
- 252 ----- معانی ◇
- 252 ----- معارف ◇
- 252 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 253 ----- ۵۸۔ اَلْفَالِقُ
- 253 ----- معانی ◇
- 253 ----- معارف ◇
- 253 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 254 ----- ۵۹۔ اَلْفَتْحُ
- 254 ----- معانی ◇
- 254 ----- معارف ◇
- 256 ----- ۶۰۔ اَلْفَعَّالُ
- 256 ----- معانی ◇
- 256 ----- معارف ◇
- 257 ----- حرف القاف
- 257 ----- ۶۱۔ اَلْقَابِلُ
- 257 ----- معانی ◇
- 257 ----- معارف ◇
- 258 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 258 ----- ۶۲۔ اَلْقَادِرُ
- 258 ----- معانی ◇

- 259 ----- معارف ◇
- 260 ----- ۶۳۔ اَلْقَاهِرُ
- 260 ----- معانی ◇
- 260 ----- معارف ◇
- 261 ----- ۶۴۔ اَلْقُدُّوسُ
- 261 ----- معانی ◇
- 261 ----- معارف ◇
- 261 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 262 ----- ۶۵۔ اَلْقَدِيرُ
- 262 ----- معانی ◇
- 262 ----- معارف ◇
- 274 ----- اسمِ قَدِيرُ کے ذریعے دُعا ◇
- 276 ----- ۶۶۔ اَلْقَرِيبُ
- 276 ----- معانی ◇
- 276 ----- معارف ◇
- 278 ----- ۶۷۔ اَلْقَهَّارُ
- 278 ----- معانی ◇
- 278 ----- معارف ◇
- 281 ----- ۶۸۔ اَلْقَوِيُّ
- 281 ----- معانی ◇
- 281 ----- معارف ◇



- 283 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 284 ----- ۶۹۔ اَلْقَيُّوْمُ
- 284 ----- معانی
- 284 ----- معارف
- 285 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 288 ----- حرف الکاف
- 288 ----- ۷۰۔ اَلْكَافِيُّ
- 288 ----- معانی
- 288 ----- معارف
- 291 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 292 ----- ۷۱۔ اَلْكَبِيْرُ
- 292 ----- معانی
- 292 ----- معارف
- 293 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 293 ----- ۷۲۔ اَلْكَرِيْمُ
- 293 ----- معانی
- 293 ----- معارف
- 294 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 294 ----- ۷۳۔ اَلْكَفِيْلُ
- 294 ----- معانی
- 294 ----- معارف

- 296 ----- حرف اللام
- 296 ----- ۷۴۔ اَللَّطِيفُ
- 296 ----- معانی
- 296 ----- معارف
- 298 ----- حرف الميم
- 298 ----- ۷۵۔ اَلْمَالِكُ
- 298 ----- معانی
- 298 ----- معارف
- 299 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 300 ----- ۷۶۔ اَلْمُؤْمِنُ
- 300 ----- معانی
- 300 ----- معارف
- 302 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 302 ----- ۷۷۔ اَلْمُؤْمِنُ
- 302 ----- معانی
- 302 ----- معارف
- 303 ----- ۷۸۔ اَلْمُتَعَالِ
- 303 ----- معانی
- 303 ----- معارف
- 304 ----- ۷۹۔ اَلْمُتَكَبِّرُ
- 304 ----- معانی



- 304 ----- معارف ◇
- 305 ----- ۸۰۔ اَلْمُعْجِبُ
- 305 ----- معانی ◇
- 306 ----- معارف ◇
- 308 ----- ۸۱۔ اَلْمَجِيدُ
- 308 ----- معانی ◇
- 309 ----- معارف ◇
- 309 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 310 ----- ۸۲۔ اَلْمُحِيطُ
- 310 ----- معانی ◇
- 310 ----- معارف ◇
- 312 ----- ۸۳۔ اَلْمُسْتَعَانُ
- 312 ----- معانی ◇
- 313 ----- معارف ◇
- 315 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 315 ----- ۸۴۔ اَلْمُصَوِّرُ
- 315 ----- معانی ◇
- 315 ----- معارف ◇
- 316 ----- ۸۵۔ اَلْمُقْتَدِرُ
- 316 ----- معانی ◇
- 316 ----- معارف ◇

- 317 ----- ۸۶۔ اَلْمُقِیْتُ
- 317 ----- معانی
- 318 ----- معارف
- 318 ----- ۸۷۔ اَلْمَلِکُ
- 318 ----- معانی
- 318 ----- معارف
- 319 ----- ۸۸۔ اَلْمَلِیْکُ
- 319 ----- معانی
- 319 ----- معارف
- 320 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 321 ----- ۸۹۔ اَلْمَوْلیٰ
- 321 ----- معانی
- 321 ----- معارف
- 322 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 322 ----- ۹۰۔ اَلْمُهَیْمِنُ
- 322 ----- معانی
- 322 ----- معارف
- 324 ----- حرف النون
- 324 ----- ۹۱۔ اَلنَّصِیْرُ
- 324 ----- معانی
- 324 ----- معارف

- 327 ----- ۹۲۔ اَلنُّوْرُ
- 327 ----- معانی
- 328 ----- معارف
- 330 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 331 ----- حرف الواو
- 331 ----- ۹۳۔ اَلْوَاْحِدُ
- 331 ----- معانی
- 331 ----- معارف
- 332 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 334 ----- ۹۴۔ اَلْوَاْسِعُ
- 334 ----- معانی
- 335 ----- معارف
- 335 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 336 ----- ۹۵۔ اَلْوَدُوْدُ
- 336 ----- معانی
- 336 ----- معارف
- 337 ----- اللہ وود کی محبت حاصل کرنے کی دُعا
- 338 ----- ۹۶۔ اَلْوَكِيْلُ
- 338 ----- معانی
- 338 ----- معارف
- 339 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

- 340 ----- ۹۷۔ اَلْوَلِیُّ
- 340 ----- معانی
- 340 ----- معارف
- 341 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 341 ----- ۹۸۔ اَلْوَهَّابُ
- 341 ----- معانی
- 342 ----- معارف
- 343 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 345 ----- حرف الہاء
- 345 ----- ۹۹۔ اَلْهَادِیُّ
- 345 ----- معانی
- 345 ----- معارف
- 347 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

فصل نمبر ۳ قرآن وحدیث سے مزید اسمائے حسنیٰ کا ثبوت

- 350 ----- ۱۔ اَلْقَابِضُ
- 350 ----- معانی
- 350 ----- ۲۔ اَلْبَاسِطُ
- 350 ----- معانی
- 351 ----- معارف
- 351 ----- ۳۔ اَلْخَافِضُ

- 351 ----- معانی
- 351 ----- ۴۔ الرَّافِعُ
- 351 ----- معانی
- 351 ----- معارف
- 353 ----- ۵۔ الْمُعِزُّ
- 353 ----- معانی
- 353 ----- ۶۔ الْمَذِلُّ
- 353 ----- معانی
- 354 ----- معارف
- 354 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 355 ----- ۷۔ الْأَعْدَلُ
- 355 ----- معانی
- 355 ----- معارف
- 355 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا
- 356 ----- ۸۔ الْجَلِيلُ
- 356 ----- معانی
- 357 ----- معارف
- 357 ----- ۹۔ الْبَاعِثُ
- 357 ----- معانی
- 357 ----- معارف
- 357 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا

- 358 ----- ۱۰۔ اَلْمَتِّينُ
- 358 ----- معانی
- 358 ----- معارف
- 358 ----- ۱۱۔ اَلْمُحْصِي
- 358 ----- معانی
- 358 ----- معارف
- 358 ----- ۱۲۔ اَلْمُبْدِي
- 358 ----- معانی
- 358 ----- معارف
- 359 ----- ۱۳۔ اَلْمُعِيدُ
- 359 ----- معانی
- 359 ----- معارف
- 359 ----- ۱۴۔ اَلْمُحْيِي
- 359 ----- معانی
- 360 ----- معارف
- 360 ----- ۱۵۔ اَلْمُمِيتُ
- 360 ----- معانی
- 360 ----- معارف
- 361 ----- ۱۶۔ اَلْوَاٰجِدُ
- 361 ----- معانی

- 361 ----- معارف ◇
- 362 ----- ۱۷۔ الْمَاجِدُ
- 362 ----- معانی ◇
- 362 ----- معارف ◇
- 362 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 363 ----- ۱۸۔ الْمُقَدِّمُ، ۱۹۔ الْمُؤَخَّرُ
- 363 ----- معانی ◇
- 364 ----- معارف ◇
- 364 ----- ان اسماء کے ذریعے دُعا ◇
- 364 ----- ۲۰۔ الْوَالِي
- 364 ----- معانی ◇
- 364 ----- معارف ◇
- 365 ----- ۲۱۔ الْمُنتَقِمُ
- 365 ----- معانی ◇
- 365 ----- معارف ◇
- 365 ----- ۲۲۔ الْمُقْسِطُ
- 365 ----- معانی ◇
- 366 ----- معارف ◇
- 366 ----- ۲۳۔ الْمُغْنِي
- 366 ----- معانی ◇
- 366 ----- معارف ◇

- 367 ----- ۲۴۔ اَلْمَانِعُ
- 367 ----- معانی ◇
- 367 ----- معارف ◇
- 367 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 367 ----- ۲۵۔ اَلضَّارُّ ۲۶۔ اَلنَّافِعُ
- 367 ----- معانی ◇
- 368 ----- معارف ◇
- 368 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 368 ----- ۲۷۔ اَلْبَاقِیُّ
- 368 ----- معانی ◇
- 368 ----- معارف ◇
- 369 ----- ۲۸۔ اَلْوَارِثُ
- 369 ----- معانی ◇
- 369 ----- معارف ◇
- 369 ----- ۲۹۔ اَلرَّشِیْدُ
- 369 ----- معانی ◇
- 369 ----- معارف ◇
- 370 ----- ۳۰۔ اَلصَّبُوْرُ
- 370 ----- معانی ◇
- 370 ----- معارف ◇
- 370 ----- ۳۱۔ اَلْمَنَّانُ



- 370 ----- معانی ◇
- 370 ----- معارف ◇
- 371 ----- ۳۲۔ اَلْجَوَادُ
- 371 ----- معانی ◇
- 371 ----- معارف ◇
- 371 ----- ۳۳۔ اَلْسَيِّدُ
- 371 ----- معانی ◇
- 371 ----- معارف ◇
- 371 ----- ۳۴۔ اَلْمُعْطٰی
- 371 ----- معانی ◇
- 371 ----- معارف ◇
- 372 ----- ۳۵۔ اَلْوِثَرُ
- 372 ----- معانی ◇
- 372 ----- معارف ◇
- 372 ----- ۳۶۔ اَلْمُحْسِنُ
- 372 ----- معانی ◇
- 372 ----- معارف ◇
- 372 ----- ۳۷۔ اَلْكَاشِفُ
- 372 ----- معانی ◇
- 372 ----- معارف ◇
- 373 ----- ۳۸۔ اَلْمُنْجٰی



- 373 ----- معانی ◇
- 373 ----- معارف ◇
- 373 ----- ۳۹۔ الدِّيَانُ
- 373 ----- معانی ◇
- 373 ----- معارف ◇
- 373 ----- ۴۰۔ الشَّدِيدُ
- 373 ----- معانی ◇
- 373 ----- معارف ◇
- 374 ----- ۴۱۔ الْفَائِئِمُ
- 374 ----- معانی ◇
- 374 ----- معارف ◇
- 374 ----- ۴۲۔ الْوَاقِ
- 374 ----- معانی ◇
- 374 ----- معارف ◇
- 374 ----- ۴۳۔ التَّامُ
- 374 ----- معانی ◇
- 374 ----- معارف ◇
- 374 ----- ۴۴۔ الْاَكْبَرُ
- 374 ----- معانی ◇
- 374 ----- معارف ◇
- 375 ----- ۴۵۔ الدَّارُعُ

- 375 ----- معانی ◇
- 375 ----- معارف ◇
- 375 ----- ۴۶۔ اَلْسَبْتِیْر ^{س و ہ} ◇
- 375 ----- معانی ◇
- 375 ----- معارف ◇
- 375 ----- ۴۷۔ اَلشَّفِیْعُ ◇
- 375 ----- معانی ◇
- 375 ----- معارف ◇
- 376 ----- ۴۸۔ اَلصَّانِعُ ◇
- 376 ----- معانی ◇
- 376 ----- معارف ◇
- 376 ----- ۴۹۔ اَلْغُیُورُ ◇
- 376 ----- معانی ◇
- 376 ----- معارف ◇
- 376 ----- ۵۰۔ اَلدَّهْرُ ◇
- 376 ----- معانی ◇
- 376 ----- معارف ◇
- 377 ----- ۵۱۔ اَلدَّائِمُ ◇
- 377 ----- معانی ◇
- 377 ----- معارف ◇
- 377 ----- ۵۲۔ ذُو الْمَعَارِجِ ◇

- 377 ----- معانی
- 377 ----- معارف
- 378 ----- ۵۳۔ ذُو الْفَضْلِ
- 378 ----- معانی
- 378 ----- معارف
- 378 ----- ۵۴۔ فَارِجَ الْهَمِّ
- 378 ----- معانی
- 378 ----- معارف
- 378 ----- ۵۵۔ الْمَدْبِرُ
- 378 ----- معانی
- 378 ----- معارف
- 379 ----- ۵۶۔ الْمُبْرِمُ
- 379 ----- معانی
- 379 ----- معارف
- 379 ----- ۵۷۔ الْجَمِيلُ
- 379 ----- معانی
- 379 ----- معارف
- 379 ----- ۵۸۔ الرَّفِيقُ
- 379 ----- معانی
- 379 ----- معارف
- 380 ----- ۵۹۔ السَّبُوحُ

- 380 ----- معانی ◇
- 380 ----- معارف ◇
- 381 ----- ۶۰۔ الشَّافِعِيُّ
- 381 ----- معانی ◇
- 381 ----- معارف ◇
- 382 ----- اس اسم پاک کے ذریعے دُعا ◇
- 382 ----- ۶۱۔ الطَّيِّبُ
- 382 ----- معانی ◇
- 382 ----- معارف ◇

باب نمبر ۳

صفاتِ علیا کا بیان

- 384 ----- (1) موت و حیات کا مالک
- 385 ----- (2) خالص دودھ عطا کرنے والا
- 385 ----- (3) بیج کو پودے کی شکل اُگانے والا
- 386 ----- (4) تخلیق انسانیت کے مختلف مدارج
- 386 ----- (5) بارش برسانے والا
- 387 ----- (6) قوت سماعت و بصارت عطا کرنے والا
- 387 ----- (7) نظام لیل و نہار کا خالق
- 388 ----- (8) زمین و آسمان کی تخلیق
- 388 ----- (9) دریاؤں اور پہاڑوں کا خالق

- 388 ----- (10) انسان کو خوبصورت بنانے والا
- 389 ----- (11) لفظ ”کن“ سے جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے
- 389 ----- (12) بانجھ عورت سے بچہ پیدا کرتا ہے
- 390 ----- (13) بے موسے پھل عطا کر سکتا ہے
- 390 ----- (14) اصحابِ کہف کو تین سو نو سال سلانا
- 391 ----- (15) بغیر باپ کے عیسیٰ علیہ السلام کی پیدائش
- 391 ----- (16) سیدنا یونس علیہ السلام کو مچھلی کے پیٹ میں زندہ رکھا
- 392 ----- (17) اللہ کا علم تمام چیزوں کو محیط ہے
- 392 ----- (18) دو سمندروں کے درمیان آڑ کھڑی کرنے والا
- 392 ----- (19) بعث بعد الموت کے اختیار والا
- 393 ----- (20) مچھلی زندہ ہو کے غائب ہو گئی
- 394 ----- (21) نفس
- 394 ----- (22) الحب والفرح
- 395 ----- (25) کراہت و غضب
- 395 ----- (26) الرضی
- 396 ----- (27) الرحمة
- 397 ----- ◈ رحمت کی قسمیں
- 397 ----- (28) خوشی دے کر ہنسنا اور غم دے کر رلانا
- 398 ----- (29) العلو
- 398 ----- ◈ علو کا انکار
- 401 ----- ◈ حلول

- 403 ----- (30) استواء علی العرش
- 405 ----- (31) النزول
- 407 ----- نزول باری تعالیٰ کی کیفیت
- 408 ----- (32) اللہ تعالیٰ کی معیت
- 409 ----- (33) کلام الہی
- 411 ----- (34) علم
- 413 ----- (35) مشیت
- 414 ----- (36) قدرت و اختیار
- 416 ----- (37) وَجْہُ (اللہ تعالیٰ کا چہرہ اقدس)
- 418 ----- (38) عین و بصر
- 419 ----- (39) سمع (کان)
- 419 ----- (40) یدان (دو ہاتھ)
- 420 ----- (41) کف (ہتھیلی)
- 421 ----- (42) ساق (پنڈلی)
- 422 ----- (43) رجل (ٹانگ)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تقریظ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَلَا عُذْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ
وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى أَشْرَفِ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِينَ نَبِينَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى
آلِهِ وَصَحْبِهِ وَأَهْلِ طَاعَتِهِ أَجْمَعِينَ ، وَبَعْدُ !

اللہ تعالیٰ کے بابرکت نام اور صفات ہیں جن کی پہچان اصلِ توحید ہے، کیونکہ ان صفات کی صحیح معرفت سے ذاتِ باری تعالیٰ کی معرفت حاصل ہوگی نیز ابوابِ توحید روشن و واضح ہوں گے۔ ظاہر ہے کہ عقیدہ توحید کی معرفت اور اس پر تاحیات قائم و دائم رہنا ہی اصلِ دین ہے۔ یہی وجہ تخلیقِ جن و انس ہے اور اسی پیغامِ توحید کو پہنچانے اور سمجھانے کی خاطر بے شمار نبوتیں اور رسالتیں تشکیل دی گئیں، کتابیں اتاری گئیں، اور الروح الامین جبریل علیہ السلام کو بار بار آسمانوں سے بھیجا گیا۔

اللہ تعالیٰ کے ناموں اور صفات کے حوالے سے توحید کی اس مستقل قسم کو ”توحید الاسماء والصفات“ کہا جاتا ہے۔

توحید کی یہ قسم جس قدر عظمت و تقدس اور ضرورت و اہمیت کی حامل و متقاضی ہے، اسی قدر ہماری غفلت و بے توجہی کا شکار ہے..... کہیں تو اس موضوع کا سرے سے اہتمام ہی مفقود و متروک ہو چلا ہے اور کہیں اگر اہتمام موجود ہے تو وہ متکلمین و فلاسفہ کی بیمار سوچ کا عکاس و آئینہ دار بنا ہوا ہے۔ وہ منہج تقریباً ناپید ہوتا جا رہا ہے جس پر خاتم النبیین محمد رسول اللہ ﷺ نے اپنے اصحابِ کرام رضی اللہ عنہم کی تربیت فرمائی تھی اور جس پر آج تک ان کے اتباع قائم و مستمر ہیں۔

میں اس مختصر سے مقدمہ کے ذریعہ توحیدِ اسماء و صفات کے حوالہ سے نہایت اختصار کے

ساتھ چند بنیادی قواعد بیان کرنے کی کوشش کروں گا۔ اس دعا کے ساتھ کہ اللہ تعالیٰ رسول اکرم ﷺ اور ان کے اصحاب رضی اللہ عنہم اور ان کے تابعین رضی اللہ عنہم باحسان کے منج پر قائم رکھے اور ہمیں توحید کی صحیح معرفت عطا فرمائے اور اسی توحید پر ہمارا خاتمہ فرمائے چونکہ معرفتِ توحید پر خاتمہ ہی مدارِجات ہے۔ رسول اللہ ﷺ کا ارشاد گرامی ہے:

((مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ))^①

”جس شخص کی موت اس طرح آئے کہ اسے (دل کی گہرائیوں سے) لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ کا صحیح علم ہو تو وہ ضرور جنت میں داخل ہوگا۔“

پہلا قاعدہ:

یہ ہے کہ یہ ایمان رکھا جائے کہ اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات موجود ہیں اور وہ سب کے سب بابرکت، اچھے اور پیارے ہیں۔ قال اللہ تعالیٰ:

﴿وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا﴾ (الاعراف: ۱۸۰)

”اور اللہ تعالیٰ کے اچھے نام ہیں تو اس کو انہی ناموں سے پکارو۔“

﴿قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾

(الاسراء: ۱۱۰)

”اے پیغمبر! کہہ دیجیے کہ تم (اللہ تعالیٰ کو) اللہ کہہ کر پکارو یا رحمن کہہ کر، جس نام

سے بھی پکارو، اس کے تو سب نام اچھے ہیں۔“

﴿أَلَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾ (طہ: ۸)

”اللہ ہی ہے جس کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، اس کے اچھے اچھے نام ہیں۔“

ان آیات سے اللہ تعالیٰ کے ناموں کے موجود ہونے کا پتا چلتا ہے چنانچہ اس پر ایمان

لے آئیے۔

① صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم: ۱۳۶۔

دوسرا قاعدہ:

یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے نام صرف وہی ہیں جو اللہ تعالیٰ نے خود بیان فرمادیئے یا اس کے رسول محمد ﷺ نے واضح فرمادیئے، اس پر اضافہ کی نہ تو گنجائش ہے نہ ہم اس بارے میں سوچ سکتے ہیں اور نہ ہی ہمارے پاس کوئی علم ہے۔

اس سلسلہ میں اللہ اور اس کے رسول کے بیان پر اکتفاء کرنا اس لیے ضروری ہے کہ اللہ تعالیٰ کی ذات کو اللہ تعالیٰ سے زیادہ اور بہتر کوئی نہیں جان سکتا بلکہ ہر چیز کو سب سے بہتر اور زیادہ اللہ ہی جانتا ہے۔

﴿عَاذُكُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ﴾ (البقرة: ۱۴۰)

”کیا تم زیادہ جانتے ہو یا اللہ؟“

اور جہاں تک اللہ کے رسول ﷺ کے بیان کا تعلق ہے تو ان کی تو شان یہی ہے کہ وہ شرعی امور میں وحی الہی کے بغیر گفتگو ہی نہیں فرماتے۔

﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ﴾ (النجم: ۴، ۳)

”اور وہ اپنے دل کی خواہش سے کبھی بات نہیں کرتا۔ اس کی تو ہر بات وحی ہے جو اس کی طرف اتاری جاتی ہے۔“

اس قاعدے کو یوں بھی بیان کیا جاسکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے تمام اسماء و صفات توقیفی ہیں۔ توقیفی امور وہ ہوتے ہیں جو بندے کی عقل سے ماوراء ہوں اور جن کا اثبات اللہ تعالیٰ کی وحی یعنی قرآن و حدیث کے بغیر ممکن ہی نہ ہو..... لہذا اللہ تعالیٰ کے کسی بھی نام کا اثبات قرآن و حدیث کی دلیل کے بغیر ممکن نہیں ہے۔

تیسرا قاعدہ:

یہ ہے کہ قرآن و حدیث میں اللہ تعالیٰ کے جو نام مذکور ہیں ان کا مجموعہ ۹۹ ہے۔
 ((عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ (إِنَّ لِلَّهِ تِسْعَةً وَ تَسْعِينَ اسْمًا مِائَةً إِلَّا وَاحِدًا مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ إِنَّهُ وَتَرُ

يُحِبُّ الْوُتْرَ))^①

”ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: بے شک اللہ تعالیٰ کے ۹۹ نام ہیں ایک کم سوجوان کی حفاظت کرے گا، جنت میں داخل ہوگا۔ بے شک وہ وتر (ایک) ہے اور وتر یعنی (طاق عدد) کو پسند کرتا ہے۔“
 ثابت ہوا ہے کہ قرآن و حدیث میں اللہ تعالیٰ کے ۹۹ نام بیان ہوئے ہیں۔

چوتھا قاعدہ:

یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات محض ۹۹ کے عدد پر محصور نہیں ہیں۔ ان ۹۹ ناموں کے علاوہ بھی اس کے نام ہیں جو ہمیں بتائے نہیں گئے۔ اس کی دلیل رسول اللہ ﷺ کی یہ حدیث ہے جو آپ ﷺ کی ایک جامع دعا پر مشتمل ہے، اس میں یہ الفاظ بھی ہیں:

((أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابٍ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ الْحَدِيثُ))^②

”اے اللہ میں تجھ سے تیرے ہر نام کے واسطے سے سوال کرتا ہوں جو نام تو نے اپنی ذات کے بیان کر دیئے یا اپنی کتاب میں نازل فرما دیئے یا اپنے کسی بندے کو بطور خاص سکھا دیئے یا جن ناموں کو تو نے اپنے خزانہ غیب میں محفوظ رکھا ہوا ہے۔“

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کے کچھ نام اس کے خزانہ غیب میں موجود ہیں جن کا ہمیں علم نہیں دیا گیا اور یہ بات بالکل ظاہر اور واضح ہے کہ جو چیز اللہ تعالیٰ کے خزانہ غیب میں ہے اس کے ادراک یا اطلاع کا ہمارے پاس کوئی ذریعہ نہیں ہے۔

① صحیح البخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۴۱۰۔ صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء، رقم:

۶۸۰۹۔

② مسند احمد: ۱/۳۹۴۔ صحیح ابن حبان، رقم: ۲۳۷۲۔ مستدرک حاکم: ۱/۵۱۹۔

امام بیہقی رحمہ اللہ نے کتاب ”الاسماء و الصفات“ میں ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا کی ایک دعا ذکر کی ہے اور یہ بتایا ہے کہ ان کی یہ دعا اللہ کے نبی ﷺ نے بھی سنی:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِجَمِيعِ أَسْمَائِكَ الْحُسْنَى كُلِّهَا مَا عَلِمْنَا مِنْهَا وَمَا لَمْ نَعْلَمْ.....))^①

”اے اللہ! میں تجھ سے تیرے تمام ناموں جو سب پیارے ہیں، کے واسطے سے سوال کرتی ہوں، جن ناموں کو ہم جانتے ہیں (ان کے واسطے سے بھی) اور جن ناموں کو ہم نہیں جانتے (ان کے واسطے سے بھی)۔“

معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کے نام تو غیر محصور اور لامحدود ہیں مگر ہمیں ۹۹ ناموں کی اطلاع دی گئی، لہذا ہم انہی پر اکتفاء کریں اور انہی کی حفاظت و احصاء کرتے رہیں اور محض اپنی عقل یا غیر مستند نقل کی بناء پر تجاوز و تعدی کی کوشش نہ کریں۔

امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ فرمایا کرتے تھے:

((لَا يُوصَفُ اللَّهُ إِلَّا بِمَا وَصَفَ بِهِ نَفْسَهُ أَوْ وَصَفَهُ بِهِ رَسُولُهُ لَا يَتَجَاوَزُ الْقُرْآنَ وَالْحَدِيثَ))^②

”اللہ تعالیٰ کی صرف وہی صفات بیان کی جائیں جو اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول نے بیان کر دی ہیں اور اس سلسلہ میں قرآن و حدیث سے بالکل بھی تجاوز نہ کیا جائے۔“

چنانچہ قرآن و حدیث میں جو کچھ وارد ہے اسے قبول کر لیا جائے اور زیادہ بحث و تعلق سے گریز کیا جائے۔ شیخ محمد الامین الشنقٹیلی رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

① الدر المنثور: ۱۴۹/۳۔ الاسماء و الصفات للبيهقي: ۷۔ سنن ابن ماجه، باب الاسم الاعظم،

رقم: ۳۸۵۹۔

② شرح العقيدة الواسطية، ص: ۲۰۔

((اعْلَمْ أَنَّ كَثْرَةَ الْخَوَاضِ وَ التَّعَمُّقِ فِي الْبَحْثِ فِي آيَاتِ
الْصِّفَاتِ وَ كَثْرَةَ الْأَسْئَلَةِ فِي ذَلِكَ الْمَوْضُوعِ مِنَ الْبِدْعِ الَّتِي
يَكْرَهُهَا السَّلَفُ))^❶

”بخوبی جان لو کہ اللہ تعالیٰ کی صفات پر مشتمل آیاتِ کریمہ میں زیادہ غور و خوض
کرنا اور گہرائی میں جانے کی کوشش کرنا اور اس موضوع پر خوب سوال و جواب
کرنا من جملہ ان بدعات کے ہے جسے سلف صالحین سخت ناپسند کرتے تھے۔“

چنانچہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی سیرت طیبہ کا ایک روشن پہلو جس نے انہیں دیگر طبقات
سے منفرد و ممتاز کر دیا یہ بھی ہے کہ انہوں نے اس مسئلہ میں کبھی گہرائی میں جانے کی کوشش
نہیں کی۔ جس قدر اللہ کے نبی ﷺ نے بتلادیا اسے تسلیم کر لیا اور قیل و قال اور بلا مقصد و
ضرورت مناقشہ اور خصومت و جدال سے یکسر گریز کیا اس لیے نہیں کہ وہ جہل یا کوتاہی علم کا
شکار تھے بلکہ اس لیے کہ ان کا تقویٰ، ورع اور خالص تعلق باللہ نیز ایمان و ایقان اس امر کا
متقاضی تھا۔

اسماء و صفاتِ باری تعالیٰ کے سلسلہ میں سب سے اہم قاعدہ یہ (سوال) ہے کہ ان پر
ایمان لانے کا صحیح طریقہ کیا ہے؟
صحیح طریقہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنی ذات و صفات کے متعلق اپنی کتاب میں اور
اپنے رسول ﷺ کی زبان سے جو کچھ بیان کر دیا ہے اسے قبول و تسلیم کر لیا جائے، اسی کو
بیان کیا جائے۔

☆ بلا تحریف

☆ بلا تعطیل

☆ بلا تکیف

☆ بلا تمثیل

❶ منہج و دراسات آیات الاسماء و الصفات، ص: ۹.

اس اجمال کی تفصیل یوں ہے کہ اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات کو بلا تحریف قبول کیا جائے۔ تحریف سے مراد یہ ہے کہ نص یا دلیل میں اپنی خواہش کے مطابق تبدیلی کی جائے۔ یہ عمل انتہائی مذموم ہے اور باری تعالیٰ کی صفات میں تحریف جیسا قبیح اور مذموم فعل قطعی ناجائز ہے۔

﴿وَذُرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ (۱۸۰)

(الاعراف: ۱۸۰)

اسی طرح اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات کو بلا تعطیل قبول کیا جائے۔ یعنی اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات میں سے کسی اسم یا صفت کا انکار نہ کیا جائے۔ چنانچہ نہ تو جہمیہ کی روش پر چلا جائے کہ جنہوں نے اللہ تعالیٰ کی تمام صفات کا انکار کر دیا اور نہ ہی اشاعرہ کی روش پر چلا جائے کہ جنہوں نے اللہ تعالیٰ کی صرف سات صفات کو مانا اور باقی کا انکار کر دیا..... بلکہ حق یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی تمام صفات کو بلا تکلیف مانا جائے یعنی اس طرح مانا جائے کہ ان کی کیفیت نہ تو ہم جانتے ہیں نہ بیان کر سکتے ہیں بلکہ کیفیت صرف اللہ تعالیٰ ہی کے علم میں ہے۔ اسی طرح اللہ تعالیٰ کی صفات کو بلا تمثیل اور بلا تشبیہ ماننا ضروری ہے۔

یعنی اللہ تعالیٰ کی کسی صفت کو کسی کے ساتھ تشبیہ نہ دی جائے مثلاً یوں نہ کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ کا سننا اور دیکھنا انسان کے سننے اور دیکھنے کی طرح ہے۔ اس کی تمام صفات کمال ہیں، نقص سے پاک ہیں اور بالکل ویسی ہی ہیں جیسی اس ذات کے لائق ہیں۔

خلاصہ کلام:

یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی صفات پر صحیح ایمان لانے کا تقاضا یہ ہے کہ وہ بلا تعطیل، بلا تحریف، بلا تکلیف اور بلا تشبیہ ہو نیز یہ کہ اللہ تعالیٰ کی کسی صفت کا انکار، یا کسی صفت کی لفظی یا معنوی تحریف یا کسی صفت کی اپنی خواہش و ہوئی کی بنیاد پر تاویل یا کسی صفت کی کیفیت بیان کرنا یا کسی صفت کو مخلوق کی صفت کے مشابہ قرار دینا یہ سب حرام ہے اور بعض امور تو کفر یا شرک بن جاتے ہیں۔ اعاذنا اللہ من الکفر و الشک و اتباع الهوی .

اللہ تعالیٰ کے اسماء مبارکہ کے سلسلہ میں ایک اور قسم قابل غور ہے تاکہ اسماء باری تعالیٰ پر ایمان لانے کی معنویت مزید واضح ہو جائے۔ اللہ تعالیٰ کے کچھ نام لازم ہیں اور کچھ متعدی ہیں۔

پہلے لازم اور متعدی کا معنی سمجھ لیجیے۔ لازم وہ چیز کہلاتی ہے جو ایک شخصیت تک محدود ہے اور متعدی وہ چیز ہے جس کا اثر ایک شخصیت سے دوسری شخصیت تک پہنچ جائے۔
لازم کی مثال:

زید نے کھانا کھایا..... کھانا کھایا زید تک محدود ہے۔

متعدی کی مثال:

زید نے خالد کو مارا..... یہاں مارنے کا عمل مذکور ہے جو زید کی طرف سے خالد تک پہنچا۔
اللہ تعالیٰ کے جو اسماء لازم ہیں مثلاً الحی (زندہ) العظیم (بڑا، عظمت والا) ان پر ایمان لانے کا طریقہ یہ ہے کہ ان اسماء کو مانا جائے اور ان میں موجود صفت الحیاء اور العظمت کو بھی مانا جائے۔

اللہ تعالیٰ کے متعدی اسماء، جیسے الرحمن (رحم کرنے والا) الرزاق (بہت رزق دینے والا) پر ایمان لانے کے تین مراحل ہیں:
۱۔ ان اسماء کو مانا جائے۔

۲۔ ان اسماء کے اندر جو صفت ہے یعنی رحمت اور رزاقیت، اسے بھی قبول کیا جائے۔

۳۔ ان اسماء کے اثر کا مخلوقات تک پہنچنا بھی قبول کیا جائے۔ چنانچہ صفت رحمن یا رحیم میں جو رحمت پنہاں ہے اس کا اثر بندوں تک پہنچتا ہے۔ صفت رزاق میں جو رزاقیت کا وصف پنہاں ہے اس کا اثر بندوں تک پہنچتا ہے۔ چنانچہ تمام بندے رحمت اور رزق سے فیض یاب ہو رہے ہیں۔

اللہ تعالیٰ کی صفات کی ایک اور قسم بھی پیش خدمت ہے، ثبوتی اور سلبی۔ ثبوتی صفات وہ ہیں جو اللہ کے لیے ثابت ہیں، مثلاً: و هو السميع البصير، الله لا اله الا هو

الحی القيوم چنانچہ السميع ، البصير ، الحی ، القيوم ، یہ سب وہ صفات ہیں جو اس ذات باری تعالیٰ کے لیے ثابت ہیں، ان پر ایمان لانے کا طریقہ گزشتہ صفحات میں بڑی تفصیل کے ساتھ گزر چکا ہے۔ خلاصہ یہ ہے کہ ان صفات ثبوتیہ کو قبول کیا جائے، ان میں کوئی تبدیلی، تاویل، تشبیہ یا تعطیل سے یکسر گریز کیا جائے اور یہ عقیدہ رکھا جائے کہ یہ تمام صفات کمال ہیں، ہر قسم کے نقص سے منزہ اور مبرئ ہیں اور جیسی اس ذات قادر مطلق کے شایان شان ہیں بالکل ویسی ہی ہیں۔

سلبی صفات سے مراد وہ صفات ہیں جن کی اللہ تعالیٰ سے نفی کی گئی ہے، جیسے: ﴿وَلَا يَظْلِمُ دَبُّكَ أَحَدًا﴾ ”اور تیرا پروردگار کسی پر ظلم نہیں کرتا۔“ یہاں اللہ تعالیٰ سے ظلم کی نفی ہے۔ یہ سلبی صفت ہے اس پر ایمان لانے کا طریقہ یہ ہے کہ جس چیز کی اللہ تعالیٰ سے نفی کی گئی ہو اسے من وعن قبول کر لیا جائے اور اس نفی کی ضد کو اللہ تعالیٰ کے لیے ثابت کیا جائے۔ چنانچہ آیت مذکورہ میں ظلم کی نفی ہے، اسے مانا جائے اور ظلم کی ضد عدل کو اللہ تعالیٰ کے لیے بکمالہ ثابت کیا جائے اور یہ ایمان رکھا جائے کہ اللہ تعالیٰ عدل فرمانے والا ہے۔ اسی طرح صفات سلبیہ پر ایمان بھی پورا ہو جائے گا۔

ہم نے عام فہم انداز سے صفات باری تعالیٰ پر ایمان لانے کی حقیقت و اہمیت واضح کی ہے۔ تمام بھائیوں سے یہ گزارش کریں گے کہ توحید کی اس اہم قسم کا اہتمام فرمائیں۔ جب منج صحیح ہوگا اور صفات کا فہم حاصل ہوگا تو عقیدے کی اصلاح تو لازماً ہو ہی جائے گی، لیکن اس کے ساتھ ساتھ عبادات نیز اسماء و صفات کے ذریعے ذکر الہی اور دعا وغیرہ میں ایک روحانی لذت طمانیت اور حلاوت کا عجیب و خوش کن احساس ہوگا نیز اللہ تعالیٰ کی طرف سے اجر و ثواب کے انبار اس خوشی پر مزید چار چاند لگا دیں گے۔

ایک مثال:

آیۃ الکرسی کی بہت فضیلت ہے۔ مسند احمد، ابوداؤد اور مستدرک حاکم کی ایک روایت سے ثابت ہوتا ہے کہ یہ قرآن پاک کی سب سے بڑی آیت ہے چونکہ اس حدیث میں رسول

اللہ ﷻ نے فرمایا ہے:

”مجھے اس ذات کی قسم ہے جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ آیت الکرسی کی ایک زبان اور دو ہونٹ ہیں اور یہ اللہ تعالیٰ کے عرش کے نیچے اللہ تعالیٰ کی تقدیس کرتی ہے۔“^①

ربیعہ الجرجانیؒ کی ایک حدیث میں اسے قرآن پاک کی سب سے افضل آیت قرار دیا گیا ہے۔^②

جناب علیؑ کا موقف اثر ہے (اور اس قسم کے آثار حکماً مرفوع ہوتے ہیں) کہ میں ایسا کوئی عقل مند مسلمان نہیں جانتا جو رات کو سونے سے قبل آیۃ الکرسی اور سورہ بقرہ کی آخری آیتیں نہ پڑھتا ہو کیونکہ یہ دونوں عرش کے خزانوں میں سے ہیں۔^③ اس قسم کا ایک قول ابو امامہ باہلی سے بھی مروی ہے۔^④

پھر رسول اللہ ﷺ کی بہت سی احادیث جو ابو ہریرہؓ، ابی بن کعبؓ، معاذ بن جبلؓ اور ابو ایوب انصاریؓ وغیرہ سے مروی ہیں، معلوم ہوتا ہے کہ صبح و شام اس آیت کو پڑھنے والے شخص سے شیطان بھاگ جاتا ہے اور کوئی مذکر یا مؤنث جن قریب بھی نہیں پھٹکتا اور صبح کو پڑھنے والے شخص پر شام تک اور رات کو پڑھنے والے شخص پر صبح تک اللہ تعالیٰ کی طرف سے محافظ مقرر کر دیا جاتا ہے۔

نیز ابو امامہؓ سے رسول اللہ ﷺ کا فرمان منقول ہے:

”جو شخص ہر فرض نماز کے بعد آیت الکرسی پڑھتا رہے گا اس کے جنت میں داخلے پر موت کے سوا کوئی رکاوٹ نہیں ہے۔“^⑤

① مسند احمد: ۱۴۱/۵-۱۴۲۔ صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ المسافرین، رقم: ۸۱۰۔

② البغوی فی معجمہ۔

③ تفسیر ابن کثیر۔ مصنف ابن ابی شیبہ۔

④ مسند احمد و طبرانی۔

⑤ عمل الیوم و اللیلة لابن السنی، رقم: ۱۲۱۔ سلسلۃ الاحادیث الصحیحۃ، رقم: ۹۷۲۔

اب اس آیت کی اس قدر فضیلت کے وجہ و رموز اللہ ہی بہتر جانتا ہے، لیکن بظاہر ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اس آیت الکرسی میں کم و بیش اللہ تعالیٰ کی بارہ صفات مذکور ہیں۔
دوسری مثال:

سورة الاخلاص ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ کی بڑی فضیلت وارد ہے۔ مسند احمد وغیرہ میں معاذ بن انس الجعفی رضی اللہ عنہ کی حدیث مروی ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جو شخص دس بار ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ پڑھے گا، اللہ تعالیٰ اس کا ایک محل بنائے گا۔ ایک صحابی نے پوچھا کہ اگر ہم دس بار سے زیادہ پڑھ لیں؟ تو فرمایا: ”اللہ تعالیٰ کی عطا بہت عمدہ اور نہ ختم ہونے والی ہے۔“

ایک صحابی نے اپنی دعائیں سورة الاخلاص میں بیان شدہ صفات باری تعالیٰ کا واسطہ دیا تو رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ”اس نے اللہ تعالیٰ کے اس اسم اعظم کا واسطہ دے کر سوال کیا ہے کہ اس واسطہ سے جو دعا کی جائے اللہ قبول فرماتا ہے اور جو سوال کیا جائے اللہ تعالیٰ عطا فرمادیتا ہے۔“^①

ایک صحابی ہر نماز میں سورة اخلاص ضرور پڑھتے تھے، رسول اللہ ﷺ نے اس سے اس کا سبب پوچھا تو انہوں نے کہا مجھے اس سورة سے محبت بہت ہے تو آپ ﷺ نے فرمایا: ”اس سورة کی محبت نے تجھے جنت میں داخل کر دیا ہے۔“^②

صحیح بخاری اور مسلم وغیرہ میں ایک اور شخص کا واقعہ مذکور ہے وہ بھی نماز کی ہر رکعت میں ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ ضرور پڑھتا تھا، جب نبی اکرم ﷺ کو یہ بات معلوم ہوئی تو آپ ﷺ نے صحابہ رضی اللہ عنہم سے کہا: اس سے پوچھو کہ ایسا کیوں کرتا ہے؟ صحابہ رضی اللہ عنہم نے پوچھا تو اس نے جواب دیا ”کیونکہ یہ رحمن کی صفت ہے اور مجھے اس کا پڑھنا بہت مزہ اور لطف دیتا ہے۔“

① صحیح ابن حبان: ۳۵/۸، رقم: ۶۱۵۸.

② سنن ترمذی، رقم: ۲۹۰۱۔ صحیح ابن خزیمہ، رقم: ۵۳۷.

آپ ﷺ نے فرمایا: اسے بتادو کہ تم اللہ تعالیٰ کے محبوب بن چکے۔^①
 موطا امام مالک میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ایک شخص کو سورہ ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾^② پڑھتے ہوئے سنا۔ فرمایا: اس کے لیے جنت واجب ہو چکی ہے۔^③
 ایک اور شخص کو آپ ﷺ نے یہ سورہ پڑھتے ہوئے سنا تو فرمایا: اللہ تعالیٰ نے اس کے تمام گناہ معاف فرمادیئے ہیں۔^④

ایک اور صحابی کے جنازہ میں جبریل علیہ السلام نے ستر ہزار فرشتوں کے ساتھ شرکت فرمائی، رسول اللہ ﷺ نے جبریل علیہ السلام سے پوچھا کہ اس شخص کو اتنا اعزاز کیسے نصیب ہوا؟ فرمایا: یہ اٹھتے، بیٹھتے، چلتے، پھرتے اور سواری پر ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ پڑھتا رہتا تھا۔^⑤
 اس صحابی کا نام معاویہ بن معاویہ المزنی تھا۔

جبکہ بہت سی دیگر صحیح احادیث سے ثابت ہے کہ (قل هو الله احد) ایک تہائی قرآن کے برابر ہے اور جو اسے تین بار پڑھے گا، اسے پورے قرآن کی تلاوت کا ثواب ملے گا۔^⑥
 اس سورہ کے اس قدر فضائل کے رموز و حکم تو اللہ تعالیٰ ہی جانتا ہے مگر ایک بات بالکل واضح طور پر کہی جاسکتی ہے کہ یہ مختصر سی سورہ اول تا آخر مکمل اور جامع توحید ہے اور اس میں اللہ تعالیٰ کی بہت سی صفات مذکور ہیں۔

یہ چند مثالیں تشویق قارئین کے لیے پیش کی ہیں تاکہ واضح ہو جائے کہ صفات باری تعالیٰ پر مشتمل ذکر کتنے اجر و ثواب کا حامل ہے۔

چنانچہ جسے ان صفات کی معرفت حاصل ہو اور وہ پورے یقین و بصیرت کے ساتھ ان کا فہم رکھتا ہو اور اعتقاداً و عملاً ان پر قائم ہو تو اس کا یہ عقیدہ توحید اس کی نجات کا باعث بن

① صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم: ۷۳۷۵۔ صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين، رقم: ۱۸۹۰۔

② صحیح ابن خزیمہ، رقم: ۵۳۷۔

③ سنن ابو داود، رقم: ۶۸۷۔

④ المعجم الكبير للطبرانی۔

⑤ صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين، رقم: ۱۸۸۸۔

جائے گا۔

رسول اللہ ﷺ کے بہت سے اذکار اس معنویت و فضیلت کا پیغام دیتے ہیں۔ صحیح بخاری کی آخری حدیث ہے:

دو کلمے ہیں جو اللہ کو بڑے پسند ہیں، زبان پر بہت ہلکے، مگر قیامت کے دن میزان میں بہت بھاری ہوں گے: ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ))^①

اگر آپ غور کریں تو اس فضیلت کی بنیاد یہی ہے کہ یہ دو کلمے تمام صفات کو سمیٹے ہوئے ہیں۔ اس لیے ایک حدیث میں ارشاد فرمایا:

”جو شخص صبح و شام سو بار ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ)) پڑھے گا، اللہ تعالیٰ

اس کے تمام گناہ معاف فرمادے گا خواہ وہ سمندر کی جھاگ کے برابر ہی کیوں نہ

ہوں۔“^②

قارئین کرام! توحید اسماء و صفات کا کما حقہ اہتمام کیجیے، یہ توحید باری تعالیٰ کے فہم کی مفتاح ہے۔ ہم جیسے معصیتوں کے سمندر میں ڈوبے ہوئے انسانوں کی مغفرت کا بہت بڑا سہارا ہے۔

و صلی اللہ علی نبینا محمد و علی آلہ و صحبہ و اہل طاعتہ أجمعین .

کتبہ:

عبداللہ ناصر رحمانی

سرپرست، ادارہ انصار السنۃ پبلی کیشنز لاہور



① صحیح بخاری، کبات التوحید، رقم: ۷۵۶۳.

② صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء، رقم: ۸۴۳.

فصل نمبر ۱:

توحید کی فضیلت، اہمیت اور شروط

توحید کی تعریف:

”توحید، وَحْدَ یُوْحِدُ“ کا مصدر ہے، جس کا معنی ہے، کسی چیز کو ایک شمار کرنا۔
اصطلاحی طور پر اللہ تعالیٰ کو اس کی ربوبیت، الوہیت اور صفات میں منفرد، یکتا اور اکیلا
ماننے کا نام توحید ہے۔

توحید کی اقسام

توحید کی تین اقسام ہیں:

- ۱۔ توحید ربوبیت
 - ۲۔ توحید الوہیت
 - ۳۔ توحید اسماء و صفات
- ذیل کی سطور میں اس اجمال کی تفصیل پیش خدمت قارئین ہے۔



۱۔ توحید ربوبیت

یعنی اس بات کا اقرار کرنا کہ اللہ تعالیٰ بغیر کسی ممد و معاون کے پوری کائنات کا رب، خالق، رازق، زندہ کرنے والا، موت دینے والا اور وہی سارے جہان کا مدبر اور متصرف ہے، اس کی آسمانوں اور زمین میں حکومت ہے۔ اور اس قسم کی توحید کا اقرار و اعتراف اس فطرت کا تقاضا ہے جس پر اللہ تعالیٰ نے تمام مخلوق کو پیدا فرمایا ہے، حتیٰ کہ مشرکین مکہ و عرب جن کے درمیان رسول ہاشمی ﷺ مبعوث ہوئے وہ دورِ حاضر کے متعدد کلمہ گو مشرکین سے بھی کہیں زیادہ اس کا اقرار و اعتراف کرتے تھے اور اس کے منکر نہ تھے۔ جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا کہ:

﴿قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنُ يَهْدِيكُمُ السَّبِيلَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ النَّبْتِ وَيُخْرِجُ النَّبْتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝﴾ (یونس : ۳۱)

”یعنی آپ پوچھئے کہ تمہیں آسمان اور زمین سے روزی کون پہنچاتا ہے، یا کانوں اور آنکھوں کا مالک کون ہے، اور کون زندہ کو مردہ سے اور مردہ کو زندہ سے نکالتا ہے، اور کون تمام امور کی دیکھ بھال کرتا ہے، وہ جواب میں یہی کہیں گے کہ اللہ، تو آپ کہیے کہ پھر تم لوگ شرک سے کیوں نہیں بچتے ہو۔“

سورۃ العنکبوت میں فرمایا:

﴿وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّيْءَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَيْكَ يَوْمَ فَكُورٌ ۝﴾ (العنکبوت : ۶۱)

”اور اگر آپ ان سے پوچھیں کہ زمین و آسمان کو کس نے پیدا کیا ہے اور سورج و چاند کو کس نے مسخر کیا ہے تو ضرور یہ کہیں گے کہ اللہ نے، تو پھر وہ کہاں بہکے جا

”رہے ہیں۔“

اسی سورۃ میں دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿وَلِئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ تَزَكَّى مِنَ السَّيِّئَاتِ فَأَجَبُوا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا
لَيَقُولَنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝﴾

(العنکبوت: ۶۳)

”اور اگر آپ ان سے پوچھیں گے کہ آسمان سے پانی کس نے اُتارا ہے، جس کے ذریعے وہ مردہ زمین کو زندہ کر دیتا ہے، تو وہ کہیں گے اللہ، آپ کہیے کہ ساری تعریفیں اللہ کے لیے ہیں، لیکن اکثر مشرکین عقل سے کام نہیں لیتے ہیں۔“ اس قسم کی توحید کا انکار کم ہی لوگوں نے کیا ہے، اور وہ بھی تکبر و عناد کی وجہ سے ظاہری طور پر کیا ہے، ورنہ دل سے وہ بھی اس کا اعتراف کرتے تھے، اللہ رب العزت نے ارشاد فرمایا ہے:

﴿وَجَعَلُوا بِهَا وَاسْتَبَقَتْهُمَا أَنْفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُتُوًّا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝﴾ (النمل: ۱۴)

”اور ان نشانوں کا انہوں نے ظلم و سرکشی کی وجہ سے انکار کر دیا، حالانکہ ان کا باطن ان کی صداقت کا یقین کر چکا تھا۔ پس آپ دیکھیں گے کہ فساد یوں کا کیا انجام ہوتا ہے۔“

دہریے اور کمیونسٹ اور جن کا بھی ذہن ان کی تعلیمات سے آلودہ ہے وہ یہ سمجھتے ہیں کہ انسان اور یہ کائنات اور اس میں موجود سب چیزیں خود بخود پیدا ہو گئی ہیں، نیچر ہی ان کا خالق ہے، لیکن وہ اس پر عقل سلیم کو آمادہ نہ کر سکے، اور علت العلل کے نام سے الہی صفات کو انہیں تسلیم کرنا پڑا۔

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝﴾ (الفاتحہ)

”سب تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جو تمام جہانوں کا پالنے والا ہے۔“

اثبات وجود الہ العالمین کے بارے

اقوالِ ائمہ

امام رازی رحمۃ اللہ علیہ:

امام رازی رحمۃ اللہ علیہ نے اللہ تعالیٰ کے وجود پر استدلال کرتے ہوئے کہا ہے کہ زمین اور آسمان کی مختلف شکل و صورت، مختلف رنگ، مختلف مزاج اور مختلف نفع کی موجودات، ان میں سے ہر ایک کا نفع بخش ہونا اور خاص حکمت کا ہونا، ان کے خالق کے وجود کا اور اس کی عظیم الشان قدرت، حکمت، زبردست سطوت اور سلطنت کا ثبوت ہے۔

امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ:

امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ سے بھی یہی سوال ہوتا ہے تو آپ جواب دیتے ہیں کہ چھوڑو میں کسی اور سوچ میں ہوں۔ لوگوں نے مجھ سے کہا کہ ایک بہت بڑی کشتی جس میں طرح طرح کی تجارتی چیزیں ہیں، نہ کوئی اس کا نگہبان ہے، نہ چلانے والا ہے باوجود اس کے کہ وہ برابر آ جا رہی ہے اور بڑی بڑی موجوں کو خود بخود چیرتی پھاڑتی گذر جاتی ہے، ٹھہرنے کی جگہ پر ٹھہر جاتی ہے، چلنے کی جگہ چلتی رہتی ہے، نہ اس کا کوئی ملاح ہے نہ منتظم۔

سوال کرنے والے دہریوں نے کہا، آپ کس سوچ میں پڑ گئے۔ کوئی عقل مند ایسی بات کہہ سکتا ہے کہ اتنی بڑی کشتی اتنے بڑے نظام کے ساتھ تلاطم والے سمندر میں آئے جائے اور کوئی اس کو چلانے والا نہ ہو، آپ نے فرمایا: افسوس تمہاری عقلوں پر ایک کشتی تو بغیر چلانے والے کے نہ چل سکے لیکن یہ ساری دنیا آسمان و زمین کی سب چیزیں ٹھیک اپنے کام پر لگی رہیں اور ان کا مالک حاکم خالق کوئی نہ ہو؟ یہ جواب سن کر وہ لوگ ہکا بکا ہو گئے اور حق معلوم کر کے مسلمان ہو گئے۔

حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ سے بھی یہی سوال ہوا تو آپ نے جواب دیا کہ توت کے پتے ایک ہی ہیں، ایک ہی ذائقہ کے ہیں، کیڑے اور شہد کی مکھی اور گائیں بکریاں ہرن وغیرہ سب اس کو چباتے کھاتے اور چرتے چگتے ہیں، اسی کو کھا کر ریشم کا کیڑا ریشم تیار کرتا ہے، مکھی شہد بناتی ہے، ہرن میں مشک پیدا ہوتا ہے اور گائیں بکریاں یوگنیاں دیتی ہیں۔ کیا یہ اس امر کی صاف دلیل نہیں کہ ایک پتے میں یہ مختلف خواص پیدا کرنے والا کوئی ہے؟ اور اسی کو ہم اللہ تبارک و تعالیٰ مانتے ہیں، وہی موجد اور صانع ہے۔

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ:

حضرت امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ سے بھی ایک مرتبہ وجودِ باری تعالیٰ پر دلیل طلب کی گئی تو آپ نے فرمایا: ”سنو! ایک نہایت مضبوط قلعہ ہے جس میں کوئی دروازہ نہیں، نہ کوئی راستہ ہے بلکہ سوراخ تک نہیں باہر سے چاندی کی طرح چمک رہا ہے اور اندر سے سونے کی طرح دکھ رہا ہے، اوپر نیچے، دائیں بائیں، چاروں طرف سے بالکل بند ہے، ہوا تک اس میں نہیں جاسکتی اچانک اس کی ایک دیوار گرتی ہے اور ایک جاندار آنکھوں، کانوں والا، خوبصورت شکل اور پیاری بولی والا چلتا پھرتا نظر آتا ہے۔ بتاؤ اس بند اور محفوظ مکان میں اسے پیدا کرنے والا کوئی ہے یا نہیں؟ اور وہ ہستی انسانی ہستیوں سے بالاتر اور اس کی قدرت غیر محدود ہے یا نہیں؟ آپ کا مطلب یہ تھا کہ انڈے کو دیکھو۔ چاروں طرف سے بند ہے۔ پھر اس میں پروردگار خالق کیسا جاندار بچہ پیدا کر دیتا ہے۔ یہی دلیل ہے اللہ کے وجود پر اور اس کی توحید پر۔

ابو نواس رحمۃ اللہ علیہ:

حضرت ابو نواس سے جب یہ مسئلہ پوچھا گیا تو آپ نے فرمایا: آسمان سے بارش برسنے، اس سے درختوں کا پیدا ہونا اور ان ہری ہری شاخوں پر خوش ذائقہ میوؤں کا لگنا ہی اللہ تعالیٰ کے وجود اور اس کی وحدانیت کی کافی دلیل ہے۔



ابن المعتز فرماتے ہیں: ”افسوس! اللہ تعالیٰ کی نافرمانی اور اس کی تکذیب پر لوگ کیسے دلیر ہو جاتے ہیں حالانکہ ہر چیز اس پروردگار کے موجود اور لاشریک ہونے پر گواہ ہے۔“^①



① تفسیر ابن کثیر: ۱/۱۱۰، ۱۱۱۔ طبع مکتبہ قدوسیہ، لاہور

۲۔ توحید الوہیت

توحید الوہیت کو ”توحید عبادت“ بھی کہا جاتا ہے۔ یعنی جملہ عبادات میں اللہ تعالیٰ کو اکیلا مانا جائے، کسی طرح کی عبادت غیر اللہ کے لیے نہ کی جائے۔

﴿وَالْهُكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ﴾ (البقرة: ۱۶۳)

”اور تم سب کا معبود ایک اللہ ہے، اس کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ نہایت مہربان اور رحم کرنے والا ہے۔“

یاد رہے کہ یہی وہ توحید ہے جس کے لیے اللہ تعالیٰ نے سارے جن و انس کو پیدا فرمایا، جب کہ ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾ (الذاریات: ۵۶)

”اور میں نے جنوں اور انسانوں کو محض اس لیے پیدا کیا ہے کہ وہ میری عبادت کریں۔“

مذکورہ بالا آیت کریمہ میں ”عبادت“ سے مراد ”توحید الوہیت“ ہے، کیونکہ بغیر توحید عبادت بے کار اور رایگاں ہے۔ چنانچہ امام قرطبی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((وَالْمَعْنَى مَا خَلَقْتُ أَهْلَ السَّعَادَةِ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِلَّا لِيُؤَدُّوا)) ①

”آیت کا معنی یہ ہے کہ میں نے اہل سعادت جن و انس کو صرف اس لیے پیدا کیا ہے کہ وہ مجھے واحد لا شریک مانیں۔“

چنانچہ علامہ محمود آلوسی مذکورہ آیت کریمہ کی تفسیر میں سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما کا قول

① تفسیر قرطبی: ۵۵ / ۱۷۔

اس طرح نقل کرتے ہیں:

((وَقِيلَ: الْعِبَادَةُ بِمَعْنَى التَّوْحِيدِ بِنَاءً عَلَى مَا رُوِيَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ كُلَّ عِبَادَةٍ فِي الْقُرْآنِ فَهُوَ تَوْحِيدٌ)) ❶

”اور ایک قول یہ ہے کہ عبادت سے مراد توحید ہے، کیونکہ ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ قرآن کریم میں جہاں کہیں لفظ عبادت آیا ہے، اس سے توحید مراد ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے اس بات کی تعلیم دی ہے کہ انسان اپنے آپ کو ہر ایک کی غلامی سے آزاد کر کے ایک اللہ کا بندہ بنا دے، اس کے ساتھ کسی چیز کو عبادت میں شریک نہ کرے، نہ اُس جیسی محبت کرے، اور نہ اس جیسا کسی سے خوف رکھے، نہ اُس جیسی کسی سے اُمید وابستہ کرے، صرف اُسی پر بھروسہ کرے، نذر و نیاز، خشوع و خضوع، تذلل و تعظیم اور رکوع و سجود سب کا مستحق صرف وہ ہے، جو آسمان و زمین کا خالق حقیقی ہے۔

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ (الفاتحہ: ۵)

”ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تجھ ہی سے مدد مانگتے ہیں۔“

لیکن حضرت انسان نے ہمیشہ ہی اس تعلیم کو پس پشت ڈالا، اور اللہ کے ساتھ غیروں کو شریک بنایا، غیروں سے مدد مانگی، شرک کے ارتکاب کے لیے مختلف قسم کے بہانے تراشے، اور اللہ کے بجائے انبیاء، اولیاء، صلحاء اور قبروں والوں سے مدد مانگی۔

رسول اللہ ﷺ کی نبوت و رسالت پر ایمان و یقین اور بڑھ جاتا ہے، جب ہم آپ ﷺ کی پیش گوئی کو یاد کرتے ہیں کہ ”اس وقت تک قیامت قائم نہ ہوگی جب تک میری اُمت میں سے کچھ قبائل مشرکین کے ساتھ نہ مل جائیں گے، اور یہاں تک کہ میری اُمت کے کچھ قبائل بتوں کی پرستش کریں گے۔“ ❷

❶ روح المعانی: ۱/۲۲۱۔ صحیح سنن ابی داؤد للالبانی: ۹/۲-۱۰، رقم: ۴۲۵۲۔

❷ مسند احمد: ۲۷۸/۵، ۲۸۴۔ مسند ابوداؤد طیالسی، رقم: ۹۹۱۔ مستدرک حاکم: ۴/۴۸۸۔

حافظ ابن قیم رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ ”بندہ کو یہ حکم دیا گیا ہے کہ وہ ہر نماز میں ﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ کہے۔ اس لیے کہ شیطان اُسے شرک کرنے کا حکم دیتا ہے اور نفس انسانی اس کی بات مان کر ہمیشہ غیر اللہ کی طرف ملتفت ہو جاتا ہے، اس لیے بندہ ہر دم محتاج ہے کہ وہ اپنے عقیدہ توحید کو شرک کی آلائشوں سے پاک کرتا رہے۔

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما اس آیت کی تفسیر میں کہتے ہیں کہ ”ہم تیری توحید بیان کرتے ہیں، اے ہمارے رب! اور تجھ ہی سے ڈرتے ہیں، اور تجھ ہی سے مدد مانگتے ہیں، تیری بندگی کرنے کے لیے اور اپنے تمام اُمور میں۔“ ❶

اللہ تعالیٰ نے تمام انبیاء و رسل علیہم السلام کو اسی توحید الوہیت کی دعوت کو عام کرنے کے لیے مبعوث فرمایا، صحیفے اور کتابیں نازل فرمائیں۔

ان سب کا ایک ہی پیغام تھا کہ اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی معبود نہیں، اس لیے صرف اسی کی عبادت ہونی چاہیے۔ اس حقیقت کو اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم کے کئی مقامات پر بیان کیا ہے۔ انہی میں سے سورۃ الزخرف کی آیت ہے:

﴿وَسَأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجْعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ﴾ (الزخرف: ۴۵)

”اور آپ ہمارے اُن رسولوں سے پوچھ لیجئے جنہیں ہم نے آپ سے پہلے بھیجا تھا، کیا ہم نے رحمن کے علاوہ دوسرے معبود بنائے ہیں جن کی عبادت کی جائے۔“

اشکال اور اس کا ازالہ:

اشکال: بعض لوگوں کا عقیدہ ہے کہ نبی کریم ﷺ سے کہا گیا کہ آپ گزشتہ انبیاء سے پوچھ لیجئے، لہذا انبیاء زندہ ہیں، حاضر و ناظر ہیں، تبھی تو آپ سے یہ خطاب ہوا۔

ازالہ: اس کا یہ مطلب قطعاً نہیں، بلکہ نبی کریم ﷺ سے یہ جو کہا گیا ہے کہ آپ گزشتہ انبیاء سے پوچھ لیجئے، تو اس سے مقصود تورات و انجیل کا علم رکھنے والے مومنوں سے

پوچھنا ہے اس لیے کہ ان سے پوچھنا گویا ان انبیاء سے پوچھنا ہے جن پر وہ کتابیں نازل ہوئی تھیں۔

قارئین کرام! یہ ایک جملہ معترضہ تھا، اب سورۃ النحل کی آیت پر غور فرمائیں:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۚ﴾

(النحل: ۳۶)

”اور ہم نے ہر گروہ کے پاس اس پیغام کے ساتھ رسول بھیجا کہ لوگو! اللہ کی عبادت کرو، اور شیطان اور بتوں کی عبادت سے بچتے رہو۔“

الغرض ان آیات میں یہی بات بیان کی گئی ہے کہ تمام انبیاء کی بعثت کا مقصد ابن آدم کو یہ تعلیم دینی تھی کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں، اور صرف وہی ہر قسم کی عبادت کا مستحق ہے۔



۳۔ توحید اسماء و صفات

آیا ہے وقت نازک غفلت میں ہے زمانہ
کوئی نہیں سناتا توحید کا ترانہ

توحید کی تیسری قسم، توحید اسماء و صفات ہے۔ اس سے مراد یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے، یا نبی کریم ﷺ نے اللہ عز و جل کے جو اوصاف بیان فرمائے ہیں، ان پر ایمان لایا جائے اور انہیں بلا تکلیف و تمثیل اور بلا تحریف و تعطیل مان لیا جائے۔ جیسا کہ فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿وَلِلّٰهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰی فَادْعُوْهُ بِهَا﴾ (الاعراف: ۱۸۰)

”اور اللہ کے بہت ہی اچھے نام ہیں، پس تم لوگ اسے انہی ناموں کے ذریعے پکارو۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوْ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۚ اَيُّمَا مَا تَدْعُوْا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰی﴾

(بنی اسرائیل: ۱۱۰)

”آپ کہہ دیجئے کہ تم لوگ اللہ کو اللہ کے نام سے پکارو یا رحمن کے نام سے پکارو، جس نام سے چاہو اسے پکارو، تمام بہترین نام اسی کے لیے ہیں۔“

نیز ارشاد فرمایا:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ﴾ (الشوری: ۱۱)

”کوئی چیز اس کے مانند نہیں اور وہ خوب سننے والا، دیکھنے والا ہے۔“

اسماء و صفات کے متعلق چند اہم قواعد اور بنیادی اصول

پہلا قاعدہ:

اللہ تعالیٰ کے اسماء و صفات کے متعلق کتاب و سنت میں وارد نصوص کو ان کی ظاہری دلالت پر باقی رکھا جائے گا، اور کسی قسم کے تغیر یا تبدیلی کی جسارت نہ کی جائے، اور معنی ظاہر کو تبدیل کرنا، اللہ تعالیٰ پر بلا علم بات کرنے کے مترادف ہوگا، جو کہ شرعی طور پر حرام ہے، فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ (الأعراف: ۳۳)

”آپ کہئے کہ میرے رب نے تمام ظاہر و پوشیدہ بدکاریوں کو، اور گناہ اور ناحق سرکشی کو حرام کر دیا ہے، اور یہ (بھی حرام کر دیا ہے) کہ تم لوگ اللہ کا شریک ایسی چیزوں کو ٹھہراؤ جن کی عبادت کی اللہ نے کوئی دلیل نہیں نازل کی ہے، اور یہ بھی کہ تم اللہ کے بارے میں ایسی باتیں کرو جن کا تمہیں علم نہیں۔“

مثلاً اللہ رب العزت کے لئے دو ہاتھ ثابت ہیں۔ (المائدہ: ۶۴) لہذا انہیں اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت کرنا واجب ہے۔ اب اگر کوئی شخص یہ کہے کہ یہاں ہاتھوں سے مراد قوت ہے، تو اس نے اللہ تعالیٰ کے کلام کو اس کے ظاہر معنی سے پھیر دیا ہے، اس نے تاویل کی ہے، اور ایسا کرنا اللہ تعالیٰ پر قولِ بلا علم کی جسارت کرنا ہے، جو کہ حرام ہے۔

دوسرا قاعدہ:

اس قاعدہ کے تحت چند فروعات ہیں جن کے بیان سے پورا قاعدہ سمجھ آ جائے گا۔

(۱) اللہ تعالیٰ کے تمام نام ”حسنیٰ“ غایت درجہ اچھے اور پیارے ہی پیارے ہیں، اس کی وجہ

یہ ہے کہ یہ سارے کے سارے نام اپنے اندر کوئی نہ کوئی صفت کاملہ لئے ہوئے ہیں، اور ان تمام صفات میں سے کسی بھی صفت میں کسی بھی قسم کا کوئی نقص اور عیب نہیں ہے۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿قُلْ اَدْعُوا اللّٰهَ اَوْ اَدْعُوا الرَّحْمٰنَ ۚ اَيَّٰمًا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی ۝﴾

(بنی اسرائیل: ۱۱۰)

”آپ کہہ دیجئے کہ تم لوگ اللہ کو اللہ کے نام سے پکارو یا رحمن کے نام سے پکارو، جس نام سے چاہو اسے پکارو، تمام بہترین اور اچھے نام اسی کے لئے ہیں۔“

مذکورہ آیت کریمہ میں اللہ عزوجل کے پیارے اسماء میں سے ”الرحمن“ وارد ہوا ہے، جو ایک انتہائی پیاری صفت ”وسیع رحمت“ پر مشتمل ہے۔

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَاللّٰهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی فَادْعُوْهُ بِهَا ۚ وَذُرُّوْا الَّذِیْنَ یُّجَدُّوْنَ فِیْ

اَسْمَائِہٖ ۚ سَیُجْزَوْنَ مَا کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝﴾ (الاعراف: ۱۸۰)

”اور اللہ کے بہت ہی اچھے نام ہیں، پس تم لوگ اسے انہی ناموں کے ذریعہ پکارو اور ان لوگوں سے برطرف ہو جاؤ جو اس کے ناموں کو بگاڑتے ہیں (اس کے غلط معنی بیان کرتے ہیں) اور انہیں عنقریب ان کے کیے کی سزا دی جائے گی۔“

چنانچہ علامہ ابن قیم رحمہ اللہ اسی طرح فرماتے ہیں:

((اِنَّ اَسْمَاءَ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی دَلَالَةٌ عَلٰی صِفَاتِ کَمَالِہٖ فَہِیَ مُشْتَقَّةٌ مِّنَ الصِّفَاتِ فَہِیَ اَسْمَاءٌ وَہِیَ اَوْصَافٌ وَبِذٰلِکَ کَانَ حَسَنٌ اِذْ لَوْ کَانَ اَلْفَاظًا لَا مَعَانِیَ فِیْہَا لَمْ تَكُنْ حُسْنٰی وَلَا کَانَ دَلَالَةً عَلٰی مَدْحٍ وَلَا کَمَالٍ ۝)) ❶

”بے شک اللہ تبارک و تعالیٰ کے اسماء اس کی کمال صفات پر دلالت کرتے ہیں، تو یہ مشتق ہیں صفات سے، پس یہ اسماء ہیں اور وہ (صفات) اوصاف ہیں، لہذا یہ حسنیٰ ہیں، اگر یہ محض بلا معانی الفاظ ہوتے تو حسنیٰ نہ ہوتے اور نہ ہی ان میں مدح اور کمال پر دلالت ہوتی۔“

نیز علامہ ابن قیم رحمہ اللہ قصیدہ نونیہ میں فرماتے ہیں:

أَسْمَاءُ هَ أَوصَافُ مَدَحٍ كُلُّهَا
مُشْتَقَّةٌ قَدْ حَمَلْنَ لِمَعَانٍ
إِيَّاكَ وَالْحَادَ فِيهَا إِنَّهُ
كُفِرَ مَعَاذَ اللَّهِ مِنْ كُفْرَانٍ ❶

”اس (اللہ تعالیٰ) کے تمام اسماء مدح کے اوصاف ہیں، مشتق ہیں اور کئی معانی پر محمول ہیں۔ ان ناموں میں الحاد سے اپنے آپ کو بچاؤ، یہ کفر ہے اور کفر سے اللہ کی پناہ۔“

(۲) اور اللہ تعالیٰ کے اسماء کسی معین عدد میں محصور نہیں ہیں، اس کی دلیل رسول اللہ ﷺ

کا وہ فرمان ہے، جس میں آپ ﷺ دعا فرمایا کرتے تھے:

((أَسْأَلُكَ اللَّهُمَّ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ أَوْ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ)) ❷

”اے اللہ! میں تجھ سے تیرے ہر نام کے واسطے سے سوال کرتا ہوں، جو بھی نام تو نے اپنی ذات کے رکھے، یا جو نام تو نے اپنی کتاب میں اتارے، یا جو نام تو

❶ القصيدة النونية، ص : ۱۵۴.

❷ مسند أحمد : ۴۵۲، ۳۹۴/۱ - صحيح ابن حبان، رقم : ۲۳۷۲ - مستدرک حاکم : ۵۱۹/۱ -

سلسلة الصحيحة میں برقم : ۱۹۹ -

نے اپنی کسی مخلوق کو تعلیم فرمادیئے، یا جو نام تو نے اپنے خزانہ غیب میں محفوظ فرمادیئے ہیں۔“

اور یاد رہے کہ جو اسماء اللہ اس کے خزانہ غیب میں ہیں، ان کا ہمارے لئے حصہ و احاطہ ناممکن ہے۔

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكَفَيْتُ رَبِّي لِنَفْعِ الْبَحْرِ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَتُ رَبِّي وَكَوْجُنُتًا بِثَلَاثِ مَدَدًا ۝﴾ (الكهف : ۱۰۹)

”آپ کہیے کہ اگر میرے رب کے کلمات لکھنے کے لیے سارا سمندر روشنائی بن جائے، تو میرے رب کے کلمات ختم ہونے سے پہلے سمندر خشک ہو جائے گا۔ چاہے مدد کے لیے ہم اس جیسا اور سمندر لے آئیں۔“

اس کے ساتھ ساتھ رسول اللہ ﷺ کا ایک اور فرمان ملاحظہ فرمائیے گا، چنانچہ سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((إِنَّ لِلَّهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا، مِائَةً إِلَّا وَاحِدًا، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ.))^①

”یقیناً اللہ تعالیٰ کے ننانوے نام ہیں، یعنی ایک کم سو (۱۰۰) جس نے ان کا احصاء کیا وہ جنت میں داخل ہوگا۔“

فائدہ:..... (۱) حدیث میں وارد کلمہ ”إحصاء“ کا معنی پڑھنا، سمجھنا، یاد کرنا اور ان کے مطابق عقیدہ بنانا ہے۔

فائدہ:..... (۲) یہ روایت مذکورہ روایت کے متعارض نہیں ہے جیسا کہ ظاہر سے معلوم ہے، کیونکہ اس حدیث کا معنی ہے کہ ”اللہ تعالیٰ کے جملہ ناموں میں سے صرف ننانوے (۹۹)

① صحیح بخاری، کتاب الشروط، رقم: ۲۷۳۶ و کتاب الدعوات، رقم: ۶۴۱۰۔ صحیح مسلم،

کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۲۶۷۶/۶۔

نام یاد کرنے والا اور ان کا احصاء کرنے والا جنتی ہے۔“

یہ معنی نہیں کہ اللہ تعالیٰ کے کل نام ننانوے (۹۹) ہی ہیں، اور ان کے علاوہ اس کا کوئی نام نہیں۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ رقمطراز ہیں:

((وَقَدْ اخْتَلَفَ فِي هَذَا الْعَدَدِ هَلِ الْمُرَادُ بِهِ حَصْرُ الْأَسْمَاءِ الْحُسْنَىٰ فِي هَذِهِ الْعِدَّةِ أَوْ أَنَّهَا أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَكِنْ اخْتَصَّتْ هَذِهِ بِأَنَّ مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ؟ فَذَهَبَ الْجُمْهُورُ إِلَى الثَّانِي.))^①

”اس عدد کے بارے میں اختلاف ہے کہ اس عدد سے مقصود اسماءِ حسنیٰ کو اس (ننانوے) کی تعداد میں منحصر کرنا ہے یا اسماءِ حسنیٰ ویسے تو بہت زیادہ ہیں لیکن اس تعداد کو اس لیے خاص کیا گیا ہے کہ جو ننانوے کا احصاء کرے گا تو وہ جنت میں داخل ہوگا؟ جمہور دوسرے قول کی طرف گئے ہیں۔“

امام نووی رحمہ اللہ نے اس بات پر علماء کا اتفاق نقل کیا ہے کہ اسماءِ حسنیٰ ننانوے کی تعداد میں منحصر نہیں ہیں، چنانچہ وہ لکھتے ہیں:

((وَاتَّفَقَ الْعُلَمَاءُ عَلَى أَنَّ هَذَا الْحَدِيثَ لَيْسَ فِيهِ حَصْرٌ لِأَسْمَائِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى فَلَيْسَ مَعْنَاهُ أَنَّهُ لَيْسَ لَهُ أَسْمَاءٌ غَيْرُ هَذِهِ التِّسْعَةِ وَالتِّسْعِينَ وَإِنَّمَا مَقْصُودُ الْحَدِيثِ أَنَّ هَذِهِ التِّسْعَةَ وَالتِّسْعِينَ مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ فَلِأَمْرٍ أَدْلَى الْإِخْبَارِ عَنْ دُخُولِ الْجَنَّةِ بِأَحْصَائِهَا لَا الْإِخْبَارُ بِحَصْرِ الْأَسْمَاءِ.))^②

”اہل علم کا اس بات پر اتفاق ہے کہ اللہ سبحانہ و تعالیٰ کے اسماء کے لیے اس

① فتح الباری : ۲۲۳/۱۱۔

② شرح مسلم للنووی : ۵/۷۔

حدیث میں کوئی حصر نہیں، اس حدیث کا یہ معنی نہیں کہ ان ننانوے ناموں کے علاوہ اللہ تعالیٰ کے اور نام نہیں ہیں، بلکہ اس سے مقصود یہ ہے کہ جو شخص ان ننانوے اسماء کا احصاء کرے گا وہ جنت میں داخل ہوگا، لہذا اس حدیث سے ان اسماء کے احصاء سے جنت میں داخلے کی خبر دینا مراد ہے نہ کہ اسماءِ حسنیٰ کے حصر کی خبر دینا۔“

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ حدیث ترمذی پر بحث کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:
 ((ثُمَّ لِيُعْلَمَ أَنَّ الْأَسْمَاءَ الْحُسْنَى غَيْرُ مُنْحَصَرَةٍ فِي تِسْعَةٍ وَ تِسْعِينَ.))^①

”یہ بات معلوم ہونی چاہیے کہ اسماءِ حسنیٰ ننانوے کی تعداد میں منحصر نہیں۔“
سبب اختلاف:

اس اختلاف کی ویسے تو کئی وجوہات ہیں مگر ہم صرف دو اہم وجوہات پر اکتفا کرتے ہیں:

۱۔ ایک وجہ تو یہ ہے کہ جن احادیث میں اسماءِ حسنیٰ کا تعین آیا ہے وہ باعتبارِ سند ضعیف ہیں۔!

۲۔ اسماءِ حسنیٰ کی تعیین والی احادیث میں بالخصوص بحوالہ ترمذی روایت (جو کہ ضعف کے باوجود دیگر روایات کے بالمقابل سب سے زیادہ بہتر ہے) قرآن کریم میں وارد شدہ اسماء کا عدم استیعاب ہے، مقصد یہ ہے کہ جامع ترمذی کی روایت کے علاوہ تعیین اسماءِ حسنیٰ کی دیگر تمام احادیث سنن ترمذی کی روایت کے مقابلہ میں زیادہ ضعیف ہیں، جب کہ سنن ترمذی کی روایت میں بعض ایسے اسماءِ حسنیٰ کا ذکر نہیں جن کا ذکر قرآن میں آیا ہے، مثلاً:

رَبُّ، أَحَدٌ، مَلِيكٌ، حَفِيٌّ، غَالِبٌ، قَاهِرٌ، فَاطِرٌ، كَفِيْلٌ، خَلَّاقٌ، مُحِيطٌ،

① تفسیر ابن کثیر: ۲/۲۶۹۔

قَدِيرٌ، كَافِيٌّ، شَاكِرٌ اور غَافِرٌ وغیرہ جن کی تفصیل ان شاء اللہ بعد میں آئے گی۔

مذکورہ اسماءِ حسنیٰ میں سے اگرچہ بعض دوسری کتب حدیث مثلاً: سنن ابن ماجہ، مستدرک حاکم وغیرہ میں مروی ہیں، مگر یہ روایات سنداً ضعیف اور غیر ثابت ہیں۔

باقی رہا تعین اسماءِ حسنیٰ کی احادیث کی اسانید اور طرق کی تفصیل تو وہ درج ذیل ہے۔
تعین اسماءِ حسنیٰ کی حدیث جو کہ سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے، اس کے تین طرق ہیں:

۱۔ ایک سنن ترمذی کی روایت ہے جو ولید بن مسلم حدثنا شعیب بن ابی حمزہ عن ابی الزناد عن الاعرج عن ابی ہریرۃ مروی ہے۔^①

۲۔ دوسری روایت سنن ابن ماجہ کی ہے، جو عبد الملک بن محمد صنعانی حدثنا ابو المنذر زھیر بن محمد تمیمی حدثنا موسیٰ بن عقبہ حدثنی عبد الرحمن الاعرج عن ابی ہریرۃ مروی ہے۔^②

۳۔ تیسری روایت مستدرک حاکم کی ہے جو عبد العزیز بن حصین بن ترجمان ، ثنا ایوب السخثانی و هشام بن حسان عن محمد بن سیرین عن ابی ہریرۃ مروی ہے۔^③

سنن ترمذی کی روایت میں اسماءِ حسنیٰ کی تفصیل یہ ہے:

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

الْمَلِكُ	الْقُدُّوسُ	السَّلَامُ	الْمُؤْمِنُ	الْمُهَيِّمُ
الْعَزِيزُ	الْجَبَّارُ	الْمُتَكَبِّرُ	الْخَالِقُ	الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ	الْغَفَّارُ	الْقَهَّارُ	الْوَهَّابُ	الرَّزَّاقُ
الْفَتَّاحُ	الْعَلِيمُ	الْقَابِضُ	الْبَاسِطُ	الْخَافِضُ
الرَّافِعُ	الْمُعِزُّ	الْمُذِلُّ	السَّمِيعُ	الْبَصِيرُ

① ملاحظہ ہو: سنن ترمذی، رقم الحدیث: ۳۵۰۷۔

② ملاحظہ ہو: سنن ابن ماجہ، رقم الحدیث: ۳۸۶۱۔ ③ ملاحظہ ہو: المستدرک، ج: ۱، ص: ۶۳۔

الْحَكَمُ	الْعَدْلُ	اللَّطِيفُ	الْخَيْرُ	الْحَلِيمُ
الْعَظِيمُ	الْغَفُورُ	الشَّكُورُ	الْعَلِيُّ	الْكَبِيرُ
الْحَفِیْظُ	الْمُقِیْتُ	الْحَسِیْبُ	الْجَلِیْلُ	الْكَرِیْمُ
الرَّقِیْبُ	الْمُحِیْبُ	الْوَاسِعُ	الْحَكِیْمُ	الْوَدُودُ
الْمَحِیْدُ	الْبَاعِثُ	الشَّهِیْدُ	الْحَقُّ	الْوَكِیْلُ
الْقَوِیُّ	الْمَتِیْنُ	الْوَلِیُّ	الْحَمِیْدُ	الْمُحْصِیُّ
الْمُبْدِیُّ	الْمُعِیْدُ	الْمُحِیُّ	الْمُمِیْتُ	الْحَىُّ
الْقِیُومُ	الْوَاحِدُ	الْمَاجِدُ	الْوَاحِدُ	الْأَحَدُ
الصَّمَدُ	الْقَادِرُ	الْمُقْتَدِرُ	الْمُقَدِّمُ	الْمُؤَخِّرُ
الْأَوَّلُ	الْآخِرُ	الظَّاهِرُ	الْبَاطِنُ	الْوَالِیُّ
الْمُتَعَالِیُّ	الْبَرُّ	التَّوَابُ	الْمُنْتَقِمُ	الْعَفُوُّ
الرَّؤُوفُ	مَالِكُ الْمُلْكِ	ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ	الْمُقْسِطُ	
الْحَامِعُ	الْغَنِيُّ	الْمُغْنِیُّ	الْمَانِعُ	الضَّارُّ
النَّافِعُ	النُّورُ	الْهَادِیُّ	الْبَدِیْعُ	الْبَاقِیُّ
الْوَارِثُ	الرَّشِیْدُ	الصَّبُورُ ^①		

سنن ابن ماجہ میں اسماء حسنیٰ کی ترتیب دوسری ہے، اس میں چند اسماء حسنیٰ کا اضافہ ہے

جو کہ یہ ہیں:

الْبَارُّ	الْجَمِیْلُ	الْقَاهِرُ	الْقَرِیْبُ	الرَّاشِدُ
الرَّبُّ	الْمِیْنُ	الْبُرْهَانُ	الشَّدِیْدُ	الْوَاقِیُّ

① سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الرقم: ۳۵۰۷ واللفظ له. السنن الكبرى للبيهقي، كتاب

الايمان، باب أسماء الله عز وجل ثناؤه - صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الأذكار، الرقم: ۸۰۵۔

الجامع لشعب الايمان، فصل في معرفة الله عز وجل و معرفة صفاته و أسمائه: ۱۰۱/۱۔

ذُو الْقُوَّةِ	الْقَائِمُ	الدَّائِمُ	الْفَاطِرُ	السَّامِعُ
الْمُعْطَى	الْكَافِي	الْأَبَدُ	الْعَالِمُ	الصَّادِقُ
الْمُنِيرُ	التَّامُ	الْقَدِيمُ	الْوَثَرُ	

متدرک حاکم کی روایت میں بھی ترتیب مختلف ہے، اس میں درج ذیل اسماء حسنیٰ کا

مزید اضافہ ہے:

الْإِلَهُ	الْحَنَّانُ	الْمَنَّانُ	الْمُغِيثُ	الْمَوْلَى
النَّصِيرُ	الْمَلِيكُ	الْأَكْرَمُ	الْمُدَبِّرُ	الْقَدِيرُ
الشَّاکِرُ	الرَّفِيعُ	ذُو الطَّوْلِ	ذُو الْمَعَارِجِ	ذُو الْفَضْلِ
الْخَلَّاقُ	الْكُفَيْلُ			

ان مذکورہ روایات میں سے سنن ابن ماجہ کی حدیث کی سند میں عبدالملک بن محمد صنعانی

متکلم فیہ ہے۔ امام ذہبی رحمہ اللہ نے اسے ”المغنی فی الضعفاء“^① میں ذکر کیا ہے اور

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں: ”لین الحديث“^②

امام ابن ابی حاتم رحمہ اللہ فرماتے ہیں: ”لیس بقوی“^③

متدرک حاکم کی روایت میں عبدالعزیز حصین بن ترجمان سخت مجروح راوی ہے۔

اگرچہ امام حاکم رحمہ اللہ نے اس کی توثیق کی ہے مگر دیگر فن رجال کے محدثین کے عدم متابعت کی بنا پر امام حاکم رحمہ اللہ کی توثیق غیر معتبر ہے۔

چنانچہ اس عبدالعزیز بن حصین کے متعلق علامہ مبارکپوری رحمہ اللہ محدثین کے اقوال یوں

نقل کرتے ہیں:

((قَالَ الْحَاكِمُ: عَبْدُ الْعَزِيزِ ثِقَّةٌ، قَالَ الْحَافِظُ: بَلْ مُتَّفَقٌ عَلَى

① المغنی فی الضعفاء: ۱۴/۲.

② تقریب التہذیب: ۵۲۲/۱.

③ میزان الاعتدال: ۵۱۲/۲، الرقم: ۵۶۷۰.

ضَعْفُهُ وَهَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَابْنُ مَعِينٍ وَقَالَ الْبَيْهَقِيُّ: هُوَ ضَعِيفٌ عِنْدَ أَهْلِ النَّقْلِ. ((❶

”امام حاکم نے فرمایا: عبدالعزیز ثقفی راوی ہے۔ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے فرمایا: بلکہ اس کے ضعف پر اتفاق ہے۔ امام بخاری، مسلم اور ابن معین رحمہ اللہ نے اس کو واہی قرار دیا ہے۔ امام بیہقی رحمہ اللہ نے کہا ہے کہ محدثین کے ہاں وہ ضعیف راوی ہے۔“

سنن ترمذی کی روایت کو خود امام ترمذی رحمہ اللہ نے کہا ضعیف ہے۔ چنانچہ وہ مندرجہ بالا روایت نقل کرنے کے بعد اس پر جرح کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

((وَقَدْ رَوَى آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ هَذَا الْحَدِيثَ بِإِسْنَادٍ غَيْرِ هَذَا عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَذَكَرَ فِيهِ الْأَسْمَاءُ وَلَيْسَ إِسْنَادٌ صَحِيحٌ.)) ❷

”اور ابن آدم بن ابی ایاس نے اس حدیث کو کسی دوسری سند سے ابو ہریرہ کے واسطے سے رسول اللہ ﷺ سے روایت کیا ہے اور اس میں اسماء کو ذکر کیا مگر وہ سند بھی صحیح نہیں ہے۔“

اسماء حسنیٰ کی تعیین کے بارے میں جس قدر احادیث ہیں ان میں ترمذی کی روایت ضعف کے باوجود قدرے بہتر طریق سے مروی ہے۔ چنانچہ علامہ نجدی اس روایت پر گفتگو کرتے ہوئے رقم طراز ہیں:

((وَهَذِهِ الطَّرِيقُ هِيَ أَحْسَنُ الطَّرِيقِ عَلَى ضَعْفِ فِيهَا.)) ❸

”یعنی تمام سندوں میں یہ سند ضعف کے باوجود بہتر ہے۔“

❶ تحفة الأحوذی: ۴۹۰/۹.

❷ سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب: ۸۳.

❸ النهج الاسمی: ۵۸/۱.

چنانچہ حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ ترمذی کی سابق حدیث نقل کرنے کے بعد رقم طراز ہیں:

((وَالَّذِي عَوَّلَ عَلَيْهِ جَمَاعَةٌ مِّنَ الْحَفَاطِ إِنَّ سَرْدَ الْأَسْمَاءِ فِي هَذَا الْحَدِيثِ مُدْرَجٌ فِيهِ وَإِنَّمَا ذَلِكَ كَمَا رَوَاهُ الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ وَعَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مُحَمَّدٍ الصَّنْعَانِيُّ عَنْ زُهَيْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ أَنَّهُ بَلَغَهُ عَنْ غَيْرٍ وَاحِدٍ مِّنْ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّهُمْ قَالُوا ذَلِكَ أَيْ أَنَّهُمْ جَمَعُوهَا مِنَ الْقُرْآنِ كَمَا رَوَى عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَسُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ وَابْنِ زَيْدٍ اللَّغَوِيِّ . وَاللَّهُ أَعْلَمُ))

”حفاظ محدثین کی ایک جماعت کے ہاں معتبر بات یہ ہے کہ اس حدیث میں اسماء حسنیٰ کی تعین مدرج ہے اس کی دلیل یہ ہے کہ ولید بن مسلم اور عبد الملک بن محمد صنعانی زہیر بن محمد سے نقل کرتے ہیں کہ انہیں متعدد اہل علم سے یہ بات پہنچی ہے کہ وہ کہتے ہیں کہ انہوں نے یہ اسماء حسنیٰ قرآن سے جمع کیے ہیں جیسا کہ جعفر بن محمد اور سفیان بن عیینہ اور ابوزید لغوی سے مروی ہے۔ واللہ اعلم۔“

حالانکہ ترمذی کی روایت میں ستائیس (۲۷) اسماء ایسے ہیں جو قرآن مجید میں نہیں، البتہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے ان ستائیس (۲۷) کے بدلے میں ستائیس (۲۷) نام اور قرآن سے ثابت کیے ہیں اسی طرح انہوں نے پورے ننانوے نام قرآن سے ثابت کیے ہیں۔ ترمذی کی حدیث میں جو ستائیس (۲۷) نام بعینہ قرآن میں موجود نہیں وہ درج ذیل ہیں:

الْقَابِضُ	الْبَاسِطُ	الْخَافِضُ	الرَّافِعُ	الْمُعِزُّ
الْمُذِلُّ	الْعَدْلُ	الْجَلِيلُ	الْبَاسِطُ	الْمُخْصِي
الْمُبْدِي	الْمُعِيدُ	الْوَاحِدُ	الْمَاجِدُ	الْمُقَدِّمُ
الْمُؤَخِّرُ	الْوَالِي	ذُو الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ	الْمُقْسِطُ	
الْمُعْنِي	الْمَانِعُ	الضَّارُّ	النَّافِعُ	الْبَاقِي

الْمُمِيتُ ①

الصَّبُورُ

الرَّشِيدُ

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے ان کے بدلے میں قرآن سے جو ستائیں نام ذکر کیے ہیں، وہ

یہ ہیں:

الرَّبُّ	الْإِلَٰهَ	الْمُحِيطُ	الْقَدِيرُ	الْكَافِيُ
الشَّاکِرُ	الشَّدِيدُ	الْقَائِمُ	الْحَاكِمُ	الْفَاطِرُ
الْغَافِرُ	الْقَاهِرُ	الْمَوْلَى	النَّصِيرُ	الْغَالِبُ
الْخَالِقُ	الرَّفِيعُ	الْمَلِكُ	الْكَفِيلُ	الْخَلَّاقُ
الْأَكْرَمُ	الْأَعْلَى	الْمُيِّنُ	الْحَفِيُّ	الْقَرِيبُ
الْأَحَدُ	الْحَافِظُ ②			

اسی طرح حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی تحقیق کے مطابق پورے ننانوے اسماءِ حسنیٰ قرآن مجید

میں موجود ہیں جن کی تفصیل یہ ہے:

اللَّهُ	الرَّحْمَنُ ①	الرَّحِيمُ	الْمَلِكُ	الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ	الْمُؤْمِنُ	الْمُهَيَّمِنُ	الْعَزِيزُ	الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ	الْخَالِقُ	الْبَارِئُ	الْمُصَوِّرُ	الْغَفَّارُ
الْقَهَّارُ	التَّوَّابُ	الْوَهَّابُ	الرَّزَّاقُ	الْفَتَّاحُ
الْعَلِيمُ	الْحَلِيمُ	الْعَظِيمُ	الْوَاسِعُ	الْحَكِيمُ
الْحَيُّ	الْقَيُّومُ	السَّمِيعُ	الْبَصِيرُ	الْلَّطِيفُ
الْخَبِيرُ	الْعَلِيُّ	الْكَبِيرُ	الْمُحِيطُ	الْقَدِيرُ
الْمَوْلَى	النَّصِيرُ	الْكَرِيمُ	الرَّقِيبُ	الْقَرِيبُ
الْمُجِيبُ	الْوَكِيلُ	الْحَسِيبُ	الْحَفِيطُ	الْمُقِيتُ

① فتح الباری: ۱۱/۲۶۲.

② فتح الباری: ۱۱/۲۶۱.

الْوَدُودُ	الْمَجِيدُ	الْوَارِثُ	الشَّهِيدُ	الْوَلِيُّ
الْحَمِيدُ	الْحَقُّ	الْمُبِينُ	الْقَوِيُّ	الْمَتِينُ
الْغَنِيُّ	الْمَالِكُ	الشَّدِيدُ	الْقَادِرُ	الْمُقْتَدِرُ
الْقَاهِرُ	الْكَافِيُ	الشَّاكِرُ	الْمُسْتَعَانُ	الْفَاطِرُ
الْبَدِيعُ	الْغَافِرُ	الْأَوَّلُ	الْآخِرُ	الظَّاهِرُ
الْبَاطِنُ	الْكَفِيلُ	الْغَالِبُ	الْحَكَمُ	الْعَالِمُ
الْحَافِظُ	الْمُنْتَقِمُ	الْقَائِمُ	الْمُحْيِي	الْجَامِعُ
الْمَلِكُ	الْمُتَعَالَى	النُّورُ	الْهَادِيُ	الْغُفُورُ
الشَّكُورُ	الْعَفُوُّ	الرَّؤُفُ	الْأَكْرَمُ	الْأَعْلَى
الْبَرُّ	الْحَفِيُّ	الرَّبُّ	الْإِلَهُ	الْوَاحِدُ
الْأَحَدُ	الصَّمَدُ	لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ^①		

فائدہ:..... حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی تحقیق کے بموجب ”الخالق“ حدیث ترمذی میں

نہیں، (حالانکہ ترمذی کی روایت میں یہ اسم موجود ہے) شاید موصوف سے سہو ہوا ہے یا طباعت کی غلطی ہے، اسی طرح موصوف نے ”الحاکم“ کو ان ستائیس اسماء میں لائے ہیں جو قرآن میں موجود ہیں مگر تفصیلی ننانوے اسماء حسنی میں ”الحاکم“ کے بجائے ”المستعان“ ذکر کیا ہے۔ ایسے ہی ”ذی الجلال والاکرام“ قرآن مجید کی سورہ رحمن میں وارد ہوا ہے۔ ممکن ہے حافظ ابن حجر نے وہاں پر بجائے اسم کے صرف صفت شمار کیا ہو۔

علامہ محمد محمود نجہری نے درج ذیل آٹھ اسماء کو شامل کر کے ننانوے کی تکمیل کی ہے۔

الْمَالِكُ	الْخَالِقُ	الْعَلَامُ	الْحَاسِبُ	النَّاصِرُ
ذُو الْمَعَارِجِ	ذُو الْفَضْلِ	ذُو الطَّوْلِ ^②		

① فتح الباری: ۱۱/۲۶۳۔

② النهج الاسمی: ۲/۱۔

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ اور علامہ حمود نجدی حفظہ اللہ کے علاوہ بھی متعدد اہل علم نے اپنے علم و فہم اور تحقیق و تتبع سے اسماءِ حسنیٰ کو قرآن سے نکالا ہے، ہم نے صرف انہی اہل علم حضرات کی بیان کردہ تفصیل کے مطابق اسماءِ حسنیٰ کو نقل کر دیا ہے۔

آمد م بر سر مطلب:

اور یہ بات بھی یاد رہے کہ اللہ کے بعض نام مضاف ہو کر استعمال ہوتے ہیں، جیسا کہ ”مَالِكُ الْمَلِكِ“، ”أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ“ اور ”أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ“ وغیرہ۔^①

(۳) اللہ تعالیٰ کے تمام اسماءِ حسنیٰ توقیفی ہیں، جن کا اثبات قرآن و حدیث کی دلیل پر موقوف ہے، اس لئے اپنی عقل سے کسی نام کا اضافہ اور کمی نہیں کی جاسکتی، اور عقل اس کا ادراک بھی نہیں کر سکتی، لہذا اس سلسلہ میں نص شرعی پر ہی اکتفاء کیا جائے گا۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ﴾ (بنی اسرائیل: ۳۶)

”اور جس بات کا آپ کو علم نہ ہو اس کے پیچھے نہ لگئے۔“

امام رازی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((مَذْهَبُ أَصْحَابِنَا أَنَّهَا تَوْقِيفِيَّةٌ))^②

”ہمارے اصحاب کا مذہب یہ ہے کہ اسماءِ حسنیٰ توقیفی ہیں۔“

ابوالحسن قابلی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((أَسْمَاءُ اللَّهِ وَصِفَاتُهُ لَا تُعْلَمُ إِلَّا بِالتَّوْقِيفِ مِنَ الْكِتَابِ أَوِ

السُّنَّةِ أَوِ الْإِجْمَاعِ وَلَا يُدْخَلُ فِيهَا الْقِيَاسُ))^③

”اللہ تعالیٰ کے اسماء اور اس کی صفات کتاب و سنت یا اجماع سے توقیفاً معلوم

① تفصیل دیکھئے: القواعد المثلی فی صفات اللہ وأسمائه الحسنی، ص: ۱۶-۱۸.

② شرح اسماء اللہ، ص: ۳۶، بحوالہ النهج الأسمنی: ۴۶/۱.

③ فتح الباری: ۲۲۰/۱۱.

ہیں ان میں قیاس کا کوئی دخل نہیں۔“

(۴) اللہ تعالیٰ کے بعض نام غیر متعدی ہوتے ہیں، ان پر ایمان لانے کا معنی تب مکمل ہوتا

ہے جب آپ درج ذیل دو چیزوں کا اثبات کریں۔

☆ اللہ تعالیٰ کا ہر نام اس کی ذات پر دلالت کرتا ہے۔

☆ اور اللہ تعالیٰ کا ہر نام اس صفت پر دلالت کرتا ہے جو اس کے نام کے ضمن میں

موجود ہے۔

اور اگر وہ نام متعدی ہے تو اس پر ایمان لانے کا مفہوم تب مکمل ہوگا جب آپ مذکورہ دو

چیزوں کے ساتھ تیسری یہ چیز ثابت کریں کہ:

☆ اللہ تعالیٰ کا یہ نام متعدی ہونے کی وجہ سے اس کے اثر پر دلالت کرتا ہے، مثلاً صفت

”الرحمن“ ہے تو تسلیم کیا جائے کہ وہ اپنے جس بندے پر چاہے رحمت فرماتا ہے۔

تیسرا قاعدہ:

اللہ تعالیٰ کی صفات کے متعلق ہے، اس کا مکمل فہم حاصل کرنے کے لئے چند فروعات کا

سمجھنا ضروری ہے۔

پہلی فرع:

اللہ تعالیٰ کی تمام صفات کمال اور مدح پر مشتمل ہیں، ان میں کسی قسم کا کوئی عیب اور

نقص نہیں ہے، جیسے صفت ”الحیاء“، ”العلم“، ”القدرة“، ”السمع“،

”البصر“، ”الرحمة“، ”العزة“، ”الحکمة“، ”العلو“ اور ”العظمة“

وغیرہ ہیں۔

اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلٰی﴾ (النحل: ۶۰)

”اور اللہ کے لئے سب سے عمدہ اور اعلیٰ صفت ہے۔“

اور اللہ کے اسماء و صفات میں نقص بیان کرنے والوں کی قرآن مجید میں خود اللہ تعالیٰ

نے مذمت فرمائی ہے۔

﴿وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلَعْنُوا إِمَّا قَالُوا بَلْ يَدُ اللَّهِ مَبْسُوطَاتِنِ﴾ (المائدہ: ۶۴)

”اور یہود نے کہا کہ اللہ کا ہاتھ بندھا ہوا ہے، انہی کے ہاتھ (ان کی گردن کے ساتھ) باندھ دیئے گئے ہیں، اور اُن کے اس قول کی وجہ سے اُن پر لعنت بھیج دی گئی ہے، بلکہ اللہ کے دونوں ہاتھ کھلے ہیں۔“

چونکہ اللہ رب العزت کی ذات کامل واکمل ہے، اسی لئے اس کی ہر صفت کا کامل واکمل ہونا لازمی ہے۔ لہذا ہر وہ صفت جو کسی بھی اعتبار سے نقص وعیب پر دلالت کرتی ہو، وہ اللہ کے حق میں ممتنع ہے، جیسے صفت ”الموت“، ”الجهل“، ”النسيان“، ”العجز“، ”العمى“ اور ”الصم“ وغیرہ۔

بلکہ اس کا کسی صفت نقص سے متصف ہونا اس کی کمال ربوبیت کے منافی ہے۔

فائدہ: اور اگر کوئی صفت ایک لحاظ سے تو صفت کمال ہے لیکن ایک لحاظ سے صفت نقص ہے، تو اللہ تعالیٰ کے لئے نہ تو وہ مطلقاً ثابت ہوگی، اور نہ مطلقاً منقہ ہوگی، بلکہ اس صورت میں تفصیل کا پہلو مدنظر رکھا جائے گا، چنانچہ ایسی صفات کی حالت کمال اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت ہوگی، اور حالت نقص ممتنع ہوگی۔ جیسے صفت ”المکر“، ”الکید“، ”الخدع“ اور ”الخیانہ“ وغیرہ ہیں۔

یہ اور اس قسم کی تمام صفات اس صورت میں تو صفات کمال قرار پائیں گی جب مقابلہ مثل کے سیاق میں ہوں، کیونکہ اس صورت میں اس کا مطلب یہ ہوگا کہ اس صفت کو انجام دینے والا اپنے دشمن سے اس کے فعل کے مثل مقابلہ کرنے سے عاجز نہیں ہے۔ اور جب سیاق میں مقابلہ نہ ہو تو پھر یہ تمام صفات، صفات نقص ہیں۔ لہذا پہلی صورت میں یہ صفات اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت ہیں، اور دوسری صورت میں نہیں ہیں۔

درج ذیل اُمثلہ سے بات پوری طرح واضح ہو جاتی ہے:

☆ ﴿وَيَسْأَلُونَ وَيَسْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِيْنَ ۝﴾ (الأنفال: ۳۰)

”اور ادھر وہ اپنی سازش کر رہے تھے، اور ادھر اللہ اپنی تدبیر کر رہا تھا، اور اللہ سب سے بہتر تدبیر کرنے والا ہے۔“

☆ ﴿إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۖ وَأَكِيدُ كَيْدًا ۖ﴾ (الطارق: ۱۶، ۱۵)

”بے شک وہ (کفار) دواؤں میں ہیں، اور میں بھی چال چل رہا ہوں۔“

☆ ﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَدِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۖ﴾ (النساء: ۱۴۲)

”یقیناً منافق اللہ کو دھوکہ دینا چاہتے ہیں اور وہ انہیں دھوکے کی سزا دے گا۔“

☆ ﴿قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ۖ﴾ (البقرہ: ۱۵، ۱۴)

(البقرہ: ۱۵، ۱۴)

”(منافقین) کہتے ہیں کہ ہم تو تمہارے ساتھ ہیں، ہم تو صرف مسلمانوں کا

مذاق اُڑاتے رہتے ہیں، اللہ ان کو مذاق کی سزا دیتا ہے۔“

چنانچہ اگر آپ سے کوئی کہے کہ کیا اللہ تعالیٰ صفت ”المکر“، ”الخدع“ اور ”الکید“ سے متصف ہے، تو آپ جواباً نہ ”ہاں“ کہو، اور نہ ہی ”نا“ کہو۔ بلکہ یوں کہو کہ اللہ تعالیٰ اس شخص سے ”جیسے اس کی ذات کے لائق ہے“ معاملہ کر، خداع اور کید فرماتا ہے جو اس کا مستحق ہو۔ واللہ اعلم۔

اور اللہ نے ”صفت خیانت“ کو مقابلہ میں بھی اپنے لئے استعمال نہیں کیا، کیونکہ خیانت

اعتماد والی جگہ پر دھوکے کا نام ہے، جو کہ مطلقاً مذمت والی صفت ہے۔

☆ ﴿وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ

عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝﴾ (الأنفال: ۷۱)

”اور اگر وہ آپ سے خیانت کرنا چاہیں گے، تو وہ اس سے پہلے اللہ کے

ساتھ خیانت کر چکے ہیں، جس کی وجہ سے اس نے مومنوں کو ان پر مسلط کر دیا

تھا، اور اللہ بڑا علم والا، اور بڑی حکمتوں والا ہے۔“

غور فرمائیے گا ”انہوں نے اللہ سے خیانت کی ہے“ لیکن اس کے مقابلہ میں اللہ رب العزت نے یہ الفاظ استعمال فرمائے ہیں: ﴿فَاَمْكَنْ مِنْهُمْ﴾ ”پس اس نے مومنوں کو ان پر تسلط عطا فرمایا۔“

دوسری فرع:

اللہ تعالیٰ کی صفات دو قسموں پر ہیں: (۱) ثبوتیہ۔ (۲) سلبیہ۔

(۱) صفاتِ ثبوتیہ:

اللہ تعالیٰ کی وہ صفات ہیں جنہیں اللہ تعالیٰ نے اپنی ذات کے لئے ثابت فرمایا ہے جیسے صفت ”الحیۃ“، ”العلم“، ”القدرة“، ”استواء علی العرش“، ”نزول“، ”الوجه“ اور ”الیدین“ وغیرہ۔ پس ان صفات کو اللہ تعالیٰ کے لئے اس کے شایان شان ثابت کرنا انتہائی ضروری ہے، اور اس پر دلائل موجود ہیں۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا﴾ (النساء: ۱۳۶)

”اے ایمان والو! تم لوگ اللہ اور اس کے رسول پر اور اس کتاب پر جو اس نے اپنے رسول پر اتاری ہے، اور ان کتابوں پر جو اس نے پہلے اتاری تھیں اپنے ایمان میں قوت و ثبات پیدا کرو، اور جو شخص اللہ، اور اس کے فرشتوں، اور اس کی کتابوں، اور اس کے رسولوں، اور یومِ آخرت کا انکار کر دے گا، وہ گمراہی میں بہت دور چلا جائے گا۔“

یاد رہے کہ ایمان باللہ، ایمان بالصفات کو بھی شامل ہے اور اسی طرح ایمان بالکتاب ہر اس صفت پر ایمان کو بھی شامل ہے جو صفت کتاب اللہ میں آئی ہے۔

(۲) صفاتِ سلبیہ:

وہ صفات ہیں، جن کی اللہ تعالیٰ نے اپنی ذات سے نفی کر دی ہے۔
ان صفات کی اللہ تعالیٰ سے نفی کرنا اور ان کی ضد بدرجہ اکمل اس ذاتِ باری تعالیٰ کے لیے ثابت تسلیم کرنا انتہائی ضروری ہے، مثلاً: اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

وَتَوَكَّلْ عَلَى النَّجِيِّ الَّذِي لَا يَهُوتُ ﴿﴾ (الفرقان: ۵۸)

”اور آپ ہمیشہ زندہ رہنے والے پر بھروسہ کیجیے۔“

اب ضروری ہے کہ اللہ تعالیٰ سے موت کی نفی کی جائے، اور اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی ضروری ہے کہ موت کی ضد یعنی ”حیاء“ کی صفت کو اللہ کے لئے بوجہ اکمل ثابت و تسلیم کیا جائے۔
تیسری فرع:

صفاتِ ثبوتیہ کی دو قسمیں ہیں: (۱) ذاتیہ۔ (۲) فعلیہ۔

(۱) صفاتِ ذاتیہ:

اللہ تعالیٰ کی وہ صفات ہیں، جن سے وہ ہمیشہ سے اور ہمیشہ کے لئے متصف ہے، جیسے صفت ”سمع“ اور ”بصر“ وغیرہ۔

(۲) صفاتِ فعلیہ:

صفاتِ فعلیہ سے مراد وہ صفات ہیں، جن کا صدور اس کے ارادے پر موقوف ہے، چاہے تو وہ فعل انجام دے اور چاہے تو نہ دے۔ مثلاً صفت ”استواء علی العرش“ اور ”المجیء“ آنا وغیرہ ہیں۔

فائدہ: لیکن بعض اوقات اللہ تعالیٰ کی کوئی صفت ذاتی اور فعلی دونوں طرح سے ہوتی ہے، جیسے ”کلام“، اگر اس صفت کو باعتبار اصل دیکھا جائے تو یہ صفت ذاتی ہے، کیونکہ اللہ تعالیٰ ہمیشہ سے صفت کلام سے متصف ہے۔ اور ہمیشہ متصف رہے گا۔ لیکن کوئی کلام کرنے کے اعتبار سے یہ صفت فعلی ہے، کیونکہ اللہ تعالیٰ کا کوئی کلام فرمانا

اس کی مشیت اور ارادے پر موقوف ہے، چنانچہ وہ جب چاہے اور جو ارادہ فرمائے کلام فرماتا ہے۔

چوتھی فرع:

ان صفات کے متعلق تین بنیادی قواعد کا خیال رکھنا ضروری امر ہے۔

☆ کہ اللہ تعالیٰ کی تمام صفات حقیقی ہیں، ان کی تاویل نہ کی جائے، کیونکہ قاعدہ ہے: ((الْأَصْلُ فِي الْكَلَامِ الْحَقِيقَةُ وَلَا يُعَدَّلُ عَنْهُ إِلَّا بِدَلِيلٍ يَفْتَضِي ذَلِكَ.)) یعنی کلام کو اصل حقیقت پر محمول کیا جائے گا، اور اس حقیقت سے عدول کی متقاضی دلیل کے بغیر حقیقت سے عدول جائز نہیں ہے۔ یعنی صفات کو مانا جائے گا بلا تاویل۔

اہل تاویل نصوص صفات کے ظاہری معنی میں تحریف اور تبدیل کے مرتکب ہوتے ہیں۔ انہیں مؤولہ کہا جاتا ہے۔

☆ اللہ تعالیٰ کی کسی صفت کی تکلیف (کیفیت بیان کرنا) جائز نہیں۔“ یعنی صفات کو مانا جائے گا بلا تکلیف۔

فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿وَلَا يُجِبُّونَ بِهِ عِلْمًا ۖ﴾ (طہ: ۱۱۰)

”اور لوگوں کا علم اُس کا احاطہ نہیں کر سکتا۔

نیز فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿فَلَا تَضْبِرْ يُوَالِدُ الْأَمْتَالِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝﴾

(النحل: ۷۴)

”پس تم لوگ اللہ کے لیے مثالیں نہ بیان کرو، یقیناً اللہ جانتا ہے اور تم لوگ

(کچھ بھی) نہیں جانتے ہو۔“

☆ اللہ کی صفات، مخلوقات کی صفات کے مشابہ اور مماثل نہیں ہیں۔
اللہ کا ارشاد ہے:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ (الشورى : ۱۱)

”کوئی چیز اس کی مانند نہیں ہے۔“

اور سورۃ مریم میں ارشاد فرمایا:

﴿هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَيِّئًا﴾ (مریم : ۶۵)

”کیا آپ اس کا کوئی ہم نام جانتے ہیں؟“

چنانچہ اس آیت کی تفسیر بیان کرتے ہوئے حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ، سیدنا عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما کا قول نقل کرتے ہیں:

((عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ هَلْ تَعْلَمُ لِلرَّبِّ مَثَلًا أَوْ شَيْئًا.))^①

”سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے یہ معنی مروی ہے، کیا آپ اپنے رب کے مثل اور مشابہ کسی کو جانتے ہیں۔“

تمثیل اور تکلیف میں فرق:

تمثیل: سے مراد یہ ہے کہ کسی صفت کی اس کے مماثل کے ساتھ مقید کر کے کیفیت بیان کی جائے، مثلاً کوئی یوں کہے کہ اللہ کا ہاتھ انسان کے ہاتھ جیسا ہے۔

تکلیف: سے مراد یہ ہے کہ کسی صفت کی اس کے مماثل سے مقید کیے بغیر کیفیت بیان کی جائے، مثلاً کوئی شخص اللہ تعالیٰ کے ہاتھ کے لئے بغیر تشبیہ و تمثیل کے، کسی معین کیفیت کا تخیل کرے۔

چوتھا قاعدہ:

اللہ تعالیٰ کی صفات کی تعطیل:

(فَرَقَ ضَالَّهُ) معطلہ وغیرہ پر رد کیا جائے گا اور انکار نہ کیا جائے، بلکہ معطلہ

① تفسیر ابن کثیر : ۳/۱۳۸ - تفسیر طبری : ۸/۳۶۱، ۳۶۳۔

اللہ تعالیٰ کے کچھ اسماء و صفات کا انکار کرتے ہیں، اور نصوصِ صفات کے ظاہری معنی میں تحریف اور تبدل کے مرتکب ہوتے ہیں۔ انہیں معطلہ کہا جاتا ہے۔ ان پر رد کا طریقہ یہ ہے کہ ہم ان سے کہیں گے:

(۱) تمہارا یہ قول ظاہرِ نصوص کے خلاف ہے۔

(۲) طریقہ سلف کے خلاف ہے۔

(۳) تمہارے مذہب کی کسی صحیح دلیل سے تائید بھی نہیں ہوتی۔

بعض صفات میں ان کے رد کے لئے چوتھی وجہ یا اس سے زائد وجوہات بھی ممکن ہیں۔

اس بارے میں امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ کا قول یوں منقول ہے:

((وَلَا يُقَالُ إِنَّ يَدَهُ قُدْرَتُهُ أَوْ نِعْمَتُهُ لِأَنَّهُ فِيهِ إِبْطَالُ الصِّفَةِ وَهُوَ

قَوْلُ أَهْلِ الْقَدْرِ وَالْإِعْتِزَالِ وَلَكِنْ يَدُهُ صِفَتُهُ بَلَا كَيْفٍ .))^①

”یوں نہ کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ کے ”ید“ سے مراد قدرت یا نعمت ہے، کیونکہ اس

سے صفت کا بطلان لازم آتا ہے اور یہ قدر یوں (تقدیر کے منکر لوگوں) اور

معزولہ کا عقیدہ ہے، بلکہ ”ید“ سے اس کی بلا کیف صفت مراد ہے۔“



اسماء و صفات کے متعلق منہج سلف

اسماء و صفات کے متعلق منہج سلف یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کو بلا تاویل و تعطیل، بلا تمثیل، بلا تشبیہ اور بلا تکلیف ان تمام صفات سے متصف مانا جائے، جنہیں اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں اپنے لیے اور رسول کریم علیہ السلام نے احادیث میں اللہ تعالیٰ کے لیے ثابت کیا ہے۔ اثبات صفات میں تشبیہ، تمثیل، تکلیف اور تاویل و تعطیل کے مرتکب ہو کر قرآن و حدیث سے آگے نہ بڑھا جائے۔ اثبات صفات میں منہج سلف کا اصل قرآن مجید ہے۔ چنانچہ فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿وَاللَّهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِيَّ

أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۸۰﴾﴾ (الأعراف: ۱۸۰)

”اور اللہ کے بہت ہی اچھے نام ہیں، پس تم لوگ اسے انہی ناموں کے ذریعے

پکارو اور ان لوگوں سے برطرف ہو جاؤ جو اس کے ناموں کو بگاڑتے ہیں اور

انہیں ان کے کیے کی سزا دی جائے گی۔“

اس آیت کریمہ میں دو باتوں کی طرف اشارہ بلکہ صراحت ہے، ایک تو یہ کہ اللہ کے اسماء کے ساتھ اسے پکارا جائے، اور دوسری بات یہ کہ اس کے ناموں میں الحاد سے کام نہ لیا جائے، یعنی اُسے بدلانا نہ جائے جیسا کہ مشرکین نے اللہ سے ”لات“ عزیز سے ”عُزَّى“ اور منّان سے ”منّات“ بنا لیا تھا، اور نہ قرآن و سنت کی دلیل کے بغیر اللہ کے نئے نئے نام رکھے جائیں، جیسا کہ اہل فارس نے خدا، یزدان اور اہرمین اور ہندوؤں نے بھگوان اور ایشور اور انگریزوں نے گاڈ وغیرہ نام ایجاد کر لیے ہیں۔ اور نہ قرآن و سنت سے کوئی ثابت شدہ نام حذف کر دیا جائے۔ اسی طرح اللہ تعالیٰ کے ناموں کی تاویل کر کے ان کے ظاہری معانی بدل دیں، یا ان کا کوئی معنی ہی مراد نہ لینا، یا انہیں مخلوق کے ناموں کے ساتھ تشبیہ دینا، یہ سب

الحاد کی صورتیں ہیں۔

اور ایسے ہی فرمانِ باری تعالیٰ ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ (الشوری: ۱۱) میں ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ سے تشبیہ کی نفی اور ﴿وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ سے صفاتِ باری تعالیٰ کا اثبات ہوتا ہے۔

امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((لَا يُوصَفُ اللَّهُ إِلَّا بِمَا وَصَفَ بِهِ نَفْسَهُ أَوْ وَصَفَهُ بِهِ رَسُولُهُ ﷺ لَا يَتَجَاوَزُ الْقُرْآنُ وَالْحَدِيثُ)) ❶

”اللہ تعالیٰ کو صرف انہی صفات کے ساتھ متصف کیا جائے جن سے خود اس نے اپنے آپ کو یا اس کے رسول ﷺ نے اسے متصف کیا ہے، اور اس میں قرآن و حدیث سے تجاوز نہ کیا جائے۔“

علامہ ابن تیمیہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((وَ مَذْهَبُ السَّلَفِ: إِنَّهُمْ يَصِفُونَ اللَّهَ بِمَا وَصَفَ بِهِ نَفْسَهُ وَ بِمَا وَصَفَهُ بِهِ رَسُولُهُ مِنْ غَيْرِ تَحْرِيفٍ وَ بِلَا تَعْطِيلٍ وَ مِنْ غَيْرِ تَكْيِيفٍ وَ لَا تَمْثِيلٍ)) ❷

”اور سلف کا مذہب یہ ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ کو ان تمام صفات سے متصف کرتے ہیں جن سے اللہ تعالیٰ نے اپنے آپ کو اور رسول اللہ ﷺ نے اللہ تعالیٰ کو متصف کیا ہے بغیر تحریف و تعطیل اور بغیر تکلیف و تمثیل کے۔“

امام اوزاعی رحمہ اللہ سے مروی ہے، فرماتے ہیں:

((كُنَّا وَ التَّابِعُونَ مُتَوَافِرُونَ ، نَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَ جَلَّ فَوْقَ عَرْشِهِ وَ نُوْمِنُ بِمَا وَرَدَتْ بِهِ السُّنَّةُ مِنْ صِفَاتِهِ)) ❸

❶ مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ: ۲۶/۵۔ ❷ مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ: ۲۶/۵۔

❸ الأسماء والصفات للبيهقي، ص: ۴۰۸۔ مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ: ۱۸۳/۵۔

”ہم اور کثیر تعداد میں تابعین یہ کہتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ عرش کے اوپر ہے، اللہ

تعالیٰ کی ان صفات پر ہمارا ایمان ہے جو سنت سے ثابت ہے۔“

ابو مطیح بلخی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((سَأَلْتُ أَبَا حَنِيفَةَ عَمَّنْ يَقُولُ: لَا أَعْرِفُ رَبِّي فِي السَّمَاءِ أَوْ فِي الْأَرْضِ فَقَالَ: قَدْ كَفَرَ لَأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ ① وَ عَرْشُهُ فَوْقَ سَمَاوَاتِهِ فَقُلْتُ: إِنَّهُ يَقُولُ: أَقُولُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ، وَلَكِنْ قَالَ لَا يَدْرِي الْعَرْشَ فِي السَّمَاءِ أَوْ فِي الْأَرْضِ ، قَالَ: إِذَا أَنْكَرَ أَنَّهُ فِي السَّمَاءِ فَقَدْ كَفَرَ .)) ②

”میں نے امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ سے اس شخص کے بارے میں سوال کیا جو یہ کہتا ہے کہ میں اپنے رب کو آسمانوں میں جانتا ہوں اور نہ زمین میں؟ تو امام رحمہ اللہ نے ارشاد فرمایا: اس شخص نے کفر کیا، کیونکہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ ① ”رحمن عرش پر مستوی ہوا۔“ اور اللہ کا عرش اس کے آسمانوں کے اوپر ہے (شاگرد ابو مطیح کہتے ہیں) میں نے عرض کیا: وہ شخص کہتا ہے کہ میرا یہ عقیدہ ہے کہ اللہ عرش پر مستوی ہے، لیکن کہتا ہے کہ: یہ معلوم نہیں کہ عرش آسمان پر ہے یا زمین پر؟ امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ نے جواب دیا: اس شخص نے جب عرش کے آسمان پر ہونے کا انکار کیا ہے تو اس نے کفر کیا ہے۔“

امام مالک رحمہ اللہ سے پوچھا گیا کہ اللہ تعالیٰ کے فرمان: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ ② کا کیا معنی ہے؟ تو آپ نے جواباً ارشاد فرمایا:

((أَلَا سِتْوَاءُ مَعْلُومٌ وَالْكِيفِيَّةُ مَجْهُولٌ الْإِيْمَانُ بِهِ وَاجِبٌ .)) ③

”استواء [بلندی رحمان] معلوم ہے، اس کی کیفیت نامعلوم ہے اور اس پر ایمان

① العلو للعلی الغفار، ص: ۱۳۶۔ مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ: ۵/۱۸۳۔

② سیر أعلام النبلاء: ۸/۱۰۰، ۱۰۶۔

لانا واجب ہے۔“

حافظ ابن عبدالبر رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((أَهْلُ السُّنَّةِ مُجْمِعُونَ عَلَى الْإِقْرَاءِ بِالصِّفَاتِ الْوَارِدَةِ فِي الْكِتَابِ وَ السُّنَّةِ وَ حَمْلُهَا عَلَى الْحَقِيقَةِ لَا عَلَى الْمَجَازِ إِلَّا أَنَّهُمْ لَمْ يُكَيِّفُوا شَيْئًا مِنْ ذَلِكَ.)) ❶

”اہل سنت کا ان صفات کے بارے میں جو کتاب و سنت سے ثابت ہیں ان کو ثابت ماننے اور ان کے اقرار پر اجماع ہے اور ان کو حقیقت پر محمول کیا جائے نہ کہ مجاز پر لیکن وہ اس کی کیفیت کے قائل نہیں ہیں۔“

امام بغوی رحمہ اللہ حدیث راصح کی شرح کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

((وَالْإِصْبَعُ الْمَذْكُورَةُ فِي الْحَدِيثِ صِفَةٌ فِي صِفَاتِ اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ وَ كَذَلِكَ كُلُّ مَا جَاءَ بِهِ الْكِتَابُ أَوْ السُّنَّةُ مِنْ هَذَا الْقَبِيلِ فِي صِفَاتِ اللَّهِ تَعَالَى كَالنَّفْسِ وَ الْوَجْهِ وَ الْعَيْنِ وَ الْيَدِ وَ الرَّجْلِ وَ الْإِثْيَانِ وَ الْمَجْيِئِ وَ النُّزُولِ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا وَ الْإِسْتِوَاءِ عَلَى الْعَرْشِ وَ الضَّحْكِ وَ الْفَرْحِ.)) ❷

”حدیث میں اللہ تعالیٰ کی انگلی کا جو ذکر آیا ہے تو یہ انگلی اللہ تعالیٰ کی صفات میں سے ایک صفت ہے، اس طرح قرآن و سنت میں اللہ تعالیٰ کی جن صفات کا ذکر ہے، مثلاً نفس، چہرہ، آنکھ، ہاتھ، پاؤں، آنا، آسمان دنیا کی طرف نزول فرمانا، عرش پر مستوی ہونا، ہنسنا اور خوش ہونا وغیرہ ان کا بھی یہی حکم ہے یعنی یہ سب اللہ تعالیٰ کی صفات ہیں۔“

❶ العلو للعلی الغفار، ص: ۲۶۸.

❷ شرح السنة، کتاب الإيمان، باب قول اللہ سبحانہ و تعالیٰ: ﴿وَلَقَلْبُ أَعْدَانَهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ كَمَا كُمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ﴾: ۱/۱۶۸.

کلمہ توحید ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی فضیلت

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ایمان کی ستر (۷۰) سے زیادہ شاخیں ہیں، ان میں سے افضل ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کہنا ہے۔^①

نبی کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ: ”جس نے ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کا ارادہ کیا اور اسی پر مرا، وہ جنت میں داخل ہوگا، صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے عرض کیا: خواہ اس نے زنا کیا ہو، خواہ چوری کی ہو، تو رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”ہاں! خواہ زنا کیا ہو، خواہ چوری کی ہو۔“^②

سیدنا عبد اللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ عنہما سے مرفوعاً ثابت ہے کہ سیدنا نوح علیہ السلام نے اپنی موت کے وقت اپنے بیٹے کو وصیت کی تھی: میں تمہیں ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ پڑھنے کا حکم دیتا ہوں، اس لیے کہ یہ ساتوں آسمان اور زمینیں اگر ترازو کے ایک پلڑے میں ہوں اور ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ دوسرے پلڑے میں ہو تو ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کا پلڑا بھاری ہوگا اور اگر ساتوں آسمان اور زمینیں ایک حلقہ کی شکل میں ہوں تو ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ انھیں توڑ کر ریزہ ریزہ کر دے۔^③

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ مجھے لوگوں سے اس وقت تک قتال کرنے کا حکم دیا گیا ہے جب تک وہ ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی گواہی نہ دے دیں۔ اور مجھ پر اور جو شریعت میں لے کر آیا ہوں اس پر ایمان نہ لے آئیں جب وہ ایسا کر لیں گے تو اپنا خون اور مال مجھ سے بچالیں گے الا یہ کہ اس گواہی کے کسی حق کو پامال

① صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم : ۵۸۴۔

② صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم : ۲۷۳۔

③ مسند احمد، رقم : ۶۵۹۴۔ الادب المفرد للبخاری، رقم : ۵۴۸۔ مستدرک حاکم : ۴۸/۱۔
امام حاکم نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔



کر دیں اور اللہ تعالیٰ ان سے حساب لے لے گا۔^①

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جب بندہ سچے دل سے ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کہتا ہے، تو اس کے لیے آسمان کے دروازے کھول دیے جاتے ہیں یہاں تک کہ وہ عرش تک پہنچ جاتا ہے بشرطیکہ گناہوں سے بچتا رہے۔“^②



① صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم : ۱۲۵۔

② صحیح سنن ترمذی، رقم : ۲۸۳۹۔

کلمہ توحید ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی شروط

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کی چند شروط ہیں، جن کی موجودگی میں کلمہ کارآمد ثابت ہو سکتا ہے۔ چنانچہ وہب بن منبہ رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھا گیا کہ کیا ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ جنت کی چابی نہیں ہے؟ انھوں نے فرمایا: جی ہاں! لیکن ہر چابی کے دندانے ہوتے ہیں، اگر تو دندانوں والی چابی لے کر آئے گا تو دروازہ تیرے لیے کھل جائے گا ورنہ نہیں کھلے گا۔^①

بعض سلف نے ان شروط کو ایک شعر میں پرو دیا ہے:

عِلْمٌ يَقِينٌ وَإِخْلَاصٌ وَصِدْقُكَ مَعَ
مَحَبَّةٍ وَإِنْقِيَادٍ وَالْقَبُولُ لَهَا

(1) علم:

اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (محمد: ۱۹)

”پس تم جان لو کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں۔“

اس آیت مبارکہ سے یہ بات معلوم ہوتی ہے کہ اللہ تعالیٰ کے اکیلے معبود ہونے کا علم رکھنا انتہائی ضروری ہے، تبھی انسان معرفت الہی حاصل کر کے اس اکیلے کی عبادت کر سکتا ہے اور شرک سے بھی بچ سکتا ہے۔

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ:

((مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ.))^②

① صحیح بخاری، تعلیقاً قبل حدیث: ۱۲۳۷.

② صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم: ۴۳۔ مسند احمد: ۱/۶۵، ۶۹.

”جو شخص اس حال میں فوت ہوا کہ وہ جانتا تھا کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں، تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔“

توحید کا علم حاصل کرنا بڑی فضیلت کا حامل ہے۔ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

”یقیناً اللہ کے مقربین فرشتے طالب علم کی رضامندی کے لیے اپنے (ادب) کے پر رکھ دیتے ہیں، اس جہان فانی میں ہر چیز اس طالب علم کے لیے دعا گو رہتی ہے، حتیٰ کہ مچھلیاں پانی میں اس کی مغفرت کے لیے دعا کرتی رہتی ہیں۔“^①

(2) یقین:

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: جس شخص نے یہ گواہی دی کہ:

((أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّي رَسُولُ اللَّهِ لَا يَلْقَى اللَّهُ بِهِمَا عَبْدٌ غَيْرَ شَاكٍ فِيهِمَا إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ.))^②

”میں گواہی دیتا ہوں کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں، اور میں (محمد) اللہ کا رسول ہوں، اور پھر جس نے ان دونوں گواہیوں میں شک نہیں کیا تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔“

اور سیدنا معاذ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((مَا مِنْ نَفْسٍ تَمُوتُ وَهِيَ تَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّي رَسُولُ اللَّهِ يَرْجِعُ ذَلِكَ إِلَى قَلْبٍ مُؤَقِّنٍ إِلَّا غَفَرَ اللَّهُ لَهَا.))^③

”جو شخص اس حالت میں مرا کہ وہ یقین کے ساتھ گواہی دیتا تھا کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں، اور میں اللہ کا رسول ہوں تو اللہ تعالیٰ اس کے

① سنن ابوداؤد، کتاب العلم، رقم: ۳۶۴۱۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

② صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم: ۱۳۸۔

③ مسند احمد: ۲۲۹/۵۔ سلسلہ احادیث الصحیحہ، رقم: ۲۲۷۸۔

گناہوں کو معاف کر دے گا۔“

(3) اخلاص:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ بِالْحَقِّ فَاْعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝﴾ (الزمر: ۳ تا ۲۳)

”اے میرے نبی! بے شک ہم نے یہ کتاب آپ پر دین حق کے ساتھ نازل کی ہے، پس آپ اللہ کی بندگی اس کے لیے دین کو خالص کر کے کرتے رہیے، آگاہ رہیے کہ خالص بندگی صرف اللہ کے لیے ہے، اور جن لوگوں نے اللہ کے سوا غیروں کو دوست بنایا (وہ کہتے ہیں) ہم ان کی عبادت صرف اس لیے کرتے ہیں کہ وہ ہمیں اللہ سے قریب کر دیں، بے شک وہ لوگ جس حق بات میں آج جھگڑتے ہیں اس بارے میں اللہ ان کے درمیان قیامت کے دن فیصلہ کر دے گا، بے شک اللہ جھوٹے اور حق کے منکر کو راہ حق کی ہدایت نہیں دیتا۔“

سیدنا معاذ بن جبل رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ یقیناً رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ: ((مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصًا مِّنْ قَلْبِهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ .)) ❶

”جس شخص نے اخلاص قلب کے ساتھ گواہی دی کہ اللہ تعالیٰ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔“

(4) صدق:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ﴾ (الزمر: ۳۳)

”اور جو سچی بات لے کر آیا، اور جن لوگوں نے اس بات کی تصدیق کی وہی لوگ اللہ سے ڈرنے والے ہیں۔“

چنانچہ سیدنا ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ کو معہ ان کی قوم کے آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ:

((أَنَّ مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ صَادِقًا بِهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ.)) ❶

”یقیناً جس شخص نے صدق دل سے گواہی دی کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں، تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔“

اور سیدنا معاذ رضی اللہ عنہ سے رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ:

((مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ

صَادِقًا مِنْ قَلْبِهِ إِلَّا حَرَّمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ.)) ❷

”جو شخص سچے دل سے اس بات کی گواہی دے کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں ہے اور بے شک محمد ﷺ اللہ کے سچے رسول ہیں، اللہ تعالیٰ اس پر جہنم کی آگ کو حرام کر دے گا۔“

(5) محبت:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ (آل عمران: ۳۱)

”آپ کہہ دیجیے کہ اگر تم اللہ سے محبت کرتے ہو تو میری اتباع کرو، اللہ تم سے محبت کرے گا، اور تمہارے گناہ معاف کر دے گا، اور اللہ بڑا معاف کرنے والا، رحم کرنے والا ہے۔“

❶ مسند احمد: ۴/۴۰۲، رقم الحدیث: ۱۹۵۹۷.

❷ صحیح بخاری، کتاب العلم، رقم: ۱۲۸.

بعض سلف کا کہنا ہے ؎

تَعْصِيْ الْاِلهَ وَاَنْتَ تَزْعُمُ حُبَّ
هَذَا الْعَمْرِىْ فِى الْقِيَاسِ شَنِعٌ
لَوْ كَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَا طَعْتَهُ
اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِبُّ مُطِيعٌ ❶

”تو اللہ کی نافرمانی کر کے اس سے اظہار محبت کرتا ہے، اللہ کی قسم! یہ تو بہت بُری بات ہے۔ اگر تیری محبت سچی ہوتی تو اس کی فرمانبرداری کرتا، کیونکہ محب، محبوب کا فرمانبردار ہوتا ہے۔“

(6) تابعداری اور اطاعت شعاری:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَاٰتِبُوْا اِلٰی رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاتِيَكُمْ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَّرُوْنَ﴾ (الزمر: ۵۴)

”اور تم سب اپنے رب کی طرف رجوع کرو، اور اُسی کی اطاعت و بندگی میں لگے رہو، اس سے قبل کہ تم پر عذاب نازل ہو جائے، پھر کسی کی جانب سے تمہاری مدد نہ کی جائے۔“

شیخ الاسلام ابن تیمیہ رحمہ اللہ نے فرمایا کہ: ”قرآن و سنت اور اجماع کے ذریعے یہ بات ثابت شدہ حقیقت ہے کہ اللہ نے بندوں پر اپنی اور اپنے رسول کی اطاعت کو فرض کیا ہے، اوامر و نواہی میں اللہ نے رسول اللہ ﷺ کے علاوہ اس اُمت پر کسی کی اطاعت کو فرض نہیں کیا ہے، اسی لیے سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ کہا کرتے تھے کہ میں جب تک اللہ کی اطاعت کروں تم لوگ میری اطاعت کرو اور اگر میں اللہ کی نافرمانی کروں تو تم لوگ میری اطاعت نہ

کرو۔ تمام علمائے اُمت کا اس پر اتفاق ہے کہ رسول اللہ ﷺ کے علاوہ کوئی معصوم نہیں، اسی لیے بہت سے ائمہ کرام نے کہا ہے کہ ہر آدمی کی کوئی بات لی جائے گی اور کوئی چھوڑ دی جائے گی سوائے رسول اللہ ﷺ کے اور یہی وجہ تھی کہ فقہی مذاہب کے چاروں مشہور اماموں نے لوگوں کو یہ بات میں اپنی تقلید کرنے سے منع فرمایا تھا۔“

(7) قبول کرنا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّمَا نَتَّبِعُ آلِهَتَنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ۖ﴾ (الصافات: ۳۵ تا ۳۶)

”اُن سے جب کہا جاتا تھا کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں ہے تو کبر و غرور کا اظہار کرتے تھے۔ اور کہتے تھے کہ کیا ہم ایک مجنون شاعر کی باتوں میں آ کر اپنے معبودوں کو چھوڑ دیں۔“

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ:

((مَنْ قَبِلَ مِنْى الْكَلِمَةِ الَّتِي عَرَضْتُهَا عَلَى عَمِي فَرَدَّهَا عَلَىٰ فَهَىٰ لَهُ نَجَاةٌ.)) ❶

”جس شخص نے مجھ سے وہ کلمہ قبول کر لیا جو میں نے اپنے چچا پر پیش کیا اور اس نے انکار کر دیا، تو وہ اس کی نجات کا باعث ہوگا۔“



❶ مسند احمد: ۶/۱ - تاریخ بغداد: ۲۷۲/۱ - شیخ شعیب نے اسے شواہد کی بنا پر ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

باب نمبر ۲:

فصل نمبر ۱:

اسماءِ حسنیٰ کا بیان

قارئین کرام گزشتہ سطور میں توحید کی اہمیت و فضیلت کا مختصر مگر جامع بیان ہوا۔ اب ہم اپنے ناقص علم اور کم فہمی کے اعتراف کے ساتھ تحقیق و تتبع کے مطابق اللہ تعالیٰ کے ننانوے اسماءِ حسنیٰ کو حروفِ تہجی کے اعتبار سے قرآن مجید سے نکال کر ان کے دلائل بھی قرآن مجید سے ثابت کریں گے۔

حروفِ تہجی کے اعتبار سے ترتیب:

وہ اسماء جو بصورت مفرد وارد ہوئے ہیں	وہ اسماء جو بصورت اضافت وارد ہوئے ہیں	
اَللّٰهُ ، اَلْاَحَدُ ، اَلْاٰخِرُ ، اَلْاَعْلٰی ، اَلْاَكْرَمُ ، اَلْاِلٰهُ ، اَلْاَوَّلُ		الف
اَلْبَارِئُ ، اَلْبَرُّ ، اَلْبَاطِنُ ، اَلْبَصِيْرُ	اَلْبَدِيعُ	ب
اَلتَّوَابُ		ت
اَلْجَبَّارُ	اَلْجَامِعُ	ج
اَلْحَافِظُ ، اَلْحَسِيْبُ ، اَلْحَفِيْظُ ، اَلْحَفِيُّ ، اَلْحَقُّ ، اَلْحَكْمُ ، اَلْحَكِيْمُ ، اَلْحَلِيْمُ ، اَلْحَمِيْدُ ، اَلْحَيُّ		ح
اَلْخَالِقُ ، اَلْخَبِيْرُ ، اَلْخَلّٰقُ		خ

ذ	ذُو الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ، ذُو الطَّوْلِ	
ر	الرَّحْبُ، الرَّحْمَنُ، الرَّحِيمُ، الرَّزَاقُ، الرَّقِيبُ، الرَّوْفُ	الرَّفِيعُ
س	السَّلَامُ، السَّمِيعُ	
ش	الشَّاكِرُ، الشَّكُورُ، الشَّهِيدُ	
ص	الصَّمدُ	
ظ	الظَّاهِرُ	
ع	الْعَزِيزُ، الْعَظِيمُ، الْعَفْوُ، الْعَلِيمُ، الْعَلِيُّ	الْعَالِمُ، الْعَلَامُ
غ	الْغَالِبُ، الْغَفَّارُ، الْغَفُورُ، الْغَنِيُّ	الْغَافِرُ
ف	الْفَتْاحُ، الْفَعَّالُ	الْفَاطِرُ، الْفَالِقُ
ق	الْقَادِرُ، الْقَاهِرُ، الْقُدُّوسُ، الْقَدِيرُ الْقَرِيبُ، الْقَهَّارُ، الْقَوِيُّ، الْقَيُّومُ	الْقَابِلُ
ك	الْكَافِي، الْكَبِيرُ، الْكَرِيمُ، الْكَفِيلُ	
ل	الْلَطِيفُ	
م	الْمُؤْمِنُ، الْمُمِينُ، الْمُتَعَالُ، الْمُتَكَبِّرُ، الْمُجِيبُ، الْمُحِيطُ، الْمُسْتَعَانُ، الْمُصَوِّرُ، الْمُقْتَدِرُ، الْمُقَيِّتُ، الْمَلِكُ، الْمَلِكُ، الْمَوْلَى، الْمُهَيَّمُ	الْمَالِكُ
ن	النَّصِيرُ	النُّورُ

	و اَلْوَاَحِدُ، اَلْوَاَسِعُ، اَلْوَدُوْدُ، اَلْوَكِيْلُ، اَلْوَلِيُّ، اَلْوَهَّابُ	
	هـ اَلْهَادِيُّ	



اسماءِ حسنیٰ کے معانی و معارف

اب ہم مذکورہ بالا جدول کے مطابق ان اسماءِ حسنیٰ کے معانی و معارف اور دلائل قرآن و سنت سے پیش کرتے ہیں۔ تاکہ ہر کوئی شخص اللہ تعالیٰ کے اسماءِ حسنیٰ کے عرفان سے استفادہ کرتے ہوئے راہِ ہدایت کو اختیار کرے، ضلالِ مبین سے بچ جائے۔ ہر کسی کے لیے یہی کامیابی و کامرانی ہے۔ ((فَمَنْ زُحِرَ حَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ))

حرف الالف

۱۔ اللہ

معانی:..... معبودِ برحق۔

یہ رب العالمین کی ذاتِ بابرکت کا اسم ذاتِ یا ذاتی اسم ہے جو سب ناموں میں بڑا اور جامع ہے۔ کوئی اور ذات اس نام سے منسوب نہیں۔ ﴿هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَيِّئًا﴾ (مریم: ۶۵) ”بھلا تم اس کا کوئی ہم نام جانتے ہو؟“ یہی سبب ہے کہ اس کا نہ تشبیہ ہے اور نہ ہی جمع۔ اور اس کے معنی کے بارے میں کہا گیا ہے:

((فَاللَّهُ اسْمٌ لِّلْمَوْجُودِ الْحَقِّ الْجَامِعِ لِّصِفَاتِ الْإِلَهِيَّةِ

الْمَنْعُوتِ بِنِعْوَتِ الرُّبُوبِيَّةِ الْمُنْفَرِدِ بِالْوُجُودِ الْحَقِيقِيِّ لَا إِلَهَ إِلَّا

هُوَ سُبْحَانَهُ . وَقِيلَ مَعْنَاهُ الَّذِي يَسْتَحِقُّ أَنْ يُعْبَدَ وَقِيلَ مَعْنَاهُ

وَاجِبُ الْوُجُودِ الَّذِي لَمْ يَزَلْ وَلَا يَزَالُ وَالْمَعْنَى وَاحِدٌ .))

”اللہ اس موجودِ بادشاہ کا نام ہے جو حق، سچا اور تمام صفاتِ الہیہ کا جامع،

ربوبیت کے تمام اوصاف سے موصوف، وجود حقیقی میں منفرد، جس کے سوا اور کوئی الہ نہیں۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ اللہ وہ ہے جو تمام مخلوقات کی بندگی کا مستحق ہے اور کہا گیا ہے کہ وہ واجب الوجود یعنی جس کا ازل تا ابد تک موجود رہنا ضروری ہے۔ جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا۔ مذکورہ تمام معانی کا حاصل ایک ہے۔“ (تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۳۱)

معارف: یہ اللہ تعالیٰ کا ذاتی نام قرآن مجید میں (۲۶۹۷) مرتبہ وارد ہوا ہے، ان میں سے چند ایک مقامات یہ ہیں:

﴿اِنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی﴾ (طہ: ۸)

”اس اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، اس کے بہت اچھے نام ہیں۔“

اور موسیٰ علیہ السلام پر نزول وحی کی ابتدا میں اللہ تعالیٰ نے ان سے ہم کلام ہوتے ہوئے ارشاد فرمایا:

﴿اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا فَاعْبُدْنِیْ﴾ (طہ: ۱۴)

”بے شک میں ہی اللہ ہوں، میرے سوا کوئی معبود نہیں ہے، اس لیے آپ میری

عبادت کیجیے اور مجھے یاد کرنے کے لیے نماز قائم کیجیے۔“

☆ زمین و آسمان میں بادشاہت اللہ کی ہے:

زمین و آسمان میں بادشاہت صرف ایک اللہ کی ہے، اس کی بادشاہت میں کوئی دوسرا شریک نہیں، جن ہستیوں کو مصالح عباد کا متولی جان کر اللہ کا شریک ٹھہرایا جاتا ہے، ان بیچاروں کا خود اپنا وجود بھی اپنے گھر کا نہیں، نہ تو وہ ایک ذرہ کے پیدا کرنے کا اختیار رکھتے ہیں، نہ مارنا، جلانا ان کے قبضہ میں ہے، نہ اپنے اختیار سے کسی کو ادنیٰ ترین نفع، نقصان پہنچا سکتے ہیں، بلکہ خود اپنی ذات کے لئے بھی ذرہ بھر فائدہ حاصل کرنے اور نقصان سے محفوظ رہنے کی قدرت اور طاقت نہیں رکھتے، اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿اِنَّ الْحُكْمَ اِلَّا لِلّٰهِ﴾ (یوسف: ۴۰)

”اس اللہ کے سوائے کسی کی بادشاہت نہیں۔“

اور سورۃ الملک میں فرمایا:

﴿تَبَرَّكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۱ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيْكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُوْرُ ۝۲ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طَبَاقًا ۚ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۚ فَاَرْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝۳ ثُمَّ اَرْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ هُوَ حَسِيْرٌ ۝۴﴾ (الملک: ۱-۴)

”بے حساب برکتوں والا ہے وہ (اللہ) جس کے ہاتھ میں (سارے جہاں کی) بادشاہی ہے، اور وہ ہر چیز پر بڑا قادر ہے، جس نے موت اور زندگی کو پیدا کیا ہے، تاکہ تمہیں آزمائے کہ تم میں سے کون عمل کے اعتبار سے زیادہ بہتر ہے، اور وہ زبردست، بڑا معاف کرنے والا ہے، جس نے اوپر تلے آسمان بنائے ہیں، آپ رحمن کی تخلیق میں کوئی بے ضابطگی نہ دیکھیں گے، آپ نظر ڈال لیجئے، کیا آپ کو کوئی شکاف نظر آتا ہے، پھر آپ بار بار نظر ڈال لیجئے، وہ عاجز ہو کر آپ کی طرف تھکی ہوئی واپس آ جائے گی۔“

☆ متصرف فی الامور اللہ ہے :

زمین و آسمان کو پیدا کرنے کے بعد ان پر کامل قبضہ و اقتدار اور ہر قسم کے مالکانہ اور شہنشاہانہ تصرفات کا حق صرف اسی کو حاصل ہے، اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے۔

﴿اِنَّ رَبَّكُمْ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتِّیْنِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۚ یُغْشِی الْاَیْلَ النَّهَارِ یَطْلُبُهٗ حَشِیْثًا ۚ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِہٖ ۚ اِلَّا لَہُ الْخَلْقِ وَالْاَمْرِ ۚ تَبَرَّکَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۵۷﴾

(الاعراف: ۵۴)

”بے شک آپ کا رب وہ اللہ ہے، جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ دنوں میں پیدا کیا، پھر عرش پر مستوی ہو گیا، وہ رات کے ذریعہ دن کو ڈھانک دیتا ہے، رات تیزی کے ساتھ اس کی طلب میں رہتی ہے، اور اس نے سورج اور چاند اور ستاروں کو پیدا کیا، یہ سب اس کے حکم کے تابع ہیں، آگاہ رہو کہ وہی سب کا پیدا کرنے والا ہے اور اسی کا حکم ہر جگہ نافذ ہے، اللہ رب العالمین کی ذات بہت ہی بابرکت ہے۔“

☆ کائنات میں مختار کل اللہ ہے :

اللہ تعالیٰ جو کچھ چاہتا ہے پیدا کرتا ہے، اور مختار کل بھی آپ ہی ہے، اس کی پیدا کردہ مخلوق میں سے کسی غیر کو مختار سمجھنا شرک ہے۔ تخلیق و تشریع کا اس نے کسی کو اختیار نہیں دیا۔ فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ١٠﴾ (القصص: ٦٨)

”اور آپ کا رب جو کچھ چاہتا ہے پیدا کرتا ہے، اور جسے چاہتا ہے (اپنی رسالت کے لئے) چن لیتا ہے، ان مشرکین کو کوئی اختیار نہیں (کہ وہ ہمارے شریک چنیں) اللہ تمام عیوب سے پاک اور مشرکوں کے شرک سے بلند و بالا ہے۔“

فائدہ:..... اس آیت کریمہ میں بندوں کے خلق و اختیار کی نفی کی گئی ہے، کہ نہ وہ کسی کو پیدا کر سکتے ہیں، اور نہ انہیں یہ اختیار حاصل ہے کہ اللہ کا نبی بننے کے لیے وہ جسے چاہیں اختیار کریں، اور جس کا چاہیں انکار کر دیں، بلکہ اللہ جسے چاہتا ہے اپنا نبی بناتا ہے، اور نہ بندوں کو یہ اختیار حاصل ہے کہ وہ جس چیز کی چاہیں عبادت کریں اور جیسے چاہیں عبادت کریں، یہ حق اللہ خالق کائنات کا ہے کہ وہ صرف اپنی بندگی کا حکم دیتا ہے، شرک سے منع کرتا ہے، اور اپنی بندگی کا مشروع طریقہ بناتا ہے، بندوں کا کام صرف اطاعت و بندگی

ہے، اسی لئے آیت کے آخر میں کہا گیا ہے کہ ”اللہ کی ذات مشرکوں کے شرک سے پاک اور بلند و بالا ہے۔“

مفسرین نے لکھا ہے کہ یہ آیت ولید بن مغیرہ کی تردید میں نازل ہوئی تھی، جب اس نے کہا تھا کہ بستی والوں میں سے کسی بڑے آدمی کو کیوں نہ اللہ نے اپنا نبی بنایا۔ نیز عام مشرکوں کی تردید میں نازل ہوئی تھی، جنہوں نے اپنی مرضی سے اللہ کے لئے شریک بنائے اور گمان کر بیٹھے کہ یہ معبودانِ باطلہ قیامت کے دن سفارشی بنیں گے۔^①

☆ تمام خزانے اللہ کے اختیار میں ہیں :

ہر چیز کے وافر خزانوں پر اسی کو اختیار حاصل ہے کہ جس خزانہ میں سے جس کو جتنا چاہے عطا کرے اور آپ ہی روزی کا تقسیم کرنے والا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝﴾

(الحجر: ۲۱)

”اور کوئی ایسی چیز نہیں ہے جس کے خزانے ہمارے پاس نہ ہوں، اور اُسے ہم ایک معین مقدار میں ہی اتارتے ہیں۔“

☆ مصالح عباد کا متولی اللہ ہے :

حکومت و سلطنت، عزت و ذلت اور ہر قسم کے تصرفات کی زمام اکیلے اللہ مالک الملک کے ہاتھ میں ہے۔ ملک جس کو چاہے دے، اور جس سے چاہے سلب کر لے، کبھی رات کو گھٹا کر دن کو بڑھا دیتا ہے، کبھی اس کا عکس کرتا ہے، بیضہ کو مرغی سے، مرغی کو بیضہ سے، آدمی کو نطفہ سے اور نطفہ کو آدمی سے، جاہل کو عالم سے، عالم کو جاہل سے، کامل کو ناقص سے اور ناقص کو کامل سے نکالنا اسی کا کام ہے۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ

① اسباب النزول للواحدي، ص: ۱۸۹۔

وَتُعْزَمُ مَنْ تَشَاءُ وَتُذَلُّ مَنْ تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

(ال عمران: ۲۶، ۲۷)

”آپ کہہ دیجئے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے، اور جس سے چاہتا ہے بادشاہی چھین لیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے عزت دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے ذلیل کر دیتا ہے، تمام بھلائیاں تیرے ہاتھ میں ہیں، بے شک تو ہر چیز پر بڑا قادر ہے، تو رات کو دن میں اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے، اور زندہ کو مردہ سے اور مردہ کو زندہ سے نکالتا ہے اور تو جسے چاہتا ہے بے حساب رزق دیتا ہے۔“

اور سورۃ الشوریٰ میں ارشاد فرمایا:

﴿لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ الذُّكُوْرَ ۚ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَّ يَجْعَلُ مَنْ يَشَآءُ عَقِيْمًا ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾﴾ (الشوریٰ: ۴۹، ۵۰)

”آسمانوں اور زمین کی بادشاہی صرف اللہ کے لئے ہے، وہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے، جسے چاہتا ہے بیٹیاں دیتا ہے جسے چاہتا ہے لڑکے دیتا ہے، یا انہیں لڑکے اور لڑکیاں ملا کر دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے بانجھ بنا دیتا ہے، وہ بے شک بڑا جاننے والا، بڑی قدرت والا ہے۔“

☆ عالم الغیب فقط اللہ ہے:

اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کو علم الغیب نہیں ہے۔ چنانچہ فرمان باری تعالیٰ ہے:

﴿قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الْغَيْْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۚ﴾ (النمل: ۶۵)

”آپ کہہ دیجئے کہ آسمانوں اور زمین میں جتنی مخلوقات ہیں، ان میں سے کوئی بھی اللہ کے سوا غیب کی باتیں نہیں جانتا ہے۔“

اور سورۃ الانعام میں فرمایا:

﴿وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظِلْمٍ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَآبِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ﴾ (الانعام: ۵۹)

”اور غیب کے خزانے اُسی کے پاس ہیں، اس کے علاوہ انہیں کوئی نہیں جانتا، وہ خشکی اور سمندر کی ہر چیز کی خبر رکھتا ہے، اگر ایک پتہ بھی گرتا ہے تو وہ اسے جانتا ہے اور اگر ایک دانہ بھی زمین کی تاریکیوں میں گرتا ہے اور کوئی بھی تازہ اور کوئی بھی خشک چیز تو وہ اللہ کی روشن کتاب میں موجود ہے۔“

☆ پکار کا مستحق فقط اللہ ہے:

فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ﴾ (الرعد: ۱۴)

”صرف اسی کو پکارنا حق ہے۔“

اور جن معبودانِ باطلہ کو اللہ کے سوا پکارا جاتا ہے، وہ کوئی حاجت پوری نہیں کر سکتے،

حاجت روائی تو کیا کرتے وہ کسی کی پکار کو سنتے بھی نہیں۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ﴾ (فاطر: ۱۳، ۱۴)

”اور اس کے سوا جنہیں تم پکارتے ہو وہ کھجور کی گٹھلی کی جھلی کے بھی مالک نہیں ہیں۔ اگر تم انہیں پکارو گے تو وہ تمہاری پکار نہیں سنیں گے، اور اگر بالفرض سن بھی لیں تو وہ تمہارے کسی کام نہیں آئیں گے۔“

بلکہ قیامت کے دن ان مشرکانہ حرکات سے بیزاری کا اظہار کریں گے اور بجائے مددگار بننے کے دشمن ثابت ہوں گے۔ فرمانِ باری تعالیٰ ملاحظہ ہو:

﴿وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ۝ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ۝﴾ (الأحقاف: ۶۵)

”اور اس آدمی سے بڑھ کر گمراہ کون ہوگا جو اللہ کے بجائے اُن معبودوں کو پکارتا ہے جو قیامت تک اس کی پکار کو نہ سن سکیں گے اور بلکہ وہ اُن کی فریاد و پکار سے یکسر غافل ہیں۔ اور جب لوگ میدانِ محشر میں لائے جائیں گے تو وہ معبود اُن کے دشمن ہو جائیں گے اور اُن کی عبادت کا انکار کر دیں گے۔“ اور سورۃ یونس میں آتا ہے کہ وہ یوں کہیں گے:

﴿فَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ۝﴾

(یونس: ۲۹)

”پس ہمارے اور تمہارے درمیان گواہ کی حیثیت سے اللہ کافی ہے، ہم تمہاری عبادت یعنی پکار سے بالکل ہی بے خبر تھے۔“

اس آیت پر شاہ صاحب رحمہ اللہ رقم طراز ہیں: ”جتنے مشرک ہیں اپنے خیال کو پوجتے ہیں یا شیطان کو، اور نام کرتے ہیں نیکوں کا، وہ اس کام سے بیزار ہیں، آخرت میں معلوم ہوگا۔“

☆ عبادت کا مستحق صرف اللہ تعالیٰ ہے:

کتاب و سنت، قرآن و حدیث کی نصوص صریحہ سے یہ ثابت اور واضح ہوتا ہے کہ عبادت صرف ایک اللہ کا حق ہے، اللہ رب العزت کے علاوہ ہر کسی کی عبادت ممنوع و حرام، کفر اور شرک ہے۔ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا ۖ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝﴾ (البقرة: ۲۱، ۲۲)

”اے لوگو، اپنے اس رب کی عبادت کرو جس نے تمہیں پیدا کیا، اور ان لوگوں کو پیدا کیا جو تم سے پہلے گزر گئے، تاکہ تم پر ہیزگار بن جاؤ، جس نے زمین کو تمہارے لیے فرش اور آسمان کو چھت بنایا اور آسمان سے پانی اُتارا جس کے ذریعہ اس نے تمہارے لیے روزی کے طور پر مختلف قسم کے پھل نکالے، پس تم اللہ کا شریک اور مقابل نہ ٹھہراؤ، حالانکہ تم جانتے ہو۔ (کہ اس کا کوئی مقابل نہیں)“

نذر و نیاز کا مستحق صرف اللہ ہے:

نذر و نیاز صرف اللہ کا حق ہے، جو لوگ انفاقِ مال اور نذر میں حکمِ الہی کے خلاف کرتے ہیں، ان ظالموں کا کوئی مددگار نہیں، اللہ جو چاہے ان پر عذاب مسلط کرے، فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهَا ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝﴾ (البقرة: ۲۷۰)

”اور تم جو کچھ اللہ کی راہ میں خرچ کرتے ہو یا کوئی منت مانتے ہو، تو اللہ بے شک اُسے جانتا ہے، اور ظالموں کا کوئی مددگار نہ ہوگا۔“

یعنی مشرکین غیر اللہ کی عبادت کرتے تھے، اور غیر اللہ کے تقرب کے لئے نذر و نیاز کے طور پر ذبح کرتے تھے اس لئے نبی ﷺ کو حکم ہوا کہ آپ ان کی مخالفت میں اس بات کا اعلان کر دیں کہ میری ہر قسم کی عبادت، نماز اور ذبح وغیرہ اللہ تعالیٰ کے تقرب اور خوشنودی کے لئے ہے۔

زائرین بیت اللہ کو حکم ہوتا ہے: ﴿وَلْيُؤْفُوْا اَنْذُوْرَهُمْ﴾ (الحج: ۲۹) ”اور چاہیے کہ وہ اپنی نذر پوری کریں۔“

اور سورۃ الدھر میں اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں کی تعریف میں اس وصف کو نمایاں طور پر بیان کیا کہ وہ اللہ کی نذر و نیاز مانتے ہیں اور اس کو پورا کرتے ہیں۔

﴿يُؤْفُوْنَ بِالْاَنْذَرِ﴾ (الدھر: ۷)

”(مومنین) اپنی نذریں پوری کرتے ہیں۔“

فوائد عظیمہ:

شیخ العرب والعجم سید بدیع الدین شاہ راشدی رحمۃ اللہ علیہ رقم طراز ہیں:

”عام طور پر صوفی اور وجودی اس اکیلی نام کا ذکر کرتے ہیں۔ اللہ اللہ کا ورد کرتے ہیں۔ اس کا رسول اللہ ﷺ اور صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے ثبوت تو درکنار بلکہ سلف الصالحین القرون مشہود لہم بالخیر میں بھی ہمیں کوئی ثبوت نہیں ملتا۔ شیخ الاسلام ابن تیمیہ الرد علی المنطقیین ص ۳۵ میں فرماتے ہیں:

((فاما الاسم المفرد فلا يكون كلاما مفيدا عند احد من اهل الارض بل ولا اهل السماء و ان كان وحده كان معه غير مضمرا او كان المقصود به تنبيها او اشارة كما يقصد بالاصوات التي لم توضع لمعنى لانه يقصد به المعنى التي تقصد بالكلام و لهذا عدا الناس من البدع ما يفعله بعض النساك من ذكر اسم ”الله“ وحده بدون تأليف كلام فان النبي ﷺ قال افضل الذكر لا اله الا الله و افضل الدعاء اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) (رواه ابو حاتم في صحيحه) و قال افضل ما قلت انا و النبيون من قبلي لا اله الا الله و حده لا شريك له له المُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (رواه مالك و غيره) و قد

تواتر عن النبی ﷺ انه كان يعلم امته ذكر الله تعالى بالجملة التامة مثل سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ (رواه مسلم) وفي صحيح مسلم عنه ﷺ انه قال لان اقول سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ احب الى مما طلعت عليه الشمس وقال من كان آخر كلامه لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ و امثال ذلك فظن طائفة من الناس ان ذكر الاسم المفرد مشروع بل ظن بعضهم افضل في حق الخاصة من قول لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ونحوها و ظن بعضهم ان ذكر الاسم المضممر وهو ”هو“ هو افضل من ذكر الاسم المظهر و اخرجهم الشيطان ان يقولوا لفظا لا يفيد ايمانا ولا هدى بل دخلوا بذلك في مذهب اهل الزندقة والاحاد اهل وحدة الوجود الذين يجعلون وجود المخلوقات وجود الخالق و يقول احدهم ليس الا ”الله“ و ”الله“ ونحو ذلك وربما احتج بعضهم عليه بقوله تعالى: ﴿قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ﴾ (الانعام: ٩١) و ظنوا انه مأمور بان يقول الاسم مفردا وانما هو جواب الاستفهام حيث قال الله تعالى: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ﴾ (الانعام: ٩١) اي الله انزل الكتاب الذي جاء به موسى .))

يعنى لفظ الله بغير کوئی کلمہ ملائے نہ آسمان والوں اور نہ زمین والوں کے نزدیک مفید ہے

اور جہاں بھی اکیلا استعمال ہوا ہے تو وہاں اس کے ساتھ کلمہ مضمر ضرور ہے۔ یا تو کسی جملے کی طرف تنبیہ یا اشارہ کی صورت میں ہوگا۔ اس لیے لوگوں نے صوفیوں کے عام ذکر ”اللہ“ کو بغیر کسی او جملے کے ساتھ، بدعت کہا ہے کیونکہ رسول اللہ ﷺ نے ہمیشہ مکمل جملوں کو بیان فرمایا ہے۔ مثلاً: ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ۔ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ.....)) وغیرہ۔ جن سے کوئی معنی یا مفہوم ظاہر ہوتا ہو۔ آپ ﷺ نے انہی کو اچھا ذکر اور اللہ کے یہاں عمدہ کلمے کہا ہے۔ آپ ﷺ نے اسے اپنا اور سابقہ انبیاء کا ذکر بھی فرمایا ہے۔ جس کلمے کو انسان کے خاتمے کے وقت جنت میں جانے کا باعث بتلایا ہے وہ بھی لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ بتلایا ہے نیز جس کلمے کے کہنے سے ان شاء اللہ جنت میں داخل ہوگا وہ بھی آپ نے ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ بتلایا ہے۔ بعض نے ”اللہ“ کے نام کے اکیلے ذکر کو شرعی کہا ہے اور بعض نے ”ہو ہو“ کے ذکر کو اپنے خواص کے لیے مخصوص کیا ہے اور اسے بہت بابرکت سمجھا ہے اسی طرح شیطان نے انہیں اصل ذکر سے گمراہ کر کے (جس سے کوئی صحیح معنی ظاہر ہو یا عقیدے کی تجدید و توثیق ہو) خالی الفاظ کے پھندوں میں پھنسا دیا ہے جن سے نہ یقین کا فائدہ ہو اور نہ ہی ہدایت کا۔ یوں وہ الحاد، زندقہ اور وحدۃ الوجود جیسے مہلک مذاہب میں داخل ہوئے جو مخلوق کے وجود کو خالق کا وجود سمجھتے ہیں۔ (نعوذ باللہ) اور یہ کہتے رہتے ہیں کہ لَيْسَ إِلَّا اللَّهُ یعنی اللہ کے سوا کسی کا وجود نہیں اور ان میں سے بعض قرآن کریم کی اس آیت سے دلیل لیتے ہیں کہ قُلِ اللَّهُ (الانعام: ۹۱) تو کہہ کہ اللہ۔ حالانکہ یہ سراسر اختلاس اور قرآن کریم میں ناجائز تصرف ہے کیونکہ پوری آیت سورہ انعام میں یوں مذکور ہے: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ﴾ (الانعام: ۹۱)

”اور ان (یہودیوں) نے اللہ کی قدر جیسے جانی چاہیے تھی نہ جانی۔ جب انہوں نے کہا کہ اللہ نے کسی بھی آدمی پر کچھ نازل نہیں کیا۔ اے پیغمبر! ان سے کہہ دیجیے وہ کتاب کس نے نازل کی جو موسیٰ لائے تھے؟ جو لوگوں کے لیے نور اور ہدایت تھی۔ جسے تم ٹکڑے ٹکڑے کرتے ہو۔ اس کے کچھ حصے کو تو ظاہر کرتے ہو اور اکثر کو چھپاتے ہو اور تم کو وہ باتیں سکھائی گئیں جن کو نہ تم جانتے تھے اور نہ تمہارے باپ دادا۔ کہہ دو اللہ (نے کتاب کو نازل کیا ہے) پھر ان کو چھوڑ دو کہ اپنی بیہودہ بکواس میں کھیلتے رہیں۔“

پوری آیت سے بات واضح ہوتی ہے کہ یہ ایک جملے کا جواب ہے اور تنبیہ کی گئی کہ وہ اللہ کی ذات ہے جس نے اس کتاب کو نازل کیا ہے۔ بہر حال صوفیاء کے اکثر دلائل اسی طرح کے ہوتے ہیں۔ دھوکے اور تحریف پر مبنی۔ وَاللّٰهُ الْهَادِیْ اِلٰی سَوَاءِ السَّبِیْلِ۔ یہ اسم مبارک ذاتی ہے عربی اور دیگر زبانوں میں اسی طرح مستعمل ہے۔ تحریر ہو یا تقریر۔ اللہ کا مترادف لفظ کسی بھی زبان میں نہیں ہے۔ دوسری زبانوں میں جو بھی الفاظ استعمال ہوتے ہیں وہ سب معبود یعنی الہ کے معنی میں ہیں۔

مصباح اللغة، ص: ۱۵ میں ہے کہ الالہ معبود جمع الہۃ اللہ ذات واجب الوجود کا نام۔ اسی طرح فارسی زبان میں خدا کا لفظ ہے لیکن اس سے مراد بھی صفاتی نام ہے۔

غیاث اللغات، ص: ۷۴ میں ہے۔ ”خدا بالضم بمعنی مالک و صاحب چوں لفظ خدا مطلق باشد بر غیر ذات باری تعالیٰ اطلاق نہ کنند مگر در صورتیکہ پیچھے مضاف شود چونکہ خدا و وہ خدا و گفته اند کہ خدا بمعنی خود آئینہ است چہ مرکب ست از کلمہ خود و کلمہ آ صیغہ امر ست از آمدن و ظاہر ست کہ امر بترکیب اسم معنی اسم فاعل پیدا میکند و چوں حق تعالیٰ بظہور خود بدیگرے محتاج نیست لہذا باین صفت خوانند از رشیدی و خیابان و خان آرزو در سراج اللغات نیز از علامہ دانی و امام فخر الدین رازی ہمین نقل کردہ۔“

”خدا (خ کی پیش کے ساتھ) یعنی مالک اور ساتھی اور اس اکیلے لفظ کا سوا اللہ

کی ذات کے اور کسی کے لیے استعمال نہ ہوگا۔ مگر اور لفظ کے ساتھ مضاف کر کے اسے غیر اللہ کے لیے بھی استعمال کیا جاسکتا ہے۔ مثلاً خدا یعنی گھر کا مالک، عزت والا یا وہ خدا بمعنی رئیس و بزرگ برہان قاطع: ۲/۲۴۱-۲۴۳ اور کہتے ہیں کہ خدا بمعنی خود آئندہ (خود آنے والا) یہ لفظ مرکب ہے دو کلمات کا ”خود“ اور ”آ“ سے ”آ“ امر کا صیغہ ہے لیکن دوسرے کلمے کے ملنے سے اسم فاعل کے معنی دیتا ہے۔ چونکہ اللہ تعالیٰ نے اپنی قدرت کی نشانیاں بغیر کسی کی محتاجی کے ظاہر کی ہیں اسی لیے اسے ”خدا“ کہتے ہیں۔“

علامہ محمد حسین البرہان کتاب برہان قاطع ۳۶۲ ج ۱ میں لکھتے ہیں: ”و با ذال نکتہ دار ہم خواندہ اند“ یعنی لفظ خدا کو خدا ذال سے بھی پڑھا جاتا ہے۔ جیسے ہمارے یہاں بلوچ خدا کہتے ہیں۔

اس بحث سے یہ ثابت ہوا کہ یہ لفظ صفاتی ہے اور الہ کے مختلف معنوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ: مالک، ساتھی، رفیق وغیرہ اور یہ لفظ اسم اللہ کے مترادف یا ہم معنی نہیں ہے۔ یہی وجہ ہے کہ فارسی میں لکھتے اور پڑھتے وقت اسم اللہ استعمال ہوتا ہے مگر یہ لفظ یعنی خدا پڑھتے اور لکھتے وقت الہ کے معنی میں استعمال ہو سکتا ہے۔

اسی طرح انگریزی زبان میں لفظ ”گاڈ“ ”God“ بھی الہ کے معنی میں استعمال ہوتا ہے یعنی معبود۔ مگر لفظ اللہ کا مترادف نہیں۔ المورڈ انگریزی عربی مصنف منیر البعلبکی ص ۳۹۳ میں ہے۔

(۱) الہ، رب، معبود (۲) حاکم، قوی۔ God (God) فیروز اللغات ص ۱۰۴۴ میں گاڈ بمعنی خدا لکھا ہے۔ ہیمس شارٹر پرشن انگلش ڈکشنری ص ۲۵۹ میں خدا کے معنی گاڈ ”God“ لکھے ہیں۔

ثابت ہوا کہ انگریزی کا لفظ گاڈ (GOD) بھی الہ کے معنی میں ہے، مگر اسم اللہ کا بدل یا مترادف نہیں ہے۔ علامہ مرمدک پکٹھال (MARMADU KE PIKKTHAL) قرآن

مجید کے انگریزی ترجمے کے شروع میں ص ۴ پر سورہ فاتحہ کی تفسیر میں لکھتے ہیں:

Translator's note: I have retained the word ALLAH through out because there is no corresponding word in English. The word Allah (the stress is on the last syllable) has neither feminine nor plural and has never been applied to any thing other than the unimaginable supreme being. I have used the word "God" only where the corresponding word Ilah is found in th Arabic.

”میں نے پورے ترجمے میں لفظ اللہ جوں کا توں رکھا ہے کیونکہ انگریزی زبان میں لفظ اللہ کا کوئی مترادف لفظ نہیں۔ لفظ اللہ کی نہ مؤنث ہے اور نہ ہی اس کی جمع ہے۔ یہ لفظ سوائے اس اعلیٰ و برتر ہستی کے، جس کی ذات کا تصور بھی نہیں کیا جاسکتا کسی اور کے لیے کبھی استعمال نہیں ہو سکتا۔ میں نے اپنے ترجمے میں لفظ گاڈ (God) صرف وہاں استعمال کیا ہے جہاں اس کا مترادف لفظ الہ عربی میں استعمال ہوا ہے۔“

گزشتہ صفحات میں یہ بحث ہو چکی کہ لفظ اللہ کا کوئی اشتقاق نہیں ہے، نہ اس کی مؤنث ہے نہ تشنیہ اور نہ ہی اس کی جمع ہے۔ جبکہ لفظ الہ کا اشتقاق بھی ہے اور اس کے لیے تشنیہ اور جمع کے الفاظ بھی ہیں۔

مترجم موصوف نے جہاں بھی لفظ اللہ آیا ہے وہاں انگریزی میں بھی وہی لفظ لکھا ہے۔ باقی لفظ الہ کے معنی گاڈ (GOD) لکھے ہیں۔ کچھ مثالیں پیش کی جاتی ہیں۔

﴿وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ (آل

عمران: ۶۲)

No god save Allah and the Allah in the mighty, the wise. (ص ۸۹)

﴿وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَإِلَٰهَاتِي

﴿فَأَرْهَبُونَ﴾ (النحل: ۵۱)

Allah hath Said: Choose not two Gods. there is one God, so of Me, Me only, be in awe.

﴿فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (محمد: ۱۹)

So know (O Muhammad) that there is no God save Allah. (page 684)

اس آیت میں دونوں نام ذکر کیے گئے ہیں۔ اسم مبارک اللہ کو اصل لفظ سے ادا کیا گیا ہے اور لفظ الہ کا ترجمہ گاڈ (GOD) یعنی معبود کیا گیا ہے۔ اس لیے انگریزی میں لکھتے ہیں اور پڑھتے وقت لفظ اللہ کو بھی (ALLAH) ہی لکھا اور پڑھا جائے گا۔ مگر لفظ الہ کے معنی میں لفظ (God) استعمال کیا جاسکتا ہے۔ اسی طرح ہندی اور سنسکرت زبانوں میں بھی اسم اللہ کا کوئی مترادف نہیں۔ پرمیشور، پرماتما، ایشور اور بھگوان ان میں سے بھی کوئی لفظ، لفظ اللہ کا متبادل نہیں۔

پرمیشور کے معنی سرتاج اللغہ، ص: ۲۲۰ میں خدا اور پرماتما، اور فیروز اللغات، ص: ۳۲۵ میں اعلیٰ روح اور خدا لکھا ہے۔ ایشور کے معنی سرتاج اللغہ، ص: ۱۴۲ اور فیروز اللغات، ص: ۱۶۹ میں خدا لکھا ہے اور بھگوان کے معنی فیروز اللغات، ص: ۲۶۶ میں خدا تحریر ہے۔ سوامی دیانند ستھیارتھ پرکاش ص: ۲۴ میں لکھتے ہیں، بھج بمعنی خدمت و پرستش، جس کے اختیار میں تمام دولت و قدرت ہے اور جو پرستش کے قابل ہے، وہ ایشور بھگوان کے نام سے موسوم ہے۔ تمام الفاظ جن کے معنی اوپر لکھے گئے ہیں اگر ان کو تسلیم بھی کر لیا جائے تب بھی وہ لغاتی (آخر کار) لفظ الہ کے مترادف ہوں گے۔ لیکن اگر لفظ بھگوان کا تجزیہ کیا جائے تو سنسکرت زبان میں اس کے معنی اور ہوتے ہیں۔ یہ لفظ دو الفاظ کا مرکب ہے۔ ایک ”بھگ“ جس کے معنی فیروز اللغات، ص: ۲۶۵ میں ہے۔ عورت کی اندام نہانی اور دوسرا لفظ ”وان“ جس کے بارے میں ص: ۲۶۰ میں لکھا ہے کہ یہ ہندی کا لفظ ہے اور مذکر ہے اور معنی ہیں ”والا“ کسی اہم اسم کے ساتھ اس کے آخر میں استعمال ہوتا ہے۔ اس طرح بھگوان کے معنی ہوں گے

”زمانہ مخصوص عضو والا“۔ اس کی تائید اس بات سے بھی ہوتی ہے کہ ہندو ”لنگ“ یا دیویوں کی پوجا بھی کرتے ہیں جبکہ دیوی، دیوتا کی مؤنث ہے بمعنی کنواری، رانی، پاکباز اور نیک خاتون۔ (سرتاج اللغات، ص: ۴۷۔ فیروز اللغات، ص: ۶۸۰) اور دیوتا ہندی لفظ ہے۔ جس کے معنی خدا کا اوتار، بزرگ اور فرشتہ کے ہیں۔ (فیروز اور سرتاج صفحہ مذکورہ) الغرض سنسکرت میں بھی اسم ذاتی اللہ ہی لکھنا ہوگا۔ اور اوپر ذکر کیے گئے کسی بھی نام کو اللہ کے مترادف سمجھنا یا لفظ اللہ کی جگہ لکھنا اور پڑھنا غلط ہوگا۔

عبرانی یا سریانی زبان میں لفظ ”ایل یا ال“ مستعمل ہے مگر اس میں بھی ربوبیت کے معنی ہیں، اس لیے وہ بھی الہ یا رب کا ترجمہ ہوگا۔ مگر اسم اللہ کا کوئی مترادف نہیں کیونکہ ال بمعنی الربوبیۃ ہے۔ لسان العرب: ۲۶/۱۱ میں ہے:

((قال الفراء الال القرابة و الذمة العهد و قيل هو من اسماء الله عز و جل قال و هذا ليس بالوجه لان اسماء الله تعالى معروفة كما جاءت في القرآن و تليت في الاخبار قال و لم نسمع الداعی يقول في الدعاء يا ال كما يقول يا الله و يا رحمن و يا رحيم و يا مؤمن يا مهيمن))

استاد فراء کا کہنا ہے کہ لفظ ”ال“ بمعنی قرابت (رشتہ داری) اور ذمہ داری اور عہد و اقرار کے لیے بھی ہے۔ اور کہا گیا ہے کہ ”ال“ اللہ تعالیٰ کے ناموں میں سے ہے۔ حالانکہ یہ بات درست نہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ کے نام مشہور و معروف ہیں۔ جیسا کہ ان کا بیان قرآن و حدیث میں ہے۔ مگر کسی میں بھی یہ نام نہیں۔ اسی طرح دعا مانگنے والے سے کبھی ”یا ال“ نہیں سنا۔

امام راغب ”المفردات“ ص: ۱۹ میں فرماتے ہیں: وقيل إل إيل اسم الله تعالى و ليس ذالك بصحيح کہا گیا ہے کہ إل اور إيل اللہ کے نام ہیں مگر یہ بات درست نہیں۔ بہر حال یہ بات ثابت ہوئی کہ کسی بھی زبان میں اسم اللہ کے لیے کوئی بھی

مترادف لفظ نہیں۔ جو بھی الفاظ ذکر کیے گئے ہیں ان سب کے اشتقاق ہیں اور ان کے مؤنث اور تشنیہ اور جمع کے صیغے بھی ہیں۔ مگر اسم اللہ کے لیے نہ مؤنث ہے نہ تشنیہ یا جمع اور نہ ہی اشتقاق، جیسا کہ اوپر ذکر ہوا۔ اس لیے ہر زبان میں لفظ اللہ اپنی اصلی حالت میں پڑھا جائے گا اور لکھا جائے گا۔ البتہ دیگر صفات کا ترجمہ دوسری زبانوں میں ہو سکتا ہے۔

اسم شریف اللہ تمام اسماءِ حسنیٰ کے معنوں کو مستلزم ہے اور اجمالی طور پر ان سب پر دلالت کرتا ہے اور دیگر سب اسماء اس کی تشریح ہیں۔^①
اس اسم پاک کے ساتھ وارد شدہ دُعائیں:

اس اسم پاک سے قرآن و سنت میں بہت سی ادعیہ وارد ہوئی ہیں۔ ان میں سے چند ایک یہاں ذکر کر دیتے ہیں تاکہ بندہ ان ادعیہ کے ذریعے اللہ تعالیٰ سے تعلق مضبوط کر لے۔ اور اللہ عز و جل کے اس اسم پاک کے وسیلہ سے دُعا کرنے کو اپنا عمل بنائے:

۱..... ﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَ تُعْزِزُ مَنْ تَشَاءُ وَ تُزِيلُ مَنْ تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾

(آل عمران: ۲۶)

”آپ کہہ دیجئے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے اور جس سے چاہتا ہے بادشاہی چھین لیتا ہے اور جسے چاہتا ہے عزت دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے ذلیل بنا دیتا ہے، تمام بھلائیاں تیرے ہاتھ میں ہیں، بے شک تو ہر چیز پر قادر ہے۔“

۲..... ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ.))
 ”اے اللہ! میں تجھ سے سوال کرتا ہوں اس بنا پر کہ میں گواہی دیتا ہوں کہ تو ہی اللہ ہے۔ تیرے سوا اور کوئی معبود نہیں۔ تو اکیلا ہے، بے نیاز ہے جس نے نہ جنا

① مدارج السالکین لابن القيم: ۳۲/۱ بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۳۹-۴۰.

اور نہ جنا ہی گیا اور کوئی بھی اس کی برابری کرنے والا نہیں۔“

فضیلت: رسول اللہ ﷺ نے ایک شخص کو دُعا کرتے سنا تو آپ ﷺ نے اسے فرمایا: تو نے اللہ سے اس کے اسم اعظم کے ساتھ سوال کیا ہے کہ جب اس سے اس اسم کے وسیلہ سے مانگا جائے تو عنایت فرماتا ہے، دُعا کی جائے تو قبول کرتا ہے۔^①

فائدہ: (۱) امام طیبی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: یہ حدیث اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ اللہ تعالیٰ کے لیے اسم اعظم ہے کہ جب اس کے ساتھ دُعا کی جائے تو اللہ تعالیٰ قبول فرماتا ہے۔

(۲) بعض اہل علم کے نزدیک اسم اعظم ”اللہ“ ہے۔ یہی اسم ہے جس کا اطلاق کسی دوسرے پر نہیں کیا جاتا اور یہی وہ اسم ہے جس کی جانب جملہ اسماء کی اضافت کی جاتی ہے۔^②

۲۔ الْاَحَدُ

معانی: اکیلا یعنی تھا۔

جو اپنی ذات و صفات میں یکتا ہو بغیر اجزاء و شرکاء کے۔ دوسروں کے شریک بھی ہیں اور ان کے اجزاء بھی ہیں۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۱)

معارف: یہ نام قرآن مجید میں صرف ایک جگہ سورۃ الاخلاص میں وارد ہوا ہے۔ اس اسم مبارک کا صرف ایک جگہ وارد ہونا یعنی اللہ تعالیٰ کی احدیت کی بڑی عجیب دلیل ہے۔

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ (الاخلاص: ۱)

”اے میرے نبی! آپ کہہ دیجیے کہ وہ اللہ ایک ہے۔“

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

① سنن ابو داؤد، کتاب الوتر، رقم: ۱۴۹۳۔ سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب اسم اللہ الأعظم، رقم: ۳۸۵۷۔ سنن ترمذی، رقم: ۳۴۷۵۔ صحیح ابن حبان، رقم: ۲۳۸۳۔ مستدرک حاکم: ۵۰۴/۱۔ ابن حبان، حاکم اور علامہ البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

② أسماء الحسنی، ص: ۳۰۱۔ طبع مکتبہ اسلامیہ۔

((مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ نِدَا دَخَلَ النَّارَ.))^①

”جو شخص اس حال میں فوت ہوا کہ وہ اللہ کے علاوہ کسی اور کو پکارتا تھا تو وہ جہنم میں داخل ہوگا۔“

اُس کی اولاد بھی نہیں:

﴿مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ﴾ (المؤمنون: ۹۱)

”اللہ نے اولاد نہیں پکڑی۔“

﴿أَنِّي يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةً﴾ (الانعام: ۱۰۱)

”اولاد کیسے ہوگی اس کی تو بیوی بھی نہیں۔“

پس وہ ہر کسی کی شراکت، کمزوری سے منزہ ہے۔ اس کا کوئی شریک نہیں اور اُس کی ذات ہر عیب سے منزہ ہے۔

جب فقیہوں میں سے ایک نے پاس آ کر سیدنا عیسیٰ علیہ السلام سے پوچھا: ”سب سے پہلا حکم کون سا ہے؟“ یسوع نے جواب دیا کہ پہلا یہ ہے ”سن اے اسرائیل کہ خداوند ہمارا خدا ایک ہی خداوند ہے۔“^②

اس اسم پاک کے ساتھ مروی دُعا:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ
الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا
أَحَدٌ.))

”اے اللہ! میں تجھ سے سوال کرتا ہوں اس بنا پر کہ میں گواہی دیتا ہوں کہ تو ہی اللہ ہے۔ تیرے سوا اور کوئی معبود نہیں۔ تو اکیلا ہے، بے نیاز ہے جس نے نہ جنا اور نہ جنا ہی گیا اور کوئی بھی اس کی برابری کرنے والا نہیں۔“

① صحیح بخاری، کتاب التفسیر، رقم: ۴۴۹۷.

② انجیل مقدس، مرقس، باب ۱۱، آیت ۲۹.

فضیلت: رسول اللہ ﷺ نے ایک شخص کو دُعا کرتے سنا تو آپ ﷺ نے اسے فرمایا: تو نے اللہ سے اس کے اسم اعظم کے ساتھ سوال کیا ہے کہ جب اس سے اس اسم کے وسیلہ سے مانگا جائے تو عنایت فرماتا ہے، دُعا کی جائے تو قبول کرتا ہے۔^①

۳۔ الْآخِرُ

معانی: آخر (وہ تب بھی ہوگا جب سب ختم ہو جائیں گے۔)

ہر چیز معدوم ہو جائے گی مگر وہ موجود رہے گا۔ مشکوٰۃ، ص: ۲۲۱ میں بحوالہ ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ رسول اللہ ﷺ کی دُعا ہے: ((أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ)) ”اے اللہ! تو سب سے پہلے ہے، تجھ سے پہلے کوئی چیز نہیں اور تو سب سے بعد میں ہے اور تیرے بعد کوئی چیز نہیں۔“ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۹۲)

معارف: یہ اسم پاک بھی صرف ایک مرتبہ آیا ہے:

﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ﴾ (الحديد: ۳)

”وہی اوّل ہے اور آخر ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

امام احمد، مسلم، ترمذی، ابن ابی شیبہ اور بیہقی نے ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا نے رسول اللہ ﷺ سے ایک خادم کی ضرورت کا ذکر کیا، تو آپ ﷺ نے انہیں نصیحت فرمائی کہ وہ مندرجہ ذیل دُعا پڑھا کریں:

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، مُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْاِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ فَالِقَ

① سنن ابو داؤد، کتاب الوتر، رقم: ۱۴۹۳۔ سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب اسم اللہ الأعظم،

رقم: ۳۸۵۷۔ سنن ترمذی، رقم: ۳۴۷۵۔ صحیح ابن حبان، رقم: ۲۳۸۳۔ مستدرک حاکم:

۵۰۴/۱۔ ابن حبان، حاکم اور علامہ البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

الْحَبِّ وَالنَّوَى، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ،
أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ
شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ
دُونَكَ شَيْءٌ اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ. ❶

”یا اللہ! ساتوں آسمانوں کے رب اور عرشِ عظیم کے رب ہمارے پروردگار! اور
سب چیزوں کے پروردگار، تورات اور انجیل اور قرآن اُتارنے والے، دانہ اور
گٹھلی کو زمین سے اُگانے والے، میں ہر ایک شے (جو تیرے قبضہ میں ہے)
کے شر سے تیری پناہ چاہتی ہوں۔ تو اوّل ہے تجھ سے پہلے کوئی شے نہیں تھی تو
آخر ہے تیرے بعد کوئی شے نہیں۔ تو ظاہر ہے تجھ سے اوپر کوئی شے نہیں تو باطن
ہے تجھ سے پرے کوئی شے نہیں۔ میرا قرض اُتار دے اور مجھے تنگ دستی سے
نجات دے۔“

اس مبارک دُعا میں نبی کریم ﷺ نے اس آیت کی بڑی عمدہ تفسیر فرمادی ہے کہ تو ہی
آخر ہے کوئی تیرے بعد نہیں۔

۴۔ اَلْاَعْلٰی

معانی:..... بلند و برتر۔

ساتوں آسمانوں اور عرش سے بھی بلند ہے۔ (تشریح الاسماء الاحسنی، ص: ۹۳)

معارف:..... یہ نام قرآن میں دو مرتبہ آیا ہے، ایک مقام یہ ہے:

﴿سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ (الاعلیٰ: ۱)

”اے میرے نبی! آپ اپنے برتر و اعلیٰ رب کے نام کی تسبیح پڑھتے رہیے۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا يَكِدْ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ﴾

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۶۸۸۹۔

﴿لَسَوْفَ يَرْضَى﴾ (اللیل: ۱۹-۲۱)

”اور کسی آدمی کا اس پر کوئی احسان نہیں ہوتا جس کا بدلہ چکایا جائے۔ مگر وہ اپنے

ارفع و اعلیٰ رب کی رضا چاہتا ہے اور وہ عنقریب راضی ہو جائے گا۔“

جیسے وہ بلند و بالا ہے، ایسے ہی اس کے لیے مثال بھی اعلیٰ ہے:

﴿وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلٰی﴾ (النحل: ۶۰)

”اور اللہ کے لیے مثال بھی بلند و بالا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے سے دُعا:

۱۔ رسول کریم ﷺ نے اس اسم پاک کو اپنے تجود کی تسبیح بنا رکھا تھا۔ چنانچہ آپ اپنے تجود

میں فرماتے: ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) ”میرا ارفع و اعلیٰ رب تمام عیوب و

نقص سے پاک ہے۔“ ①

۲۔ امام احمد رحمہ اللہ نے سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ جب

﴿سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ ”آپ اپنے سب سے بلند رب کے نام کی تسبیح

کریں۔“ پڑھتے تو فرماتے: ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) ”پاک ہے میرا رب

ارفع و اعلیٰ۔“ ②

امام ابن جریر نے ابو اسحاق ہمدانی سے روایت کیا ہے کہ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما جب

﴿سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ پڑھتے تو کہتے: ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) ③

۵۔ **الْأَكْرَمُ**

معانی:..... بے پایاں کرم والا۔

① سنن ابوداؤد، رقم: ۸۶۹۔ سنن ابن ماجہ، رقم: ۸۸۷۔ سنن دارمی، ۳۴۱/۱، رقم: ۱۳۰۵۔

مسند أحمد: ۱۵۵/۴۔

② مسند أحمد: ۲۳۲/۱۔

③ تفسیر الطبری: ۱۸۹/۳۰۔ المصباح المنیر: ۴۸۴/۶۔

معارف:..... یہ نام صرف ایک مقام پر وارد ہوا ہے اور وہ ہے:

﴿اقْرَأْ رَبُّكَ الْأَكْرَمُ﴾ (سورة العلق: ۳)

”پڑھیے اور آپ کا رب بے پایاں کرم والا ہے۔“

فائدہ:..... چونکہ نبی کریم ﷺ جبریل علیہ السلام کو اچانک اپنے سامنے پا کر گھبرا گئے تھے، اسی لیے بطور تاکید آپ سے کہا گیا کہ آپ پڑھیے اور چونکہ نبی کریم ﷺ نے پڑھنے سے معذرت کی تھی اور کہا تھا کہ ”مَا أَنَا بِقَارِئٍ“ مجھے پڑھنا نہیں آتا، اس لیے آپ سے کہا گیا کہ آپ کا وہ رب آپ کو پڑھنے کا حکم دے رہا ہے جو ”الْأَكْرَمُ“ بے پایاں کرم و احسان والا ہے، جس کے جو دو عطا کی کوئی انتہا نہیں، جس نے پڑھنا سکھا کر انسان پر احسان عظیم کیا ہے، اور جس نے قلم کے ذریعہ اسے وہ سب سکھایا جو وہ پہلے سے نہیں جانتا تھا۔

۶۔ اِلَٰهٌ

معانی:..... اِلَٰهَ کے کے معنی ہیں مَعْبُود (یعنی جس کی پرستش کی جاتی ہو)۔ اگر وہ عبادت کا مستحق ہو تو ”اِلَٰهَ حَقٌّ“ یعنی معبودِ برحق جیسے ذاتِ الہی ہے اور اگر عبادت و پرستش کا حق دار نہ ہو، تو وہی ”اِلَٰهَ باطل“ یعنی جھوٹا معبود ہے۔ جیسے مشرکین عرب کے خود ساختہ معبودان تھے۔ چنانچہ عربی لغت کی مشہور کتاب مختار الصحاح (ص: ۲۶، مادہ ا، ل، ہ) میں ہے: ((اَلْهَ يَأْلُهُ اِلَٰهَةٌ اَي عَبْدًا))..... ”معبود کی عبادت کرتا ہے، اِلَٰهَةٌ پوجا کرنا۔“

اور لسان العرب (۱/۱۸۹، مادہ ا، ل، ہ) میں ہے کہ: ((اِلَٰهٌ عَلٰی فِعَالٍ بِمَعْنٰی مَفْعُولٍ لِاَنَّهُ مَأْلُوهُ اَي مَعْبُودٌ))..... ”اِلَٰه، فِعَالٌ کے وزن پر مفعول کے معنوں میں ہے، اس لئے کہ اِلَٰه اُس کو کہا جاتا ہے جس کی پرستش کی جائے۔“

یاد رہے کہ انسان پوجا اور پرستش اُسی کی کرتا ہے جس کو وہ غیبی طاقت اور مانوق الا سباب اختیارات کا مالک سمجھتا ہو۔ کتب لغت اور تفسیر سے پتا چلتا ہے کہ الہ کا اصل مفہوم ہے ”وہ ذات جس کی پناہ پکڑی جائے، جس کے ہاں سکون و اطمینان نصیب ہو، جس کی

طرف انتہائی شوق و محبت کے ساتھ رجوع کیا جائے، اور جس کی طرف یوں بے قرار ہو کر توجہ کی جائے جس طرح وہ بچہ جس کا دودھ چھڑا دیا جاتا ہے اپنی ماں سے لپٹ جاتا ہے، اور وہ ذات جس کی عبادت کی جائے، اور وہ ذات جو پوشیدہ ہو۔“ چند محاورات ملاحظہ ہوں:

۱۔ ((اَلِهَ يَالَهُ إِذَا تَحَيَّرَ لِأَنَّ الْعُقُولَ تَأْلُهُ فِي عَظَمَتِهِ.)) ①

”اَلِهَ يَالَهُ، ایسے موقع پر بولا جاتا ہے، جب حیران و سرگشتہ ہو جائے، گویا کہ

عقول اس کی عظمت و بڑائی معلوم کرنے میں حیران و سرگشتہ ہو گئی ہیں۔“

۲۔ ((اَلِهَ إِذَا تَحَيَّرَ لِأَنَّ الْعُقُولَ تَتَحَيَّرُ فِي مَعْرِفَتِهِ.)) ②

”اَلِهَ ایسے موقع پر بولا جاتا ہے، جب حیران ہو جائے، گویا کہ عقل اس کی

معرفت حاصل کرنے میں سرگشتہ ہو گئی ہیں۔“

۳۔ ((اَلِهَ إِذَا فَنَعَ مِنْ أَمْرِ نَزَلَ عَلَيْهِ، وَالْهَ غَيْرَهُ أَيْ أَجَارَهُ إِذَا الْعَانِدُ

يَفْزَعُ إِلَيْهِ وَهُوَ يُجِيرُهُ حَقِيقَةً أَوْ بَزَعِمَهُ.)) ③

”آدمی کی مصیبت اور پریشانی کے نزول سے خوف زدہ اور پریشان ہوا اور

دوسرے نے اُس کو پناہ دی۔ اس لیے کہ پناہ لینے والا اُس کی پناہ چاہتا ہے،

اور وہ اُس کو پناہ دیتا ہے فی الحقیقت یا اُس کے زعم میں۔“

۴۔ ((اَلِهَ يَالَهُ إِلَهَ كَذَا أَيْ لَجَأَ إِلَيْهِ لِأَنَّهُ سُبْحَانَهُ الْمَفْزَعُ الَّذِي يُلْجَأُ

إِلَيْهِ فِي كُلِّ أَمْرٍ، قَالَ الشَّاعِرُ: أَلْهَتِ إِلَيْنَا وَالْحَوَادِثُ

جُمَّةً.)) ④

”خوف زدگی اور پریشانی کی حالت میں فلاں کے پاس اُس نے پناہ حاصل

کی، اور اُس کی جانب متوجہ ہوا۔ اس لئے کہ اللہ سبحانہ و تعالیٰ ہی وہ پناہ گاہ

ہے جس کی پناہ حاصل کی جاتی ہے، ہر مصیبت اور حادثے کے وقت، ایک

② تفسیر البیضاوی: ۶/۱۔

① لسان العرب: ۱۹۰/۱۔

④ لسان العرب: ۱۹۰/۱۔

③ تفسیر البیضاوی: ۶/۱۔

شاعر کہتا ہے: تم نے ہمارے ہاں پناہ حاصل کر لی ہے، اور حوادث بہت زیادہ ہیں۔“

۵۔ ((اَلِهْتُ اِلٰی فُلَانٍ اٰی سَكَنْتُ اِلَيْهِ ، لِاَنَّ الْقُلُوْبَ تَطْمَئِنُّ بِذِكْرِهٖ ، وَالْاَرْوَاحُ تَسْكُنُ اِلٰی مَعْرِفَتِهٖ .)) ❶

”اس کی پناہ میں جا کر میں نے سکون حاصل کر لیا۔ اس لئے کہ دلوں کو اس کے ذکر سے اطمینان حاصل ہوتا ہے، اور رُوحوں کو اس کی معرفت سے سکون میسر آتا ہے۔“

۶۔ ((اَلِهَ الْفَيْصِلُ اِذَا وَلَعَ بِاُمِّهٖ ، اِذَا الْعِبَادُ يُوَلَّعُوْنَ بِالتَّضَرُّعِ اِلَيْهِ فِی الشَّدَائِدِ .)) ❷

”اوٹنی کا بچہ ماں کو پاتے ہی شدت شوق سے اُسے چٹ گیا، اس لئے کہ لوگ مصائب کے وقت عاجزی کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی جانب توجہ کرتے ہیں۔“

۷۔ ((لَاہَ یَلِیْہُ لَیْہَا وَلَاہَا ، اِذَا احْتَجَبَ وَارْتَفَعَ لِاَنَّهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالٰی مَحْجُوْبٌ عَنْ اِدْرَاکِ الْاَبْصَارِ ، وَمُرْتَفَعٌ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ وَعَمَّا لَا یَلِیْقُ بِہٖ .)) ❸

”لاہ، یلیہ، لہا اور لاہا ایسے مواقع پر بولا جاتا ہے، جب کوئی چیز پوشیدہ اور بلند ہو جائے، اس لئے کہ اللہ تعالیٰ بھی نظروں سے پوشیدہ ہے، اور اُس کی ذات ہر چیز سے بلند ہے، اور وہ ہر اُس چیز سے پاک ہے جو اُس کی شان کے لائق نہ ہو۔“

❶ تفسیر البیضاوی: ۶/۱۔

❷ تفسیر البیضاوی: أَيْضًا۔

❸ حوالہ أَيْضًا۔

ائمہ تفسیر وحدیث اور ائمہ لغت نے مذکورہ بالا محاورات کی روشنی میں رالہ کا یہی مفہوم متعین کیا ہے، کہ ”رالہ حق، وہی ہوتا ہے جو خالق ہو، مالک ہو، حاکم ہو، رازق ہو، غیبی علم کا مالک ہو، کامل قدرت کا مالک ہو، کارساز ہو، قانون ساز ہو، اور تمام صفاتِ کاملہ کا مالک ہو۔“ چنانچہ ابن منظور ”لسان العرب“ (۱۸۹/۱) میں رقم طراز ہیں:

((قَالَ أَبُو الْهِثَمِ : وَلَا يَكُونُ إِلَهًا حَتَّى يَكُونَ مَعْبُودًا ، وَحَتَّى يَكُونَ لِعِبَادِهِ خَالِقًا وَرَازِقًا وَمُدَبِّرًا ، وَعَلَيْهِ مُقْتَدِرًا ، فَمَنْ لَمْ يَكُنْ فَلَيْسَ بِإِلَهِ ، وَإِنْ عَبْدٌ ظُلْمًا بَلْ هُوَ مَخْلُوقٌ وَ مُتَعَبَّدٌ أَنَّ الْخَلْقَ يُؤْلَهُونَ إِلَيْهِ فِي حَوَائِجِهِمْ ، وَيَضَرَّعُونَ إِلَيْهِ فِيمَا يُصِيبُهُمْ ، وَيَفْزَعُونَ إِلَيْهِ فِي كُلِّ مَا يَنْوِبُهُمْ كَمَا يُؤْلَهُ كُلُّ طِفْلٍ إِلَى أُمِّهِ .))

”ابو الہیثم فرماتے: رالہ وہی ہو سکتا ہے جس کی عبادت کی جاتی ہو، اور پرستش و عبادت کا مستحق وہی ہو سکتا ہے جو عابد کا خالق ہو، رازق ہو، مدبر ہو اور مقتدرِ اعلیٰ ہو۔ جو یہ صفات نہ رکھتا ہو وہ الہ نہیں ہے، اگرچہ ظلماً اُس کی عبادت کی جاتی ہو، بلکہ وہ مخلوق ہے اور کمزور معبود بن بیٹھا ہے، جب کہ خلقت اپنی حاجات میں اس کی طرف مضطرب ہوتی ہے، اور اپنے مصائب میں اس کے سامنے گڑگڑاتی ہے، اور تمام حوادث میں جو اس پر پڑتے ہیں، اس کے پاس چلاتی ہے، جس طرح بچہ اپنی شکایات لے کر آغوشِ مادر کا رخ کرتا ہے۔“

امام قرطبی فرماتے ہیں:

((إِنَّمَا سُمِّيَ ”اللَّهُ“ إِلَهًا ، لِأَنَّ الْخَلْقَ يَتَأْلَهُونَ إِلَيْهِ فِي حَوَائِجِهِمْ وَيَتَضَرَّعُونَ إِلَيْهِ عِنْدَ شِدَائِهِمْ .)) ①

① الجامع لأحكام القرآن للقرطبي: ۷۳/۱. المعروف ”تفسير قرطبي“

”اللہ کو الہ اس لیے کہا جاتا ہے کہ لوگ اپنی حاجات کے لئے اُس کی جانب متوجہ ہوتے، اور مصائب و شدائد کے وقت اس کے دربار میں فریاد و گریہ کرتے ہیں۔“

شیخ الاسلام ابن تیمیہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((فَالِإِلَهِ هُوَ الَّذِي يَأْلَهُهُ الْقَلْبُ بِكَمَالِ الْحُبِّ وَالتَّعْظِيمِ
وَالْإِجْلَالِ وَالْإِكْرَامِ وَالْخَوْفِ وَالرَّجَاءِ .)) ❶

”إِلَہ وہ ذات ہے کہ جس کے ساتھ دل انتہا درجے کی محبت رکھتے ہوں، انتہا درجے کی تعظیم اور اجلال و اکرام کرتے ہوں، اور انتہا درجے کا خوف و رجاء بھی اسی سے رکھتے ہوں، اور ایسے ہی تمام امور اسی سے متعلق رکھتے ہوں۔“
علامہ ابن قیم رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((تَأْلَهُهُ الْخَلَائِقُ مَحَبَّةً وَتَعْظِيمًا وَخُضُوعًا وَفَزَعًا إِلَيْهِ فِي
الْحَوَائِجِ وَالنَّوَائِبِ .)) ❷

”اللہ سے مراد وہ ذات ہے کہ دل جس کی محبت میں بے قرار ہوتے ہوں، اسی کی جلالت شان سے مرعوب ہوں، اسی کی طرف رجوع کرتے ہوں، اسی کا اکرام و تعظیم کرتے ہوں، اسی کی طرف رجوع کرتے ہوں، اسی کا اکرام و تعظیم کرتے ہوں، اسی کے سامنے ذلت، خضوع اور خوف سے پیش آئے ہوں، اسی سے امیدیں باندھتے ہوں اور اسی پر بھروسہ رکھتے ہوں۔“

معارف: یہ نام قرآن مجید میں بصورت مفرد اور بصورت اضافت کئی جگہ آیا ہے۔

اللہ کے معنی و مفہوم کو مزید سمجھنے کے لیے آیات قرآنی کا مطالعہ مفید ثابت ہوگا، لہذا چند وہ آیات پیش کی جا رہی ہیں جن میں اللہ کے إِلَہ ہونے کا ذکر ہے، ان ساری کی ساری

❶ رسالة العبودية: ص ۱۲ في مجموعة التوحيد، طبع دمشق سنة ۱۹۶۲ء.

❷ التفسير القيم، ص: ۳۳، طبع سنة ۱۹۴۹ء.

آیات سے ثابت ہوتا ہے کہ حاکم تکوینی بھی اللہ ہے، اور حاکم تشریحی بھی اللہ ہے، اس لئے کہ الہ وہی ہو سکتا ہے جو غیبی طاقت کا مالک ہو، چنانچہ تکوینی ❶ اور تشریحی حاکم بھی وہی ہے جو غیبی طاقت کا مالک ہے۔

☆ الہ وہی ہو سکتا ہے جو شریعت ساز ہو:

جیسا کہ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَلَا تَنعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝﴾ (القصص: ۸۸)

”اور اللہ کے ساتھ کسی اور معبود کو نہ پکاریے، اس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، اس کے سوا ہر چیز فنا ہو جائے گی، حکم اُسی کا ہے، اور تم سب اسی کی طرف لوٹائے جاؤ گے۔“

مذکورہ بالا آیت سے یہ بات واضح ہوتی ہے کہ الہ اُسے کہتے ہیں جو شریعت ساز ہو، جس کا حکم ہو۔

☆ الہ وہی ہو سکتا ہے جو خالق ہو، اور روزی رساں ہو۔

فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَكَيْتُؤَفْكُونَ ۝﴾ (فاطر: ۳)

”اے لوگو! تم اپنے اوپر اللہ کی نعمت کو یاد کرو، کیا اللہ کے سوا اور کوئی پیدا کرنے والا ہے جو تمہیں آسمان اور زمین سے روزی پہنچاتا ہے، اس کے سوا کوئی الہ نہیں ہے، پس تمہاری عقل کیوں ماری گئی ہے۔“

مذکورہ آیت سے واضح ہوتا ہے کہ خالق اور روزی رساں ہونا الہ کے مفہوم میں

شامل ہے۔

❶ پیدا کرنے والا، عالم وجود میں لانے والا۔

☆ اِلٰہ وہی ہو سکتا ہے جو شنوائی ❶ اور بصارت ❷ چھین سکتا ہو اور واپس دے سکتا ہو۔

اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿قُلْ اَرَاَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰی قُلُوْبِكُمْ مِّنْ اِلٰہٍ غَيْرِ اللّٰهِ يَاتِيْكُمْ بِهِ ۚ اَنْظُرْ كَيْفَ نَصَرَفُ الْاٰیٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذَقُوْنَ ۝۱۰﴾

(الأنعام: ۴۶)

”آپ پوچھے تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ تمہارے کان اور تمہاری آنکھیں لے لے، اور تمہارے دلوں پر مہر لگا دے، تو کیا اللہ کے علاوہ کوئی معبود ہے جو وہ چیزیں تمہیں دوبارہ عطا کر دے، آپ دیکھ لیجئے کہ ہم نشانیوں کو کس طرح مختلف انداز میں پیش کرتے ہیں، لیکن وہ پھر بھی اعراض سے ہی کام لیتے ہیں۔“

☆ اِلٰہ وہی ہو سکتا ہے جو نظام شمسی کو قائم رکھ سکتا ہو۔
فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿قُلْ اَرَاَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ الْاَیْلَ سَرْمَدًا اِلٰی یَوْمِ الْقِیَمَةِ مِّنْ اِلٰہٍ غَيْرِ اللّٰهِ یَاتِیْكُمْ بِضِیَآءٍ ۚ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ۝۱۱ قُلْ اَرَاَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰی یَوْمِ الْقِیَمَةِ مِّنْ اِلٰہٍ غَيْرِ اللّٰهِ یَاتِیْكُمْ بِلَیْلِ تَسْكُنُوْنَ فِیْہِ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝۱۲﴾ (القصص: ۷۱، ۷۲)

”اے میرے نبی! آپ مشرکین سے پوچھے، تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ قیامت تک کے لئے تم پر رات کو مسلط کر دے، تو اللہ کے سوا کون تمہارے لئے روشنی لے آئے گا، کیا تم سنتے نہیں ہو۔ آپ مشرکین سے پوچھے، تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ قیامت تک کے لئے تم پر دن کو مسلط کر دے، تو اللہ

❷ بصارت یعنی آنکھیں۔

❶ سننے کی طاقت (یعنی کان)

کے سوا کون تمہارے لئے رات کو لے آئے گا، جس میں تم آرام کرتے ہو، کیا تم دیکھتے نہیں ہو۔“

☆ الہ وہی ہو سکتا ہے جو ہر قسم کی حمد و ثنا کا دنیا و آخرت میں تنہا سزاوار ہو۔
فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأُولَى وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ (القصص: ۷۰)

”اور وہ اللہ ہے، اس کے سوا کوئی الہ نہیں ہے، ساری تعریفیں دنیا و آخرت میں اسی کے لیے ہیں، اور ہر جگہ اسی کی حکمرانی ہے، اور اسی کی طرف تم سب لوٹائے جاؤ گے۔“

☆ الہ وہی ہو سکتا ہے جو متصرف و مختار اور عالم الغیب ہو۔
فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿الْحُكْمُ عَلَى الْعَرْشِ أَسْتَوِي ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۚ وَإِنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۚ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾ (طہ: ۵-۸)

”وہ ”نہایت مہربان“ عرش پر مستوی ہے، جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے، اور جو ان دونوں کے درمیان میں ہے، اور جو کچھ مٹی میں ہے، سب اسی کا ہے، اور اگر آپ اونچی آواز سے بات کریں گے، تو وہ بے شک خفیہ بات کو جانتا ہے اور اس سے بھی زیادہ پوشیدہ (باتوں کو) جانتا ہے، اس اللہ کے سوا کوئی الہ نہیں ہے، اس کے بہت اچھے نام ہیں۔“

☆ الہ وہی ہو سکتا ہے جو بارش نازل کرتا اور درخت اُگاتا ہو۔
فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَ أَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَنْبَتْنَا بِهِ

حَدَّثَنَا ذَاتُ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۚ إِنَّ إِلَهَ فَعَّ اللَّهُ بِكُلِّ هُمْ
قَوْمٍ يُعَذِّبُونَ ﴿٦٠﴾ (النمل: ٦٠)

”(ان کے خود ساختہ شریک بہتر ہیں) یا وہ ذات بہتر ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے، اور تمہارے لئے آسمان سے بارش نازل کی ہے، پس ہم نے اس کے ذریعہ باروق اور خوشنما باغات اُگائے، جن کے درختوں کو تم نہیں اُگا سکتے تھے، کیا اللہ کے ساتھ کسی اور معبود نے بھی یہ کام کیا ہے؟ حقیقت یہ ہے کہ یہ لوگ راہِ حق سے دور ہو گئے ہیں۔“

فائدہ:..... معبودانِ باطلہ کی عموماً نفی کرنے کے بعد، اللہ تعالیٰ نے اپنی قدرتِ مطلقہ کی مثالیں دے کر مشرکین مکہ سے الزامی سوال کیا ہے کہ بتاؤ یہ کس کی قدرت کا کرشمہ ہے، ان چیزوں کو کس نے پیدا کیا ہے، یہ نعمتیں کس نے دی ہیں؟ اور جب ہر سوال کا جواب تمہارے پاس سوائے اس کے کچھ نہیں کہ یہ سب الہِ برحق کی کرشمہ سازی ہے، تو پھر تم اُسے چھوڑ کر دوسروں کو اپنا معبود کیوں بناتے ہو؟

اللہ تعالیٰ نے مشرکین مکہ سے پہلا الزامی سوال یہ کیا کہ ان آسمانوں اور زمین کو کس نے پیدا کیا ہے، اور آسمان سے تمہارے لئے بارش کس نے نازل کی ہے؟ جس کے ذریعہ ہم نے تمہارے لئے خوبصورت باغات اُگائے ہیں، تم ان درختوں کو اُگانے کی طاقت نہیں رکھتے تھے۔ ظاہر ہے اس کے سوا کوئی جواب نہیں کہ یہ سارے کام اللہ تعالیٰ کے ہیں، تو پھر تم کیوں اللہ کے سوا کسی اور کی پرستش کرتے ہو؟

☆ الہِ وہی ہو سکتا ہے جو زمین کو برقرار رکھ سکتا ہو، اور ندیاں، پہاڑ اور دریا بنا سکتا ہو، کڑوے اور میٹھے دو دریاؤں کو اکٹھے چلانا اور حدِ فاصل کا قائم رکھنا، یہ صفات بھی لوازم الوہیت میں سے ہیں۔

فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْقَهَا اَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ
بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ اِلَهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝﴾

(النمل: ٦١)

”یا وہ ذات بہتر ہے، جس نے زمین کو رہنے کی جگہ بنائی ہے، اور اس میں
نہریں جاری کی ہیں، اور اس پر پہاڑ بसा دیئے ہیں، اور دو سمندروں کے
درمیان ایک آڑ کھڑی کر دی ہے، کیا اللہ کے ساتھ کسی اور معبود نے بھی یہ
کام کیا ہے، حقیقت یہ ہے کہ اکثر مشرکین نادان ہیں۔“

فائدہ: دوسرا سوال یہ کیا کہ اس زمین کو تمہارے لئے قرار کی جگہ کس نے بنایا ہے
کہ وہ اُلتی نہیں ہے، اور تم آرام سے اس پر زندگی گزارتے ہو، اور زمین پر نہریں کس نے
جاری کی ہیں، اور اس پر پہاڑ کس نے جمادیئے، تاکہ حرکت نہ کرے، اور بیٹھے اور کھارے
پانی کے درمیان رکاوٹ کس نے کھڑی کی ہے، کہ وہ ایک دوسرے سے نہیں ملتے ہیں، اس
کے سوا تمہارے پاس کوئی جواب نہیں کہ یہ سب اللہ کی قدرت کے کرشمے ہیں، تو پھر تم کیوں
اس کے سوا کسی اور کو اپنا معبود بناتے ہو؟!

☆ اِلٰہ وہی ہو سکتا ہے جو بے کس کی غائبانہ پکار کو سنے، دستگیری کر سکتا ہو
اور مصیبت ہٹا سکتا ہو۔

فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿اَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاہُ وَ یَكْشِفُ السُّوْءَ وَ یَجْعَلُکُمْ خُلَفَآءَ
الْاَرْضِ ؕ اِلَهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَذَکَّرُوْنَ ۝﴾ (النمل: ٦٢)

”یا وہ ذاتِ برحق بہتر ہے، جسے پریشان حال جب پکارتا ہے تو وہ اس کی پکار
کا جواب دیتا ہے، اور اس کی تکلیف کو دور کر دیتا ہے، اور تمہیں زمین میں
جانشین بناتا ہے، کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود بھی یہ کام کرتا ہے، لوگو! تم
بہت ہی کم نصیحت قبول کرتے ہو۔“

فائدہ:..... تیسرا سوال یہ کیا کہ جب انسان کو کوئی پریشانی لاحق ہوتی ہے، کسی مرض میں مبتلا ہوتا ہے، یا کسی ظالم کے ہتھے چڑھ جاتا ہے، تو وہ بے تحاشا کسے پکارتا ہے، اور کون ہے جو اس کی فریاد رسی کرتا ہے اور اس کی مصیبت کو دور کر دیتا ہے؟ اور کون ہے جو کچھ کو موت دیتا رہتا ہے اور ان کی نسلوں کو زمین کا وارث بناتا رہتا ہے؟ جواب معلوم ہے کہ وہ اللہ ہے۔ تو اے مشرکین مکہ! پھر کیوں تم اسے چھوڑ کر معبودانِ باطلہ کے سامنے سر بسجود ہوتے ہو؟ حقیقت یہ ہے کہ تم لوگ بہت ہی کم نصیحت حاصل کرتے ہو۔

بے کس، بے بس اور مضطر کی دعا کی مناسبت سے علامہ ابن القیم رحمہ اللہ اپنی کتاب ”الجواب الکافی“ (ص: ۲۱) پر رقم طراز ہیں کہ:

”اگر دعا کرتے وقت پورے طور پر حضورِ قلب حاصل ہو، اپنی حاجت و ضرورت کا شدید احساس ہو، اور ربِّ العالمین کے حضور انتہائی عاجزی و انکساری اور غایت درجہ کا خشوع و خضوع حاصل ہو، اور دل پر رقت طاری ہو۔ اور اس حال میں بندہ اپنے رب کے پاکیزہ ناموں اور اعلیٰ صفات کو وسیلہ بنا کر دعا کرے، تو ایسی دعا شاید ہی رد کی جاتی ہے۔“

☆ **۱۔** وہی ہو سکتا ہے جو بحر و بر کی تاریکیوں میں انسانوں کی راہنمائی کرتا اور ہواؤں کو چلاتا ہو۔

فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشَرٍّ أَمِّنْ

يَكُمِ رَحْمَتُهُ ۗ عَالِمُ غُيُوبٍ ۖ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾ (النمل: ۶۳)

”یا وہ اللہ بہتر ہے جو سمندر اور خشکی کی تاریکیوں میں تمہاری راہنمائی کرتا ہے، اور جو ہواؤں کو اپنی بارانِ رحمت سے پہلے خوشخبری بنا کر بھیجتا ہے، کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود بھی یہ کام کرتا ہے، اللہ ان کے جھوٹے معبودوں سے برتر و بالا ہے۔“

فائدہ: چوتھا سوال یہ کیا کہ صحراء اور سمندر کی تاریکیوں میں تمہاری کون رہنمائی کرتا ہے، اور کون بارش برسانے سے پہلے ہواؤں کو بھیجتا ہے، جن سے لوگ سمجھ لیتے ہیں کہ اب بارش ہوگی، کون ان باتوں پر قادر ہے؟ جواب معلوم ہے کہ وہ اللہ ہے، تو پھر کیوں تم لوگ اس کے ساتھ غیروں کو شریک بناتے ہو، اللہ تمہارے ان جھوٹے معبودوں سے بہت ہی برتر و بالا ہے۔

قرآن کریم میں اللہ تعالیٰ کے لالہ واحد ہونے کا ذکر (۱۲۲) آیات میں ہوا ہے، مسئلہ الوہیت کو مزید سمجھنے کے لئے ان آیات کا مطالعہ ضروری ہے۔

اس اسم پاک کے وسیلہ سے دعا:

❖ ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ.“

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں۔“

فضیلت: رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: سب سے زیادہ فضیلت رکھنے والا

ذکر ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ.“ ہے۔ ❶

❖ ”لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.“

”تیرے علاوہ کوئی معبود نہیں ہے، تو تمام عیوب سے پاک ہے، میں بے شک ظالم تھا۔“

فضیلت: رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: یونس علیہ السلام کی دعا جب وہ مچھلی

کے پیٹ میں تھی: ”لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.“ تھی۔

جب بھی کوئی مسلمان اپنے رب سے کسی حاجت کے لیے یہ دعا کرے گا قبول کی جائے گی۔ ❷

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۳۸۳۔ محدث البانی نے اسے ”حسن“ کہا ہے۔

❷ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۰۵۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

۷۔ اَلْاَوَّلُ

معانی:..... سب سے پہلے۔

ہر موجود چیز کے وجود سے پیشتر اس کا وجود تھا۔ مشکوٰۃ، ص: ۲۱۱ میں بحوالہ البوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ رسول اللہ ﷺ کی دعا ہے: ”اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ“۔
”اے اللہ! تو سب سے پہلے ہے، تجھ سے پہلے کوئی چیز نہیں اور تو سب سے بعد میں ہے اور تیرے بعد کوئی چیز نہیں۔“ (الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء والحسنی، ص: ۹۲)

معارف:..... یہ نام قرآن مجید میں صرف ایک مرتبہ وارد ہوا ہے:

﴿هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ﴾ (الحديد: ۳)

”وہی اول ہے اور آخر ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

امام احمد، مسلم، ترمذی، ابن ابی شیبہ اور بیہقی نے ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا نے رسول اللہ ﷺ سے ایک خادم کی ضرورت کا ذکر کیا، تو آپ ﷺ نے انہیں نصیحت فرمائی کہ وہ مندرجہ ذیل دُعا پڑھا کریں:

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، مُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْفُرْقَانِ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِفْضِ عَنِّي الدِّيْنَ وَاغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ .)) ❶

”یا اللہ! ساتوں آسمانوں کے رب اور عرش عظیم کے رب ہمارے پروردگار! اور سب چیزوں کے پروردگار، تورات اور انجیل اور قرآن اُتارنے والے، دانہ اور

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدُعاء، رقم: ۶۸۸۹۔

گٹھلی کو زمین سے اُگانے والے، میں ہر ایک شے (جو تیرے قبضہ میں ہے) کے شر سے تیری پناہ چاہتی ہوں۔ تو اوّل ہے تجھ سے پہلے کوئی شے نہیں تھی تو آخر ہے تیرے بعد کوئی شے نہیں۔ تو ظاہر ہے تجھ سے اوپر کوئی شے نہیں تو باطن ہے تجھ سے پرے کوئی شے نہیں۔ میرا قرض اُتار دے اور مجھے تنگ دستی سے نجات دے۔“

اس مبارک دُعا میں نبی کریم ﷺ نے اس آیت کی بڑی عمدہ تفسیر بیان فرمادی ہے کہ تو ہی اول ہے اور تجھ سے پہلے کوئی چیز نہیں۔



حرف الباء

۸۔ اَلْبَارِئُ

معانی:..... پیدا کرنے والا۔

اس حیثیت سے کہ وہ موجود ہے (الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص : ۷۷)
لفظ باری خلق حیوانات کے لیے زیادہ مستعمل ہے اور عدم سے وجود میں لانے کے لیے
بھی۔ (الاسماء الحسنیٰ، ص : ۸۵)

معارف:..... قرآن مجید میں یہ نام تین جگہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾ (الحشر: ۲۴)

”وہ اللہ پیدا کرنے والا ہے، ہر مخلوق کو اس کا وجود دینے والا ہے، اس کی
صورت بنانے والا ہے، تمام پیارے نام اسی کے لیے ہیں۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ﴾ (البقرة: ۵۴)

”پس تم اپنے پیدا کرنے والے کے حضور توبہ کرو۔“

۹۔ اَلْبَاطِنُ

معانی:..... پوشیدہ و پنہاں۔

کوئی اس کی ذات کا ادراک نہیں کر سکتا بلکہ اس کی قدرت کی نشانیوں سے اس کو پہچانا
جائے اور اس کا یقین رکھا جائے۔ (البیہقی)

نیز بمعنی ہر غیب و باطن کو جاننے والا جیسے کہا جاتا ہے۔ ”بطنت فلانا و خبرتہ اذا
عرفت باطنہ و ظاہرہ“ اس کے ظاہر و باطن کو جاننا، اور اللہ تعالیٰ تمام ظاہری اور باطنی

امور کو جاننے والے ہیں۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص : ۹۳)

معارف: یہ اسم پاک بھی صرف ایک مقام پر وارد ہوا ہے:

﴿وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ (الحديد : ۳)

”وہی ظاہر ہے، اور باطن ہے، اور وہ ہر چیز پر قادر ہے۔“

ابوزمیل سماک بن ولید روایت کرتے ہیں میں نے سیدنا عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما سے سوال کیا میں اپنے سینہ میں الجھن سی پاتا ہوں، انہوں نے فرمایا: وہ کیا ہے؟ میں نے عرض کیا، اللہ کی قسم! بات کرنے کا حوصلہ نہیں پاتا۔ فرمایا: کوئی شک ہے؟ اور مسکرا کر کہنے لگے اس سے تو کوئی بھی نہیں بچا۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ

قَبْلِكَ﴾ (یونس : ۹۴)

جب بھی دل میں ایسی بات آئے تو کہا کرو وہی اللہ عزوجل اول ہے، وہی آخر ہے، باطن ہے، وہی ظاہر ہے اور وہ ہر چیز کو جانتا ہے۔ شکوک و شبہات ختم کرنے اور وسوسوں کو دور کرنے کے لیے عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما نے ابوزمیل کو اس ذکر کی رہنمائی کی۔ ❶

اللہ تعالیٰ ظاہر و باطن ہے، اس نے اپنی نعمتوں کو تمام کر دیا ہے، چاہے وہ ظاہری ہوں، جیسے اچھی شکل و صورت اور مناسب اعضائے جسمانی، اور چاہے وہ باطنی ہوں، جیسے عقل و ادراک، علم و معرفت اور دیگر بے شمار نعمتیں جن کا احاطہ نہیں کیا جاسکتا۔

﴿وَأَسْمِعْ عَلَيْهِمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي

اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ﴾ (لقمان : ۲۰)

”اور اس نے اپنی ظاہری اور باطنی نعمتیں تم پر تمام کر دی ہیں۔ اور بعض لوگ ایسے ہوتے ہیں جو اللہ کے بارے میں بغیر کسی علم، بغیر دلیل، اور بغیر کسی روشنی دینے والی کتاب کے جھگڑتے ہیں۔“

❶ سنن ابوداؤد، رقم : ۵۱۱۰۔ محدث البانی نے اسے ”حسن الاسناد“ قرار دیا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

امام احمد، مسلم، ترمذی، ابن ابی شیبہ اور بیہقی نے ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا نے رسول اللہ ﷺ سے ایک خادم کی ضرورت کا ذکر کیا، تو آپ ﷺ نے انہیں نصیحت فرمائی کہ وہ مندرجہ ذیل دُعا پڑھا کریں:

((اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، مُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ.)) ❶

”یا اللہ! ساتوں آسمانوں کے رب اور عرش عظیم کے رب ہمارے پروردگار! اور سب چیزوں کے پروردگار، تورات اور انجیل اور قرآن اُتارنے والے، دانہ اور گٹھلی کو زمین سے اُگانے والے، میں ہر ایک شے (جو تیرے قبضہ میں ہے) کے شر سے تیری پناہ چاہتی ہوں۔ تو اوّل ہے تجھ سے پہلے کوئی شے نہیں تھی تو آخر ہے تیرے بعد کوئی شے نہیں۔ تو ظاہر ہے تجھ سے اوپر کوئی شے نہیں تو باطن ہے تجھ سے پرے کوئی شے نہیں۔ میرا قرض اُتار دے اور مجھے تنگ دستی سے نجات دے۔“

۱۰۔ اَلْبَدِيعُ

معانی:..... بے مثال، بے مثال پیدا کرنے والا۔

جو اپنی ذات و صفت میں بے مثل ہے۔ (الغزالی)

اور وہی بے مثال پیدا کرنے والا ہے۔ وہ اکیلا اپنے خاص علم اور قدرت سے پیدا کرنے

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۶۸۸۹۔

والا ہے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۸)

معارف: رب تعالیٰ کا یہ نام دو مقام پر قرآن مجید میں وارد ہوا ہے، ایک مقام پر

ارشاد فرمایا:

﴿بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَتَىٰ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُ صَاحِبَةٌ ۚ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝﴾ (الانعام: ۱۰۱)

”وہ آسمانوں اور زمین کا (بغیر کسی سابق مثال و نمونہ کے) پیدا کرنے والا ہے۔ اس کو بیٹا کیسے ہو سکتا ہے، جبکہ اس کی کوئی بیوی نہیں ہے، اور اس نے ہر چیز کو پیدا کیا ہے، اور وہ ہر چیز کا جاننے والا ہے۔“

سورہ بقرہ میں ارشاد فرمایا:

﴿بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝﴾

(البقرة: ۱۱۷)

”اللہ تعالیٰ آسمانوں اور زمین کا (بغیر نمونہ دیکھے) پیدا کرنے والا ہے، اور وہ جب کسی چیز (کو وجود میں لانے) کا فیصلہ کر لیتا ہے، تو کہہ دیتا ہے کہ ہو جا، وہ چیز وجود میں آ جاتی ہے۔“

اسم بدیع ہر دو مقامات پر السموات و الأرض کے ساتھ باضافت مستعمل ہوا ہے۔
اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْحَنَّانُ
بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ! يَا حَيُّ يَا
قَيُّوْمُ! اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَاعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ)) ❶

”اے اللہ! میں تجھ سے اس بات کے ساتھ سوال کرتا ہوں کہ حمد و ثناء تیرے ہی

❶ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳/۱۔ سنن ابن ماجہ، رقم: ۹۱۰۔ سنن ابو داود، رقم:

۷۹۷۔ محدث البانی نے اللہ اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

لیے ہے۔ تیرے سوا کوئی معبودِ برحق نہیں۔ بے حد احسان کرنے والے، تمام آسمانوں اور زمین کو پیدا کرنے والے، اے بزرگی اور عزت والے رب! اے زندہ اور ہمیشہ ہمیشہ رہنے والے اللہ! میں تجھ سے جنت مانگتا ہوں اور جہنم سے تیری پناہ چاہتا ہوں۔“

۱۱۔ اَلْبَرُّ

معانی:..... بڑا احسن۔

اپنی تمام مخلوقات سے بھلائی کرنے والا۔ ان کے لیے کسی بھی پریشانی کا ارادہ نہیں رکھتا۔ انسانوں کے کتنے ہی گناہوں سے درگزر فرماتا ہے۔ نیکی کے ثواب کو بڑھاتا ہے۔ اپنے مقرب بندوں کو دوستی اور عبادت کے لیے مخصوص فرماتا ہے۔ ساری مخلوق کو رزق دینے میں مہربان ہے۔ کسی کے ساتھ بخل نہیں کرتا۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنى، ص : ۹۴)

معارف:..... یہ نام صرف ایک مقام پر آیا ہے، چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ﴾ (الطور: ۲۸)

”ہم لوگ اس سے پہلے اس کو پکارتے تھے، وہ بے شک بڑا احسان کرنے والا، بے حد رحم کرنے والا ہے۔“

اس اسم پاک کے ساتھ تخلیق کرنے والوں کو اللہ تعالیٰ نے ابرار کا خطاب عطا فرمایا، ان کو اللہ تعالیٰ نعمتوں والی جنت میں جگہ دے گا، اور وہ گاؤ تکیوں پر ٹیک لگائے آرام کریں گے، اور ان کا رب ”البر الرحیم“ انہیں جن نعمتوں سے نوازے گا، اور جو عزت بخشے گا، اس کے بارے میں سوچ سوچ کر دل ہی دل میں نہایت خوش ہوں گے، اور ان بیش بہا نعمتوں کی وجہ سے خوشی کے آثار ان کے چہروں پر نمایاں ہوں گے۔

﴿إِنَّ الْآبِرَّ أَرَفٌ لِّغِي نَعِيمِهِ ۖ عَلَى الْآرَابِكِ يَنْظُرُونَ ۖ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ

نُضْرَةً النَّعِيمِ﴾ (المطففين: ۲۲ تا ۲۴)

”بے شک بھلائی کرنے والے نعمتوں میں ہوں گے۔ اونچی مسندوں پر بیٹھے دیکھتے رہیں گے۔ آپ اُن کے چہروں میں نعمتوں کی تروتازگی کو پہچان لیجیے گا۔“

۱۲۔ اَلْبَصِيرُ

معانی:..... سب کچھ دیکھنے والا۔

جو ہر چیز دیکھتا ہے اگرچہ وہ تحت الثریٰ میں ہی کیوں نہ ہو۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنیٰ، ص : ۸۲)

علامہ ابن قیم رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ بصیر وہ ہے جو اپنی بصارت کے کمال سے ایک چھوٹی چوٹی کی تفصیلات بھی دیکھتا ہے، اس کے اعضاء اس کا گوشت اس کا خون اس کے مغز اس کی رگیں اور اس کا شب تاریک میں ٹھوس چٹان پر ریگنا بھی دیکھتا ہے۔ (طریقۃ الہجرتین : ۲۳۴)

معارف: یہ نام قرآن مجید میں (۴۲) مقامات پر آیا ہے، کہیں مجرد بصیر، کہیں اسم سمیع کے ساتھ اور کہیں اسم خبیر کے ساتھ۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ (البقرہ: ۲۳۳)

”اور اللہ سے ڈرتے رہو، اور جان رکھو کہ اللہ تمہارے اعمال کو دیکھ رہا ہے۔“

سورۃ آل عمران میں ارشاد فرمایا:

﴿وَاللَّهُ بِصِيرٍ يَّالْعَبَادِ﴾ (آل عمران : ۱۵)

”اور اللہ اپنے بندوں کو دیکھ رہا ہے۔“

سورۃ النساء میں فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَبِيحًا بَصِيرًا﴾ (النساء : ۵۸)

”بے شک اللہ خوب سننے والا، اور دیکھنے والا ہے۔“

سورۃ الشوریٰ میں بیان فرمایا:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ (الشوریٰ : ۱۱)

ایک اور مقام پر فرمایا:

”بے شک وہ اپنے بندوں سے پوری طرح باخبر اور انہیں اچھی طرح دیکھ رہا ہے۔“

سورة الممتحنة میں ارشاد فرمایا:

”قیامت کے دن نہ تمہارے رشتہ دار کام آئیں گے، اور نہ تمہاری اولاد، (اُس دن) تمہارے درمیان اللہ فیصلہ کرے گا، اور وہ تمہارے اعمال کو خوب دیکھ رہا ہے۔“

”وہ تمہارے ساتھ ہوتا ہے، اور تم جو کچھ کرتے ہو اسے خوب دیکھ رہا ہوتا ہے۔“

اور رسول کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ: ”ایسے انداز میں اللہ کی عبادت کرو کہ تم اسے دیکھ رہے ہو اگر یہ نہیں تو وہ تم کو دیکھ رہا ہو۔“ ❶

اللہ تعالیٰ بصیر ہے کہ جس نے حضرت انسان کو بھی بصارت عطا فرمائی۔

﴿فَجَعَلْنَاهُ سَبِيْعًا بَصِيْرًا﴾ (الدھر : ۲)

”پس ہم نے اسے سننے والا اور دیکھنے والا بنایا۔“



حرف التاء

۱۲۔ التَّوَابُ

معانی:..... توبہ قبول کرنے والا۔

جو بندہ بھی اپنے گناہوں پر نادم ہو کر اس کے احکام کی اتباع کی طرف رجوع کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ بھی اپنی رحمت کے ساتھ اس کی طرف رجوع فرماتے ہیں۔ جو وعدے بھی اپنے بندوں سے کیے ہیں ان سے محروم نہیں رکھتا۔ نہ صرف توبہ قبول کرتا ہے بلکہ خود بندے کو توبہ کی توفیق دیتا ہے جیسے فرمایا: ﴿ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا﴾ (التوبة: ع ۱۴ پ ۱۱، آیت: ۱۸) ”ان کی طرف رحمت سے متوجہ ہوا تا کہ وہ توبہ کریں۔“ (تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۴)

معارف:..... قرآن مجید میں یہ نام (۱۱) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر صرف توابا اور ایک مقام پر تواب حکیم اور باقی نو مقامات پر ”التواب الرحیم“ مستعمل ہوا ہے۔

سورۃ الحجرت میں ارشاد فرمایا:

﴿وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ١٥﴾ (الحجرات: ۱۲)

”اور اللہ سے ڈر جاؤ، بے شک اللہ توبہ قبول کرنے والا، بے حد رحم کرنے والا ہے۔“

سورۃ التوبہ میں فرمایا:

﴿أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ

اللَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ٥٠﴾ (التوبہ: ۱۰۴)

”کیا ان لوگوں نے نہیں جانا کہ بے شک اللہ ہی اپنے بندوں کی توبہ قبول

کرتا ہے، اور وہی صدقات لیتا ہے، اور بلاشبہ اللہ توبہ قبول کرنے والا، نہایت مہربان ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے اہل ایمان کو مخاطب کر کے فرمایا کہ وہ اپنے گناہوں سے صدقِ دل کے ساتھ ایسی توبہ کریں جس میں رب العالمین سے یہ عہد و پیمان ہو کہ وہ اب کبھی بھی اُن گناہوں کا ارتکاب نہیں کریں گے اور ایسی توبہ پر اللہ تعالیٰ نے یہ وعدہ کیا کہ وہ اُن کے گناہوں کو معاف کر دے گا، اور انہیں اُس دن اپنی جنتوں میں داخل کرے گا۔

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۖ عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا آتِنَا نُورَنَا وَاعْفُ رَنَا ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾

(التحریم : ۸)

”اے ایمان والو! تم اپنے رب کے حضور صدقِ دل سے توبہ کرو، امید ہے کہ تمہارا رب تمہارے گناہ معاف کر دے گا، اور تمہیں ایسی جنتوں میں داخل کر دے گا جن کے نیچے نہریں جاری ہوں گی، جس دن اللہ نبی کو اور ان کے ساتھ ایمان والوں کو رسوا نہیں کرے گا، ان کا نور ان کے آگے اور ان کے دائیں طرف دوڑتا رہے گا، وہ لوگ کہیں گے، اے ہمارے رب! ہمارے لیے ہمارے نور کو پورا کر دے، اور ہمیں معاف کر دے، تو بے شک ہر چیز پر قادر ہے۔“

﴿وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝﴾ (الشوری : ۲۵)

اور وہی ہے جو اپنے بندوں کی توبہ قبول کرتا ہے، اور ان کے گناہوں کو معاف کرتا ہے، اور تمہارے اعمال کو جانتا ہے۔“

سیدنا عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((الَّتَائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ.))^①

”گناہوں سے توبہ کرنے والا ایسے ہی ہے جیسے کہ اس نے کوئی گناہ کیا ہی نہیں ہو۔“

توبہ کا وقت:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَ لَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ إِلَّكَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝﴾ (النساء : ١٧ تا ١٨)

”اللہ کے نزدیک صرف ان لوگوں کی توبہ قبول ہوتی ہے جو نادانی میں گناہ کر بیٹھے ہیں، پھر جلد ہی توبہ کر لیتے ہیں، تو اللہ ان کی توبہ قبول کرتا ہے، اور اللہ بڑا علم والا، بڑی حکمتوں والا ہے۔ ان لوگوں کی توبہ قبول نہیں ہوتی جو بُرے کام کرتے رہتے ہیں، یہاں تک کہ جب (ان میں سے کسی کی) موت سامنے ہوتی ہے، تو کہتا ہے کہ اب میں نے توبہ کر لی، اور نہ ان لوگوں کی توبہ قبول ہوتی ہے جو حالت کفر میں مر جاتے ہیں، انہی لوگوں کے لیے ہم نے دردناک عذاب تیار کر رکھا ہے۔“

امام احمد، ترمذی اور ابن ماجہ نے ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت کی ہے، نبی کریم ﷺ نے

فرمایا کہ اللہ تعالیٰ بندے کی توبہ حلق میں آخری سانس اٹکنے سے پہلے تک قبول کرتا ہے۔^①

① صحیح مسلم، کتاب التوبة، رقم : ۶۹۸۹۔ ② سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم : ۳۵۳۷۔

سنن ابن ماجہ، رقم : ۴۲۵۳۔ امام ترمذی نے اسے ”حسن غریب“ اور محدث البانی نے ”حسن“ قرار دیا ہے۔

سیدنا ابوموسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

”بلاشبہ اللہ تعالیٰ رات کو اپنا ہاتھ پھیلاتا ہے، کہ دن بھر گناہ کرنے والے توبہ کر لیں اور دن کو اپنا ہاتھ پھیلاتا ہے تاکہ رات بھر گناہ کرنے والے تائب ہو جائیں یہاں تک کہ سورج مغرب کی جانب سے طلوع ہو جائے گا۔“^①

اس اسم پاک کے وسیلہ سے دُعا:

(۱)..... سیدنا عبد اللہ بن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ: جب رسول اللہ ﷺ کسی جنگ یا سفر حج سے واپس تشریف لاتے تو ہر بلند جگہ پر تین (۳) مرتبہ اَللّٰهُ اَكْبَرُ کہتے، پھر یہ دعا پڑھتے:

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، آئِبُونَ ، تَائِبُونَ ، عَابِدُونَ ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدُهُ ، وَنَصَرَ عَبْدُهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ))^②

”اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں۔ وہ اکیلا ہے، اس کا کوئی شریک نہیں، اس کی بادشاہت ہے اُسی کے لیے تمام تعریفیں ہیں اور وہ ہر چیز پر مکمل قدرت رکھتا ہے، ہم واپس آنے والے ہیں، توبہ کرنے والے ہیں، عبادت کرنے والے ہیں، (اور) اپنے رب کی تعریف کرنے والے ہیں، سچ کر دکھایا اللہ نے اپنا وعدہ، اپنے بندے کی مدد فرمائی اور اس نے تمام لشکروں کو شکست دے دی۔“

(۲)..... حدیث میں آیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ پر سورۃ ﴿اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ﴾ نازل ہوئی تو آپ نے کثرت کے ساتھ رکوع میں اس دعا کو اپنا معمول بنالیا:

((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنَّكَ أَنْتَ

① صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم : ۶۹۸۹۔

② صحیح بخاری، کتاب العمرة، رقم : ۱۷۹۷۔ صحیح مسلم، کتاب الحج، رقم : ۳۲۷۸۔



التَّوَابُ الرَّحِيمُ .))

”اے اللہ! تو پاک ہے، اے ہمارے رب! ہر قسم کی تعریف کے لائق تو ہے، اے اللہ مجھے معاف کر دے، بے شک تو توبہ قبول کرنے والا نہایت مہربان ہے۔“

نوٹ:..... یہ دعا آپ تین مرتبہ پڑھا کرتے تھے۔^①



① مسند أحمد : ۱/۳۸۸، رقم : ۳۶۳۸۔ مجمع الزوائد : ۱۲۷/۳۔

حرف الجیم

۱۴۔ الْجَامِعُ

معانی:..... اکٹھا کرنے والا۔

معارف:..... قرآن مجید میں یہ اسم (۲) جگہ واقع ہوا ہے، چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۖ﴾ (آل عمران: ۹)

”اے ہمارے رب! تو لوگوں کو اکٹھا کرے گا ایک ایسے دن میں جس کے آنے

میں کوئی شبہ نہیں ہے، بے شک اللہ میعاد کے خلاف نہیں کرتا۔“

اللہ تعالیٰ جامع ہے، وہ منافقین اور کفار کو جہنم میں اکٹھا کرے گا۔

﴿إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۖ﴾

(النساء: ۱۴۰)

”بے شک اللہ تمام منافقین اور کافروں کو جہنم میں اکٹھا کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ جامع ہے، وہ تو انبیاء و رسل کو بھی جمع کر کے پوچھے گا کہ ان کی قوموں کی

طرف سے انہیں کیا جواب ملا، تو رعب و دہشت کا یہ عالم ہوگا کہ ان کا جواب جانتے ہوئے

بھی اس کا علم اللہ کے حوالے کر دیں گے، اور جب انبیاء و رسل کا یہ حال ہوگا، تو دوسروں کا

کیا حال ہوگا، اور دوسرے کب جرأت کریں گے کہ وہ اللہ سے بات کریں۔

﴿يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَا ذَا أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ

عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۖ﴾ (المائدة: ۱۰۹)

”اللہ جب (روزِ قیامت) تمام رسولوں کو جمع کرے گا، تو ان سے پوچھے گا کہ

تمہیں (تمہاری دعوتِ حق کا قوموں کی طرف سے) کیا جواب ملا، تو (خوف و

دہشت کے مارے صرف اتنا) کہیں گے کہ ہمیں کوئی خبر نہیں، بے شک تو ہی

تمام غیبی امور کا جاننے والا ہے۔“

۱۵۔ الْجَبَّارُ

معانی:..... سب سے زبردست۔ ملانے والا۔

کمزور اور ٹوٹے ہوئے دلوں کو آپس میں ملانے والا۔ نیز زور آور، کیونکہ جبر بمعنی قہر کے بھی آئے ہیں۔ نیز بلند کیونکہ جبر کے معنی بلندی کے بھی ہیں۔ کھجور کے بلند و بالا درخت کو بھی جبارہ کہا جاتا ہے۔ (قصیدہ نونیہ لابن القيم، ص : ۱۵۰)

نبیہی امام خطاب سے نقل کرتے ہیں کہ الْجَبَّارُ یعنی اپنی مخلوق کو اپنے ارادہ، امر اور نہی کے آگے مجبور کرنے والا اور فقراء اور محتاجوں کے اسباب معاش کو جمع کرنے والا۔ (بحوالہ

تشریع الأسماء الحسنی، ص : ۷۶)

معارف:..... یہ نام بھی صرف ایک مقام پر آیا ہے، چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ﴾ (الحشر: ۲۳)

”ہر چیز پر غالب، زبردست، شانِ کبریائی والا ہے۔“

دنیا میں جس نے بھی زبردست بننے کی کوشش کی، اللہ تعالیٰ نے اُسے نیست و نابود ضرور کیا، کیونکہ وہ اللہ تعالیٰ کی اس صفتِ عالی میں شریک ہونے کی سعی لا حاصل کر رہا تھا۔ چنانچہ فرمایا:

﴿وَأَسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ﴾ (ابراہیم : ۱۵)

”کافروں نے چاہا کہ اللہ ان کے اور رسولوں کے درمیان فیصلہ کر ہی ڈالے تو نتیجہ یہ نکلا کہ ہر سرکش و متکبر نامراد ہوا۔“

﴿وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ﴾ ۵۹ ﴿وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً﴾

(ہود : ۶۰ تا ۵۹)

”اور انہوں نے ہر سرکش و نافرمان کے حکم کی اتباع کی اور اس دنیا میں ان کے پیچھے لعنت لگا دی گئی (یعنی ان کے بعد آنے والے انبیاء نے ان پر لعنت بھیجی)۔“

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”روزِ قیامت جہنم سے ایک گردن نکلے گی اس کی آنکھیں ہوں گی جن کے ساتھ وہ دیکھے گی اور دوکان ہوں گے جن کے ساتھ وہ سنے گی اور زبان ہوگی جس کے ساتھ وہ بات کرے گی اور کہے گی: میں تین آدمیوں پر مقرر ہوں ہر ایک جبار اور عناد کرنے والے پر اور اس پر جو اللہ کے ساتھ دوسرے کو الہ قرار دیتا ہے اور مصوروں پر (تاکہ انہیں جہنم میں داخل کر دوں)۔“^①

اس اسم پاک کے ساتھ تخلیق کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ اپنے اندر صفت ہمدردی و نغمساری کو پیدا کرے۔

جباری و قہاری و قدوسی و جبروت

یہ چار عناصر ہوں تو بنتا ہے مسلمان

اس اسم پاک کے وسیلہ سے دعا:

رسول اللہ ﷺ سجدے میں یہ دعا پڑھا کرتے تھے:

((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ .))^②

”اے اللہ! جبر والے، بڑی مملکت اور عظمت و کبریائی والے، تو پاک ہے۔“



① مسند احمد : ۳۳۶/۲ - سنن الترمذی، رقم : ۲۵۷۴ - سلسلہ احادیث الصحیحہ، رقم : ۵۱۲.

② سنن ابوداؤد، کتاب الصلوٰۃ، رقم : ۸۷۳ - محدث البانی نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

حرف الحاء

۱۶۔ اَلْحَافِظُ

معانی:..... حفاظت کرنے والا، نگہبان۔

معارف:..... یہ نام بھی صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا﴾ (یوسف: ۶۴)

”پس اللہ ہی سب سے اچھا حفاظت کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ ہی حافظ ہے کہ جس نے قرآن مجید کے الفاظ کو تغیر و تبدل، کمی بیشی اور

اس کے معانی کو ہر قسم کی تبدیلی سے محفوظ کر دیا۔

﴿إِنَّا نَحْنُ نُحْفِظُ الْقُرْآنَ وَنُحْفِظُكَ﴾ (الحجر: ۹)

”بے شک ہم نے اُتارا ہے اس ذکر کو اور ہم ہی اس کے نگہبان ہیں۔“

آسمان و زمین اور ان دونوں میں پائی جانے والی تمام مخلوقات و موجودات کی نگہبانی

اللہ کے لیے کوئی مشکل کام نہیں، ہر ایک کا وہی اکیلا نگہبان ہے۔

﴿وَلَا يَعْزُدُكَ حِفْظُهُمَا﴾ (البقرہ: ۲۵۵)

”اور ان کی حفاظت اس پر بھاری نہیں۔“

اللہ تعالیٰ نے سیدنا سلیمان علیہ السلام کے لیے جنوں کو مسخر کر دیا تھا، جو سمندر میں غوطے لگا

کر ان کے لیے قیمتی موتی اور جواہر نکالتے تھے اور دوسرے کام بھی ان کے حکم سے کرتے

تھے، عمارتیں، مجسمے، قلعے اور کشتیاں بناتے تھے۔ اللہ تعالیٰ کا ان پر خاص کرم یہ تھا کہ وہ ان

تمام چیزوں کی حفاظت کرتا تھا تاکہ کوئی شیطان بنانے کے بعد انہیں بگاڑ نہ دے۔

﴿وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَّغْوُصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ

حُفَظِينَ ﴿۸۲﴾ (الأنبياء: ۸۲)

”اور بعض شیاطین کو بھی ان کا تابع بنا دیا تھا جو ان کے لیے سمندروں میں غوطہ لگاتے تھے، اور اس کے علاوہ دوسرے کام بھی کرتے تھے، اور ہم ان کی نگرانی کرتے تھے۔“

۱۷۔ الْحَسِيبُ

معانی:..... حساب لینے والا، کافی ہونے والا۔

ہر ایک چیز کے لیے۔ (الغزالی)

یا تمام اجزاء اور ان کی مقدار سے بخوبی آگاہ اور بغیر (تخمینہ لگائے) حساب کے۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۵)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام تین مقامات پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَكُفِيَ بِاللّٰهِ حَسِيبًا﴾ (النساء: ۶)

”اور اللہ تعالیٰ بحیثیت حساب لینے والے کے کافی ہے۔“

اللہ تعالیٰ وہ حسیب ہے جو قیامت کے دن ہر آدمی سے کہے گا کہ اپنا نامہ اعمال پڑھو جس میں تمہارے چھوٹے بڑے تمام اعمال درج ہیں، اور آج تم خود ہی اپنے اعمال کا حساب لگاؤ گے اور گواہ بنو گے کہ تم نے ان کا ارتکاب کیا تھا۔

﴿اِقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا﴾ (بنی اسرائیل: ۱۴)

”(اُس سے کہا جائے گا کہ) اپنا نامہ اعمال پڑھو، آج تم خود بحیثیت محاسب

اپنے لیے کافی ہو گے۔“

بندوں کے اعمال کی کتابیں اللہ کے سامنے لائی جائیں گی، اور ہر شخص کو اس کا نامہ اعمال اس کے ہاتھ میں دیا جائے گا، مومن کو اس کے دائیں ہاتھ میں، اور کافر کو بائیں ہاتھ میں۔ دنیا میں جرائم و معاصی کا ارتکاب کرنے والے اپنے صحیفوں میں بُرے اعمال کو دیکھ کر مارے ڈر کے کانپیں گے اور کہیں گے: اے ہماری بد نصیبی! اس صحیفہ کو کیا ہو گیا ہے کہ اس نے

چھوٹے بڑے کسی گناہ کو نہیں چھوڑا ہے، ہر گناہ اس میں درج ہے۔

﴿وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوَلِّتُنَا مَا لَ هَذَا الْكِتَابُ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا﴾ (الكهف: ٤٩)

”اور نامہ اعمال سامنے لایا جائے گا تو اس میں موجود بد اعمالیوں کی وجہ سے آپ مجرمین کو خوف زدہ دیکھیں گے، اور وہ کہیں گے: اے ہماری بدنصیبی! اس کتاب کو کیا ہو گیا ہے کہ اس نے چھوٹے بڑے کسی گناہ کو بھی بغیر شمار کیے نہیں چھوڑا ہے۔ اور انہوں نے دنیا میں جو کچھ کیا ہو گا اسے اپنے سامنے پائیں گے۔“

سورة الغاشیہ میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۖ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ﴾ (الغاشیہ: ٢٥، ٢٦)

”بے شک انہیں ہمارے پاس ہی لوٹ کر آنا ہے۔ پھر ہمیں ہی ان کا حساب لینا ہے۔“

لہذا اللہ تعالیٰ سے حساب یسیر کی دعا کرتے رہنا چاہیے۔

اللہ تعالیٰ کفایت کرنے والا ہے۔ نبی کریم ﷺ کو مخاطب کر کے اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا کہ آپ کی ان تمام خوبیوں کے باوجود عرب کے لوگ آپ کی دعوت کو قبول نہ کریں، تو آپ کہہ دیجیے کہ میں تمہارے کرتوتوں سے بری ہوں، اور اپنا اور تمہارا معاملہ اللہ کے حوالے کرتا ہوں جو ہر حال میں میرے لیے کافی ہے۔

﴿فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ﴾ (التوبة: ١٢٩)

”پس اگر اس کے بعد بھی منہ پھیر لیتے ہیں تو آپ کہیے کہ میرے لیے اللہ کافی ہے، اُس کے علاوہ کوئی معبود نہیں ہے، میں نے اسی پر توکل کیا ہے، اور وہ عرش

عظیم کا مالک ہے۔“

سورۃ زمر میں ارشاد ہوا کہ آپ کہا کریں:

﴿قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ﴾ (الزمر: ۳۸)

”آپ کہہ دیجیے کہ میرے لیے اللہ کافی ہے، بھروسہ کرنے والے صرف اُس پر بھروسہ کرتے ہیں۔“

اہل تقویٰ کے لیے اس نے کفایت کا وعدہ فرمایا ہے:

﴿وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾ (الطلاق: ۳)

”اور جو اللہ پر بھروسہ کرتا ہے تو وہ اس کے لیے کافی ہوتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے سے دُعا:

۱: آگ میں ڈالے جانے کے موقع پر سیدنا ابراہیم علیہ السلام نے اور جنگ بدر کے موقع پر رسول اللہ ﷺ نے دعا فرمائی:

﴿حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ (آل عمران: ۱۷۳)

”اللہ ہمیں کافی ہے اور وہ بہترین کارساز ہے۔“

۲: سنن ابی داؤد میں سیدنا ابوذر رضی اللہ عنہ سے (موقوفاً) روایت ہے کہ جو آدمی ہر دن

صبح شام ﴿حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ﴾

(التوبة: ۱۲۹) سات بار پڑھ لیا کرے گا، اللہ تعالیٰ اس کی تمام مشکلات کو آسان

کردے گا اور اس کی حاجتوں کو پورا کرے گا۔^①

۳: ایک روایت میں سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں: نبی کریم ﷺ اپنی بعض نماز میں یہ دعا

پڑھتے تھے: ((اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا)) ”اے اللہ میرا حساب آسان

فرمانا۔“ نماز سے فراغت کے بعد میں نے پوچھا، حساب یسیر (آسان حساب)

کا کیا مطلب ہے؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”اللہ تعالیٰ اس کا اعمال نامہ دیکھے گا

① سنن ابو داؤد، کتاب الأدب، رقم: ۵۰۸۱.

اور پھر اسے معاف فرمادے گا۔“ ❶

۱۸۔ الْحَفِیْظُ

معانی:..... حفاظت و نگہبانی کرنے والا۔ سنبھالنے والا۔

پوری کائنات کو دکھوں اور تکالیف سے پناہ میں رکھنے والا۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص : ۸۵)

معارف: یہ نام بھی تین جگہ آیا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِیْظٌ ۝﴾ (سباء: ۲۱)

”اور آپ کا رب ہر چیز پر نگہبان ہے۔“

سیدنا ہود علیہ السلام نے اپنی قوم کو دعوتِ توحید دی، تو قوم نے اعراض سے کام لیا، چنانچہ آپ نے انہیں فرمایا: تمہارے کفر و عناد، یا تمہاری ہلاکت سے اللہ کی سلطنت و حکومت میں کوئی کمی نہیں آئے گی، جو کچھ نقصان ہوگا تمہارا ہوگا۔ اور میرا رب تو ہر چیز کی نگہبانی کر رہا ہے، کوئی چیز بھی اس کے احاطہ علم سے خارج نہیں ہے، اس لیے تمہارے سارے اعمال اس کی نگاہ میں ہیں، اور وہ تمہیں ان کی سزا ضرور دے گا۔

﴿فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۖ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۖ وَلَا

تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِیْظٌ ۝﴾ (ہود: ۵۷)

”پس جو پیغام دے کر تمہارے پاس بھیجا گیا تھا وہ میں نے تم کو پہنچا دیا ہے، اور میرا رب تمہارے علاوہ کسی دوسری قوم کو تمہاری جگہ لائے گا، اور تم اس کا کچھ بھی نہ بگاڑ سکو گے، بے شک میرا رب ہر چیز کا نگہبان ہے۔“

آسمان و زمین اور ان دونوں میں پائی جانے والی تمام مخلوقات و موجودات کی نگہبانی و حفاظت اللہ تعالیٰ کے لیے کوئی مشکل کام نہیں۔

﴿وَلَا يَعْوُدُكَ حَفْظُهُمَا ۖ﴾ (البقرة: ۲۵۵)

”اور ان کی حفاظت اُس پر بھاری نہیں۔“

اس اسم پاک کے ساتھ تخلق کی برکت سے اللہ تعالیٰ کی معیت خاصہ اور حفاظت خاصہ کا حصول امر لازم ہے۔ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ میں ایک دن رسول اللہ ﷺ کے پیچھے (سواری پر) تھا۔ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((يَا غُلَامُ إِنِّي أَعْلِمُكَ كَلِمَاتٍ إِحْفَظِ اللَّهَ يَحْفَظْكَ، إِحْفَظِ اللَّهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ))^①

”اے بچے! میں تجھے چند کلمات سکھاتا ہوں: اللہ کی حفاظت کرو، اللہ تمہاری حفاظت کرے گا۔ اللہ کی حفاظت کرو گے تو اسے اپنے سامنے پاؤ گے.....“

اسم پاک کے ذریعہ دعا:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي . اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي - اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي .))^②

”اے اللہ! میں تجھ سے دنیا و آخرت میں عافیت و سلامتی کی بھیک مانگتا ہوں۔ اے اللہ! میں تجھ سے اپنے دین و دنیا اور اپنے گھر بار اور مال و متاع میں سلامتی اور درگزر کی بھیک مانگتا ہوں۔ اے اللہ! میری پوشیدہ باتوں کی پردہ پوشی کر، اور میری گھبراہٹوں کو امن میں رکھ۔ اے اللہ! تو میرے آگے، پیچھے، دائیں، بائیں اور اوپر (سے آنے والی مصیبتوں اور بلاؤں) سے میری

① سنن ترمذی، کتاب صفة القيامة، رقم: ۲۵۱۶۔ صحيح الجامع الصغير، قم: ۷۹۵۷.

② سنن ابو داؤد، کتاب الادب، رقم: ۵۰۸۸۔ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۳۸۸۔ سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، رقم: ۳۸۲۹۔ علامہ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”حسن صحیح“ کہا ہے.

حفاظت فرما۔ میں اس بات سے تیری پناہ میں آتا ہوں کہ میں اچانک سے ہلاک کر دیا جاؤں۔“

۱۹۔ الْحَفِيُّ

معانی:..... بڑا مہربان۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿قَالَ سَلِّمْ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۚ إِنَّكَ كَانَ بِنَدِيٍّ حَفِيًّا﴾ (مریم: ۴۷)

”ابراہیم نے کہا آپ کو سلام کہتا ہوں، میں اپنے رب سے آپ کے لیے مغفرت کی دعا کروں گا، وہ بے شک مجھ پر بڑا مہربان ہے۔“

فائدہ:..... سیدنا ابراہیم علیہ السلام اپنے کافر باپ کا انتہائی شدید جواب سن کر بھی حداد سے نہیں نکلے اور اس کے لئے سلامتی کی دعا کی، گویا یہ کہنا چاہا کہ اگرچہ آپ مجھے سنگسار کرنے کی دھمکی دے رہے ہیں، لیکن مجھ سے آپ کو کوئی تکلیف نہیں پہنچے گی، میں اپنے رب سے آپ کی مغفرت کی دعا کروں گا، وہ مجھ پر بہت ہی کرم فرما ہے، مجھے مایوس نہیں کرے گا۔

مفسرین لکھتے ہیں کہ سیدنا ابراہیم علیہ السلام نے برائی کا جواب بھلائی سے دیا، جیسا کہ اللہ رب العزت نے مومنین کے اوصاف بیان کرتے ہوئے ایک وصف یہ بھی بیان کیا کہ ”جب جاہل لوگ ان سے گفتگو کرنے لگتے ہیں تو وہ کہہ دیتے ہیں کہ سلام ہو۔“ (یعنی میں تم سے جھگڑنا نہیں چاہتا ہوں۔)

﴿وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا﴾ (الفرقان: ۶۳)

”اور جب نادان لوگ ان کے منہ لگتے ہیں تو (رحمن کے نیک بندے) سلام کر کے گزر جاتے ہیں۔“

مفسرین نے یہ بھی لکھا ہے کہ سیدنا ابراہیم علیہ السلام کا اپنے باپ سے یہ وعدہ کہ وہ اللہ سے اس کے لئے مغفرت طلب کریں گے، اس توقع کی بنیاد پر تھا کہ وہ اسلام لے آئے گا

اور کفر پر نہیں مرے گا، چنانچہ ایک طویل مدت تک وہ اس کے لئے استغفار کرتے رہے، شام کی طرف ہجرت کر جانے، مسجد حرام بنانے اور اسحاق و اسماعیل کی ولادت کے بعد بھی اس کے لئے دعا کرتے رہے، جیسا کہ سورہ ابراہیم آیت (۴۱) میں ارشاد ہے:

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ﴾

”اے ہمارے رب! قیامت کے دن مجھے معاف کر دینا، اور میرے ماں باپ کو اور تمام مومنوں کو بھی۔“

لیکن جب انہیں یقین ہو گیا کہ وہ اللہ کا دشمن ہے تو اس سے اپنی براءت کا اعلان کر دیا، جیسا کہ فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاٰبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَا اِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ اَنَّهُ عَدُوٌّ لِلّٰهِ تَبَرَّآ مِنْهُ ۚ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَوَ اٰهٌ حَلِيْمٌ﴾

(التوبہ: ۱۱۴)

”اور ابراہیم کا اپنے باپ کے لئے دعائے مغفرت مانگنا صرف اُس وعدے کے سبب تھا جو انہوں نے اس سے کر رکھا تھا۔ پھر جب ان پر یہ بات ظاہر ہو گئی کہ وہ اللہ کا دشمن ہے تو انہوں نے اس سے اظہارِ براءت کر دیا، واقعی ابراہیم بڑے نرم دل اور بردبار تھے۔“

۲۰۔ الْحَقُّ

معانی:..... سچا اور ثابت۔

جیسے کہا جاتا ہے کہ ”حقیقۃ الشئی احقہ حقاً تیقنت کونہ ووجودہ“ یعنی ”اس کے وجود اور (ثابت) ہونے کا یقین کیا کہ اللہ تعالیٰ حق ہے۔“ یعنی یقیناً موجود ہے۔ (الزجاج)

اور الحق کے مقابلے میں الباطل ہے۔ اس لیے اللہ کے سوا ہر معبود اور اس کے حکم کے

مقابلے میں ہر حکم باطل ہے۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۸)

معارف: قرآن مجید میں یہ نام دس (۱۰) مرتبہ آیا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝﴾ (الحج: ۶۲)

”اور یہ کہ اللہ کی ذات برحق ہے، اور اللہ کے سوا جس کی وہ پرستش کرتے ہیں، وہ باطل ہے، اور بے شک اللہ ہی برتر اور بڑا ہے۔“

سورة النور میں ارشاد فرمایا:

﴿يَوْمَئِذٍ يُؤْفِكُهُمُ اللّٰهُ وَيُنْهَهُمُ الْحَقُّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝﴾

(النور: ۲۵)

”اُس دن اللہ انہیں ان کے اعمال کا پورا بدلہ دے گا، اور جان لیں گے کہ بے شک اللہ ہی برحق و آشکارا ہے۔“

اللہ کے حکم کے مقابلے میں ہر حکم باطل ہے:

﴿وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝﴾

(بنی اسرائیل: ۸۱)

”اور آپ کہہ دیجیے کہ حق آ گیا اور باطل مٹ گیا، بے شک باطل تو مٹنے کی چیز ہوتی ہے۔“

بخاری، مسلم، حافظ ابویعلیٰ اور دیگر محدثین نے سیدنا ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ جب نبی کریم ﷺ مکہ میں داخل ہوئے تو خانہ کعبہ کے گرد تین سو ساٹھ بت تھے۔ آپ انہیں ایک لکڑی سے ٹھوکر لگا کر گراتے رہے اور ”جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا“ پڑھتے رہے۔ ❶

اللہ تعالیٰ سچا ہے، اُس کا وعدہ بھی سچا ہوتا ہے:

﴿وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا وَّمَنْ اٰصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ۝﴾ (النساء: ۱۲۲)

یہ اللہ کا سچا وعدہ ہے، اور اللہ سے زیادہ بات کا سچا کون ہو سکتا ہے۔“
اللہ تعالیٰ سچا ہے، اس نے قرآن مجید کو سچائی کے ساتھ نازل کیا:

﴿نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ﴾ (آل عمران : ۳)

”اس نے تجھ پر کتاب کو سچائی کے ساتھ نازل کیا۔“

اس اسم پاک کے ذریعہ سے دعا:

اللہ تعالیٰ کے حضور نبی کریم ﷺ نماز تہجد میں یہ دعا پڑھا کرتے تھے:
(.....وَلَاكُ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاءُكَ حَقٌّ،
وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ
وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ.) ❶

”تیرے لیے تعریف ہے، تو سچا ہے اور وعدہ تیرا حق ہے اور دیدار تیرا سچا ہے،
اور بات تیری سچی ہے اور جنت سچ ہے اور جہنم سچ ہے اور نبی تمام سچ ہیں اور
محمد ﷺ سچے ہیں اور قیامت بھی سچ ہے۔“

۲۱۔ الْحَكْمُ

معانی:.....حاکم یا فیصلہ دینے والا۔

اصل معنی میں منع کرنا یا روکنا، کیونکہ حاکم دو افراد یا گروہ کو آپس میں لڑنے سے
روکتا ہے۔ اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اپنے بندوں کے درمیان فیصلہ کرنے والے ہیں، نہ
کہ کوئی اور۔ جو دنیا میں فیصلہ کرتے ہیں وہ بھی اس کی نازل شدہ شریعت سے استفادہ
کرتے ہیں۔ (الزجاج)

اللہ تعالیٰ وہ ہے کہ اس کے فیصلہ کو کوئی روکنے والا نہیں۔ (الغزالی بحوالہ تشریح

الاسماء الحسنیٰ، ص : ۸۲)

معارف:.....قرآن مجید میں یہ نام صرف ایک جگہ آیا ہے، وہ یہ ہے:

❶ صحیح بخاری، کتاب التہجد، رقم : ۱۱۲۰۔

﴿أَفَغَيَّرَ اللَّهُ أَبْنَعِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا﴾

(الانعام: ۱۱۴)

”(اے ہمارے رسول! آپ ان سے کہیے) کیا میں اللہ کے علاوہ کوئی اور ہمارے درمیان فیصلہ کرنے والا تلاش کر لوں، حالانکہ اسی نے تمہارے لیے وہ کتاب اتاری ہے جس میں ہر بات تفصیل سے بیان کر دی گئی ہے۔“

سورة النساء میں ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ

إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ يَقْضُ الْحَقُّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝﴾ (الانعام: ۵۷)

”آپ کہیے کہ مجھے میرے رب کی جانب سے ایک کھلی دلیل ملی ہوئی ہے اور تم اسے جھٹلاتے ہو، تم جس (عذاب کے لیے) جلدی کر رہے ہو، وہ میرے پاس نہیں ہے، اللہ کے علاوہ کسی کے ہاتھ میں فیصلہ نہیں ہے، وہ حق بات بیان کرتا ہے، اور وہ سب سے اچھا فیصلہ کرنے والا ہے۔“

﴿فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝﴾ (المؤمن: ۱۲)

”پس حکم اور فیصلہ اللہ کے ہاتھ میں ہے جو سب سے زیادہ بلند، سب سے بڑا ہے۔“

سورة التین میں ارشاد فرمایا:

﴿أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۝﴾ (التین: ۸)

”کیا اللہ تمام حاکموں سے زیادہ انصاف پرور حاکم نہیں ہے۔“

﴿وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝﴾ (الاعراف: ۸۷)

”اور وہ سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعہ سے دعا:

نبی کریم ﷺ کی نماز تہجد کی دعائے افتتاح یہ تھی:

((اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَإِسْرَافِيلَ ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ، اهْدِنِي لِمَا اخْتَلَفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ .))^①

”اے اللہ! جبرائیل، میکائیل اور اسرافیل کے رب! آسمانوں اور زمین کو پیدا کرنے والے! غائب اور ظاہر کو جاننے والے! اپنے بندوں کے درمیان تو ہی اس چیز کا فیصلہ کرے گا جس میں وہ جھگڑتے تھے۔ (اے اللہ!) حق کی جن باتوں میں اختلاف واقع ہوا ہے اپنے اذن سے مجھے حق کی ہدایت دے دے، یقیناً تو جسے چاہتا ہے سیدھے راستے کی طرف ہدایت دیتا ہے۔“

۲۲۔ الْحَكِيمُ

معانی:..... دانا و بینا۔ حکمت والا

حکمت والا اور ہر بہتر چیز کو سب سے بہتر انداز میں سمجھنے والا۔ اس کی ذات اور صفات بے مثل ہیں، جس کی پوری معرفت بھی اس کے سوا کسی کو نہیں۔ (الغزالی)
حکیم بمعنی حکم کے بھی ہے جس کی تفصیل گزر چکی ہے مگر اسم حکم میں زائد فائدہ یہ ہے کہ ہر چیز کو ثابت کرنے والا اور خوبصورت بنانے والا ہے۔

(تشریح الاسماء الحسنی، ص : ۸۷)

معارف:..... یہ نام (۹۴) جگہ واقع ہوا ہے، ایک مقام یہ ہے:

﴿وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا﴾^② (النساء : ۱۷)

”اللہ بڑا علم والا، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

مزید ارشاد فرمایا:

﴿وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا﴾^③ (النساء : ۱۳۰)

① صحیح مسلم، کتاب صلوة المسافرين، رقم : ۱۸۱۱۔

”اور اللہ بڑی کشادگی والا اور بڑی حکمتوں والا ہے۔“

﴿الرَّ كُتِبَ عَلَيْكَ احْكُمْتُ اٰیٰتُهُ ثُمَّ فُصِّلْتُ مِنْ لَدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝﴾

(ہود : ۱)

”اگر یہ ایک ایسی کتاب ہے جس کی آیتیں ٹھوس اور محکم بنائی گئی ہیں، پھر ان کی تفصیل اس کی طرف سے بیان کر دی گئی ہے جو صاحبِ حکمت، ہر چیز کی خبر رکھنے والا ہے۔“

سیدنا موسیٰ علیہ السلام کو خبر دیتے ہوئے ارشاد فرمایا:

﴿يٰمُوسٰى اِنَّهٗ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝﴾ (النمل : ۹)

”اے موسیٰ! میں ہی اللہ ہوں جو زبردست، بڑی حکمت والا ہے۔“

امام مالک رحمہ اللہ نے ذکر کیا کہ انہیں یہ بات پہنچی ہے کہ لقمان حکیم نے اپنے بیٹے کو نصیحت کرتے ہوئے فرمایا: ”اے بیٹے! علماء کی صحبت اختیار کرو اور ان کے سامنے زانوے تلمذ نہ کرو، کیونکہ اللہ تعالیٰ دلوں کو حکمت کے نور سے اسی طرح زندگی عطا کرتا ہے جس طرح مردہ زمین کو آسمان کی موسلا دھار بارش سے زندہ کرتا ہے۔“^①

﴿يُوْفِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۝﴾ (البقرة : ۲۶۹)

”جسے چاہتا ہے حکمت دیتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ حکیم ہے اُس نے سیدنا داؤد علیہ السلام کو حکمت و بالغ نظری عطا فرمائی تھی:

﴿وَ اٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخُطٰبِ ۝﴾ (ص : ۲۰)

”اور اُسے حکمت اور فیصلہ کرنے کے لیے قوت گویائی دی تھی۔“

رسول اللہ ﷺ کا وظیفہ تھا کہ آپ لوگوں کو تعلیم کتاب و حکمت دیتے:

﴿وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۝﴾ (البقرة : ۱۲۹)

”اور وہ انہیں کتاب و حکمت کی تعلیم دیتا ہے۔“

① مؤطا امام مالک : ۱۰۰۲/۲

اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کو حکم دیا کہ وہ مخلوق کو اس کے دین کی طرف حکمت اور دانائی کے ساتھ دعوت دیں۔

﴿ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾

(النحل : ۱۲۵)

”آپ اپنے رب کی راہ کی طرف حکمت اور اچھی نصیحت کے ذریعہ بلائیے۔“

ابن جریر طبری رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ ”حکمت“ سے مراد قرآن و سنت ہے۔ یعنی دعوت کا طریقہ ان ہی دونوں کی روشنی میں متعین کریں۔

صاحب فتح البیان کہتے ہیں کہ ”حکمت“ سے مراد ایسی صحیح اور صریح بات ہے جو حق کو واضح کر دے اور ہر شک و شبہ کا ازالہ کر دے۔

۲۳۔ الْحَلِيمُ

معانی:..... بردبار، دُور اندیش

جو عذاب کرنے میں جلدی نہیں کرتا۔ نافرمانوں کی نافرمانی اور حکم کی مخالفت کے باوجود اسے نہ غصہ آتا ہے اور نہ غضب کہ وہ اپنے بندوں کو جلد پکڑ لے۔ اس کا غصہ و غضب اسے فوری انتقام پر آمادہ نہیں کرتا۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنى، ص: ۸۴)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن مجید میں (۱۱) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا﴾ (الاحزاب : ۵۱)

”اور اللہ بڑا جاننے والا، بڑا بردبار ہے۔“

سورة البقرہ میں ارشاد فرمایا:

﴿لَا يَأْخُذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْسَارِكُمْ وَلَكِنْ يُؤْخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ

أَفْوَاكُكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ﴾ (البقرہ: ۲۲۵)

”اللہ تمہاری لغو قسموں پر تمہارا مواخذہ نہیں کرے گا، لیکن ان (قسموں) پر تمہارا مواخذہ کرے گا، جنہیں تم نے دل سے کھائی ہوں گی، اور اللہ بڑا مغفرت

کرنے والا اور بڑا بردبار ہے۔“

مزید ارشاد فرمایا:

﴿قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتَّبِعَهَا أَذًى ۖ وَاللَّهُ عَنِّي

حَلِيمٌ ۝﴾ (البقرہ: ۲۶۳)

”اچھی بات اور درگزر کر دینا، اس صدقہ سے بہتر ہے جس کے بعد اذیت

پہنچائی جائے، اور اللہ بے نیاز اور بردبار ہے۔“

سورۃ التغابن میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ

حَلِيمٌ ۝﴾ (التغابن: ۱۷، ۱۸)

”اگر تم اللہ کو اچھا قرض دو گے تو وہ اُسے تمہارے لیے کئی گنا بڑھا دے گا اور

تمہیں بخش دے گا، اور اللہ بڑا قدر داں، بڑا بردبار ہے۔ غائب و حاضر کا علم

رکھنے والا، زبردست، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

ان آیات کریمہ میں اللہ تعالیٰ کی راہ میں مال خرچ کرنے کی ترغیب دلاتے ہوئے

لوگوں سے کہا گیا کہ تم اس کی راہ میں جو حلال مال بھی خرچ کرو گے گویا اُسے قرض دو گے،

جسے کئی گنا بڑھا کر تمہیں لوٹا دیا جائے گا، اور مزید برآں گناہ بھی معاف کر دیے جائیں گے۔

اس لیے کہ وہ ”شکور“ ہے۔ اپنے بندے کے تھوڑے عمل کے عوض اجر کثیر دیتا ہے، اور وہ

”حلیم“ ہے۔ گناہوں پر جلد مواخذہ نہیں کرتا، بلکہ توبہ کی مہلت دیتا ہے اور وہ غائب و

حاضر تمام اعمال کی خوب خبر رکھتا ہے، اس لیے کوئی عمل خیر اس کے نزدیک ضائع نہیں ہوتا،

اور وہ بڑا زبردست اور بڑی حکمتوں والا ہے۔ اس پر کوئی غالب نہیں آ سکتا، اور اس کے تمام

اوامر و نواہی حکمتوں سے پر ہیں جنہیں وہی جانتا ہے۔

قرآن مجید میں اسم ”حلیم“ ان اسماء کے ساتھ بیان ہوا ہے: اسم غفور کے ساتھ،

اسم غنی کے ساتھ، اسم علیم کے ساتھ اور اسم شکور کے ساتھ۔

قاضی منصور پوری رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

”غفران کے ساتھ حلم کا ہونا بتلاتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کا بندوں کو جلد عذاب نہ دینا، اس لیے ہے کہ اس کی مغفرت بندہ کو توبہ کی مہلت عطا فرماتی ہے اور غنی کے ساتھ حلم کا ہونا بتلاتا ہے کہ رب العالمین کو ایذا دینے والے، شرک کرنے والے، کفر کرنے والے، اللہ کی نگاہ میں بالکل حقیر و ذلیل ہیں اور علم کے ساتھ حلم کا ہونا بردباری کی انتہا ہے۔ اور علی ہذا شکور کے ساتھ حلیم کی ترکیب ظاہر کرتی ہے کہ اللہ تعالیٰ اعمالِ حسنہ کو قبول فرماتا، اور ان کو بڑھاتا، اور اعمالِ سیئہ کے کفارہ میں دیر و درنگ کرتا اور آہستگی کے ساتھ زمانِ مستقبل تک اصلاح کی مہلت عطا

فرماتا ہے۔“ (اسماء الحسنی، ص: ۱۰۵، ۱۰۶)

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ
الْكَرِيمِ .))

”اللہ تعالیٰ جو عظیم و بردبار ہے، اس کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں، اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی بھی عبادت کے لائق نہیں، وہ زمین و آسمان اور عرش کریم کا رب ہے۔“

اہمیت: سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ مصیبت کے

وقت یہ دُعا کیا کرتے تھے۔^①

۲۴۔ الْحَمِيدُ

معانی: حمد و تعریف کے لائق

① صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۳۴۶۔ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم:

جس کی حمد و ثنا ہر زبان پر ہر حال میں ہو۔ (الزجاج)
جو سب سے پہلے اپنی حمد خود کرنے والا ہے۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۹)

معارف: یہ نام (۱۷) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ﴾ (فاطر: ۱۵)

”اے لوگو! تم ہی سب اللہ کے محتاج ہو، اور اللہ تو بڑا بے نیاز اور تمام تعریفوں کا مستحق ہے۔“

شیخ الاسلام ابن تیمیہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ ”اللہ تعالیٰ نے یہ خبر دی ہے کہ حمد اس کے لیے ہے وہی حمید و مجید ہے۔ دنیا و آخرت میں اسی کے لیے حمد ہے۔ حمد کی دو قسمیں ہیں:
(۱) حمد وہ ہے جو اس نے بندوں پر احسان کیا ہے اس پر حمد کرنا شکر کے معنی بھی رکھتا ہے۔
(۲) صفات کمال کی وجہ سے حمد کا مستحق ہے۔ یہ حمد کمال کی صفات کی بنا پر ہے۔“

(مجموع الفتاوی: ۸۳/۴)

سورۃ ہود میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ﴾ (ہود: ۷۳)

”وہ بے شک لائق حمد و ثناء، بزرگی والا ہے۔“

سورۃ حم السجدہ میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّكَ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۚ لَا يَأْتِيهِ
الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ﴾

(حم السجدہ: ۴۱، ۴۲)

”بے شک جن لوگوں نے قرآن کا انکار کیا، جب وہ اُن کے پاس آیا (وہ ہم سے پوشیدہ نہیں ہیں) اور وہ یقیناً ایک بلند و بالا مقام والی کتاب ہے نہ اس کے آگے سے باطل پھٹکتا ہے، اور نہ اُس کے پیچھے سے، وہ اس اللہ کی جانب سے

نازل کردہ ہے جو بڑی حکمتوں والا، ہر قسم کی تعریفوں والا ہے۔“

سورة الشوریٰ میں ارشاد فرمایا:

﴿وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ

الْحَمِيدُ ۝﴾ (الشوریٰ: ۲۸)

”اور وہی ہے جو بارش نازل کرتا ہے اس کے بعد کہ لوگ اس سے نا اُمید ہو جاتے ہیں، اور اپنی رحمت کو پھیلا دیتا ہے، اور وہی ہے کارساز، ہر تعریف کے لائق۔“

اسم حمید قرآن مجید میں ان اسماء کے ساتھ بیان ہوا ہے۔ اسم مجید کے ساتھ، اسم حکیم کے ساتھ، اسم ولی کے ساتھ اور اسم غنی کے ساتھ۔

ان اسماء کے ساتھ یہ اقتران بتلاتا ہے کہ تمام تعریفوں کا وہ تنہا سزاوار ہے، چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾ (التغابن: ۱)

”جتنی چیزیں آسمانوں میں ہیں، اور جتنی چیزیں زمین میں ہیں، سب اللہ کی پاکی بیان کرتی ہیں، اسی کی (سارے جہان میں) بادشاہی ہے، اور اس کے لیے تمام تعریفیں ہیں، اور وہ ہر چیز پر قادر ہے۔“

سورة القصص میں فرمایا:

﴿وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ

تَرْجَعُونَ ۝﴾ (القصص: ۷۰)

”اور وہ اللہ ہے، اس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، ساری تعریفیں دنیا و آخرت میں اسی کے لیے ہیں، اور ہر جگہ اس کی حکمرانی ہے، اور اس کی طرف تم سب لوٹائے جاؤ گے۔“

اور سورة الروم میں ارشاد فرمایا:

﴿فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّهَوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ﴾ (الروم: ۱۷، ۱۸)

”پس تم لوگ اللہ کی پاکی بیان کرو، جب شام کرو اور جب صبح کرو۔ اور آسمانوں
اور زمین میں ہر تعریف صرف اسی کے لیے ہے، اور اس کی پاکی بیان کرو سہ پہر
کو اور جب تم دوپہر کرو۔“

قرآن مجید کی ابتداء ہی اس بات سے ہوتی ہے کہ:

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ ۝﴾

(الفاتحة: ۱-۳)

”سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سارے جہان کا پالنے والا ہے۔ نہایت
مہربان، بے حد رحم کرنے والا ہے۔ قیامت کے دن کا مالک ہے۔“

امام ابن القیم رحمہ اللہ نے اپنی کتاب (طریق البحر تین) میں لکھا ہے کہ ”ہر اعلیٰ صفت، ہر
اچھا نام، ہر عمدہ تعریف، ہر حمد و مدح، ہر تسبیح و تقدیس اور ہر جلال و عزت کی جو کامل ترین اور
دائمی اور ابدی شکل ہو سکتی ہے، وہ سب اللہ کے لیے ہے۔ اللہ کی جتنی بھی صفتیں بیان کی جاتی
ہیں، جتنے ناموں سے اس کو یاد کیا جاتا ہے، اور جو کچھ بھی اللہ کی بڑائی میں کہا جاتا ہے، وہ
سب اللہ کی تعریفیں ہیں اور اس کی حمد و ثنا اور تسبیح و تقدیس ہے۔ اللہ ہر عیب سے پاک ہے،
ساری تعریفیں اس کے لیے ہیں، مخلوق کا کوئی فرد اس کی تعریفوں کو شمار نہیں کر سکتا۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

(۱) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ .

فضیلت: رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ تَمَلُّاُ الْمِيزَانَ .)) ❶

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۱۷۔ امام ترمذی اور محدث البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

”اور ”الحمد لله“ کا کہنا، میزانِ عمل کے پلڑے کو پورا بھر دیتا ہے۔“
 سیدنا جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو سنا، آپ فرما رہے تھے:

((وَأَفْضَلُ الدُّعَاءِ الْحَمْدُ لِلَّهِ)) ❶

”اور ”الحمد لله“ کا کہنا افضل ترین دُعا ہے۔“

(۲) حبیب کبریٰ ﷺ رکوع میں ارشاد فرماتے:

((سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ)) ❷

”اے اللہ! تیرے ہی لیے پاکی اور تعریف ہے، تیرے علاوہ کوئی معبود برحق نہیں ہے۔“

((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ)) (تین مرتبہ)

”اللہ تعالیٰ پاک ہے اپنی تعریف کے ساتھ، اپنی مخلوق کی تعداد، اپنے نفس کی رضا اور اپنے عرش کے وزن کے برابر، اپنے کلمات کی تعداد کے مطابق۔“

فضیلت: سیدہ جویریہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے کہ نبی اکرم ﷺ فجر کی نماز کے لیے گھر سے نکلے تو میں جائے نماز پر بیٹھی تھی۔ آپ ﷺ چاشت کے وقت تشریف لائے تو دیکھا کہ میں اس وقت تک اپنے مصلیٰ پر بیٹھی ہوں تو نبی اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا: جویریہ جب سے میں مسجد گیا تھا تب سے تم اسی حالت میں بیٹھی وظیفہ کر رہی ہو؟ میں نے عرض کیا: ہاں یا رسول اللہ! تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: میں نے تمہارے پاس سے جانے کے بعد چار کلمے تین تین مرتبہ کہے ہیں کہ اگر ان کا وزن تمہارے آج کے سارے دن کے وظیفہ سے

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۸۳۔ محدث البانی رحمہ اللہ نے اسے ”حسن“ قرار دیا ہے۔

❷ صحیح مسلم، کتاب الصلاة، رقم: ۴۵۸۔

کیا جائے تو وہ چار کلمے زیادہ وزنی ہو جائیں۔^①

(۴) ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) (سومرتبہ)

”اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں، وہ یکتا ہے، اس کا کوئی شریک

نہیں، اسی کی ملکیت ہے اور اسی کے لیے حمد و ثنا ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری

طرح قادر ہے۔“

فضیلت: جو شخص صبح کے وقت سومرتبہ یہ دعا پڑھے گا، اسے دس غلام آزاد کرنے

کے برابر ثواب ملے گا، ایک سونکیاں اس کے نامہ اعمال میں لکھی جائیں گی اور اس کے ایک

سو گناہ مٹا دیے جائیں گے، اور ان الفاظ کی برکت سے اس دن شام تک وہ شیطان سے

محفوظ رہے گا اور کوئی شخص اس سے افضل عمل لے کر نہیں آئے گا۔ تاہم اگر کوئی شخص سو سے

زیادہ دفعہ پڑھے۔^②

۲۵۔ اَلْحَيُّ

معانی: ہمیشہ ہمیشہ زندہ رہنے والا۔

ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا۔ (الزجاج)

اس کی زندگی ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ کے لیے موت سے پاک ہے۔ (تشریح

الاسماء الحسنی، ص: ۹۰)

معارف: یہ نام (۵) جگہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَعَنْتِ الْوُجُوهَ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا﴾^③

(طہ: ۱۱۱)

① صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۶۹۱۴۔

② صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۴۰۳۔ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء،

رقم: ۶۹۰۸۔ صحیح الترغیب: ۲۷۲/۱۔

”اور (اُس دن) تمام چہرے اس ذات کی بارگاہ میں جھکے ہوں گے جو ہمیشہ سے زندہ ہے اور ہمیشہ زندہ رہے گا اور جس کے ذریعے آسمان و زمین کی ہر چیز قائم ہے، اور جو ظلم و شرک کر کے آئے گا وہ خائب و خاسر ہوگا۔“

اور سورۃ البقرہ میں ارشاد فرمایا:

﴿اِنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ۝﴾ (البقرہ: ۲۵۵)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے۔“

سورۃ الفرقان میں ارشاد فرمایا:

﴿وَتَوَكَّلْ عَلٰی الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوْتُ۝﴾ (الفرقان: ۵۸)

”اور آپ ہمیشہ زندہ رہنے والے پر بھروسہ کیجیے جو کبھی نہیں مرے گا۔“

واضح ہو کہ اسم ”حی“ دو جگہ اکیلا آیا ہے۔ اور باقی تین مقامات پر ”الحي القيوم“ جمعاً آیا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

(۱) ﴿اِنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ۝ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌۭ وَلَا نَوْمٌۭ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِۭ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖۙ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْۚ وَ مَا خَلْفَهُمْۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَاءَۚ وَسِعَ کُرْسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُہُمَاۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ۝﴾

(البقرہ: ۲۵۵)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے، اسے نہ اُونگھ آتی ہے اور نہ نیند، آسمانوں اور زمینوں میں جو کچھ ہے، سب اس کی ملکیت ہے، کون ہے جو اُس کی جناب میں بغیر اُس کی اجازت کے کسی کے لیے شفاعت کرے، وہ تمام وہ کچھ جانتا ہے جو لوگوں کے

سامنے اور اُن کے پیچھے ہے، اور لوگ اُس کے علم میں سے کسی بھی چیز کا احاطہ نہیں کرتے ہیں، سوائے اُتنی مقدار کے جتنی وہ چاہتا ہے، اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے، اور ان کی حفاظت اُس پر بھاری نہیں، وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

فضیلت: ﴿۱﴾ جو شخص ہر نماز کے بعد آیۃ الکرسی پڑھے، اُس کے جنت میں داخل ہونے کے درمیان صرف موت حائل ہے۔^①

﴿۲﴾: سیدنا حسن بن علی رضی اللہ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جس شخص نے فرض نماز کے بعد آیت الکرسی پڑھی، وہ آئندہ نماز تک اللہ تعالیٰ کی حفاظت اور ذمہ داری میں ہوتا ہے۔“^②

((۲)) (يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ ، اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ .))

”اے زندہ جاوید ہستی! میں تیری رحمت کے وسیلہ سے تیری مدد کا طلب گار ہوں، میرے لیے میرا ہر کام درست کر دے، اور مجھے میرے نفس کی طرف کبھی آنکھ جھکنے کے برابر بھی سپرد نہ کرنا۔“

فضیلت: اس سے متعلق رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جو کوئی اسے روزانہ ہر صبح و شام پڑھتا رہے گا، اللہ تعالیٰ اس کو دنیا اور آخرت کی تمام مصیبتوں اور رنج و غم سے نجات دے گا۔“^③

(۳) سیدنا زید بن ثابت رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ ﷺ سے اپنی

① عمل الیوم واللیلۃ، لابن السنی، رقم: ۱۲۱۔ سلسلۃ الأحادیث الصحیحۃ، رقم: ۹۷۲۔

② الترغیب والترہیب: ۴۵۳/۲۔ مجمع الزوائد: ۱۰۹/۱۔ علامہ منذری اور بیہقی نے اس کی سند ”حسن“ قرار دیا ہے۔

③ مستدرک حاکم: ۱۵۴۰/۱۔ الترغیب والترہیب: ۲۱/۳۔ امام حاکم رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے، اور ذہبی رحمہ اللہ نے اس کی موافقت کی ہے۔

بے خوابی کی شکایت کی تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: یہ دعا پڑھا کرو:

((اللَّهُمَّ غَارِبِ النُّجُومَ وَهَدَّاتِ الْعُيُونِ وَأَنْتَ حَيُّ قَيُّوْمٌ لَا تَأْخُذُكَ

سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ. يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! أَهْدِنِي لَيْلِي وَأَنْمَ عَيْنِي.))

”اے اللہ! ستارے ڈوب گئے، آنکھیں آرام لینے لگیں، جبکہ تیری ذات ہمیشہ

ہمیشہ کے لیے زندہ اور قائم ہے، تجھے نیند آتی ہے نہ اونگھ، اے زندہ اور قائم

رہنے والی ذات! اس رات مجھے سکون دے اور میری آنکھوں کو سلا دے۔“

فضیلت:..... سیدنا زید رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے یہ الفاظ ادا کیے تو اللہ تعالیٰ نے میری

بے قراری دور کر دی اور مجھے نیند آ گئی۔^①



① عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی ص: ۲۰۱، طبع دار المعارف العثمانیۃ حیدر آباد دکن الہند۔

مجمع الزوائد: ۱۰/۱۲۸۔ الأذکار للنووی، ص: ۱۴۶۔

حرف الخاء

۲۶۔ الْخَالِقُ

معانی:..... پیدا کرنے والا، اندازہ کرنے والا۔

کیونکہ اصل خلق بمعنی تقدیر کے ہیں، مثلاً: ((خلقت الشيء خلقاً اذا قدرته)) قرآن کریم میں ہے: ﴿وَتَخْلُقُونَ أَفْكَارًا﴾ (العنکبوت: ۱۷) ”اور تم جھوٹا اندازہ کرتے ہو۔“ یعنی اللہ تعالیٰ خلق کا مُقَدِّر (اندازہ مقرر کرنے والا) پیدا کرنے والا، ابھارنے اور مکمل کرنے والا اور اس کی تدبیر کرنے والا ہے۔ ﴿فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ﴾ (المؤمنون: ۱۴) ”اللہ کی ذات بابرکت سب سے بہتر بنانے والی ہے۔“ زجاج نے بھی اسی طرح کہا ہے۔ (بحوالہ تشریح الأسماء الحسنى، ص: ۷۶، ۷۷)

معارف:..... قرآن میں یہ نام (۱۱) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا: ﴿هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْصَّوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى﴾ (الحشر: ۲۴) ”وہ اللہ پیدا کرنے والا ہے، ہر مخلوق کو اس کا وجود دینے والا ہے، اس کی صورت بنانے والا ہے، تمام پیارے نام اسی کے لیے ہیں۔“

سورة الزمر میں ارشاد فرمایا:

﴿اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ﴾ (الزمر: ۶۲)

”اللہ ہی ہر چیز کا پیدا کرنے والا ہے، اور وہی ہر چیز کا محافظ و نگران ہے۔“

اس آیت کریمہ میں اللہ تعالیٰ نے خبر دی ہے کہ وہی تمام چیزوں کا خالق و مالک، ان کا پالنے والا، ان میں اپنی مرضی کے مطابق تصرف کرنے والا ہے اور ان کا محافظ و نگران ہے، اس کی قدرت بے پایاں اور اس کا علم لامحدود ہے۔

سورہ لقمان میں ارشاد فرمایا:

﴿خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ أَلْفَىٰ فِي الْأَرْضِ دَوَائِي أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۖ وَ أَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝﴾ (لقمان: ۱۰)

”اس نے آسمانوں کو بغیر ستونوں کے پیدا کیا ہے جنہیں تم دیکھ سکو، اور زمین پر پہاڑ رکھ دیئے تاکہ ایسا نہ ہو کہ وہ تمہیں ہچکولے کھلائے، اور اس پر قسم قسم کے جانور پھیلا دیئے، اور ہم نے آسمان سے بارش برسائی جس کے ذریعے زمین میں ہر قسم کی عمدہ چیزیں اُگائیں۔“

اس آیت کریمہ میں اللہ تعالیٰ نے اپنی عظیم خالقیت کے مظاہر بیان کیے ہیں، کہ اللہ تعالیٰ نے آسمانوں کو بغیر ستونوں کے قائم کر رکھا ہے۔ اس نے محض اپنی قدرت سے نظام جاذبیت کے ذریعے انہیں ان کی متعین جگہوں میں ثابت کر دیا ہے۔ زمین پر پہاڑوں کے کھونٹے گاڑ دیے ہیں تاکہ زمین ہلنے نہ پائے، ورنہ کوئی چیز اپنی جگہ باقی نہ رہتی، اور اس پر رہنے والے انسانوں اور دیگر حیوانات کو سکون و قرار حاصل نہیں ہوتا، ان کی زندگی دو بھر ہو جاتی۔ اور اس نے مختلف قسم کے جانور پیدا کر کے انہیں زمین کے تمام گوشوں میں پھیلا دیا ہے۔ اور اس نے آسمان سے بارش نازل کی جو انسانوں اور جانوروں کی حیات کے لیے از حد ضروری ہے، اور اس کے ذریعے زمین میں قسم قسم کی غذائیں اور دوائیں پیدا کیں جو انسانی زندگی کے لیے بہت ہی نافع ہیں، ان تمام چیزوں کا خالق صرف اللہ ہے، ان کاموں میں کوئی اس کا شریک نہیں۔

ان مظاہر کے بیان کے بعد ارشاد فرمایا:

﴿هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝﴾ (لقمان: ۱۱)

”یہ اللہ کی تخلیق ہے، تو اب تم لوگ مجھے دکھاؤ کہ اُس کے سوا دوسرے جھوٹے

معبودوں نے کیا پیدا کیا ہے، بلکہ ظالم مشرکین کھلی گمراہی میں ہیں۔“
اس خالق کائنات کی صفت یہ بھی ہے کہ اس نے انواع و اقسام کی چیزیں اور تمام
حیوانات و نباتات کے جوڑے پیدا کیے۔

﴿وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا﴾ (الزخرف: ۱۲)

”اور اس کی ذات نے تمام جوڑوں کو پیدا کیا۔“

﴿مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ﴾ (الملك: ۳)

”آپ رحمن کی تخلیق میں کوئی بے ضابطگی نہیں دیکھیں گے۔“

﴿فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ﴾ (المؤمنون: ۱۴)

”پس برکت والا ہے اللہ جو سب سے عمدہ پیدا کرنے والا ہے۔“

مزید برآں وہ اپنی مخلوقات سے غافل نہیں ہے، جہی تو سارے عالم کا نظام بحسن و خوبی
چل رہا ہے، ورنہ فساد برپا ہو جاتا، اور ہر چیز تباہ و برباد ہو جاتی۔

﴿وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ﴾ (المؤمنون: ۱۷)

”اور ہم اپنی پیدا کردہ چیزوں سے غافل نہیں ہیں۔“

﴿وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ﴾ (یس: ۷۹)

”بلکہ وہ اپنی تمام مخلوقات کے بارے میں پورا علم رکھتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلَىٰ

عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ ، مَا اسْتَطَعْتُ ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا

صَنَعْتَ ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِىْ ، فَاغْفِرْ لِىْ

فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ .))

”اے اللہ! تو ہی میرا رب ہے تیرے سوا کوئی معبود برحق نہیں، تو نے مجھے پیدا

کیا ہے، میں تیرا بندہ ہوں، اپنی استطاعت کے مطابق تیرے ساتھ کیے وعدے پر قائم ہوں۔ اے اللہ! میں ہر اس شر سے پناہ چاہتا ہوں جو مجھ سے سرزد ہوا ہے، اور تو نے جو مجھ پر انعام و فضل کیا اس کا اعتراف کرتا ہوں، اور اپنے گناہوں کا بھی اعتراف کرتا ہوں، پس تو میرے گناہوں کو بخش دے، کیونکہ تیرے سوا کوئی گناہوں کو نہیں بخش سکتا۔“

فضیلت: نبی کریم ﷺ نے فرمایا: ”جس شخص نے (سید الاستغفار) یہ کلمات پڑھے، اور اس رات فوت ہو گیا، تو وہ جنت میں جائے گا۔ اور جس نے صبح پڑھے اور اس دن فوت ہو گیا، وہ بھی جنت میں داخل ہوگا۔“ ❶

۲۷۔ الْخَبِيرُ

معانی:..... خبر رکھنے والا۔

جس سے کوئی بھی چیز پوشیدہ نہ ہو بلکہ حرکت اور سکون، اضطراب و اطمینان الغرض سب کی اس کو خبر ہے۔ علم ہر ظاہر و پوشیدہ چیز کے لیے عام ہے مگر پوشیدہ چیزوں کے جاننے کو خبر کہلاتا ہے اور جاننے والے کو خبیر۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۳)

معارف: یہ نام (۴۵) جگہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَاكَ هَذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝﴾ (التحریم: ۳)

”اور جب نبی نے اپنی بعض بیویوں کو ایک بات خفیہ طور پر بتادی، تو جب اس (بیوی) نے وہ بات (دوسری بیویوں کو) بتادی، اور اللہ نے نبی کو اس کی خبر کر دی، تو انہوں نے اسی وحی کا کچھ حصہ اس بیوی کو بتادیا، اور کچھ نہیں بتایا، جب

❶ صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۳۰۶۔ سنن نسائی، کتاب الاستعاذہ، رقم: ۵۵۲۲۔

انہوں نے اس (بیوی) کو اس کی اطلاع دی، تو اس نے کہا آپ کو کس نے یہ خبر دی ہے، انہوں نے کہا: مجھے اس (اللہ) نے بتایا ہے جو ہر چیز کا جاننے والا، ہر بات کی خبر رکھنے والا ہے۔“

سورة الانعام میں ارشاد فرمایا:

﴿لَا تَذْكُرْهُ الْاَبْصَارُ ۚ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ الْاَطِيفُ الْخَبِيرُ ۝﴾

(الانعام: ۱۰۳)

”مخلوق کی نگاہیں اس کا ادراک نہیں کر سکتیں، اور وہ ان کی نگاہوں کا پورا ادراک کرتا ہے اور وہ انتہائی دور بین و باریک بین، پوری خبر رکھنے والا ہے۔“

سورة ہود میں ارشاد فرمایا:

﴿الْاٰلَٰءُ كَتَبْنَاۤ اَحْكَمْتَ اٰیٰتِهٖ ثُمَّ فُضِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝﴾

(ہود: ۱)

”السر یہ ایک ایسی کتاب یہ جس کی آیتیں ٹھوس اور محکمہ بنائی گئی ہیں، پھر ان کی تفصیل اس کی طرف سے بیان کر دی گئی ہے جو صاحب حکمت، ہر چیز کی خبر رکھنے والا ہے۔“

سورة بنی اسرائیل میں فرمایا:

﴿وَكَفٰی بِرَبِّكَ بِذُنُوْبٍ عٰبِدِهٖ خٰیْرًاۢ بَصِيْرًا ۝﴾ (بنی اسرائیل: ۱۷)

”اور آپ کا رب اپنے بندوں کے گناہوں سے خوب واقف ہے اور انہیں اچھی طرح دیکھ رہا ہے۔“

اسم خبیبر قرآن مجید میں کئی مقامات پر اکیلا بیان ہوا ہے، اور کئی مقامات پر اسم بصیر کے ساتھ، بعض دفعہ اسم حکیم کے ساتھ، بعض دفعہ اسم علیم کے ساتھ اور بعض دفعہ اسم لطیف کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

۲۸۔ الْخَلْقُ

معانی:..... بہترین پیدا کرنے والا۔

خَلَّاق، خلق ہی سے مبالغہ کا صیغہ ہے۔ (الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى، ص: ۲۱۰)

معارف:..... یہ نام دو جگہ آیا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ﴾ (الحجر: ۸۶)

”بے شک آپ کا رب ہی بہترین پیدا کرنے والا، بڑا جاننے والا ہے۔“

اس آیت سے پچھلی آیات میں قیامت برپا ہونے کی جو بات کی گئی ہے، اس کی مزید تاکید کے طور پر کہا جا رہا ہے کہ رب العالمین ہر چیز کا پیدا کرنے والا ہے، کوئی شے اسے عاجز نہیں کر سکتی ہے، وہ تمام اجسام کی خبر رکھتا ہے جو مر کر اور مٹی میں گل سڑ کر ختم ہو گئے ہیں۔ سورۃ یس میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ﴾ (یس: ۸۱)

”کیا وہ اللہ جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے اس بات پر قادر نہیں ہے کہ وہ اُن جیسے آدمی دوبارہ پیدا کرے، ہاں (وہ یقیناً قادر ہے) اور بڑا پیدا کرنے والا، ہر بات جاننے والا ہے۔“

یہ اسم پاک قرآن مجید میں ہر دو مقام پر اسمِ علیم کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

((اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَ نَفْسِيْ وَاَنْتَ تَتَوَفَّاهَا ، لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا ، اِنْ اَحْيَيْتَهَا فَاَحْفَظْهَا وَاِنْ اَمَتَهَا فَاغْفِرْ لَهَا ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ .)) ❶

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء، رقم: ۶۸۸۸۔ مسند احمد: ۷۹/۲۔ عمل الیوم و اللیلۃ

لابن السنی، رقم: ۷۲۱۔

”اے اللہ! تو نے ہی میرے نفس کو پیدا کیا، اور تو ہی اس کو فوت کرے گا۔
 (اے اللہ) تیرے ہی ہاتھ میں اس کی موت ہے، اور تیرے ہی ہاتھ میں اس
 کی زندگی ہے، اگر تو اسے زندہ رکھے تو اس کی حفاظت کرنا اور اگر تو اسے
 موت دے دے تو اسے بخش دینا۔ اے اللہ! میں تجھ سے امن و سلامتی کی بھیک
 مانگتا ہوں۔“



حرف الذال

۲۹۔ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

معانی:..... بزرگی والا اور سخاوت والا۔

جو ہر بھلائی اور شرف کمال کا مستحق ہے۔ ہر عزت اور سخاوت بھی اس سے ملنے والی ہے۔ اگر کوئی مخلوق کسی کو عزت دے یا اس کے ساتھ سخاوت سے کرے تو وہ بھی اس کے حکم سے ہے۔ اس کی سخاوت اپنی مخلوق پر بے انتہاء ہے۔ (الغزالی)

یہ اس کی شان ہے کہ اس کی بڑائی اور بادشاہی کے سامنے اس کی ہیبت سے (خوف زدہ ہو کر) رہا جائے اور اس کی شان کے مطابق اس کی تعظیم کی جائے۔ وہ اپنی مخلوق کے لیے ایسا رب ہے جس کی تعظیم و تکریم کرنا مخلوق پر واجب ہے اور یہ حق کسی اور کا نہیں ہے کیونکہ وہ وحدہ لا شریک لہ ہے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۵، ۹۶)

معارف:..... یہ نام مبارک قرآن مجید میں دو مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَيَنْبَغِي وَجْهَهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ﴾ (الرحمن: ۲۷)

”اور آپ کے رب کی ذات باقی رہ جائے گی جو جلال اور عزت والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ ذو الجلال والاكرام ہے، اس کی ذات اس لائق ہے کہ اس کی تعظیم کی جائے، اور اس کی تعظیم اس امر کی متقاضی ہے کہ کسی حال میں بھی اس کی نافرمانی نہ کی جائے اور اس کی تکریم کی جائے، اور اس کی تکریم اس کا تقاضا کرتی ہے کہ صرف اسی کی عبادت کی جائے، اور اس کا شکر ادا کیا جائے، اور شکرگزاری کا کمال یہ ہے کہ کسی حال میں بھی اس کی ناشکری نہ کی جائے، اور اسے ہر دم یاد کیا جائے، اور اس کی یاد میں اخلاص تام یہ ہے کہ اسے کبھی بھی نہ بھولا جائے۔

﴿تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ﴾ (الرحمن: ۷۸)

”بہت ہی بابرکت ہے آپ کے اس رب کا نام جو جلال اور عزت والا ہے۔“
 علامہ ابن القیم رحمہ اللہ نے ذوالجلال والاکرام کے معنی میں لکھا ہے کہ: ”جلال ہم کو
 ادب سکھاتا ہے، اور اکرام ہم پر ابوابِ محبت کشادہ کرتا ہے اور اللہ تعالیٰ کی ذات ایسی
 ہے کہ اس کی جلالت بھی ہر وقت پیش نظر رکھی جائے اور اس کی محبت بھی ہر وقت دل
 میں قائم رہے۔“^①

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

۱:..... ((اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا
 ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ))^②

”اے اللہ! تو ”سلام“ ہے اور تجھی سے سلامتی ہے۔ اے بزرگی اور عزت
 والے! تو بابرکت ذات ہے۔“

۲:..... رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ان کلمات کو حرزِ جان بنا لو:

((يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ))^③

”اے شان و شوکت اور عزت و اکرام والے (مجھے عزت عطا فرما)۔“

۳۰۔ ذُو الطَّوْلِ

معانی:..... فضل و کرم کرنے والا۔

ابن عباس رضی اللہ عنہما بیان فرماتے ہیں کہ طول کے معنی وسعت و دولت کے ہیں، معنی یہ

① بحوالہ اسماء اللہ الحسنی، ص: ۲۶۰-۲۴۱۔

② صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۳۴۔ سنن ابی داؤد، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۱۵۱۳۔ سنن
 ترمذی، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۳۰۰۔ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۳۸۔

③ مسند احمد: ۱۷۷/۴۔ مستدرک حاکم: ۱/۴۹۸، ۴۹۹۔ امام حاکم رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح الاسناد“
 کہا ہے۔

ہوئے کہ اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو سرفراز فرمانے والا اور انہیں عظیم الشان انعامات و احسانات سے نوازنے والا ہے۔ (تفسیر طبری: ۵۳/۲۴۔ المصباح المنیر: ۵۴/۵)

معارف:..... قرآن مجید میں یہ نام صرف ایک جگہ واقع ہوا ہے:

﴿شَدِيدُ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ﴾ (غافر: ۳)
 ”سخت سزا دینے والا، فضل و کرم کرنے والا ہے، اس کے سوا کوئی معبود نہیں، سب کو اسی کے پاس لوٹ کر جانا ہے۔“

اللہ تعالیٰ ذو الطول ہے یعنی مخلوقات پر خوب انعام و احسان کرنے والا ہے، وہ ان میں سے کسی ایک کا بھی شکر ادا نہیں کر سکتے۔ جیسا کہ ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿وَإِنْ تَعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا﴾ (ابراہیم: ۳۴)
 ”اور اگر تم اللہ کے احسان گننے لگو تو انہیں شمار نہ کر سکو گے۔“



حرف الراء

۳۱۔ الرَّبُّ

معانی:..... پالنہار۔

وہ آقا جس کی اطاعت کی جائے، وہ مالک جو تصرف کلی کا حق رکھتا ہے، وہ ذات برتر و بالا جو مخلوق کی اصلاح احوال کے لیے ہر تصرف کا حق رکھتا ہے۔ الف لام کے اضافہ کے ساتھ ”الرب“ صرف اللہ تعالیٰ کی ذات کے لیے استعمال ہوتا ہے۔ مخلوق کے لیے اضافت کے ساتھ استعمال ہوتا ہے۔ مثلاً ”رب الدار“ ”گھر والا“، اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں کہا ہے: ﴿ارْجِعْ اِلٰی رَبِّكَ﴾ (یوسف: ۵۰) ”اپنے آقا کی طرف لوٹ کر جاؤ۔“

معارف:..... قرآن مجید میں یہ نام (۹۶۱) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے

ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ اَغْيِرَ اللّٰهُ اَبْعٰی رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ﴾ (الانعام: ۱۶۴)

”آپ کہیے کہ کیا میں اللہ کے علاوہ کوئی اور رب ڈھونڈ لوں حالانکہ وہ تو ہر چیز کا

رب ہے۔“

ہر قسم کی تعریف کے لائق بھی رب تعالیٰ ہے:

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ (الفاتحہ: ۱)

”سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سارے جہانوں کا پالنے والا ہے۔“

(العالمین) عالم کی جمع ہے۔ اللہ تعالیٰ کے علاوہ ہر چیز پر اس کا اطلاق ہوتا ہے کچھ

لوگوں کا خیال ہے کہ ”عالم“ کا اطلاق انس و جن اور ملائکہ و شیاطین پر ہوتا ہے۔ بہائم ”عالم“ میں داخل نہیں۔ اللہ تعالیٰ سارے جہان والوں کا آقا و مالک اور اُن میں تصرف کرنے والا

ہے۔ ”رب“ کا ایک معنی ”مربی“ بھی کیا گیا ہے، بایں طور پر وہ (تربیت) سے مشتق ہے، یعنی اللہ تعالیٰ اپنی مخلوق کا بطورِ عام اور بطورِ خاص مدبر و مربی ہے۔

بطورِ عام مربی اس طرح ہے کہ اس نے تمام خلایق کو پیدا کیا، ان کو روزی دی، اور ان اُمور کی طرف راہنمائی کی جو دنیاوی زندگی کے لیے نافع ہیں اور بطورِ خاص اپنے اولیاء کا مربی ہے، یعنی ایمان کے ذریعے اُن کی تربیت کرتا ہے، انہیں ایمان کی توفیق دیتا ہے اور صاحب کمال بناتا ہے۔ جو اُس کے اور اُن اولیاء کے درمیان حائل ہو سکتے ہیں، یعنی انہیں ہر چیز کی توفیق دیتا ہے اور ہر شر سے محفوظ رکھتا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے سے دُعا:

غالباً یہی راز ہے کہ انبیائے کرام علیہم السلام کی تمام دُعا میں اسم ”الرب“ سے شروع ہوتی ہیں۔ اس لیے کہ اُن کے تمام مطالب اللہ کی ربوبیت خاص کے ضمن میں آتے ہیں۔

سیدنا آدم علیہ السلام کی دعا:

﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝۲۳﴾

(الاعراف: ۲۳)

”(آدم اور ان کی بیوی سیدہ حواء علیہما السلام اللہ سے اپنی غلطی کی معافی یوں مانگتے رہے:) اے ہمارے رب! ہم نے اپنے تئیں خود (ظلم کر کے) تباہ کر لیا ہے۔ اور اگر تو نے ہمیں نہ بخشا اور ہم پر رحم نہ کیا، تو بلاشبہ ہم خسارہ اٹھانے والوں میں ہو جائیں گے۔“

سیدنا نوح علیہ السلام کی دعا:

﴿وَقُلْ رَبِّ اَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبَارَكًا وَاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝۲۹﴾ (المؤمنون : ۲۹)

”اے میرے رب! مجھے کسی مبارک جگہ پر اتار دے، اور تو منزل عطا کرنے والوں میں سب سے اچھا ہے۔“

سیدنا ابراہیم علیہ السلام کی دعائیں:

۱۔ ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝﴾ (البقرہ : ۱۲۷، ۱۲۸)

”اے ہمارے رب! ہماری نیکی قبول فرما لے۔ بلاشبہ تو (دعا کو) سنتا ہے اور (ہماری دل کی نیت کو) خوب جانتا ہے اور ہمارے قصور معاف کر دے بلاشبہ تو بہت زیادہ توبہ قبول کرنے والا اور نہایت مہربان ہے۔“

۲۔ ﴿رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝﴾ (ابراہیم : ۴۰ تا ۴۱)

”اے میرے رب! مجھے اور میری اولاد کو نماز کا پابند بنا دے، اے ہمارے رب! اور میری دعا کو قبول فرما لے۔ اے ہمارے رب! تو مجھے اور میرے والدین کو اور مومنوں کو اس دن معاف کر دے جب حساب ہوگا۔“

سیدنا سلیمان علیہ السلام کا اظہارِ تشکر:

﴿رَبِّ اَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝﴾ (النمل : ۱۹)

”اے میرے رب! مجھے اس بات کی توفیق دے کہ میں تیری نعمت کا شکر ادا کر سکوں۔ وہ (حکومت، سلطنت اور علم و حکمت والی) نعمت کہ جو تو نے میرے اوپر بھی کی اور میرے والدین کو بھی عنایت فرمائی ہے۔ اور (اس بات کی بھی توفیق دے کہ) میں عمل صالح کرتا رہوں، وہ عمل کہ جس سے تو خوش ہو جائے، اور (آخرت میں) مجھے اپنی رحمت کے ساتھ اپنے صالح بندوں میں داخل فرما۔“

سیدنا لوط علیہ السلام کی دعا:

﴿رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۝﴾ (الشعراء : ۱۶۹)

”میرے رب! مجھے اور میرے خاندان کو ان کے اعمال کے انجام بد سے بچالے۔“

سیدنا زکریا علیہ السلام کی دعا:

﴿رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝﴾

(آل عمران : ۳۸)

”اے میرے رب! مجھے تو اپنے پاس سے اچھی اولاد عطا فرما، بے شک تو دعا کو سننے والا ہے۔“

سیدنا یوسف علیہ السلام کی دعا:

﴿رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۝﴾ (یوسف : ۱۰۱)

”میرے رب! تو نے مجھے بادشاہت عطا کی اور خوابوں کی تعبیر کا علم دیا، اور آسمان و زمین کے پیدا کرنے والے! دنیا و آخرت میں تو ہی میرا یار و مددگار ہے، تو مجھے مسلمان دنیا سے فوت کر، اور نیک لوگوں سے ملا دے۔“

سیدنا موسیٰ علیہ السلام کی دعائیں:

① ﴿رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝﴾ (القصص : ۲۴)

”اے میرے مالک! تو جو کوئی نعمت (خوراک، گھر، سواری، علم و حکمت اور بیوی کی) مجھ پہ اتارے تو میں اس کا محتاج ہوں۔“

② ﴿رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ۝ يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝﴾ (طہ : ۲۵ تا ۲۸)

”میرے رب! میرا سینہ میرے لیے کھول دے، اور میری مہم کو میرے لیے آسان کر دے، اور میری زبان کی گرہ کھول دے تاکہ وہ لوگ میری بات

”سبھیں۔“

نبی کریم ﷺ کی دعا:

﴿رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ (البقرہ: ۲۰۱)

(البقرہ: ۲۰۱)

”اے ہمارے رب! ہمیں دنیا میں بھی بھلائی عطا فرما، اور آخرت میں بھی

ہمارے لیے بھلائی مقدر کر دے اور ہمیں جہنم کے عذاب سے بچانا۔“

فائدہ:..... احادیث میں اس دعا کی بڑی فضیلت آئی ہے، سیدنا انس بن مالک رضی اللہ

سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ کثرت سے یہ دعا کرتے تھے۔ ①

ابوداؤد وغیرہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ رُکنِ یمانی اور حجرِ اسود کے درمیان

یہی دعا کرتے تھے۔ ②

سیدنا انس رضی اللہ سے مروی ہے کہ آپ ﷺ نے ایک مریض کی عیادت کی جو سوکھ کر

کاٹا ہو گیا تھا، آپ نے اسے یہی دعا کرنے کی نصیحت کی، اس نے ایسا ہی کیا اور اس کی

بیماری دور ہو گئی۔ ③

۳۲۔ الرَّحْمٰنُ

معانی:..... نہایت مہربان۔

امام بخاری اپنی صحیح میں کتاب التفسیر کے آغاز میں فرماتے ہیں:

((الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اِسْمَانِ مِنَ الرَّحْمَةِ الرَّحِيْمِ وَالرَّاحِمُ بِمَعْنٰی

وَاحِدٍ كَالْعِلْمِ وَالْعَالِمِ .))

”یہ دونوں نام رحمت (مصدر) سے مشتق ہیں۔ رحیم اور راحم (رحم کرنے والا)

① صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۳۸۹۔

② سنن ابوداؤد: کتاب الحج، رقم: ۱۸۹۲۔ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”حسن“ کہا ہے۔

③ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۲۶۸۸، مسند احمد: رقم: ۱۱۹۸۸۔

ہم معنی ہیں۔ جیسے علیم اور عالم بمعنی علم رکھنے والا یا جاننے والا۔‘‘ انتہی

”الرحمن“ اور ”الرحیم“ دونوں اللہ کی صفت ہیں اور رحمت سے ماخوذ ہیں، دونوں میں مبالغہ پایا جاتا ہے۔ ”الرحمن“ میں ”الرحیم“ سے زیادہ مبالغہ ہے۔ اسی لیے مفسرین نے لکھا ہے کہ ”الرحمن“ رحمت کے تمام اقسام کو عام ہے اور دنیا و آخرت میں تمام مخلوق کو شامل ہے۔ جب ”الرحیم“ مومنین کے لیے خاص ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ﴿وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝﴾ (الأحزاب: ۴۳)

(ملخص از تفسیر ابن کثیر: ۱/ ۵۲، ۵۳)

بعض علمائے تفسیر ”الرحمن“ کو تو ”احسان عام“ کے لیے مانتے ہیں۔ یعنی اللہ کی رحمت اس کی تمام مخلوقات کے لیے عام ہے، لیکن ”الرحیم“ کو مومنین کے لیے خاص نہیں مانتے۔ انہوں نے ان دونوں صفات کی ایک بڑی اچھی توجیہ بیان کی ہے جو عربی زبان کے مدلول کے بالکل موافق ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ لفظ ”الرحمن“ سے مراد وہ ذات ہے جس کی نعمتوں کا فیض عام ہے، لیکن یہ فعل عارضی بھی ہو سکتا ہے۔ کیونکہ عربی میں اس وزن کے اوصاف فعل کے عارض ہونے پر دلالت کرتے ہیں۔ اور لفظ ”الرحیم“ دائمی اور مستقل صفت رحمت پر دلالت کرتا ہے۔ اس لیے جب عربی زبان کا سلیقہ رکھنے والا آدمی اللہ تعالیٰ کی صفت ”الرحمن“ سنتا ہے۔ تو وہ سمجھتا ہے کہ وہ ذات جس کی نعمتوں کا فیض عام۔ لیکن وہ نہیں سمجھتا کہ ”رحمت“ اس کی دائمی صفت ہے۔ اس کے بعد جب وہ ”الرحیم“ کہے تو اسے یقین کامل ہو جاتا ہے کہ ”رحمت“ اس کی دائمی اور ایسی صفت ہے جو اس سے کبھی جدا ہونے والی نہیں۔ (محاسن التنزیل: ۶/۲)

یہاں ایک اور بات قابل ذکر ہے ”الرحمن“ نام اللہ عزوجل کے ساتھ خاص ہے۔ غیر اللہ کے لیے اس نام کا استعمال جائز نہیں۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ﴿قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۖ اَيَّامًا تَدْعُوۡا فَلَهُۥ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی ۝﴾ (الاسراء: ۱۱۰) ”جب کہ ”الرحیم“ غیر اللہ کی صفت (اس کی حیثیت و کیفیت کے مطابق) بن سکتا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کی

تعریف کرتے ہوئے فرمایا ہے: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا رُفِعَ لَكُمْ دَرَجَتُهُمْ﴾ (التوبة: ۱۲۸) یعنی ”وہ مومنوں کے ساتھ رافت و رحمت کا سلوک کرنے والے ہیں۔“

معارف: اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن کریم میں (۵۶) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر اللہ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَاللَّهُمَّ اللَّهُ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ﴾ (البقرہ: ۱۶۳)

”اور تم سب کا معبود ایک اللہ ہے، اس کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ نہایت مہربان اور رحم کرنے والا ہے۔“

رحمن وہ ہے جو سب تعریفوں کے لائق ہے:

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝﴾ (الفاتحہ: ۲، ۱)

”سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سارے جہان کا پالنے والا ہے، نہایت مہربان ہے جو رحم کرنے والا ہے۔“

الرَّحْمَنُ وہ ہے جس نے اپنی رحمت سے قرآن مجید کو نازل فرمایا:

﴿حَمْدٌ ۝ تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝﴾ (حم السجده: ۱-۲)

”حم، یہ کتاب نہایت مہربان، بے حد رحم کرنے والے کی طرف سے نازل کردہ ہے۔ یہ ایک ایسی کتاب ہے جس کی آیتیں واضح کر دی گئی ہیں، جو عربی قرآن ہے۔ اُن لوگوں کے لیے جو علم رکھتے ہیں۔“

﴿الرَّحْمَنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝﴾

(الرحمن: ۱-۴)

”نہایت مہربان اللہ ہے جس نے قرآن سکھایا اس نے انسان کو پیدا کیا اسے قوت گویائی دی۔“

اللہ تعالیٰ نے اس سورت کی ابتدا اپنے نام ”الرحمن“ سے کی ہے جو اس کی بے انتہا رحمتوں کی دلیل ہے۔ مفسرین لکھتے ہیں کہ یہاں اللہ تعالیٰ کے دیگر ناموں کی بجائے

”الرحمن“ کے ذکر سے مقصود، مشرکین مکہ کی تردید ہے جو باری تعالیٰ کے اس نام کا انکار کرتے تھے۔

﴿وَهُمْ يَبْذُرُونَ الرِّحْلَيْنِ هُمْ كَفَرُونَ﴾ (الأنبياء: ۳۶)

”اور وہ (کفار) رحل کے ذکر کے منکر ہیں۔“

سورة الفرقان میں ارشاد فرمایا:

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا﴾ (الفرقان: ۶۰)

”اور جب کافروں سے کہا جاتا ہے کہ ”رحمن“ کے لیے سجدہ کرو، تو وہ کہتے ہیں کہ ”رحمن“ کون ہے؟ کیا ہم اس کو سجدہ کریں جس کے سجدہ کا تم ہمیں حکم دیتے ہو، اور اس بات سے وہ اور زیادہ بدکنے لگتے ہیں۔“

یعنی مشرکین مکہ ”رحمن“ کا معنی نہیں جانتے تھے اور نہ جانتے تھے کہ یہ اللہ کے ناموں میں سے ایک نام ہے۔ اس لیے نبی کریم ﷺ نے جب ان سے کہا کہ تم لوگ بتوں کے بجائے ”رحمن“ کو سجدہ کرو، تو انہوں نے جواب دیا کہ ہم کسی ”رحمن“ کو نہیں جانتے ہیں، صرف ”رحمن الیمامہ“ یعنی مسلمانہ کذاب کو جانتے ہیں، جس نے اپنا لقب ”رحمن“ رکھ لیا تھا۔ کیا تم چاہتے ہو کہ تم ہمیں جس کی عبادت کا حکم دو اسی کی عبادت کریں، یعنی چاہتے ہو کہ بس ہم تمہاری ہر بات مانتے رہیں۔ تو ایسا نہیں ہوگا اور ہم ”رحمن“ کو سجدہ نہیں کریں گے یعنی تکبر کی وجہ سے دین و ایمان سے ان کی نفرت اور بڑھ گئی۔

حافظ ابن کثیر لکھتے ہیں کہ کافروں کے برعکس، مؤمنین اس اللہ کی عبادت کرتے ہیں جو رحمن اور رحیم ہے، اور اسی کے لیے سجدہ کرتے ہیں۔

رحمن تو وہ ہے کہ جس نے آسمانوں اور زمین اور ان دونوں کے درمیان ساری چیزوں کو چھ دنوں میں پیدا کیا ہے، پھر وہ عرش پر مستوی ہو گیا اور ہر مخلوق کے متعلق پورا علم

رکھتا ہے۔

﴿الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَنُ فَسَلَّ بِهِ خَبِيرًا﴾ (الفرقان: ۵۹)

”جس نے آسمان اور زمین کو اور ان کے درمیان پائی جانے والی تمام اشیاء کو چھ دنوں میں پیدا کیا، پھر عرش پر مستوی ہو گیا، پس آپ ان کی تفصیلات اس رحمٰن سے پوچھئے جو ہر بات کی خبر رکھتا ہے۔“
رحمٰن تو وہ ہے کہ جس کی تخلیق غایت درجہ حسین و خوبصورت اور منظم و مرتب کہ اس میں کوئی خلل اور نقص نہیں۔

﴿مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ﴾ (الملك: ۳)

”آپ رحمٰن کی تخلیق میں کوئی بے ضابطگی نہیں دیکھیں گے۔“

رحمٰن تو وہ ہے کہ جس کے ذریعے حالت پریشانی میں پناہ مانگی جائے:

﴿قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَفْعِلُ﴾ (مریم: ۱۸)

”مریم نے کہا کہ اگر تم اللہ سے ڈرنے والے ہو تو میں تم سے رحمٰن کے ذریعے پناہ مانگتی ہوں۔“

رحمٰن اپنے بندوں پر بہت زیادہ رحم کرنے والا ہے، اور اس کی ذات ایسی ہے جس سے تمام امور میں مدد مانگنی چاہیے۔

﴿وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ﴾ (الأنبياء: ۱۱۲)

”اور ہم اپنے رب سے مدد مانگتے ہیں جو رحمٰن ہے۔“

رحمٰن وہ ہے جو اہل ایمان اور عمل صالح کرنے والوں کی محبت اپنے نیک بندوں کے دلوں میں جاگزیں کر دیتا ہے۔

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا﴾ (۱۹)

(مریم: ۹۶)

”بے شک جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے عمل صالح کیا، رحمٰن ان کی محبت سب کے دلوں میں جاگزیں کر دے گا۔“

رحمٰن وہ ہے جسے اولاد اور جوڑے کی ضرورت نہیں۔

﴿وَمَا يُلْبِغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا﴾ (مریم: ۹۲)

”اور رحمٰن کے لیے یہ مناسب ہی نہیں ہے کہ وہ اپنے لیے کسی کو لڑکا بنائے۔“
رحمٰن کے سامنے سب بندے مرزوق کی حیثیت رکھتے ہیں۔

﴿إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّا اِنِّي الرَّحْمٰنُ عَبْدًا﴾ (مریم: ۹۳)

”آسمانوں اور زمین میں جتنے ہیں، سب رحمٰن کے سامنے بندے کی حیثیت سے حاضر ہوں گے۔“

رحمٰن کی رحمت بہت وسیع ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((لَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ مَا عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الرَّحْمَةِ مَا قَنَظَ مِنْ جَنَّتِهِ أَحَدٌ.)) ❶

”اگر کافر کو اللہ کی رحمت کا علم ہو جائے تو اس کی جنت سے کوئی نا اُمید نہ ہو۔“

رحمت الہی سے وسیع کوئی چیز نہیں:

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾ (الأعراف: ۱۵۶)

”میری رحمت نے ہر چیز کو اپنے دامن میں لے رکھا ہے۔“

غضب پر رحمت الہی کا غلبہ ہے:

((إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي.)) ❷

”بے شک میری رحمت ہمیشہ میرے قہر و غضب پر غالب ہے۔“

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

❶ صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم: ۶۹۷۹۔

❷ صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم: ۶۹۶۹۔

((وَالَّذِي بَعَثْنِي بِالْحَقِّ لَلَّهِ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ أُمِّ الْأَفْرَاحِ
بِفِرَاحِهَا.)) ❶

”اس ذات کی قسم جس نے مجھے حق کے ساتھ بھیجا ہے کہ بے شک اللہ عزوجل
اپنے بندوں پر اس سے کہیں زیادہ مہربان ہے کہ جو محبت ماں اپنے بچوں سے
رکھتی ہے۔“

((لَا يَدْخُلُ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ وَلَا يُجِيرُهُ مِنَ النَّارِ وَلَا أَنَا
إِلَّا بِرَحْمَةٍ مِنَ اللَّهِ.)) ❷

”تم میں سے کسی شخص کو اس کے اعمال نہ جنت میں داخل کر سکتے ہیں اور نہ
آگ سے بچا سکتے ہیں (رسول اللہ ﷺ نے فرمایا) اور میں بھی اس کی رحمت
کے بغیر جنت میں داخل نہیں ہو سکتا۔“

اسمِ رحمن قرآن مجید میں کئی مقامات پر اکیلا بیان ہوا ہے اور زیادہ مقامات پر اسم
رحیم کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسمِ پاک کے ذریعے دُعا:

❖ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: پریشان حال کی دعاؤں میں ہے:

((اَللّٰهُمَّ رَحِمَتَكَ اَرْجُوْ ، فَلَا تَكِلْنِيْ اِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ
وَأَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ ، لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ .)) ❸

”اے اللہ! میں تیری رحمت کی ہی امید رکھتا ہوں، لہذا تو مجھے آنکھ جھپکنے کے
برابر بھی میرے نفس کے سپرد نہ کرنا، اور میرے تمام تر کام سنوار دے، تیرے سوا

❶ سنن ابو داؤد، رقم: ۳۰۸۹.

❷ صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم: ۷۱۲۱.

❸ سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم: ۵۰۹۰۔ ادب المفرد، رقم: ۷۰۱۔ مسند احمد: ۴۲/۵.

صحیح ابن حبان، رقم: ۹۷۰۔ ابن حبان نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

کوئی عبادت کے لائق نہیں۔“

﴿اللَّهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبُ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيمَهُمَا أَنْتَ تَرْحَمُنِي فَارْحَمْنِي بِرَحْمَةٍ تُغْنِي بَهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ.﴾ ❶

”اے اللہ! دل کے فکر کو دور کرنے والے غم کو کھول دینے والے۔ اے بے قراروں کی پکار کو سننے والے اور اے دنیا اور آخرت میں رحمت فرمانے والے اور ہر دو جہاں میں رحم کرنے والے، مجھ پر تو تو ہی رحم فرمائے گا۔ اس لیے تو ہی مجھ پر رحم فرما۔ ایسی رحمت کے ساتھ جو مجھے سب کی رحمت سے بے پروا بنا دے۔“

۳۳۔ الرَّحِيمُ

معانی:..... نہایت رحم اور نرمی کرنے والا۔

”الرحیم“ مومنین کے لیے خاص ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ﴿وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا﴾ (الاحزاب: ۴۳) ”اور اللہ مومنین کے لیے نہایت رحم والا ہے۔“

معارف:..... یہ اسم مبارک قرآن مجید میں (۱۱۳) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿يَغْفِرْ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ ❷

(آل عمران: ۱۲۹)

”بخشتا ہے جسے چاہے اور جسے عذاب دیتا ہے اور اللہ بخشنے والا رحم کرنے والا ہے۔“

قرآن مجید کا مطالعہ کیا جائے تو یہ حقیقت آشکارا ہوتی ہے کہ ہر نعمت اللہ تعالیٰ کی رحمت

❶ مستدرک حاکم: ۱/۵۱۵، رقم: ۱۹۴۱۔ کتاب الدعاء للطبرانی، رقم: ۱۰۴۱۔ مسند البزار:

کا نتیجہ ہے، چنانچہ:

اللہ تعالیٰ رحیم ہے تو وہ لوگوں کی نگہبانی کر رہا ہے۔

﴿قَالَ هَلْ آمَنْتُمْ عَلَيَّ إِلَّا كَمَا آمَنْتُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۚ قَالَ لَهُ خَيْرٌ

حِفْظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ﴾ (یوسف : ۶۴)

”یعقوب نے کہا اس کے بارے میں تم پر میرا بھروسہ کرنا ویسا ہی ہوگا جیسا میں

نے اس کے قبل اس کے بھائی کے بارے میں تم پر بھروسہ کیا تھا، اس لیے اللہ ہی

سب سے اچھا حفاظت کرنے والا ہے، اور وہ سب سے زیادہ مہربان ہے۔“

اللہ تعالیٰ رحیم ہے تو وہ اپنے بندوں کو آخرت کے خسارے سے بچاتا ہے۔

﴿قَالَ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا ۖ وَإِن لَّاهُ تَغْفِرُ لَنَا وَتَرْحَمَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ

الْخَاسِرِينَ﴾ (الاعراف : ۲۳)

”اے ہمارے رب! ہم نے اپنے اوپر بہت ظلم کیا، اور اگر تو نے ہمیں معاف نہ

کیا اور ہمارے حال پر رحم نہ کیا، تو ہم بے شک خسارہ پانے والوں میں سے

ہوں گے۔“

اللہ تعالیٰ کی رحمت کی دلیل ہے کہ اس نے اپنے بندوں کے لیے سوار یوں کا انتظام

فرمایا:

﴿وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَكْدٍ لَّاهُ تَكُونُوا لِلْعِثَّةِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ

لَعَزِيزٌ رَّحِيمٌ﴾ (النحل : ۷)

”اور وہ جانور تمہارے بوجھ ان شہروں تک لے جاتے ہیں، جہاں تم بہت ہی

پریشان اور جانفشانی سے پہنچ سکتے تھے، بے شک تمہارا رب بڑی شفقت والا،

بے حد رحم کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ کی رحمت کی دلیل ہے کہ وہ اپنے بندوں کو توبہ کی توفیق دیتا ہے اور ان کی توبہ

قبول کرتا ہے۔

﴿فَتَلَقَّى آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝﴾

(البقرة: ۳۷)

”پھر آدم نے اپنے رب سے چند کلمات سیکھے، تو اللہ نے ان کی توبہ قبول کر لی، بے شک وہی توبہ قبول کرنے والا بڑا مہربان ہے۔“

یہ رحیم ہی ہے جو انسانوں کو ان کے نفوس کی شرارتوں سے محفوظ رکھتا ہے۔

﴿وَمَا أَبْرِئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝﴾ (یوسف: ۵۳)

اور میں اپنے آپ کو خطاؤں سے پاک نہیں بتاتا ہوں بے شک انسان کا نفس برائی پر بہت زیادہ ابھارتا ہے، سوائے اس نفس کے جس پر میرا رب رحم کرے، بے شک میرا رب بڑا مغفرت کرنے والا، نہایت مہربان ہے۔“

یہ رحیم ہی ہے جو انسانوں کو مصائب و مشکلات اور عذاب سے بچاتا ہے۔

﴿لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ﴾ (ہود: ۴۳)

”آج اللہ کے عذاب سے کوئی بچانے والا نہیں، سوائے اس ذات پاک کے جو رحم کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ کی رحمت کے نتیجے میں انسان جہالت کے اندھیروں سے ہدایت کی روشنی کی طرف آتا ہے۔

﴿هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝﴾ (الاحزاب: ۴۳)

”وہ ذات برحق تم پر اپنی رحمت بھیجتا ہے، اور اس کے فرشتے تمہارے لیے دعا کرتے ہیں، تاکہ اللہ تمہیں ظلمتوں سے نکال کر نور حق تک پہنچا دے، اور اللہ مومنوں پر بے حد رحم کرنے والا ہے۔“

خود رسول اللہ ﷺ کا سخت مخالفت اور اذیتوں کے بعد بھی ثابت قدم رہنا اللہ تعالیٰ

کی رحمت کا نتیجہ تھا۔

﴿وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَصُدُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ﴾ (النساء: ۱۱۳)

”اور اگر آپ پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی تو ان کی ایک جماعت نے آپ کو گمراہ کرنے کا ارادہ کر لیا تھا، اور وہ لوگ صرف اپنے آپ کو گمراہ کرتے ہیں، اور آپ کو کچھ بھی نقصان نہیں پہنچائیں گے۔“

نبی کریم ﷺ کے اندر اہل اسلام کے لیے نرمی کا جذبہ اللہ کا عطیہ تھا، اس نے آپ پر اور صحابہ کرام پر رحم کھاتے ہوئے یہ جذبہ نرم خوئی آپ کے اندر پیدا کر دیا تھا کہ آپ ہر حال میں ان کے ساتھ رافت و رحمت کا برتاؤ کرتے رہیں۔

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ﴾ (آل عمران: ۱۵۹)

”آپ محض اللہ کی رحمت سے ان لوگوں کے لیے نرم ہوئے ہیں، اور اگر آپ ترش مزاج اور سخت دل ہوتے تو وہ آپ کے پاس سے چھٹ جاتے۔“

برکھا کا نزول بھی رحمت الہی کی وجہ سے ہے۔

﴿وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ﴾ (الشوری: ۲۸)

”اور وہی ہے جو بارش نازل کرتا ہے اس کے بعد کہ لوگ اس سے ناامید ہو جاتے ہیں، اور اپنی رحمت کو پھیلا دیتا ہے، اور وہی ہے کارساز، ہر تعریف کا سزا وار ہے۔“

سمندر کی طوفانی لہروں میں انسانی کشتی اللہ کی رحمت کے ذریعے ہی منزل مقصود تک پہنچتی ہے۔

﴿وَقَالَ اذْكُبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَفُوسَهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ

تَحِيْمٌ ﴿٥٠﴾ (ہود: ٤١)

”نوح نے کہا کہ تم لوگ اس کشتی میں سوار ہو جاؤ اس کا چلنا اور رکنا اللہ کے نام سے ہے، بے شک میرا رب بڑا مغفرت کرنے والا، بڑا رحم کرنے والا ہے۔“
رحمت الہی کی برکت سے ہی انسان اختلاف اور فرقہ بندی سے بچ سکتا ہے۔
﴿وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿٥١﴾ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَنَبَّأْتُ كُلَّ نَفْسٍ بِرَبِّكَ﴾ (ہود: ١١٨-١١٩)

”اور لوگ ہمیشہ آپس میں اختلاف کرتے رہیں گے سوائے ان کے جن پر آپ کا رب رحم کرے گا۔“
رحمت الہی کی برکت سے ہی انسان شیطان کی پروی سے بچ سکتا ہے۔
﴿وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾﴾

(النساء: ٨٣)

”اور اگر تم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی تو چند لوگوں کے سوا تم سبھی شیطان کی اتباع کرنے لگتے۔“
رحمت الہی کے ذریعے سے ہی انسان گناہ سے بچ سکتا ہے۔
﴿وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا ذَكَّيْ مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ﴾ (النور: ٢١)
”اور اگر تم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی تو تم میں سے کوئی بھی گناہوں سے پاک نہ ہوتا۔“

روز قیامت کی نغیوں سے بچاؤ بھی اللہ تعالیٰ کی رحمت سے ہی ہوگا۔
﴿وَمَنْ تَتَّبِعِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتُهُ ۚ﴾ (المؤمن: ٩)
”اور جن کو تو اس دن گناہوں کی سزا سے بچالے گا، اس پر تو نے رحم فرما دیا۔“
روز قیامت اہل ایمان کے چہرے رحمت الہی سے روشن ہوں گے۔

﴿وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾

(آل عمران: ۱۰۷)

”اور جن کے چہرے چمکتے ہوئے ہوں گے وہ اللہ کی رحمت میں ہوں گے، جس میں وہ ہمیشہ رہیں گے۔“

رحمت الہی کے بغیر صرف عمل جنت میں داخل نہیں کر سکتا۔

((لَا يُدْخِلُ مِنْكُمْ الْجَنَّةَ وَلَا يُجِيرُهُ مِنَ النَّارِ، وَلَا أَنَا بِرَحْمَةٍ مِنْ اللَّهِ.)) ①

”تم میں سے کسی شخص کو اس کے اعمال نہ جنت میں داخل کر سکتے ہیں اور نہ آگ سے بچا سکتے ہیں (رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:) اور میں بھی اس کی رحمت کے بغیر جنت میں داخل نہیں ہو سکتا۔“

صحیح بخاری و مسلم میں سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ أَنْزَلَ مِنْهَا رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالْبَهَائِمِ وَالْهَوَامِّ فِيهَا يَتَعَاطَفُونَ وَبِهَا يَتَرَاحَمُونَ وَبِهَا تَعْطِفُ الْوَحْشُ عَلَى وَلَدِهَا وَآخَرُ تَسْعَا وَتَسْعَيْنَ رَحْمَةً يَرْحَمُ بِهَا عِبَادَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.)) ②

”اللہ تعالیٰ کی رحمت کے سو حصوں میں سے صرف ایک حصہ دنیا کی طرف نازل کیا گیا۔ اس رحمت کے سبب جن وانس، جانور اور زہریلے جانور آپس میں پیار کرتے ہیں، ماں اپنے بچے پر اس رحم کے حصے سے محبت کرتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے اپنی رحمت کے ننانوے حصے اپنے پاس رکھے ہیں اور انہی سے اپنے بندوں پر قیامت کے دن رحم فرمائے گا۔“

① صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم: ۶۹۷۸.

② صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، رقم: ۶۹۷۴.

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((وَالَّذِي بَعَثْنِي بِالْحَقِّ لِلَّهِ أَرْحَمُ لِعِبَادِهِ مِنْ أُمِّ الْإِفْرَاحِ لِفِرَاحِهَا.)) ❶

”اس ذات کی قسم جس نے مجھے حق کے ساتھ مبعوث فرمایا ہے، بے شک اللہ عزوجل اپنے بندوں پر اس سے کہیں زیادہ مہربان ہے کہ جو محبت ماں اپنے بچوں سے رکھتی ہے۔“

رحمت الہی کے حصول کے لیے ضروری ہے کہ انسان اس اسم پاک کے ساتھ تخلق کرے۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((ارْحَمُوْ مَنْ فِيْ الْاَرْضِ يَرْحَمْكُمُ مَنْ فِي السَّمَاءِ.)) ❷

حالی مرحوم نے اسی حدیث مبارکہ کی ترجمانی اس شعر میں کی ہے۔

کرو مہربانی تم اہل زمیں پر

خدا مہربان ہوگا عرش بریں پر

اگر کوئی کم بخت اس اسم پاک سے تخلق نہیں کرتا تو وہ رحمت الہی سے محروم ہو جاتا ہے۔

((مَنْ لَا يَرْحَمُ النَّاسَ لَا يَرْحَمُهُ اللّٰهُ.)) ❸

”جو شخص لوگوں پر رحم نہیں کرتا، اللہ اس پر رحمت نازل نہیں فرماتا ہے۔“

لے پناہوں میں ہم کو بھی رحمت تیری

تجھ سے ہی مانگتے ہیں محبت تیری

اسم ”رحیم“ ان اسماء مبارکہ کے ساتھ بیان ہوا ہے:

❶ سنن ابو داؤد، رقم: ۳۰۸۹.

❷ سنن ترمذی، کتاب البر ولصلۃ، اقر: ۱۹۲۴، سنن ابو داؤد، کتاب الادب، رقم: ۴۹۴۱ سلسلۃ

الصحيحۃ، رقم: ۹۲۲.

❸ سنن ترمذی، کتاب البر ولصلۃ، رقم: ۱۹۲۲، امام ترمذی نے اسے ”حسن صحیح“ اور محدث البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

اسم ”رحمن“ کے ساتھ، اسم ”تواب“ کے ساتھ، اسم ”البر“ کے ساتھ، اسم ”رؤوف“ کے ساتھ، اسم ”ودود“ کے ساتھ، اسم ”غفور“ کے ساتھ، اسم ”رب“ کے ساتھ، اسم ”العزیز“ کے ساتھ، اور کئی مقامات پر صرف اکیلا ”رحیم“ بھی بیان ہوا ہے۔ پس اللہ تعالیٰ ”ارحم الراحمین“ بھی ہے، ”خیر الراحمین“ بھی ہے، رحمن بھی ہے اور ”رحیم“ بھی ہے۔ یہ چاروں الفاظ اگرچہ ایک صفتِ رحمت سے تعلق رکھتے ہیں۔ لیکن ہر ایک میں جداگانہ کیفیت و خصوصیت موجود ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱۔ سیدنا ایوب علیہ السلام نے اپنے رب سے دعا کی:

﴿أَيُّ مَسْكِنِي الضُّرِّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ﴾ (الانبیاء: ۸۳)

”مجھے تکلیف دہ بیماری لاحق ہوگئی ہے، اور تو سب سے بڑا رحم کرنے والا ہے۔“

۲۔ اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کو تعلیم فرمایا کہ وہ ہر حال میں اپنے رب کی حمد و ثناء اس سے مغفرت و رحمت کی دعا بایں الفاظ کرتے رہیں:

﴿رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ﴾ (المؤمنون: ۱۱۸)

”اے میرے رب! میری مغفرت فرما دے اور مجھ پر رحم کر دے، اور تو سب سے بہتر رحم کرنے والا ہے۔“

۳۔ ((اللَّهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبُ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيمَهُمَا أَنْتَ تَرْحَمُنِي فَأَرْحَمْنِي بِرَحْمَةٍ تُغْنِي بَهَا عَنْ رَحْمَةٍ مِنْ سِوَاكَ.)) ❶

”اے اللہ! دل کے فکر کو دور کرنے والے غم کو کھول دینے والے۔ اے بے قراروں کی پکار کو سننے والے اور اے دنیا اور آخرت میں رحمت فرمانے والے

❶ مستدرک حاکم: ۱/۵۱۵، رقم: ۱۹۴۱۔ کتاب الدعاء للطبرانی، رقم: ۱۰۴۱۔ مسند البزار:

اور ہر دو جہاں میں رحم کرنے والے، مجھ پر تو تو ہی رحم فرمائے گا۔ اس لیے تو ہی مجھ پر رحم فرما۔ ایسی رحمت کے ساتھ جو مجھے سب کی رحمت سے بے پروا بنادے۔“

۳۴۔ الرِّزَاقُ

معانی:..... رزق دینے والا۔

ہر جاندار کے لیے رزق پیدا کرے اور رزق کو حاصل کرنے کے اسباب مہیا کرے اور ان تک پہنچائے۔ رزق دو قسم کا ہے۔ ایک ظاہری یعنی قوت (غذا) اور طعام جو جسم کے کام آئے، اور دوسرا باطنی جو ایمان کے لیے قلب کی روشنی اور دین کے لیے رہنمائی بنے۔ ظاہری رزق کا فائدہ جسم کے لیے اور باطنی رزق ابدی زندگی یعنی آخرت کے لیے ہے دونوں اقسام کا وہی مالک ہے اور وہی اپنی مہربانی سے اپنے بندوں تک اسے پہنچاتا ہے۔ مگر جس کے لیے چاہے اپنی مرضی کے مطابق ہر دو رزق کشادہ فرمادے گا تنگ کر دے۔ (الغزالی)

اور بقول زجاج رزق کے اصل معنی ہیں کسی کو بھی کسی چیز سے نفع حاصل کرنے کی اچھی طرف اجازت دی جائے۔ قرآن میں ہے: ﴿وَمَنْ ذَرَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا﴾ (النحل: ۷۵) ”اور جس کو ہم نے اپنی طرف سے اچھی روزی دی، سو وہ اس میں سے خرچ کرتا ہے پوشیدہ اور ظاہر۔“ (بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۷۸)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام ایک مقام پر آیا ہے، اور وہ ہے:

﴿إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرِّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْبَتِّينِ﴾ (الذاریات: ۵۸)

”بے شک اللہ ہی روزی رساں ہے، زبردست طاقت والا ہے۔“

اور سورۃ لمائدہ وجج اور مومنون میں اس طرح بیان ہوا ہے:

﴿وَاللَّهُ خَيْرُ الرِّزَّاقِينَ﴾ (الجمعة: ۱۱)

”اور اللہ سب سے اچھی روزی دینے والا ہے۔“

زمین پر چلنے والے جتنے جاندار ہیں وہ ان سب کو ان کی تخلیق و تکوین کے مطابق روزی

پہنچاتا ہے، یہ اس کا اٹل وعدہ ہے، جو بطور منت واحسان پورا کرتا رہتا ہے۔ وہ ایک ایک جاندار کو روزی پہنچاتا ہے۔

﴿وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا﴾ (ہود: ۶)

”اور زمین پر جو جانور بھی پایا جاتا ہے اس کی روزی اللہ کے ذمے ہے۔“
اس اسم پاک کے ساتھ تخلق کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ اللہ کے پاک رزق سے کھائے، بھوکوں اور پیاسوں کو کھلائے پلائے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا﴾ (المائدہ: ۸۸)

”اور اللہ نے تمہیں جو حلال اور پاکیزہ روزی دی ہے اس میں سے کھاؤ۔“

﴿الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ﴾

(البقرة: ۳)

”جو نبی امور پر ایمان لاتے ہیں، اور نماز قائم کرتے ہیں، اور ہم نے ان کو جو روزی دی اس میں سے خرچ کرتے ہیں۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا.))

”اے اللہ! میں تجھ سے نفع مند علم کا، رزق حلال کا اور ایسے عمل کا جو تیرے ہاں مقبول ہو، سوال کرتا ہوں۔“^①

۳۵۔ الرَّفِيعُ

معانی:..... بہت بلند، بلندی دینے والا۔

وہ تمام مخلوقات سے اس طرح بلند ہے گویا ان کی چھت ہو۔

(المصباح المنیر ۵/ ۲۷۸-۲۷۹)

① صحیح ابن خزیمہ: ۱۰۲/۱۔ ابن خزیمہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

معارف:..... یہ نام قرآن میں صرف ایک مرتبہ آیا ہے، اور وہ یہ ہے:

﴿رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ﴾ (غافر: ۱۵)

”وہ اللہ جو بہت بلند درجات والا، عرش کا مالک ہے۔“

سورة المعارج میں فرمایا:

﴿مَنْ اللَّهُ ذِي الْمَعَارِجِ ۖ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ

مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۖ﴾ (المعارج: ۴، ۳)

”(اور وہ) اس اللہ صاحب درجات کی طرف سے (نازل ہوگا) جس کی طرف

روح (الایمن) اور فرشتے ایسے دن میں چڑھیں گے جس کا اندازہ پچاس ہزار

برس ہوگا۔“

اللہ تعالیٰ رفیع ہے، اہل ایمان اور اہل علم کے درجات کو بلند کرتا ہے۔

﴿يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۖ﴾

(المجادلة: ۱۱)

”اللہ تم میں سے ایمان والوں اور اہل علم کے درجات بلند کرتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ رفیع ہے، اسی نے اپنے بندوں کے درمیان فرق مراتب رکھا، اور ایک کو

دوسرے پر رفعت و بلندی عطا کی۔

﴿وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ﴾ (الانعام: ۱۶۵)

”اور تم میں سے بعض کو بعض پر کئی درجہ بلندی عطا کی۔“

اللہ تعالیٰ رفیع ہے، جس نے پیارے پیغمبر محمد رسول اللہ ﷺ کے مقام کو بلند کر دیا۔

﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ﴾ (الانشراح: ۴)

”اور ہم نے آپ کی خاطر آپ کا نام اونچا کر دیا ہے۔“

یعنی ہم نے آپ کا مقام اونچا کر دیا ہے، آپ کا ذکر خیر ہر جگہ عام کر دیا ہے، آپ کی

رسالت کے اعتراف کو قبول ایمان کی شرط قرار دے دی ہے۔ قتادہ کہتے ہیں: اللہ تعالیٰ نے

دنیا و آخرت دونوں جگہ آپ کا مقام اونچا کر دیا ہے چنانچہ اذان، اقامت اور خطبے میں ”أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُولُهُ.“ پکارا جاتا ہے اور جب تک دنیا باقی رہے گی، آپ کا نام اللہ کے نام کے ساتھ بلند کیا جاتا رہے گا۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَ ارْحَمْنِي، وَ اهْدِنِي، وَ عَافِنِي، وَ ارْزُقْنِي وَ اجْبُرْنِي، وَ ارْفَعْنِي))^①

”اے اللہ! میری بخشش فرما، مجھ پر رحم فرما، میری رہنمائی فرما، مجھے عافیت عطا فرما، مجھے رزق عطا فرما، میرے نقصان کو پورا کر اور مجھے بلندی عطا فرما۔“

۳۶۔ الرَّقِيبُ

معانی:.....نگہبان۔

جس کی نگہبانی سے کوئی چیز باہر نہ ہو۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۸۶)

معارف:.....قرآن مجید میں یہ نام تین مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝﴾ (النساء: ۱)

”بے شک اللہ تمہارا نگہبان ہے۔“

سورة الاحزاب میں ارشاد فرمایا:

﴿وَ كَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۝﴾ (الاحزاب: ۵۲)

”اور اللہ ہر چیز پر نگہبان ہے۔“

سورة مائدہ میں عیسیٰ علیہ السلام کی زبان پر ارشاد فرمایا:

① صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۲۶۹۶۔ سنن ابو داؤد، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۸۰۔

سنن ترمذی، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۲۸۴۔ سنن ابن ماجہ کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۸۹۸۔ صحیح الکلم

الطیب، رقم: ۸۲۔

﴿فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ﴾ (المائدة: ۱۱۷)

”پس جب تو نے مجھے اٹھالیا تو اس کے بعد تو ہی ان کے اعمال سے باخبر رہا ہے۔“

ان آیات کریمہ کی روشنی میں پتا چلا کہ ”الرقیب“ کے معنی میں حفظ کے ساتھ ساتھ علم کا معنی میں پایا جاتا ہے۔

۳۷۔ الرُّؤْفُ

معانی:..... بہت شفقت کرنے والا و مہربان۔

رحیم سے زیادہ مبالغے والا ہے یعنی انتہائی مہربانی اور رحمت والا۔ (الزجاج)
اس کی بڑی مہربانی یہ ہے کہ طاقت سے زیادہ کی ہر عبادت کا وزن نہیں رکھتا۔ بلکہ بیمار اور مسافروں سے نرمی کرتا ہے۔ (البیهقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۵)
معارف:..... یہ اسم مبارک قرآن مجید میں دس (۱۰) مقام پر آیا ہے، ایک جگہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ عِبَادَهُ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرُؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾ (البقرہ: ۱۴۳)

”اور اللہ ایسا نہیں کہ تمہارا سابق ایمان (عمل) ضائع کر دے، بے شک اللہ لوگوں کے لیے بہت ہی شفقت اور رحمت والا ہے۔“
دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَؤُوفٌ بِالْعِبَادِ﴾ (البقرہ: ۲۰۷)

”اور بعض لوگ ایسے ہوتے ہیں جو اللہ کی رضا کی خاطر اپنی جان بیچ دیتے ہیں، اور اللہ اپنے بندوں پر بڑا مہربان ہے۔“
اس اسم پاک کے ساتھ تخلق کی وجہ سے اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کو ”رؤوف

رحیم“ کا لقب عطا فرمایا:

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ

بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾ (التوبة: ۱۲۸)

”(مسلمانو!) تمہارے لیے تم ہی میں سے ایک رسول آئے ہیں جن پر ہر وہ بات شاق گزرتی ہے جس سے تمہیں تکلیف ہوتی ہے، تمہاری ہدایت کے بڑے خواہشمند ہیں، مومنوں کے لیے نہایت شفیق و مہربان ہیں۔“

اسم ”رؤوف“ دو مقامات پر ”رؤوف بالعباد“ انفرادی حالت میں اور آٹھ

مقامات پر ”رؤوف رحیم“ مرکب حالت میں بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا

لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾ (الحشر: ۱۰)

”اے ہمارے پروردگار! ہمیں بھی بخش دے اور ہمارے اُن بھائیوں کو بھی جو (تیرے ساتھ) ایمان لانے میں ہم سے سبقت لے جا چکے ہیں۔ اور ہمارے دلوں میں مسلمانوں کی طرف سے میل (کینہ، حسد) مت آنے دے۔ اے ہمارے رب! بلاشبہ تو نہایت شفقت والا اور مہربان ہے۔“



حرف السین

۳۸۔ اَلْسَلَامُ

معانی:..... سلامتی والا۔

جس کی ذات عیوب سے اور کئی صفات نقائص سے اور اپنے افعال میں مطلقاً برائی سے پاک ہو۔ (الغزالی)

نیز سلامتی دینے والا کہ مخلوق اس کے ظلم سے محفوظ ہے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۷۴)

معارف:..... یہ نام قرآن مجید میں ایک جگہ وارد ہے اور وہ یہ ہے:

﴿هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَلَمْ يَكُنْ الْقُدُّوسَ السَّلَامَ﴾

(الحشر: ۲۳)

”وہ اللہ ہے جس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، وہ شہنشاہ ہے، ہر عیب سے پاک ہے، سلامتی دینے والا ہے۔“

اس پاک کے ساتھ تخلق کرنے والے کے لیے از حد ضروری ہے کہ وہ ”سلام“ کو عام کرے۔ سامنے آنے والے کو ”السلام علیکم“ کا تحفہ پیش کرے۔

((عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، فَرَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ ثُمَّ جَلَسَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَشْرٌ- ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ: عَشْرُونَ- ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ:

ثَلَاثُونَ ۱

”سیدنا عمران بن حصین رضی اللہ عنہ سے روایت ہے ایک شخص نبی ﷺ کی خدمت میں آیا اور کہا: ”السلام علیکم“ آپ ﷺ نے اس کے سلام کا جواب دیا اور وہ بیٹھ گیا۔ تو نبی ﷺ نے فرمایا: دس۔ پھر دوسرا آدمی آیا اور اس نے کہا: ”السلام علیکم ورحمۃ اللہ“ آپ ﷺ نے جواب دیا اور وہ بیٹھ گیا تو آپ ﷺ نے فرمایا: بیس۔ پھر ایک اور آیا تو اس نے کہا ”السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ“ آپ ﷺ نے اس کا جواب دیا اور وہ بیٹھ گیا تو آپ ﷺ نے فرمایا: تیس۔“

ایک اور حدیث میں ہے کہ پھر ایک اور شخص آیا اور اس نے کہا: ”السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ ومغفرۃ“ تو آپ ﷺ نے فرمایا: چالیس، اور پھر فرمایا، اس طرح انسان ایک دوسرے پر فضیلت لے جاتے ہیں۔ ۲

غور فرمائیں کہ جس قدر بہتر انداز میں سلام کیا جائے گا اور اس سے بھی بہتر انداز سے اس کا جواب دیا جائے گا، اسی قدر ہی زیادہ سے زیادہ ثواب کا باعث ہوگا۔ اسی وجہ سے اللہ تعالیٰ نے مومنوں کو ترغیب دی ہے کہ بہتر سے بہتر انداز میں سلام کا جواب دیا کرو۔ ارشاد ربانی ہے۔

وَإِذَا حُيِّتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿۸۶﴾ (النساء: ۸۶)

”اور جب تمہیں سلام کہا جائے تو تم اس سے اچھا جواب دو، یا انہی الفاظ کو لوٹا دو، بلاشبہ اللہ تعالیٰ ہر چیز کا حساب لینے والا ہے۔“

کیونکہ سلام کا بہتر جواب اجر و ثواب، پیار و محبت اور جنت میں لے جانے کا باعث

۱ سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب کیف السلام؟ رقم: ۵۱۹۵، البانی رحمۃ اللہ علیہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

۲ سنن ابو داؤد، کتاب الأدب، رقم: ۵۱۹۶۔

ہے۔ چنانچہ:

((عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: لَا تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَوْ لَا أَدْلَكُمْ عَلَى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ.))^①

”سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: تم جنت میں داخل نہیں ہو سکو گے جب تک کہ ایمان نہ لاؤ۔ اور تم ایمان نہیں لا سکتے جب تک کہ آپس میں محبت نہ کرو۔ کیا میں تم کو ایسی بات نہ بتا دوں کہ جب تم اس پر عمل کرو تو تمہارے درمیان محبت پیدا ہو؟ آپس میں سلام کو عام کرو۔“

اس حدیث کے معنی و مفہوم پر بار بار غور فرمائیں کہ سلام کرنے کے کتنے فوائد ہیں؟ اور فضیلت کیا ہے؟ سلام کرنے کے فوائد میں سے ایک فائدہ یہ ہے کہ آپس میں ایک دوسرے سے محبت ہوگی۔ محبت ایمان کی دلیل ہے۔ اور ایمان جنت میں لے جائے گا۔ اصل جنت میں لے جانے کی بنیادی وجہ سلام کثرت سے کرنا ہے۔ اس فضیلت میں بھی وہ شخص انتہائی آگے ہے کہ جو سلام کرنے میں پہل کرتا ہے نہ کہ دوسرے کا انتظار کرتا ہے کہ وہ سلام کرے پھر میں سلام کا جواب دوں گا۔ بلکہ فی الفور سلام کرتا ہے۔ ایسا شخص عظیم ہے۔

((عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِاللَّهِ تَعَالَى مَنْ بَدَاهُمْ بِالسَّلَامِ.))^②

”سیدنا ابوامامہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: اللہ تعالیٰ کے نزدیک سب سے بہتر وہ شخص ہے جو سلام میں سبقت کرے۔“

جب یہ لوگ جنت میں چلے جائیں گے تو آپس میں سلام ہی کے تحفے بھیجا کریں گے۔

﴿دَعَوْهُمْ فِيهَا سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ﴾ (یونس: ۱۰)

① صحیح مسلم کتاب الایمان، رقم: ۵۴.

② سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فضل من بدء السلام، رقم: ۵۱۹۷، البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

”وہاں ان کی دعا ”سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ“ ہوگی، اور ان کا سلام و تحیہ سلام علیکم ہوگا۔“

رب تعالیٰ بھی ان پر سلام بھیجے گا، کیونکہ وہ سلام ہے۔

﴿سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ﴾ (یس : ۵۸)

”اور انہیں ان کے بے حد مہربان رب کی طرف سے سلام پہنچایا جائے گا۔“

ام المؤمنین خدیجہ الکبریٰ رضی اللہ عنہا کے بارے آیا ہے کہ جبریل نے ان کو رسول اللہ ﷺ کے واسطے سے اللہ تعالیٰ کا سلام اور اپنا سلام پہنچایا تو انہوں نے جواباً فرمایا:

((إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ وَمِنْهُ السَّلَامُ.)) ❶

”یعنی اللہ تو خود سلامتی والا ہے اور ہم کو سلامتی اسی سے ملتی ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ.)) ❷

”اے اللہ! تو سلام ہے اور تجھی سے سلامتی ملتی ہے۔ اے بزرگی اور عزت والے! تو بابرکت ذات ہے۔“

۳۹۔ السَّبِيْعُ

معانی:..... سننے والا۔

اس کی سماعت سے کوئی چیز بھی دور نہیں۔ چیونٹی کی آواز ہو یا کسی اور چیز کی اللہ کی حمد و تعریف کرے یا کوئی پکارنے والا پکارے۔ الغرض اس کا سننا بے مثل ہے۔ (الغزالی) اور سمع بمعنی اجابت (قبول کرنے) کے بھی آئے ہیں۔ (الزجاج بحوالہ تشریح

❶ صحیح بخاری، کتاب التَّشْهَد، رقم: ۸۳۱۔

❷ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۳۴۔ سنن ابی داؤد، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۱۵۱۳۔ سنن

ترمذی، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۳۰۰۔ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۳۸۔

(الاسماء الحسنیٰ، ص: ۸۲)

معارف: اللہ تعالیٰ کا یہ نام (۴۵) مرتبہ واقع ہوا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ (الشوری: ۱۱)

”کوئی چیز اس کے مانند نہیں، اور وہ خوب سننے والا، دیکھنے والا ہے۔“

جد الانبیاء جناب ابراہیم علیہ السلام نے اللہ تعالیٰ سے ولد صالح کی دعا کو تو اللہ تعالیٰ نے انہیں دو بیٹوں سے نوازا، چنانچہ اللہ کا شکر ادا کرتے ہوئے فرماتے ہیں۔

﴿أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ

الدُّعَاءِ﴾ (ابراہیم: ۳۹)

”ساری تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جس نے بڑھاپے میں مجھے اسماعیل

واسحاق عطا کیا ہے، بے شک میرا رب دعاؤں کو قبول کرنے والا ہے۔“

﴿قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ

تَحَاوَرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ﴾ (المجادلة: ۱)

”اللہ نے اس عورت کی بات سن لی جو آپ سے اپنے شوہر کے بارے میں جھگڑ

رہی تھی، اور اللہ سے اپنے حال زار کا شکوہ کر رہی تھی، اور اللہ آپ دونوں کی

بات چیت سن رہا تھا، بے شک اللہ خوب سننے والا، بڑا دیکھنے والا ہے۔“

امام احمد اور امام بخاری رحمہما نے سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت کی ہے، انہوں نے کہا

کہ ساری تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جو تمام آوازوں کو سنتا ہے۔ جھگڑنے والی عورت

(خولہ) نبی کریم ﷺ کے پاس آئی، اور بات کرنے لگی، اور میں گھر کے ایک گوشے میں

تھی، لیکن اس کی بات نہیں سن پا رہی تھی، تو اللہ عزوجل نے ﴿قَدْ سَمِعَ اللَّهُ﴾ الآية نازل

فرمائی۔ ❶

سیدنا موسیٰ و ہارون علیہما السلام کو اطمینان دلاتے ہوئے ارشاد فرمایا:

❶ مسند احمد: ۴۶/۶، صحیح بخاری، کتاب التوحید، قبل رقم: ۷۳۸۶ مختصراً.



﴿لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْبَغُ وَأَرَىٰ﴾ ﴿طہ: ۴۶﴾

”تم دونوں ڈرو نہیں، بے شک میں تم دونوں کے ساتھ ہوں، سب کچھ سنتا اور دیکھتا ہوں۔“

سمیع وہی ہے جس نے تمہیں سننے کے لیے کان عطا فرمائے۔

﴿وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ﴾ ﴿١٠﴾

(المؤمنون: ۷۸)

”اور وہی ہے جس نے تمہارے لیے کان اور آنکھیں اور دل بنائے ہیں، تم لوگ بہت ہی کم شکر ادا کرتے ہو۔“

اسم ”سمیع“ پچیس مقامات پر انفرادی طور پر بیان ہوا ہے۔ چودہ مقامات پر اسم ”علیم“ کے ساتھ، پانچ مقامات پر اسم ”بصیر“ کے ساتھ اور ایک مقام پر اسم ”قرب“ کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

﴿رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ﴾ ﴿٣٨﴾

(آل عمران: ۳۸)

”اے میرے رب! مجھے تو اپنے پاس سے اچھی اولاد عطا فرما، بے شک تو دعا کو سننے والا ہے۔“



حرف الشین

۴۰۔ اَلشَّاكِرُ

معانی: قدر دان۔

یعنی تھوڑے کام پر بڑا ثواب دیتا ہے اور جزا کی صحیح مقدار کو جانتا ہے، نہ تو کسی کے ثواب کو کم کرے، نہ کسی پر ذرہ برابر ظلم کرے۔ ہاں نیکوں کا ثواب بڑھا کر عطا فرماتا ہے اور اپنے پاس سے اجر عظیم عنایت فرماتا ہے۔ (ابن کثیر: ۲/۲۷۰)

معارف: قرآن مجید میں یہ اسم مبارک دو جگہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ (البقرة: ۱۵۸)

”اور جو شخص (اپنی خوشی سے) کوئی کار خیر کرے گا تو اللہ اس کا اچھا بدلہ دینے والا اور بڑا جاننے والا ہے۔“

اور سورۃ النساء میں ارشاد فرمایا:

﴿مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَدَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا﴾ (النساء: ۱۴۷)

”اگر تم شکر ادا کرو گے اور ایمان لاؤ گے تو اللہ تمہیں عذاب دے کر کیا کرے گا، اور اللہ بڑا قدر کرنے والا اور جاننے والا ہے۔“

اسم ”شاکر“ ہر دو مقام پر اسم ”علیم“ کے ساتھ وارد ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے وسیلہ سے دعا:

((اَللّٰهُمَّ! اَعِنِّيْ عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.)) ❶

❶ سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، رقم: ۱۰۲۲۔ عمل الیوم والليلة، رقم: ۱۱۹۔ صحیح ابن حبان (موارد رقم: ۲۳۴۰)۔ صحیح ابن خزیمہ: رقم: ۷۰۱۔ ابن حبان اور ابن خزیمہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

”اے میرے پروردگار! اپنے ذکر، شکر اور خوبصورت عبادت کرنے میں میری مدد فرما۔“

۴۱۔ الشُّكُورُ

معانی:..... بہت قدردان۔

یعنی جو قلیل عبادت ہر زیادہ درجات عطا فرمائے اور دنیا کی قلیل عبادت پر آخرت کی لامحدود نعمتیں عطا کرے۔ (الغزالی)

کیونکہ اللہ تعالیٰ عمل کے بدلے اجر دیتے ہیں اس لیے اسے بھی شکر کیا گیا ہے۔

(الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۴)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام کتاب اللہ میں (۴) دفعہ آیا ہے، ایک مقام یہ ہے:

﴿وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَا يَسْكُنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝﴾ (فاطر: ۳۴-۳۵)

اور وہ لوگ کہیں گے کہ ساری تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جس نے ہم سے غم دور کر دیا، بے شک ہمارا رب بڑا معاف کرنے والا (طاعت و بندگی کا) اچھا بدلہ دینے والا ہے۔ جس نے ہمیں اپنے فضل سے اس جنت میں جگہ دی ہے جو ہمیشہ رہنے کی جگہ ہے، یہاں ہمیں نہ کوئی تکلیف پہنچے گی، اور نہ کوئی تھکاوٹ ہوگی۔“

قیامت کے دن اللہ تعالیٰ ان سب پر اپنا فضل و کرم فرمائے گا، اور سب کو جنت میں داخل کر دے گا، جس میں انہیں پہننے کے لیے سونے اور موتی کے زیورات اور ریشمی لباس ملیں گے، اور تب سب مل کر اپنے رب کی ان کرم فرمائیوں پر اس کا شکر ادا کریں گے۔ جس نے ان کے دل سے ہمیشہ کے لیے حزن و ملال دور کر دیا، اور کہیں گے کہ ہمارا رب بڑا معاف کرنے والا اور نیک اعمال کا بہت ہی اچھا بدلہ دینے والا ہے، اس لیے تو اس نے

گناہ گاروں کو معاف کر دیا، اور تھوڑی نیکی کرنے والوں کی نیکیوں کو قبول کر لیا اور سب کو جنت میں داخل کر دیا۔

نیز کہیں گے: ساری تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جس نے محض اپنے فضل و کرم سے ہمیں ہمیشہ باقی رہنے والی جنت میں داخل کر دیا، جہاں ہمیں کبھی بھی تھکن اور پریشانی لاحق نہیں ہوگی۔

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ۚ لِيُؤْفِقَهُمْ أَجُورَهُمْ وَ يَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝﴾ (فاطر: ۲۹ - ۳۰)

”بے شک جو لوگ اللہ کی کتاب کی تلاوت کرتے ہیں، اور نماز قائم کرتے ہیں، اور ہم نے انہیں جو روزی دی ہے اس میں سے چھپا کر اور دکھا کر خرچ کرتے ہیں، وہ بے گھاٹے والی تجارت کی امید رکھتے ہیں، تاکہ وہ انہیں ان کا پورا پورا بدلہ دے، اور وہ اپنے فضل سے انہیں زیادہ بھی دے گا، بے شک وہ بڑا معاف کرنے والا (طاعت و بندگی کا) اچھا بدلہ دینے والا ہے۔“

جو بندہ مومن بھی کوئی عمل صالح کرتا ہے، تو وہ اس کا بدلہ اسے کئی گنا بڑھا کر دیتا ہے، اس لیے کہ وہ توبہ کرنے والوں کے گناہوں کو معاف کر دیتا ہے، اور نیکو کاروں کو ان کے اعمال صالحہ کا بدلہ کئی گنا بڑھا کر دیتا ہے، چنانچہ سورۃ الشوریٰ میں ارشاد فرمایا:

﴿وَمَن يَفْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝﴾

(الشوریٰ: ۲۳)

”اور جو شخص کوئی نیکی کرتا ہے، ہم اس میں اپنی طرف سے ایک نیکی کا اضافہ کر دیتے ہیں، بے شک اللہ بڑا معاف کرنے والا، نیک کاموں کا بڑا قدر دارن ہے۔“

وہ ”شکور“ ہے، اپنے بندے کے تھوڑے عمل کے عوض اجر کثیر دیتا ہے، ارشاد فرمایا:

﴿إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ

حَلِيمٌ﴾ (التغابن: ۱۷)

”اگر تم اللہ کو اچھا قرض دو گے تو وہ اسے تمہارے لیے کئی گنا بڑھا دے گا اور تمہیں بخش دے گا، اور اللہ بڑا قدر داں، بڑا بردبار ہے۔“

اس اسم پاک سے تخلق پیدا کرنے والے کے لیے از حد ضروری ہے کہ وہ خدمت گزار کا شکر گزار ہو۔ اللہ تعالیٰ نے سیدنا نوح علیہ السلام کو شکر گزار بندہ بتایا اس لیے کہ انہوں نے اللہ کی نعمتوں کی قدر کی اور اس کا شکر گزار بندہ بن کر دنیا میں رہے۔

﴿إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا﴾ (بنی اسرائیل: ۳)

”وہ بے شک ایک شکر گزار بندے تھے۔“

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((مَنْ لَا يَشْكُرُ النَّاسَ لَا يَشْكُرُ اللَّهَ .)) ❶

”جو شخص لوگوں کا شکریہ ادا نہیں کرتا وہ اللہ کا بھی شکر گزار بندہ نہیں بنتا۔“

علامہ ابن قیم رحمہ اللہ فرماتے ہیں: میں نے شیخ الاسلام ابن تیمیہ رحمہ اللہ سے سنا، فرماتے ہیں: جب تم کسی عمل سے دل میں حلاوت پاؤ اور طبیعت میں کشادگی آئے تو فکر نہ کرو کیونکہ اللہ تعالیٰ قدر داں ہیں وہ عامل کو اس کے عمل کی دنیا میں جزا دیتے ہیں وہ جزا یہی شیرینی ہے جو بندہ اپنے دل میں نیک عمل کر کے پاتا ہے اور قوت اور آنکھوں کی ٹھنڈک پاتا ہے۔ جب یہ انشراح صدر نہ پائے تو اس کے عمل میں غلط چیز دخل اندازی کر گئی ہے اسے اصلاح کی فکر کرنی چاہیے۔ (مدارج السالکین: ۶۷/۳)

اسم ”شکور“ تین مقامات پر اسم ”غفور“ کے ساتھ وارد ہوا ہے، اور ایک مقام پر اسم ”حلیم“ کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

❶ سنن ترمذی، کتاب البر والصلۃ، رقم: ۱۹۵۴۔ المشکاة، رقم: ۳۰۲۵۔ سلسلۃ الصحیحۃ،

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اللَّهُمَّ! اَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.))^①

”اے میرے پروردگار! اپنے ذکر، شکر اور خوبصورت عبادت کرنے میں میری مدد فرما۔“

۴۲۔ اَلشَّهِيدُ

معانی:..... گواہ۔

جو ہر چیز پر گواہ اور ان پر مطلع ہو، جس کی مخلوق کو وہاں بغیر حاضری کے اطلاع نہ ہو سکے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۸)

معارف:..... یہ نام (۱۸) مرتبہ واقع ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾^②

(الحج: ۱۷)

”بے شک اللہ قیامت کے دن ان سب کے درمیان فیصلہ کرے گا، بے شک اللہ ہر چیز کا گواہ ہے۔“

﴿قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنَّ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾^③ (سبا: ۴۷)

”اے میرے نبی آپ کہہ دیجئے کہ میں نے اگر تم سے کوئی معاوضہ مانگا ہے تو وہ تم کو ہی دیتا ہوں، میرا اجر تو مجھے صرف اللہ سے چاہیے، اور وہ ہر چیز سے باخبر ہے۔“

اس اسم پاک سے تخلق کرنے والوں کے لیے ضروری ہے کہ وہ توحید کی شہادت کو اپنی زبانوں پر جاری رکھیں۔

① سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، رقم: ۱۰۲۲۔ عمل الیوم واللیلۃ، رقم: ۱۱۹۔ صحیح ابن حبان (موارد رقم: ۲۳۴۰)۔ صحیح ابن خزیمہ: رقم: ۷۰۱۔ ابن حبان اور ابن خزیمہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

رسول ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جب تم بستر پر لیٹو تو یہ دعا پڑھا کرو:

((اَللّٰهُمَّ! عَالَمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكُهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَهٖ، وَأَنْ اقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِيْ سُوءًا أَوْ أَجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ)) ❶

”اے اللہ! غیب اور ظاہر کو جاننے والے، آسمان و زمین کو پیدا کرنے والے، ہر چیز کے پروردگار اور مالک۔ میں گواہی دیتا ہوں کہ تیرے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں، میں اپنے نفس کے شر اور شیطان کے شر اور شرک سے تیری پناہ چاہتا ہوں، اور (ہر) اس چیز سے بھی کہ میں خود سے کسی برائی کا ارتکاب کر بیٹھوں یا کسی مسلمان سے کوئی برائی کروں۔“



❶ سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم: ۵۰۶۷۔ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۳۹۲۔

مستدرک حاکم: ۵۱۳/۳، کتاب الدعاء والتکبیر، رقم: ۱۹۳۵۔ صحیح ابن حبان، کتاب الاذکار،

رقم: ۲۳۴۹۔ سلسلہ صحیحہ، رقم: ۷۷۰۳۔

حرف الصاد

۴۲۔ الصَّيْدُ

معانی:..... بے نیاز، داتا۔

یہ کہ تمام حاجتوں میں اس کی محتاجی ہو اور تمام ضروریات میں اس کی طرف رجوع کیا جائے۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۹۱)
عرب لوگ سردار اور شریف کو صمد کہتے ہیں۔ ابو وائل شقیق بن سلمہ نے کہا، حد درجے سب سے بڑا سردار جو ہوا سے ”صمد“ کہتے ہیں۔ (صحیح بخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ: ”اللہ الصمد“)

معارف:..... یہ اسم مبارک صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿اللَّهُ الصَّمَدُ﴾ (الاخلاص: ۲)

”اللہ بے نیاز ہے۔“

سب کی حاجتیں وہی پوری کرنے والا ہے، اس کے در کے سوا کوئی در نہیں، اس کے محتاج ہیں، وہ کسی کا محتاج نہیں۔

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے بیان کیا کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: (اللہ پاک نے فرمایا ہے کہ) ابن آدم نے مجھے جھٹلایا حالانکہ اس کے لیے یہ مناسب نہ تھا۔ اس نے مجھے گالی دی حالانکہ یہ اس کا حق نہیں تھا۔ مجھے جھٹلانا یہ ہے کہ کہتا ہے کہ میں اسے دوبارہ زندہ نہیں کر سکتا جیسا کہ میں نے اسے پہلی دفعہ پیدا کیا تھا۔ اس کا گالی دینا یہ ہے کہ کہتا ہے کہ اللہ نے بیٹا بنا لیا ہے حالانکہ میں ”صمد“ بے نیاز ہوں، میرے ہاں نہ کوئی اولاد ہے اور نہ میں کسی کی اولاد اور نہ کوئی میرے برابر کا ہے۔“^①

① صحیح بخاری، کتاب التفسیر، رقم: ۴۹۷۰۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱..... ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ یَا اللّٰهُ! بِاَنَّكَ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُولَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَهُ کُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّكَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ.))

اے اللہ! بلاشبہ میں تجھ سے سوال کرتا ہوں، اے اللہ کہ تو واحد، اکیلا اور بے نیاز ذات ہے، تو کسی کا باپ نہیں اور نہ تو کسی کا جنا ہوا ہے، اور تو وہ ہستی ہے کہ اس کا برابری کرنے والا کوئی نہیں ہے۔ تو میرے سب کے سب گناہ معاف کر دے، یقیناً تو ہی بخشنے والا، بے حد مہربان ہے۔“

فضیلت: نبی کریم ﷺ نے ایک شخص کو تشہد میں یہ دعا مانگتے سنا تو تین مرتبہ

ارشاد فرمایا: ”قَدْ غُفِرَ لَهُ“ ”اس کے گناہ بخش دیے گئے۔“ ❶

۲..... ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِنِّیْ اَشْهَدُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُولَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَهُ کُفُوًا اَحَدٌ.))

”اے اللہ! بے شک میں تجھ سے سوال کرتا ہوں، بے شک میں گواہی دیتا ہوں کہ اے اللہ! تیرے علاوہ کوئی معبود حقیقی نہیں، تو اکیلا، بے نیاز وہ ذات ہے کہ جس نے نہ کسی کو جنا ہے اور نہ تجھے کسی نے جنا ہے، اور اس کا برابری کرنے والا کوئی نہیں۔“

فضیلت: نبی کریم ﷺ نے ایک شخص کو یہ دعا مانگتے سنا تو فرمایا: تو نے اللہ

عز وجل کے اسم اعظم کے ساتھ دعا مانگی ہے، جب بھی کوئی اس کے ساتھ سوال کرے وہ عطا کرتا ہے، اور جب بھی کوئی اس اسم کے ساتھ دعا کرتا ہے اُس کی دعا قبول کی جاتی ہے۔ ❷

❶ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۰۲۔ سنن أبوداؤد، رقم: ۹۸۵۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

❷ سنن أبوداؤد، باب الدعاء، رقم: ۱۴۹۳۔ علامہ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

حرف الظاء

۴۴۔ الظَّاهِرُ

معانی:..... ظاہر و آشکارہ۔

اہل فہم و اہل علم کے آگے دلائل و براہین سے، وحدانیت کی نشانیوں کے ساتھ ظہور بمعنی علم کے بھی ہیں۔ جیسے کہا جاتا ہے ”ظہر فلان فوق السطح إذا علا“ ”فلاں ظاہر ہوا یعنی بلند و بالا ہوا۔“ اس معنی میں مذکورہ دعا کا بقیہ حصہ بھی تقویت فراہم کرتا ہے۔ ”أَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ“ ”تو سب سے بلند ہے تجھ سے بلند کوئی چیز نہیں اور تو سب سے پوشیدہ ہے، تجھ سے ورے بھی کوئی چیز نہیں۔“ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۲-۹۳)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام بھی صرف ایک جگہ وارد ہوا ہے، اور وہ مقام یہ ہے:

﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝﴾

(الحديد: ۳)

”وہی اول ہے اور آخر ہے، اور ظاہر ہے، اور باطن ہے، اور وہ ہر چیز سے باخبر ہے۔“

اللہ تعالیٰ ظاہر ہے اور اس کی طرف سے ظاہر نعمتیں حاصل ہوتی ہیں۔

﴿وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ﴾ (لقمان: ۲۰)

”اور اس نے اپنی ظاہری اور باطنی نعمتیں تم پر تمام کر دی ہیں۔“

اس اسم پاک سے تخلیق کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ اس ظاہر باری تعالیٰ کی

خشیت سے گناہ کی ظاہری باطنی کیفیتوں سے علیحدہ ہو جائے۔

﴿وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ﴾ (الانعام: ۱۲۰)

”اور تم کھلے اور چھپے سب گناہوں سے باز آ جاؤ۔“
 واضح ہو کہ اسماء پاک میں ”الظاہر والباطن“ اکٹھے مستعمل ہوتے ہیں۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱۔ سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا نے رسول اللہ ﷺ سے ایک خادمہ کی ضرورت کا ذکر کیا، تو آپ ﷺ نے انہیں نصیحت کی کہ وہ مندرجہ ذیل دعا پڑھا کریں:

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ ، مُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ ، أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ .)) ❶

”یا اللہ! ساتوں آسمانوں کے رب اور عرش عظیم کے رب ہمارے پروردگار! اور سب چیزوں کے پروردگار، تورات اور انجیل اور قرآن اُتارنے والے، دانہ اور گٹھلی کو زمین سے اُگانے والے، میں ہر ایک شے (جو تیرے قبضہ میں ہے) کے شر سے تیری پناہ چاہتی ہوں۔ تو اوّل ہے تجھ سے پہلے کوئی شے نہیں تھی تو آخر ہے تیرے بعد کوئی شے نہیں۔ تو ظاہر ہے تجھ سے اوپر کوئی شے نہیں تو باطن ہے تجھ سے پرے کوئی شے نہیں۔ میرا قرض اُتار دے اور مجھے تنگ دستی سے نجات دے۔“

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۶۸۸۹۔

۲..... سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا: جب تم اپنے جی میں وسوسہ محسوس کرو تو یہ کلمات پڑھا کرو:
﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝﴾

(الحديد: ۳)

”وہی پہلے ہے اور وہی پیچھے، وہی ظاہر ہے اور وہی مخفی، اور وہ ہر چیز کو خوب جاننے والا ہے۔“^①



① سنن ابی داؤد، کتاب الأدب، رقم: ۵۱۱۰۔ کتاب الاذکار للنووی، رقم: ۳۹۔ علامہ البانی نے اسے ”حسن الاسناد“ کہا ہے۔

حرف العین

۴۵۔ اَلْعَالِمُ

معانی: مالک علم۔

معارف: رب تعالیٰ کا یہ نام قرآن مجید میں (۱۳) مرتبہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝﴾ (التغابن: ۱۸)

”غائب و حاضر کا علم رکھنے والا، زبردست، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

دوسری جگہ ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ عَلِمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝﴾ (الفاطر: ۳۸)

”بے شک اللہ آسمانوں اور زمین کی ہر پوشیدہ چیز سے واقف ہے۔“

پس معلوم ہوا کہ آسمانوں اور زمین میں جو کچھ پوشیدہ ہے، اللہ کو ان سب کی خبر ہے۔

الہ تعالیٰ ہی عالم ہے۔

اسم عالم گیارہ مقامات پر الغیب و الشهادة کی طرف، ایک مقام پر صرف الغیب کی

طرف اور ایک مقام پر غیب السموات و الأرض کی طرف مضاف ہو کر استعمال ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اَللّٰهُمَّ! رَبَّ جِبْرَائِيْلَ وَ مِيكَائِيْلَ وَ إِسْرَافِيْلَ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ

وَ الْأَرْضِ، عَالِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ

فِيْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ، اهْدِنِيْ لِمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ

بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ))^①

① صحیح مسلم، کتاب صلوة المسافرين، رقم: ۱۸۱۱۔

”اے اللہ! جبرائیل، میکائیل اور اسرافیل کے رب! آسمانوں اور زمین کو پیدا کرنے والے! غائب اور ظاہر کو جاننے والے! اپنے بندوں کے درمیان تو ہی اس چیز کا فیصلہ کرے گا جس میں وہ جھگڑتے تھے۔ (اے اللہ!) حق کی جن باتوں میں اختلاف واقع ہوا ہے اپنے اذن سے مجھے حق کی ہدایت دے دے، یقیناً تو جسے چاہتا ہے سیدھے راستے کی طرف ہدایت دیتا ہے۔“

۴۶۔ الْعَزِيزُ

معانی:..... غالب و زبردست۔

وہ ہر چیز پر غالب ہے۔ حتیٰ کہ ہر عزت اور غلبہ والا اس کی عزت کے سامنے ذلیل ہے۔ کیونکہ اصل عزت بمعنی غلبہ اور سختی کے ہے۔ فرمایا: ﴿فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ﴾ (یس: ۱۴) ”پھر ہم نے تیسرے سے غلبہ دیا۔“ ﴿وَعَزَّزْنِي فِي الْخُطَابِ﴾ (ص: ۲۳) ”اور گفتگو میں مجھ پر سختی کرتا ہے۔“ نیز کہا جاتا ہے ”عزنی فلان الامر“۔ ”یعنی فلاں مجھ پر اس کام میں غالب آگیا۔“ (الزجاج)

اللہ ایسا غالب ہے کہ اس تک پہنچنا یا برائی پہنچانا ناممکن ہو، اس کی طاقت اور رسائی ہمیشہ قائم ہے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۷۵-۷۶)

معارف:..... یہ اسم مبارک قرآن کریم میں (۹۲) مرتبہ آیا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿وَأَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (البقرہ: ۲۶۰)

”اور جان لو کہ اللہ غالب اور بڑی حکمت والا ہے۔“

سورۃ الصف میں ارشاد فرمایا:

﴿سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ (۱)

(الصف: ۱)

”آسمانوں اور زمین میں جتنی چیزیں ہیں، سب اللہ کی تسبیح بیان کرتی ہیں، اور وہ زبردست، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

یعنی وہ ”العزیز“ بڑا ہی قوی ہے جو آسمانوں اور زمین کی ہر چیز پر غالب ہے۔ سورۃ المجادلۃ میں فرمایا:

﴿كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ﴾

(المجادلة: ۲۱)

”اللہ نے یہ بات لکھ دی ہے کہ یقیناً میں اور میرے پیغمبران ہی غالب رہیں گے، بے شک اللہ بڑی قوت والا، زبردست ہے۔“
عبداللہ بن ابی رئیس المنافقین نے ایک موقع پر کہا تھا: ”اللہ کی قسم! مدینہ میں جو عزت والا ہے، وہ ذلیل کو نکال دے گا“ اپنے آپ کو ”اعز“ بتلایا۔
﴿يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ﴾

(المنافقون: ۸)

”کہتے ہیں کہ اگر ہم مدینہ واپس پہنچ گئے تو زیادہ عزت والا وہاں سے زیادہ ذلت والے کو نکال دے گا۔“
اور اس منافق کے ذہن میں یہ بات نہیں آئی کہ فی الحقیقت عزت و غلبہ اور سر بلندی تو اللہ، اس کے رسول اور اہل ایمان کے لیے ہے۔

﴿وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ﴾ (المنافقون: ۸)

”حالانکہ عزت تو صرف اللہ کے لیے ہے، اور اس کے رسول کے لیے اور مومنوں کے لیے ہے۔“

اسم ”عزیز“ اکثر مقامات پر اسم ”حکیم“ کے ساتھ بیان ہوا ہے، بعض مقامات پر اسم ”رحیم“ کے ساتھ، بعض مقامات پر اسم ”غفور“ کے ساتھ، بعض مقامات پر اسم ”غفار“ کے ساتھ، ایک مقام پر اسم ”مقتدر“ کے ساتھ دو مقامات پر اسم ”قوی“ کے ساتھ، ایک جگہ ”وہاب“ کے ساتھ، بعض مقامات پر اسم ”الحلیم“ کے ساتھ اور دو دفعہ اسم ”الحمید“ کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

﴿اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعْزِزُ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾

(آل عمران : ۲۶)

”اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے، اور جس سے چاہتا ہے، بادشاہی چھین لیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے عزت دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے ذلیل بنا دیتا ہے، تمام بھلائیاں تیرے ہاتھ میں ہیں، بے شک تو ہر چیز پر قادر ہے۔“

پس منظر و پیش منظر: اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کو طریقہ دعا سکھلایا ہے، اور تسبیح و تحمید کی تعلیم دی ہے۔ اللہ تعالیٰ مالک کل، مالک مطلق اور مالک حقیقی ہے۔ اپنے ملک میں جیسے چاہتا ہے تصرف کرتا ہے، ایجاد کرتا ہے، ختم کرتا ہے، مارتا ہے، زندہ کرتا ہے، عذاب یا ثواب دیتا ہے، کوئی اس کا شریک نہیں اور نہ کوئی اُسے روک سکتا ہے، وہ جسے چاہتا ہے، بادشاہ بنا دیتا ہے، اس لیے کہ حقیقی بادشاہت اسی کے ساتھ خاص ہے، اور دوسروں کی بادشاہت مجازی اور عارضی ہے۔ اسی کے ہاتھ میں عزت و ذلت ہے، اور اسی کے ہاتھ میں تمام بھلائیاں ہیں۔

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ کہتے ہیں: آیت میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ اور اُمت مسلمہ پر احسان کر کے نبوت بنی اسرائیل سے نبی کریم ﷺ کی طرف منتقل کر دی، اور ان کے دین کو تمام ادیان پر غالب کر دیا، اور پوری دنیا میں پھیلادیا، اس لیے مسلمانوں کو اس نعمت عظمیٰ کا شکر ادا کرتے رہنا چاہیے۔

امام طبری اور ابن ابوحاتم رحمہ اللہ نے روایت بیان کی ہے کہ یقیناً نبی کریم ﷺ نے اپنے رب عزوجل شاکوۃ سے دعا کی کہ اے اللہ! فارس و روم کے لوگوں کو مسلمان کر دے تو اللہ عزوجل نے یہ آیت نازل فرمائی۔^①

① تفسیر طبری : ۳/۲۶۰ - فتح القدیر : ۱/۲۶۹، ۲۷۰۔

۴۷۔ الْعَظِيمُ

معانی:..... بڑی عظمت والا۔

شان، حکومت اور غلبہ میں۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۸۴)

معارف:..... یہ بابرکت نام قرآن مجید میں (۹) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر یوں ارشاد ہے:

﴿وَلَا يَعُودُكَ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ (البقرہ: ۲۵۵)

”اور ان کی حفاظت اس پر بھاری نہیں، وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

سورۃ الواقعہ میں نعمتوں کا ذکر کرنے کے بعد، اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کو اور ان کے واسطے سے عام مومنوں کو رب العالمین کی پاکی بیان کرنے کا حکم دیا، جس کی ذات عظیم ہے، اور جس کے احسان بے شمار ہیں۔

﴿فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ﴾ (الواقعہ: ۷۴)

”پس اے میرے نبی! آپ اپنے عظیم رب کی پاکی بیان کیجئے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱۔ ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ)) [کم از کم تین مرتبہ] ①

”میرا رب پاک ہے، اور عظمت والا ہے۔“

۲۔ ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ))

”میں اللہ تعالیٰ کی پاکیزگی بیان کرتا ہوں، جو بڑا ہے اور میں اللہ کی پاکیزگی

بیان کرتا ہوں اس کی حمد کے ساتھ۔“

فضیلت:..... نبی کریم ﷺ نے فرمایا: ”یہ کلمات اللہ تعالیٰ الرحمن کو بڑے پسند ہیں،

زبان پر ہلکے ہیں لیکن (روزِ قیامت) میزان میں بڑے بھاری ہوں گے۔“ ②

① سنن ترمذی، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۲۶۱، ۲۶۲۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

② صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم: ۷۵۶۳۔

۴۸۔ الْعَفْوُ

معافی:..... معاف کرنے والا، درگزر کرنے والا۔

گناہوں اور برائیوں کو مٹانے والا۔ یہ لفظ معنی کے لحاظ سے ”العفو“ سے زیادہ مبالغہ والا ہے۔ کیونکہ ”غفور“ میں ڈھانپنے کے معنی ہیں اور اس میں بالکل مٹانے کے۔ (الغزالی) کہا جاتا ہے: ”عفی عنہ ذنبہ ترک العقوبة علیہ“ یعنی اللہ تعالیٰ گناہوں کے باوجود عذاب نہ کرنے والا بھی ہے۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۴-۹۵)

معارف:..... یہ نام (۵) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَكَانَ اللَّهُ عَفْوَاً غَفُوراً ۝۱۱﴾ (النساء: ۹۹)

”اور اللہ بڑا معاف کرنے والا اور بڑا مغفرت کرنے والا ہے۔“

﴿إِنْ تَبْتَأْ وَآخِيراً أَوْ تُخَفُّوْهُ أَوْ تُعَفُّوْا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفْوَاً قَدِيراً ۝۱۲﴾

(النساء: ۱۴۹)

”تم چاہے کسی بھلائی کو ظاہر کرو، یا اسے چھپاؤ، یا کسی برائی کو معاف کر دو، تو

بے شک اللہ بڑا معاف کرنے والا اور بڑی قدرت والا ہے۔“

سورۃ الحج میں ارشاد فرمایا:

﴿ذٰلِكَ ۚ وَ مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بَغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوْٓءٌ غَفُوْرٌ ۝۶۰﴾ (الحج: ۶۰)

”مذکورہ بالا باتیں لائق اہمیت ہیں، اور جو شخص اتنی تکلیف پہنچائے جتنی اسے

پہنچائی گئی تھی، پھر دوبارہ اسی پر زیادتی کی جائے، تو اللہ اُس کی ضرور مدد کرے

گا، بے شک اللہ بڑا معاف کرنے والا، بڑا مغفرت کرنے والا ہے۔“

مذکورہ آیت کریمہ کا ظاہری مفہوم واضح ہے کہ جو شخص ظالم سے اس کے ظلم کے مطابق

انتقام لے لے، پھر ظالم دوبارہ اس پر ظلم کرے تو اللہ تعالیٰ اس مظلوم کی ضرور مدد کرے گا۔

آیت کریمہ کے آخر میں عفو و درگزر کرنے کی ترغیب دلائی گئی ہے کہ اللہ بڑا معاف کرنے والا بڑا مغفرت کرنے والا ہے اس لیے اس کے بندوں کو بھی ان صفات کے ساتھ متصف ہونا چاہیے۔

﴿وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۖ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ﴾ (النور: ۲۲)

”اور وہ معاف کر دیں اور درگزر کر دیں، کیا تم نہیں چاہتے کہ اللہ تمہیں معاف کر دے۔“

بخاری و مسلم، ترمذی، احمد اور طبری وغیرہم نے سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا سے ”واقعہ اُفک“ سے متعلق ایک طویل حدیث روایت کی ہے، جس میں آتا ہے کہ سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ، مسطح بن اثاثہ کی کفالت کرتے تھے، جو ان کے خالہ زاد بھائی تھے، جب انہوں نے ”واقعہ اُفک“ کے موقع پر افترا پردازوں کی ہاں میں ہاں ملائی اور اللہ کی طرف سے سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا کی برأت آگئی، تو سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ نے قسم کھالی کہ اب وہ مسطح کی کفالت نہیں کریں گے، اس وقت یہ (مذکورہ) آیت نازل ہوئی۔ سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ نے جب اسے سنا تو فرمایا: اللہ کی قسم! میں چاہتا ہوں کہ اللہ مجھے معاف کر دے، اور دوبارہ مسطح کی کفالت جاری کر دی۔^①

اسم ”عفو“ چار مقامات پر اسم ”غفور“ کے ساتھ اور ایک جگہ اسم ”قدیر“ کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں: میں نے عرض کیا: یا رسول اللہ! اگر مجھے پتہ چل جائے لیلة القدر کی کون سی رات ہے؟ تو میں کیا دعا کروں؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا تم کہو:

((اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي.))^②

① صحیح بخاری، کتاب التفسیر، رقم: ۴۷۵۷۔

② سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۱۳۔ مسند أحمد: ۶/۱۷۱۔ شیخ البانی نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

”اے اللہ! تو معاف کرنے والا ہے، معاف کرنے کو پسند کرتا ہے پس مجھے معاف فرما۔“

۴۹۔ اَلْعَلَامُ

معانی:..... سب کچھ جاننے والا۔

معارف:..... یہ نام مبارک (۴) مقام پر وارد ہوا ہے، اللہ تعالیٰ نے ایک مقام پر فرمایا:

﴿إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ﴾ (المائدة: ۱۰۹)

”بے شک تو ہی غیبی امور کا جاننے والا ہے۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ﴾

(التوبة: ۷۸)

”کیا انہیں معلوم نہیں کہ اللہ ان کے بھیدوں اور ان کی سرگوشی کو جانتا ہے اور بے

شک اللہ غیب کی باتوں کا بڑا جاننے والا ہے۔“

اسم علام تمام مقامات پر غیوب کی طرف مضاف ہو کر استعمال ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَ أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ، وَ تَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ! إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاصْرِفْهُ عَنِّي فَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَ اقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ)) ❶

❶ صحیح بخاری، کتاب التہجد، رقم: ۱۱۶۲، ۳۶۸۲۔ سنن ابی داؤد، کتاب الصلوۃ، رقم: ۱۵۳۸۔

”اے میرے اللہ! میں تجھ سے تیرے علم کی بدولت خیر و بھلائی کا طالب ہوں، اور تیری قدرت کی بدولت تجھ سے طاقت مانگتا ہوں، اور تیرے فضل عظیم کا طلبگار ہوں کہ قدرت تو ہی رکھتا ہے اور مجھ میں کوئی قدرت نہیں، اور (ہر قسم کا) علم تجھ کو ہی ہے، اور میں کچھ نہیں جانتا، اور تو تمام پوشیدہ باتوں سے باخبر ہے۔ اے میرے اللہ! اگر تو جانتا ہے کہ یہ کام میرے دین و دنیا اور انجام کار کے اعتبار سے بہتر ہے، یا میرے لیے وقتی طور پر یا انجام کے اعتبار سے یہ (خیر ہے) تو اسے میرے مقدر میں کر، اور اس کا حصول میرے لیے آسان کر، اور پھر اس میں مجھے برکت عطا کر، اور اگر تو جانتا ہے کہ یہ کام میرے دین و دنیا اور انجام کار کے اعتبار سے برا ہے، یا پھر میرے معاملہ میں وقتی طور پر اور میرے انجام کے اعتبار سے برا ہے، تو اسے مجھ سے دور کر دے اور مجھے بھی اس سے دور کر دے، پھر میرے لیے خیر مقدر فرما دے جہاں بھی وہ ہو، اور اس سے مجھے اطمینان قلب بھی نصیب فرما۔“

۵۰۔ اَلْعَلِیْمُ

معانی:..... سب سے زیادہ جاننے والا۔

اس کے علم کا کمال یہ ہے کہ ہر شے پر اس کا علم محیط ہے۔ ظاہر ہو یا پوشیدہ، چھوٹی ہو یا بڑی، اول ہو یا آخر۔ الغرض اس کا علم اتنا کامل ہے کہ کسی اور علم والے کے لیے تصور بھی ممکن نہیں۔ (الغزالی)

فعیل کے وزن پر مبالغہ کا صیغہ ہے یعنی بہت زیادہ اور ہر وقت جاننے والا۔ (بیہقی

بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۷۹)

معارف:..... یہ نام مبارک قرآن مجید میں (۱۵۵) مرتبہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر اللہ

تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣١﴾﴾

(البقرہ: ۳۲)

”انہوں نے کہا کہ (اے اللہ) تیری ذات (ہر عیب سے) پاک ہے، ہمارے پاس کوئی علم نہیں، سوائے اس کے جو تو نے ہمیں سکھایا ہے، تو ہی بے شک علم و حکمت والا ہے۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَّاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾﴾ (البقرہ: ۱۱۵)

”بے شک اللہ کمال وسعت والا اور بڑا جاننے والا ہے۔“

سورۃ آل عمران میں فرمایا:

﴿وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾﴾ (آل عمران: ۱۲۱)

”اور اللہ بڑا سننے والا، خوب جاننے والا ہے۔“

مزید فرمایا:

﴿اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِذٰاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾﴾ (آل عمران: ۱۱۹)

”بے شک اللہ دلوں کی باتوں کو خوب جانتا ہے۔“

﴿اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾﴾ (النحل: ۲۸)

”بے شک تم لوگ جو کچھ کیا کرتے تھے انہیں اللہ خوب جانتا ہے۔“

﴿وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾﴾ (یس: ۷۹)

”وہ اپنی تمام مخلوقات کے بارے میں پورا علم رکھتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدنا ابراہیم علیہ السلام کی قرآن حکیم میں کئی دعائیں موجود ہیں، آپ کی اولین دعا تعمیر کعبہ سے متعلق ہے، جب دونوں باپ بیٹے نے مل کر گھر کی بنیاد اونچی کر لی تو سیدنا اسماعیل علیہ السلام پتھر لاتے رہے، اور سیدنا ابراہیم علیہ السلام جوڑتے رہے۔ جب مکان اونچا ہو گیا تو

وہ پتھر (مقام ابراہیم) لائے، جس پر کھڑے ہو کر سیدنا ابراہیم علیہ السلام پتھر جوڑتے رہے، اور سیدنا اسماعیل علیہ السلام ان کو پتھر لالا کر دیتے رہے، دونوں بیت اللہ کے ارد گرد گھوم گھوم کر جوڑتے رہے، اور کہتے رہے۔

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝﴾ (البقرة: ۱۲۷-۱۲۸)

”اے ہمارے رب! ہماری نیکی قبول فرما لے۔ بلاشبہ تو (دعا کو) سنتا ہے اور (ہماری دل کی نیت کو) خوب جانتا ہے اور ہمارے قصور معاف کر دے بلاشبہ تو بہت زیادہ توبہ قبول کرنے والا اور نہایت مہربان ہے۔“

۵۱۔ اَلْعَلِیُّ

معانی:..... سب سے بلند و بالا۔

کیونکہ وہ اپنی ساری مخلوق سے بلند ہے۔ (الزجاج)
وہ سات آسمانوں سے اوپر عرش پر ہے۔ ﴿الْوَحْنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۝﴾ (طہ):

۵) ”اللہ مستوی عرش ہے۔“ (تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۴)

معارف:..... ذات باری تعالیٰ کا یہ نام (۸) مقام پر واقع ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:
﴿فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝﴾ (المؤمن: ۱۲)

”پس آج فیصلہ صرف اللہ کے ہاتھ میں ہے جو سب سے بلند، سب سے بڑا ہے۔“

﴿لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝﴾

(الشوری: ۴)

”جو کچھ آسمانوں میں ہے، اور جو کچھ زمین میں ہے اسی کی ملکیت ہے، اور وہ سب سے بلند، سب سے زیادہ عظمت والا ہے۔“

﴿وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ

رَسُولًا فَيُوحِي بِأَذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ﴿٥١﴾ (الشورى: ٥١)

”اور کسی انسان کے لیے یہ ممکن نہیں کہ اس سے اللہ بات کرے، سوائے اس لیے کہ اس پر وحی نازل کرے، یا کسی اوٹ کے پیچھے سے، یا کسی رسول کو بھیجے جو اس کی اجازت سے، وہ جو چاہے، اس کی وحی پہنچا دے، وہ بے شک سب سے اونچا، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

”علی“ وہی ہے جو اپنے برگزیدہ بندوں کے لیے برتر تعریف قائم کرتا ہے۔

﴿وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۖ﴾ (مریم: ٥٠)

”اور ہم نے ان کی نیک نامی کو بلند کیا۔“

”علی“ وہی ہے جس کا حکم بلند ہے، جس کی شان بلند ہے۔

﴿وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۚ﴾ (التوبة: ٤٠)

”اور اللہ کا کلمہ بلند ہوا۔“

قرآن مجید میں اس اسم کا استعمال اسم ”حکیم“ اسم ”کبیر“ اور اسم ”عظیم“ کے ساتھ ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝﴾

(البقرة: ٢٥٥)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے، اسے نہ اُوگھ آتی ہے اور نہ نیند، آسمانوں اور زمینوں میں جو کچھ ہے، سب اس کی ملکیت ہے، کون ہے جو اُس کی جناب میں بغیر اُس کی اجازت

کے کسی کے لیے شفاعت کرے، وہ تمام وہ کچھ جانتا ہے جو لوگوں کے سامنے اور اُن کے پیچھے ہے، اور لوگ اُس کے علم میں سے کسی بھی چیز کا احاطہ نہیں کرتے ہیں، سوائے اتنی مقدار کے جتنی وہ چاہتا ہے، اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے، اور ان کی حفاظت اُس پر بھاری نہیں، وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

فضیلت: ❶ جو شخص ہر نماز کے بعد آیۃ الکرسی پڑھے، اُس کے جنت میں داخل ہونے کے درمیان صرف موت حائل ہے۔ ❶

❷: سیدنا حسن بن علی رضی اللہ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جس شخص نے فرض نماز کے بعد آیت الکرسی پڑھی، وہ آئندہ نماز تک اللہ تعالیٰ کی حفاظت اور ذمہ داری میں ہوتا ہے۔“ ❷



❶ عمل الیوم واللیلة، لابن السنی، رقم: ۱۲۱۔ سلسلۃ الأحادیث الصحیحة، رقم: ۹۷۲۔

❷ الترغیب والترہیب: ۴۵۳/۲۔ مجمع الزوائد: ۱۰۹/۱۔ علامہ منذری اور بیہقی نے اس کی سند کو ”حسن“ قرار دیا ہے۔

حرف الغین

۵۲۔ الْغَافِرُ

معانی:..... معاف کرنے والا۔

غفر کا لغوی معنی چھپانا، ڈھانپنا ہے۔

غفر ذنوب اللہ تعالیٰ کا گناہوں پر پردہ ڈال دینا، ستاری فرمانا، معاف کر دینا اعمال نامہ سے دور کر دینا۔

(شرح اسماء اللہ الحسنی، از منصور پوری، ص: ۲۲۲، ۲۲۳)

معارف:..... یہ نام قرآن میں صرف ایک مرتبہ آیا ہے:

﴿غَافِرِ الذُّنُوبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ﴾ (غافر: ۳)

”گناہوں کو معاف کرنے والا، توبہ قبول کرنے والا۔“

مغفرت اور غفران اللہ تعالیٰ کا خاصہ ہے، اس کے علاوہ کوئی گناہوں کو بخشنے والا نہیں

کیونکہ غافر وہی ہے۔

﴿وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (آل عمران: ۱۳۵)

”اور اللہ کے علاوہ کون گناہوں کو معاف کر سکتا ہے۔“

اسم غافر، ذنب ”گناہ“ کی طرف باضافت صرف ایک مقام پر آیا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اَللّٰهُمَّ! اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنیْ، وَ اَنَا عَبْدُكَ، وَ اَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ، وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ اِنَّهٗ

لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ))

”اے اللہ! تو ہی میرا رب ہے تیرے سوا کوئی معبود برحق نہیں، تو نے مجھے پیدا کیا ہے، میں تیرا بندہ ہوں، اپنی استطاعت کے مطابق تیرے ساتھ کیے وعدے پر قائم ہوں۔ اے اللہ! میں ہر اس شر سے پناہ چاہتا ہوں جو مجھ سے سرزد ہوا ہے، اور تو نے جو مجھ پر انعام و فضل کیا اس کا اعتراف کرتا ہوں، اور اپنے گناہوں کا بھی اعتراف کرتا ہوں، پس تو میرے گناہوں کو بخش دے، کیونکہ تیرے سوا کوئی گناہوں کو نہیں بخش سکتا۔“

فضیلت: نبی کریم ﷺ نے فرمایا: ”جس شخص نے (سید الاستغفار) یہ کلمات پڑھے، اور اس رات فوت ہو گیا، تو وہ جنت میں جائے گا۔ اور جس نے صبح پڑھے اور اس دن فوت ہو گیا، وہ بھی جنت میں داخل ہوگا۔“ ①

۵۳۔ اَلْغَالِبُ

معانی:..... غلبہ پانے والا۔

اصل لغت میں غلبہ، گردن پکڑ لینے کو کہتے ہیں۔ اس معنی کے لحاظ سے ”رَجُلٌ اَعْلَبُ، اِمْرَاةٌ غَلْبَاءُ“ ”دراز گردن مرد یا دراز گردن عورت“ بولا کرتے ہیں۔ یہ ظاہر ہے کہ گردن پکڑ لینے والا ضرور دوسرے پر قابو یافتہ اور مستولی ہوگا اور جس کی گردن پکڑی گئی وہ ضرور قابو زدہ اور مقہور ہوگا۔ لہذا قوت و طاقت اور استیلا کے معنی میں لفظ غلبہ کا استعمال ہو گیا۔ (اسماء الحسنی، ص: ۲۳۵ - ۲۳۶)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام صرف ایک مرتبہ آیا ہے، اور وہ یہ ہے:

﴿وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (یوسف: ۲۱)

”اور اللہ اپنے فیصلے پر غالب ہے، لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے ہیں۔“

اللہ تعالیٰ کا لطف و کرم یوسف علیہ السلام کے شامل حال تو ہر وقت رہا کہ بے رحم بھائیوں کے

① صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۳۰۶ - سنن نسائی، کتاب الاستعاذہ، رقم: ۵۵۲۲۔

پنچے سے نکالا، پھر کنواں سے نکال کر نئی زندگی دی، اور اب اس کا لطف خاص دیکھئے کہ مصر کے خزانوں کا وزیر (عزیز مصر) انہیں خرید کر اپنے گھر لایا اور اپنی بیوی سے کہا کہ اس کے کھانے پینے اور اس کی رہائش کا اچھا انتظام کرو، تاکہ ہم سے جلدی مانوس ہو جائے اور اپنے آپ کو اپنوں کے درمیان محسوس کرنے لگے، کیونکہ میں اس کی پیشانی میں خیر و برکت کے آثار پارہا ہوں، مجھے امید ہے کہ یہ ہمارے کام آئے گا، یا ہم اسے اپنا بیٹا بنالیں گے، کیونکہ ہماری کوئی اولاد نہیں ہے، اور بڑا ہو کر میری جگہ حاصل کرے گا، اور امور وزارت سنبھال لے گا۔ کہا جاتا ہے کہ یوسف علیہ السلام جو کام کرتے اس میں کامیاب ہوتے، اور جب سے عزیز مصر کے گھر میں قدم رکھا اس کی کھیتی اور مال و تجارت میں خوب برکت ہونے لگی۔ یوسف علیہ السلام کے ساتھ شروع سے لے کر اب تک جو کچھ ہوا، اللہ کی مرضی سے ہوا، اور اس لیے ہوا تاکہ اللہ انہیں عزیز مصر کے گھر پہنچا دے۔ پھر وہ کچھ واقع ہوا جو زلیخا کی جانب سے ہوا۔ یوسف جیل جائیں، اور اللہ عزوجل انہیں خواب کی تعبیر سکھائے، اور پھر وہ بادشاہ وقت کے خواب کی تعبیر بتا کر وزارت کی کرسی پر پہنچ جائیں۔ ﴿وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰی اَمْرِہٖ وَلٰکِنْ اَکْثَرُ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ﴾ یہ اللہ کا فیصلہ تھا جسے بہر حال ہونا تھا، لیکن اکثر لوگ اس حقیقت پر یقین نہیں رکھتے ہیں کہ اللہ کے فیصلے میں کوئی دخل ادا نہیں ہو سکتا کیونکہ وہ اپنے فیصلے پر غالب ہے۔

پس اللہ تعالیٰ کا کلام صادق ہے کہ:

﴿کَتَبَ اللّٰهُ لَآ غُلْبَیْنَ اَنَا وَرُسُلِیْ﴾ (المجادلة: ۲۱)

”اللہ نے یہ بات لکھ دی ہے کہ یقیناً میں اور میرے پیغمبران ہی غالب رہیں گے۔“

اللہ کے جنود ہی غالب رہتے ہیں کیونکہ ان کے ساتھ ”غالب“ کی مدد و نصرت ہوتی ہے۔

﴿وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغُلْبُوْنَ﴾ (الصافات: ۱۷۳)

”اور بے شک ہمارا ہی لشکر غالب ہوگا۔“

﴿وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ﴾

(المائدة: ۵۶)

”اور جو اللہ اور اس کے رسول اور مومنوں سے دوستی رکھے گا، تو بے شک اللہ والے ہی غالب ہوں گے۔“

اللہ اس کے رسول اور مسلمانوں سے دوستی کرنے والوں کو ”حزب اللہ“ ”اللہ کی جماعت“ کے نام سے موسوم کیا گیا، اور ان سے اللہ کا وعدہ بتایا، کہا کہ وہی بالآخر کامیاب اور فائز المرام ہوں گے۔ چنانچہ صحابہ کرام کے ساتھ ایسا ہی ہوا، اللہ تعالیٰ نے انہیں غالب بنایا اور یہود کو قید و بند، قتل و جلا وطنی اور جزیہ کے ذریعے ذلیل و رسوا کیا، اور قیامت تک ان کا یہی حال رہے گا۔ ان کا عارضی اور ظاہری غلبہ ان کی حقیقی ذلت و رسوائی کو دور نہیں کر سکتا۔

قاضی منصور پوری رحمہ اللہ نے لکھا ہے: ”افسوس ہے کہ مسلمان ﴿حِزْبُ اللَّهِ﴾ (۵۸/المجادلہ: ۲۲) کے معنی بھول گئے۔ افسوس ہے کہ اسم ”غالب“ کے تحت میں انہوں نے غلبہ و برتری کے حصول کی تمنا کو بھی ترک کر دیا۔ ورنہ مسلمان دنیا میں کبھی ایسے خوار و زبوں نہ ہوتے۔“ (اسماء الحسنی، ص: ۲۳۷)

وہ معزز تھے زمانے میں مسلمان ہو کر
اور ہم خوار ہوئے تارکِ قرآن ہو کر

۵۴۔ الْغَفَّارُ

معانی:..... بار بار بخشنے والا، ڈھاپنے والا۔

دنیا میں گناہوں اور برائیوں کو عمدہ طریقے سے ڈھاپنے والا اور آخرت میں عذاب کے بجائے درگزر کرنے والا۔ (الغزالی)

یہ اسم مبارک فعال کے وزن پر مبالغہ کا صیغہ ہے۔ (بیہقی)

جس کے معنی ہیں بار بار بڑے بڑے گناہ بخشنے اور ڈھاپنے والا۔ (تشریح الاسماء

الحسنی، ص: ۷۷)

معارف: قرآن مجید میں یہ نام مبارکہ (۵) مرتبہ وارد ہوا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿دَبَّ السُّبُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ﴾ (ص: ۶۶)

”آسمانوں اور زمین اور ان کی درمیان کی چیزوں کا رب ہے، زبردست ہے،

بہت بڑا بخشنے والا ہے۔“

سورۃ طہ میں ارشاد فرمایا:

﴿وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى﴾ (طہ: ۸۲)

”اور میں بے شک بہت بڑا معاف کرنے والا ہوں اسے جو توبہ کرتا ہے اور

ایمان لاتا ہے اور نیک عمل کرتا ہے، پھر سیدھی راہ پر چلتا رہتا ہے۔“

﴿قُلْ يُعْبَادِيَ الَّذِينَ أَسْفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا﴾ (الزمر: ۵۳)

”آپ کہہ دو کہ اے میرے بندو! جنہوں نے اپنی جانوں پر زیادتی کی ہے تم

اللہ کی رحمت سے نا اُمید نہ ہو جاؤ، یقیناً اللہ تعالیٰ سارے گناہوں کو بخش دیتا

ہے، واقعی وہ بڑی بخشش، بڑی رحمت والا ہے۔“

واحدی نے لکھا ہے: ”تمام مفسرین اس بات پر متفق ہیں کہ یہ آیت ان لوگوں کے

بارے میں نازل ہوئی تھی جنہوں نے شرک، قتل اور نبی کریم ﷺ کی ایذا رسانی جیسے گناہوں

کا ارتکاب کیا تھا، اور اسلام لانا چاہتے تھے، لیکن ڈرتے تھے کہ شاید ان کے گناہ معاف نہیں

کیے جائیں گے۔ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کو حکم دیا کہ انہیں اور اللہ کے تمام بندوں کو

اس کی وسیع رحمت اور عظیم مغفرت کی خوش خبری دے دیں، کہ انہیں اللہ کی رحمت سے نا اُمید

نہیں ہونا چاہیے، وہ تمام اپنے بندوں کے گناہوں کو معاف کر دیتا ہے، اس لیے کہ وہ بڑا

معاف کرنے والا اور بے حد مہربان ہے۔“ (تیسیر الرحمن، ص: ۱۳۰۵)

علامہ شوکانی رحمہ اللہ لکھتے ہیں کہ ”یہ آیت قرآن کریم کی سب سے زیادہ اُمید بھری آیت

ہے۔ اس میں اللہ نے بندوں کی نسبت اپنی طرف کی ہے، اور پھر انہیں گناہوں کے ارتکاب

میں حد سے متجاوز ہونے کی صورت میں اپنی رحمت سے نا اُمید ہونے سے منع فرمایا ہے، اور یہ کہہ کر مزید کرم فرمایا کہ وہ تو تمام گناہوں کو معاف کر دیتا ہے۔“ ①

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ رقم طراز ہیں کہ ”یہ آیت کریمہ کافر و مومن تمام گناہ گاروں کو توبہ کی دعوت دیتی ہے، اور خبر دیتی ہے کہ اللہ تعالیٰ توبہ کرنے والے کے تمام گناہ معاف کر دیتا ہے، چاہے وہ سمندر کے جھاگ کے برابر ہی کیوں نہ ہوں۔“ ②

جو توبہ کرتا ہے اللہ تعالیٰ بھی اس کی توبہ قبول کرتا ہے، فرمانِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا

لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (آل عمران: ۱۳۵)

”اور جب ان لوگوں سے کوئی ناشائستہ کام ہو جائے یا کوئی گناہ کر بیٹھیں تو فوراً اللہ کا ذکر اور اپنے گناہوں کے لیے استغفار کرتے ہیں، فی الواقع اللہ تعالیٰ کے سوا اور کون گناہوں کو بخش سکتا ہے؟“

اہل جنت کی صفت یہ بتائی گئی کہ جب ان سے کبیرہ یا صغیرہ گناہ کا ارتکاب ہو جاتا ہے، تو انہیں اللہ سے حیا آتی ہے، اور اس کے عقاب کا ڈر لاحق ہوتا ہے، تو فوراً اللہ سے معافی مانگتے ہیں، اور اللہ کے علاوہ گناہوں کو کون معاف کر سکتا ہے؟ اس کے سوا کسے اس کا اختیار حاصل ہے؟ امام احمد نے ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے، میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو کہتے ہوئے سنا ہے کہ ابلیس نے اپنے رب سے کہا تیری عزت و جلال کی قسم، میں بنی آدم کو جب تک ان کی سانس چلتی رہے گی گمراہ کرتا رہوں گا، تو اللہ نے کہا: میری عزت و جلال کی قسم! جب تک وہ مجھ سے مغفرت چاہتے رہیں گے، میں انہیں معاف کرتا رہوں گا۔

اور اس طلبِ مغفرت والی صفت کی تکمیل یہ ہے کہ وہ جانتے ہوئے گناہ پر اصرار نہیں

① فتح القدیر، للشوکانی: ۵۶۱/۲.

② تفسیر ابن کثیر: ۵۹۲/۵-۵۹۳.

کرتے، یعنی اگر گناہ ہو جاتا ہے تو استغفار کرتے ہیں، کیونکہ دل سے استغفار کر لینے کے بعد اگر دوبارہ اس گناہ کا ارتکاب ہو جاتا ہے، تو اسے گناہ پر اصرار نہیں کہا جاتا۔ ابو داؤد، ترمذی، بزار اور ابو یعلیٰ نے ابو بکر رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے، رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ”جس نے اللہ سے مغفرت مانگ لی اس نے گناہ پر اصرار نہیں کیا، چاہے وہ دن میں سو بار اس کا ارتکاب کرے۔“ حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ نے اس حدیث کو ”حسن“ کہا ہے۔ امام احمد نے علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ اور انہوں نے ابو بکر رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جب کوئی آدمی گناہ کرتا ہے، تو اس کے بعد اچھی طرح وضو کرتا ہے، پھر دو رکعت نماز پڑھ کر اللہ سے مغفرت طلب کرتا ہے، تو اللہ اسے معاف کر دیتا ہے۔“

(تیسیر الرحمن: ۲۰۸/۱-۲۰۹)

اللہ تعالیٰ نے اپنے متقی اور ہمیشہ اپنے گناہوں سے معافی مانگنے والے بندوں کی تعریف کرتے ہوئے فرمایا:

﴿الْصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْفَتَاتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَادِ﴾

(آل عمران: ۱۷)

”وہ صبر کرنے والے، اور سچ بولنے والے، اور فرماں برداری کرنے والے، اور

اللہ کی راہ میں خرچ کرنے والے اور کچھلی رات کو بخشش مانگنے والے ہیں۔“

”اس (آیت کریمہ) میں اہل تقویٰ کی مزید صفات بیان کی گئی ہیں ﴿وَالْمُسْتَغْفِرِينَ

بِالْأَسْحَادِ﴾ میں استغفار سحر گاہی کی فضیلت بیان کی گئی ہے۔ صحیحین اور احادیث کی

دوسری کتابوں میں کئی صحابہ کرام سے مروی ہے، رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ ہر رات جب

رات کا ایک تہائی حصہ باقی رہ جاتا ہے تو اللہ تعالیٰ آسمان دنیا کی طرف نزول فرماتا ہے، ا

ور کہتا ہے کہ کوئی مانگنے والا ہے جسے میں دوں، کوئی دعا کرنے والا ہے جس کی دعا قبول

کروں، کوئی مغفرت چاہنے والا ہے جسے میں معاف کر دوں؟

مسلم کی ایک روایت میں ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے دونوں ہاتھوں کو پھیلاتا ہے، اور کہتا ہے

کہ کون قرض دے گا ایسے کو جو فقیر نہیں، اور ظالم نہیں۔ ایک اور روایت میں ہے کہ طلوع فجر تک (ایسا ہی رہتا ہے)۔“ (تیسیر الرحمن: ۱۶۹/۱)

اور رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لَمْ تُذْنِبُوا لَذَهَبَ اللَّهُ بِكُمْ وَلَجَاءَ بِقَوْمٍ يُذْنِبُونَ فَيَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ)) ❶

”اس ذات کی قسم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے، اگر تم گناہ نہ کرتے تو اللہ تمہیں اٹھالیتا اور تمہارے بجائے گناہ کرنے والی قوم کو لاتا۔ وہ اللہ تعالیٰ سے بخشش طلب کرتے تو رب کریم انہیں معاف کر دیتا۔“

یہ اس پاک تین مقامات پر اسم ”عزیز“ کے ساتھ اور دو مقامات پر بحالت انفرادی بیان ہوا ہے۔
اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

اللہ تعالیٰ کے آخری مُرسل محمد ﷺ کثرت سے استغفار کیا کرتے، آپ علیہ الصلاۃ والسلام کا فرمان ہے:

((وَاللَّهِ! إِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ، وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً)) ❷

”اللہ کی قسم! میں ایک دن میں ستر سے زیادہ مرتبہ اللہ سے بخشش طلب کرتا ہوں، اور اس سے توبہ کرتا ہوں۔“

اور ایک حدیث میں آپ نے لوگوں کو توبہ کرنے کا حکم دیتے ہوئے ارشاد فرمایا:

((يَا أَيُّهَا النَّاسُ! تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ، فَإِنِّي أَتُوبُ إِلَى اللَّهِ فِي الْيَوْمِ مِائَةً مَرَّةً)) ❸

❶ صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب سقوط الذنوب بالإستغفار توبۃ، رقم: ۲۷۴۹۔

❷ صحیح بخاری، کتاب الدعوات، باب استغفار النبی ﷺ فی الیوم واللیلۃ، رقم: ۶۳۰۷۔

❸ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب استحباب الإستغفار، والإستکثار منه، رقم: ۶۸۵۹۔

”اے لوگو! تم سب اللہ کے ہاں توبہ کرو، پس یقیناً میں ایک دن میں اللہ سے سو (۱۰۰) مرتبہ توبہ کرتا ہوں۔“

چنانچہ ہم ذیل کی سطور میں چند ان ادعیہ کا ذکر کرتے ہیں جن کے ذریعہ اللہ تعالیٰ نے بخشش طلب کرنے کا حکم فرمایا ہے، یا جن کے ذریعہ سے رسول اللہ ﷺ اپنے رب سے مغفرت طلب فرمایا کرتے تھے۔

۱۔ سیدنا شہاد بن اوس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، نبی کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا: بندے کا یہ کہنا سید الاستغفار (استغفار کا سردار) ہے۔ جو شخص یہ دن میں دل کے یقین کے ساتھ پڑھے، اور شام ہونے سے پہلے اسے موت آجائے، تو وہ جنتی ہے۔ اور جو اسے یقین کے ساتھ رات کو پڑھے اور صبح ہونے سے پہلے اسے موت آجائے، تو وہ جنتی ہے۔
 ((اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ ، اَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ ، مَا اسْتَطَعْتُ ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلٰى وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ ، فَاغْفِرْ لِّىْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذَّنْبَ اِلَّا اَنْتَ .)) ①

”اے اللہ! تو میرا رب ہے، تیرے سوا کوئی معبود نہیں۔ تو نے ہی مجھے پیدا کیا اور میں تیرا بندہ ہوں۔ اور میں جہاں تک طاقت رکھتا ہوں، تیرے عہد اور تیرے وعدے پر قائم ہوں۔ اور میں اپنے کیے ہوئے عمل کے شر سے تیری پناہ مانگتا ہوں، میں ان نعمتوں کا بھی اعتراف کرتا ہوں جو تو نے مجھ پر کیں اور میں اپنے گناہوں کا بھی اعتراف کرتا ہوں۔ پس تو مجھے معاف کر دے۔ بے شک تیرے سوا گناہوں کو معاف کرنے والا کوئی نہیں۔“

۲۔ ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِّىْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّىْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا

① صحیح بخاری، کتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، رقم: ۶۳۰۲۔

اَنْتَ .)) ❶

”اے اللہ! میرے اگلے اور پچھلے، خفیہ اور اعلانیہ گناہوں کو معاف فرمادے اور جو میں نے (اپنی حیثیت سے) تجاوز کیا کہ جن کے بارے میں تو مجھ سے زیادہ جانتا ہے، تو ہی مقدم ہے تو ہی مؤخر ہے، تیرے علاوہ کوئی معبود نہیں۔“

۳۔ سیدنا ابوہریرۃ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ یقیناً رسول اللہ ﷺ اپنے بچوں میں یہ دعا پڑھتے تھے:

((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهُ ، دِقَّةً ، وَجِلَّةً ، وَاَوَّلَهُ ، وَاٰخِرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ .)) ❷

”اے اللہ! میرے چھوٹے، بڑے، اگلے پچھلے، ظاہر اور خفیہ تمام گناہ معاف فرمادے۔“

۴۔ سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں کہ ایک رات میں نے رسول اللہ ﷺ کو اپنے بستر پر نہیں دیکھا، میں آپ کو ڈھونڈنے لگی تو میرا ہاتھ آپ کے تلوے پر پڑا، اور در آنحالیہ آپ سجدہ میں تھے، اور آپ کے دونوں قدم مبارک کھڑے تھے، اور آپ اس وقت یہ پڑھ رہے تھے:

((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عِقُوْبَتِكَ ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ ، لَا اُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ ، اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰی نَفْسِكَ .)) ❸

”اے اللہ! میں تیری خوشنودی کے ذریعے تیرے غصے سے پناہ طلب کرتا ہوں، تیری پکڑ سے تیری معافی کی پناہ میں آتا ہوں، اور تجھ سے تیری ہی پناہ کا

❶ صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين، باب صلاة النبی ﷺ ودعائه باللیل، رقم: ۱۸۱۲۔

❷ صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما يقال فی الركوع والسجود، رقم: ۱۰۸۴۔

❸ صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما يقال فی الركوع والسجود، رقم: ۱۰۹۰۔

طلب گار ہوں۔ اے اللہ! میں تیری تعریفیں بیان کرنے کا صحیح حق ادا نہیں کر سکتا۔ تو بالکل ویسا ہے جس طرح تو نے اپنی تعریف کی ہے۔“

۵۔ سیدنا حذیفہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ انہوں نے رات کو رسول اللہ ﷺ کو نماز پڑھتے دیکھا، اور آپ ﷺ جب دو سجدوں کے درمیان بیٹھتے تو یہ پڑھتے:

((رَبِّ اغْفِرْ لِي ، رَبِّ اغْفِرْ لِي)) ❶

”اے میرے پروردگار! مجھے بخش دے۔ اے میرے پروردگار! مجھے بخش دے۔“

۶۔ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ یقیناً نبی ﷺ دو سجدوں کے درمیان (یہ) دعا پڑھتے تھے:

((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ .)) ❷

”اے اللہ! مجھے بخش دے، مجھ پر رحم فرما، مجھے ہدایت دے، میرے نقصانات کا تدارک فرما، مجھے عافیت عطا فرما، اور مجھے رزق دے۔“

۷۔ سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا بیان فرماتی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ اپنی وفات سے قبل یہ کلمات کثرت سے پڑھتے تھے:

((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ ، وَاتُوبُ اِلَيْهِ .)) ❸

”اے اللہ! میں تیری پاکیزگی بیان کرتا ہوں تیری خوبیوں کے ساتھ، میں اللہ تعالیٰ سے مغفرت طلب کرتا ہوں، اور اسی کی طرف توبہ کرتا ہوں۔“

۸۔ سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، رسول اللہ ﷺ نے فرمایا، جو یہ

❶ صحیح ابو داؤد، کتاب الصلاة، باب الدعاء فی الركوع والسجود، رقم: ۸۷۴۔

❷ صحیح الترمذی، کتاب الصلاة، باب ما یقول بین السجدتین، رقم: ۲۸۴۔

❸ صحیح بخاری، کتاب التفسیر، باب تفسیر سورة إذا جاء نصر اللہ.....، رقم: ۴۹۶۷۔ صحیح

مسلم، کتاب الصلاة، باب ما یقال فی الركوع والسجود، رقم: ۴۸۴۔

(کلمات کہے، تو اس کے گناہ معاف کر دیئے جائیں گے اگرچہ اس نے جہاد سے بھاگنے کا ارتکاب کیا ہو۔

((اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاتُوْبُ اِلَیْهِ .)) ❶

”میں مغفرت طلب کرتا ہوں اس اللہ سے کہ نہیں ہے کوئی معبود سوائے اس کے وہ زندہ جاوید ہے، اور پوری کائنات کو سنبھالے ہوئے ہے، اور اس کے حضور میں اپنے گناہوں سے توبہ کرتا ہوں۔“

۵۵۔ اَلْغَفُوْرُ

معانی:..... گناہ بخشنے والا۔

یہ بھی ”غفار“ کی طرح مبالغہ کے معنی رکھتا ہے مگر ”غفار“ میں تکرار کے معنی ہیں (یعنی بار بار بخشنے والا) اور ”غفور“ میں کمال اور تمام کے یعنی سب گناہ بخشنے والا۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۴)

معارف:..... یہ اسم مبارک (۹۱) مرتبہ قرآن مجید میں واقع ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿يٰۤاَيُّهَا عَبْدِیْ اِنِّیْ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ﴾ (الحجر: ۴۹)

”میرے بندوں کو خبر کر دیں کہ میں ہی بڑا بخشنے والا، بے حد رحم کرنے والا ہوں۔“

سورة الکہف میں ارشاد فرمایا:

﴿وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمٰتِ﴾ (الکہف: ۵۸)

”اور تیرا رب بہت ہی بخشش والا اور مہربانی والا ہے۔“

سورة الشوریٰ میں ارشاد فرمایا:

❶ سنن ابو داؤد، کتاب الصلاة، باب الإستغفار، رقم: ۱۵۱۷۔ امام حاکم نے کہا یہ حدیث بخاری و مسلم کی شرط پر ہے، اور امام ذہبی نے اس کی موافقت کی ہے۔ مستدرک حاکم: ۵۱۱/۱۔

﴿وَالْمَلِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ﴾ (الشورى: ۵)

”اور فرشتے اپنے رب کی پاکی، اور اس کی تعریف بیان کرتے ہیں، اور زمین میں رہنے والے (اہل ایمان) کے لیے مغفرت طلب کرتے ہیں، آگاہ رہتے کہ بے شک اللہ ہی بڑا بخشنے والا، بے حد رحم کرنے والا ہے۔“

﴿قُلْ يُعْبَادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ﴾ (الزمر: ۵۳)

”اے میرے نبی! آپ کہہ دیجئے، اے میرے وہ بندو جنہوں نے اپنے آپ پر (گناہوں کا ارتکاب کر کے) زیادتی کی ہے، تم اللہ کی رحمت سے ناامید نہ ہو، بے شک اللہ تمام گناہوں کو معاف کر دیتا ہے، بے شک وہ بڑے بخشنے والا، بے حد مہربان ہے۔“

اللہ کے سوا کوئی گناہوں کو بخشنے والا نہیں۔

﴿وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ﴾ (آل عمران: ۱۳۵)

”اللہ کے سوا گناہوں کو اور کون بخش سکتا ہے۔“

﴿إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ﴾ (النجم: ۳۲)

”بے شک آپ کا رب بڑا مغفرت کرنے والا ہے۔“

قرآن مجید میں یہ اسم ”رحیم“ کے ساتھ (۷۵) دفعہ، اسم ”عزیز“ کے ساتھ (۲) دفعہ، اسم ”عفو“ کے ساتھ (۵) دفعہ، اسم ”شکور“ (۲) دفعہ، اسم ”حلیم“ کے ساتھ ایک دفعہ، اسم ”ودود“ کے ساتھ ایک دفعہ اور صفت ”ذوالرحمة“ کے ساتھ ایک دفعہ وارد ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے رسول اللہ ﷺ سے عرض کیا: یا رسول اللہ! آپ مجھے

ایسی دعاء سکھائیے جسے میں اپنی نماز (کے تشہد) میں پڑھا کروں، تو آپ ﷺ نے فرمایا (یہ) دعا پڑھا کرو۔

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا کَثِیْرًا وَلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ)) ❶

”اے اللہ میں نے اپنے آپ پر بہت ظلم کیا، میرے گناہوں کو تیرے علاوہ کوئی معاف نہیں کر سکتا، لہذا اپنی خاص مغفرت سے مجھے بخش دے، اور مجھ پر رحم فرما۔ بلاشبہ تو بخشنے والا اور نہایت رحم فرمانے والا ہے۔“

۵۶۔ اَلْغَنِیُّ

معانی:..... بڑا بے نیاز و بے پرواہ۔

ساری مخلوق سے اپنی قدرت کی بناء پر بے پرواہ اور بے نیاز۔ سب اسی کے محتاج ہیں۔ (الزجاج)

معارف: قرآن کریم میں رب تعالیٰ کا یہ نام (۱۸) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَكَانَ اللّٰهُ غَنِیًّا حَنِیْدًا ۝۱﴾ (النساء: ۱۳۱)

”اور اللہ بے نیاز اور ساری تعریفوں کا مستحق ہے۔“

اللہ کو بندوں کے مال کی ضرورت نہیں ہے، وہ تو غنی اور بے نیاز ہے، آسمانوں اور زمین کے خزانوں کا مالک ہے، محتاج تو بندے ہیں کہ کوئی چیز ان کے اختیار میں نہیں ہے، ان کی زندگی کا ایک ایک لمحہ محتاجیوں سے گھرا ہوا ہے۔

﴿وَاللّٰهُ الْغَنِیُّ وَاَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۝۲﴾ (محمد: ۳۸)

”اور اللہ ہی غنی ہے، اور تم محتاج و فقیر ہو۔“

تمام لوگ اپنی زندگی کے ہر لمحہ اور سانس میں اس کی رحمت، لطف و کرم اور اس کی مدد کے محتاج ہیں، اور وہ تو سب سے بے نیاز اور تمام تعریفوں کا حقیقی مستحق ہے۔ اس کے بے نیاز اور قادر مطلق ہونے کی دلیل یہ ہے کہ اگر وہ چاہے تو تمہیں اس دنیا سے فنا کر دے اور تمہاری جگہ کسی اور مخلوق کو لے آئے، اور یہ کام اس کے لیے نہایت ہی آسان ہے۔

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝﴾

(فاطر: ۱۵-۱۷)

”اے لوگو! تم ہی سب اللہ کے محتاج ہو، اور اللہ تو بڑا بے نیاز اور تمام تعریفوں کا مستحق ہے، وہ اگر چاہے تو تمہیں ختم کر دے اور ایک نئی مخلوق کو لے آئے، اور یہ کام اللہ کے لیے مشکل نہیں ہے۔“

یہود نے تمر داً اپنے کو اغنیاء اور اللہ کو فقیر بتایا تو وعید شدید کے طور پر اللہ نے کہا کہ ان کی یہ بات ہم ان کے خلاف درج کر رہے ہیں، اور وہ تو اس کے پہلے قتل انبیاء جیسے جرم کا ارتکاب کر چکے ہیں، ہم انہیں چھوڑیں گے نہیں۔ قیامت کے دن ہم انہیں کہیں گے کہ اب جہنم کا عذاب چکھو۔

﴿لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُمُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلُ دُفُّوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝﴾

(آل عمران: ۱۸۱)

”اللہ نے ان لوگوں کی بات یقیناً سن لی ہے، جنہوں نے کہا کہ بے شک اللہ فقیر ہے اور ہم لوگ غنی ہیں، ہم ان کی باتیں لکھ رہے ہیں، اور ان کا انبیاء کو ناحق قتل کرنا بھی لکھ رہے ہیں، اور ہم ان سے کہیں گے کہ آگ کا عذاب چکھو۔“

قرآن مجید پر غور کرنے سے پتا چلتا ہے کہ یہ اسم پاک اسم ”حمید“ اور ”کریم“ کے ساتھ مستعمل ہوا ہے اور اکیلا بھی بیان ہوا ہے۔

حرف الفاء

۵۷۔ اَلْفَاطُرُ

معانی:..... پیدا کرنے والا۔

فطر ابداع، پیدائش اولیس، ابن عباس رضی اللہ عنہما کہتے ہیں: میرے پاس دو بدوی آئے وہ ایک دھنہ چاہ (کنویں) کی ملکیت کے دعویٰ دار تھے۔ ان میں ایک بولا ”اَنَا فَطَرْتُهَا“ میں نے اس کا پاڑ کھودا تھا۔ (بحوالہ شرح أسماء اللہ الحسنی، ص: ۲۲۳)

معارف:..... حق تعالیٰ کا یہ نام قرآن میں (۶) مقام پر واقع ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ﴾ (فاطر: ۱)

”تمام تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ فاطر ہے جس نے دین فطرت پر لوگوں کو تخلیق کیا۔

﴿فَطَرَتِ اللّٰهُ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ﴾ (الروم: ۳۰)

”یہ اللہ کا وہ دین فطرت ہے جس کے مطابق اس نے لوگوں کو پیدا کیا۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

اللہ تعالیٰ نے جب اپنی نعمت یوسف علیہ السلام پر تمام کر دی، والدین اور بھائیوں کو ان کے پاس پہنچا دیا، اور انہیں علم نبوت، علم تعبیر رؤیا، اور مصر کی عظیم بادشاہت سے نوازا، تو انہوں نے اپنے رب سے دعا کی:

﴿رَبِّ قَدْ اَتَيْنٰنِیْ مِنَ الْمُلْكِ وَ عَلَّمْتَنِیْ مِنْ تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ فَاطِرَ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَ لَیْ فِي الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ تَوْفِیْقِیْ مُسْلِمًا وَ الْحَقِّیْ

بِالْطَّالِحِينَ ﴿١٠١﴾ (یوسف : ۱۰۱)

”میرے رب! تو نے مجھے بادشاہت عطا کی اور خوابوں کی تعبیر کا علم دیا، اور آسمان و زمین کے پیدا کرنے والے! دنیا و آخرت میں تو ہی میرا یار و مددگار ہے، تو مجھے دنیا سے مسلمان فوت کر، اور نیک لوگوں سے ملا دے۔“

۵۸۔ اَلْفَالِقُ

معانی:..... پھاڑ نکالنے والا۔

معارف:..... رب تعالیٰ کا یہ نام قرآن کریم میں (۲) جگہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَى﴾ (الانعام : ۹۵)

”بے شک اللہ ہی دانہ اور گھٹلی کو پھاڑنے والا ہے۔“

یعنی وہ دانے اور گھٹلی کو مٹی کی تاریکی میں پھاڑ دیتا ہے، پھر اس سے مختلف انواع و اقسام کے پودے اور کھیتیاں پیدا ہوتے ہیں جن سے مختلف دانے اور پھل پیدا ہوتے ہیں جن کے رنگ، شکلیں اور ذائقے مختلف ہوتے ہیں۔

اللہ تعالیٰ فالق ہے، وہ رات کے اندھیرے کو پھاڑ کر سپیدہ سحر کو نمودار فرما دیتا ہے، اس سے وجود کائنات منور اور افق پر کرن کرن اجالا ہو جاتا ہے، اندھیرا چھٹ جاتا ہے، رات ظلمتوں اور تاریکیوں سمیت چلی جاتی ہے اور دن اپنی روشنی اور چمک دمک کے ساتھ آ جاتا ہے۔

﴿فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا﴾ (الانعام : ۹۶)

”وہی (رات کے اندھیرے سے) صبح کی روشنی پھاڑ نکالتا ہے اور اسی نے رات

کو (موجب) آرام بنایا۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

رسول اللہ ﷺ سوتے وقت یہ دعا پڑھا کرتے تھے:

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَرَبَّ الْاَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، مُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَ
الْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ
بِنَاصِيَّتِهِ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ
فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ
الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاعْغِنَّا مِنَ
الْفَقْرِ)) ❶

”اے اللہ! آسمان و زمین کے رب اور عرش عظیم کے رب، ہمارے اور ہر چیز کے پالنے والے، دانے اور گٹھلی کو پھاڑنے والے، اے تورات و انجیل اور قرآن مقدس کے اتارنے والے، میں ہر چیز جس کی پیشانی تیرے ہاتھ میں ہے کے شر سے تیری پناہ چاہتا ہوں، تو ہی اوّل ہے، تجھ سے پہلے کوئی چیز نہیں تھی، تو ہی آخر ہے تیرے بعد کچھ نہیں، تو ظاہر ہے، تیرے اوپر کچھ نہیں، تو ہی باطن ہے، تجھ سے کوئی چیز مخفی نہیں۔ (اے اللہ!) ہمارے قرض ادا فرما دے اور ہمیں فقیری سے غنی کر دے۔“

۵۹۔ اَلْفَتْحُ

معانی:..... فیصلہ کرنے والا، مدد کرنے والا

معارف:..... یہ نام مبارک کتاب اللہ میں صرف ایک مرتبہ آیا ہے، وہ یہ ہے:

﴿قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۖ وَهُوَ الْفَتْحُ الْعَلِيمُ ۝﴾ ❷

(سبا: ۲۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ روزِ قیامت ہمارا رب ہمیں اکٹھا کرے گا، پھر ہمارے درمیان حق کے مطابق فیصلہ کرے گا اور وہ بڑا عظیم فیصلہ کرنے والا ہے، ہر چیز کو جاننے والا ہے۔“

❶ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۶۸۸۹۔

”فتح“ ہی سے ”فاتح“ بھی ہے، اللہ تعالیٰ کے اسماء میں ”فاتح“ بس اسی معنی میں آیا ہے۔

شعیب علیہ السلام کی قوم نے ان کی دعوتِ توحید اور اصلاح قبول کرنے سے انکار کر دیا، اور انہیں اور مسلمانوں کو شہر بدر کرنے کی دھمکی دی، تو انہوں نے ان کی طرف سے ناامید ہو کر اللہ سے دعا کی کہ:

﴿رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ﴾ (الاعراف: ۸۹)

”اے ہمارے رب! تو ہمارے اور ہماری قوم کے درمیان حق کے مطابق فیصلہ کر دے، اور تو سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے۔“

فتح و نصرت ”فاتح“ عطا فرماتا ہے۔

﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا﴾ (الفتح: ۱)

”اے میرے نبی! ہم نے بے شک آپ کو کھلی اور صریح فتح دی۔“

﴿لَصَّرَ مِنَ اللَّهِ وَفُتِحَ قَدِيبٌ﴾ (الصف: ۱۳)

”نصرت و تائید اور قریب ہی حاصل ہونے والی فتح و کامرانی اللہ کی طرف سے ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے پیغمبر علیہ السلام کو حکم فرمایا کہ آپ اللہ کی فتح و نصرت پر اپنے رب کا شکر ادا کریں، اس کی پاکی اور حمد و ثنا میں لگے رہنے سے اس کی نصرت و تائید میں اضافہ ہوتا رہے گا۔

﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۖ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۖ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّكَ كَانَ تَوَّابًا﴾ (النصر)

”اے میرے نبی! جب اللہ کی مدد آگئی ہے، اور مکہ فتح ہو گیا ہے۔ اور آپ لوگوں کو دیکھ رہے ہیں کہ وہ گروہ درگروہ اللہ کے دین میں داخل ہو رہے ہیں۔ تو آپ اپنے رب کی پاکی بیان کیجیے، اس کی حمد و ثنا کیجیے اور اس سے مغفرت طلب کیجیے، بے شک وہ بڑا توبہ قبول کرنے والا ہے۔“

۶۰۔ اَلْفَعَالُ

معانی:..... کر گزرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام کتاب اللہ میں (۲) مرتبہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْبَهِيمُ ۝ فَعَالٌ لِّبَآئِ يُرِيدُ ۝﴾

(البروج: ۱۴ تا ۱۶)

”اور وہ بڑا بخشنے والا، بہت محبت کرنے والا ہے، وہ عرش والا، بڑی بزرگی والا ہے۔ وہ جو چاہتا ہے کر گزرتا ہے۔“

”فعال“ وہی ہے کہ جب وہ کسی چیز کا ارادہ کرتا ہے تو کہہ دیتا ہے ”کُنْ“ تو وہ ہو جاتی ہے۔ ﴿اِنَّمَا اَمْرُكَ اِذَا ارَادَ شَيْئًا اَنْ يَقُوْلَ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝﴾ (یس: ۸۲)

”اس کی شان تو یہ ہے کہ جب وہ کسی چیز کا ارادہ کرتا ہے تو اس سے کہتا ہے ”ہو جا“ اور وہ چیز ہو جاتی ہے۔

﴿اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝﴾ (الحج: ۱۸)

”بے شک اللہ جو چاہتا ہے اسے کر گزرتا ہے۔“

﴿لَا يَسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ ۝﴾ (الانبیاء: ۲۳)

”اس کے کاموں کے بارے میں اس سے پوچھا نہیں جا سکتا ہے، اور لوگوں سے ان کے کاموں کے بارے میں پوچھا جائے گا۔“

اس آیت میں ربوبیت والوہیت کو اللہ تعالیٰ نے اپنے لیے مطلق طور پر ثابت کیا ہے کہ اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے، کوئی نہیں جو اس کے کسی فعل پر اعتراض کرے، اور اس کے سوا جتنے جن و انس ہیں سب سے ان کے اعمال کا حساب لیا جائے گا، اور یہ اس بات کی دلیل ہے کہ سب اس کے بندے اور غلام ہیں، اور وہی سب کا اللہ ہے، سب کا آقا اور سب کا معبود ہے۔

حرف القاف

۶۱۔ الْقَابِلُ

معانی:..... قبول کرنے والا۔

اس شخص کی توبہ قبول فرما لیتا ہے جو اس کے سامنے توبہ کرے اور اس کے حضور جھک جائے۔ (المصباح المنیر: ۲۷۰/۵)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن میں صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ﴾ (غافر: ۳)

”گناہوں کو معاف کرنے والا، توبہ قبول کرنے والا اور سخت سزا دینے والا ہے۔“

یعنی جو اس کے حضور توبہ کرے اس شخص کی توبہ قبول فرما لیتا ہے اور جو سرکشی و بغاوت اختیار کرے، دنیا کی زندگی کو آخرت پر ترجیح دے اور اللہ تعالیٰ کے احکامات کی نافرمانی کرے، اسے سخت سزا دینے والا ہے۔

اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں اپنی ان دونوں صفتوں کو بہت سے مقامات پر یکجا بیان کیا ہے، تاکہ بندہ امید و خوف کے درمیان زندگی بسر کرے۔

﴿يُنَبِّئُ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۝﴾

(الحجر: ۴۹، ۵۰)

”اے میرے پیغمبر! میرے بندوں کو بتا دیں کہ یقیناً میں بڑا بخشنے والا، نہایت

مہربان ہوں اور یہ کہ میرا عذاب بھی دردناک عذاب ہے۔“

سورة التوبہ میں ارشاد فرمایا:

﴿اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ﴾ (التوبة: ۱۰۴)

”کیا اُن لوگوں نے نہیں جانا بے شک اللہ ہی اپنے بندوں کی توبہ قبول کرتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدنا ابراہیم علیہ السلام کی قرآن حکیم میں کئی دعائیں موجود ہیں، ان میں سے دو دعائیں جو اس اسم پاک کے ذریعے کی گئیں وہ یہ ہیں:

۱۔ ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝﴾ (البقرہ: ۱۲۷، ۱۲۸)

”اے ہمارے رب! ہماری نیکی قبول فرما لے۔ بلاشبہ تو (دعا کو) سنتا ہے اور (ہماری دل کی نیت کو) خوب جانتا ہے اور ہمارے قصور معاف کر دے بلاشبہ تو بہت زیادہ توبہ قبول کرنے والا اور نہایت مہربان ہے۔“

۲۔ ﴿رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْۤ رِبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَاۤیْ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِّیْ وَلِیِّ الدِّیْنِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝﴾ (ابراہیم: ۴۰ تا ۴۱)

”اے میرے رب! مجھے اور میری اولاد کو نماز کا پابند بنا دے، اے ہمارے رب! اور میری دعا کو قبول فرما لے۔ اے ہمارے رب! تو مجھے اور میرے والدین کو اور مومنوں کو اس دن معاف کر دے جب حساب ہوگا۔“

۶۲۔ الْقَادِرُ

معانی:..... قدرت رکھنے والا، ہر چیز پر قادر۔

قادر وہ ذات ہے کہ جس کا حکم بغیر کسی واسطے کے نافذ ہو اور اس کے نفاذ میں وہ عاجز و بے بس ہو۔ (الزجاج)

جو چاہے کرے اور نہ چاہے تو نہ کرے۔ اس پر کسی کا زور نہیں، نہ کسی کام کے کرنے پر مجبور ہے۔ (تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۱)

معارف: اللہ تعالیٰ کا یہ نام کتاب اللہ میں (۷) مرتبہ واقع ہوا ہے، ایک مقام پر

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ﴾

(الانعام: ۶۵)

”آپ کہیے کہ وہی اس پر قادر ہے کہ تم پر تمہارے اوپر سے یا تمہارے پاؤں کے نیچے سے کوئی عذاب بھیج دے۔“

سورۃ الانعام میں ارشاد فرمایا:

﴿وَقَالُوا كُونُوا كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُكُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ شِقَاقُهُمْ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنْزِلَ آيَةً ۚ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾

(الانعام: ۳۷)

”اور وہ کہتے ہیں کہ اس کے رب کی جانب سے اس پر کوئی نشانی کیوں نہیں اتاری گئی ہے، آپ کہہ دیجیے کہ اللہ بے شک کوئی بھی نشانی نازل کرنے پر قادر ہے، لیکن ان میں سے اکثر لوگ کچھ بھی نہیں جانتے۔“

”قادر“ وہی ہے جو مردوں کو دوبارہ زندہ کرے گا۔

﴿أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَدِيرٍ ۚ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْوُفُؤَ ۚ﴾ (القیامۃ: ۴۰)

”کیا وہ اللہ اس کی قدرت نہیں رکھتا کہ وہ مردوں کو دوبارہ زندہ کرے۔“

قادر وہی ہے جو آسمانوں اور زمین کا خالق ہے اور صغیر الجسم انسان کو دوبارہ پیدا کرے گا۔

﴿أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ ۚ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ﴾

(یس: ۸۱)

”کیا وہ اللہ جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے اس بات پر قادر نہیں ہے

کہ وہ ان جیسے آدمی دوبارہ پیدا کرے، ہاں! (وہ یقیناً قادر ہے) اور وہ بڑا پیدا

کرنے والا، ہر بات جاننے والا ہے۔“

سورة المؤمنون میں ارشاد فرمایا:

﴿وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنْتُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَ إِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ الْقُدْرُونَ﴾ (المؤمنون: ۱۸)

”اور ہم آسمان سے مناسب مقدار میں بارش برساتے ہیں، پھر اسے زمین میں ٹھہرا دیتے ہیں، اور بے شک ہم اسے غائب کر دینے پر بھی قادر ہیں۔“
اس کی قدرت، اس کا اندازہ بہترین اندازہ و قدرت ہے۔

﴿فَقَدَرْنَا ۖ فَنَقَعَهُ الْقُدْرُونَ ۝﴾ (المرسلات: ۲۳)

”پھر ہم نے مناسب اندازہ لگایا، تو ہم بہت ہی بہتر اندازہ لگانے والے ہیں۔“

۶۳۔ الْقَاهِرُ

معانی:..... غالب و زبردست طاقتور۔

قہر کے معنی غلبہ و چیرگی ہیں اور قاہر پہاڑ کی بلند ترین چوٹی کو کہہ دیا کرتے ہیں۔

(اسماء الحسنی، ص: ۲۲۲)

معارف:..... یہ اسم مبارک قرآن کریم میں (۲) مرتبہ وارد ہوا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝﴾ (الانعام: ۱۸)

”اور وہ اپنے بندہ پر غالب ہے، اور وہ بڑی حکمتوں والا، پوری خبر رکھنے

والا ہے۔“

آسمانوں اور زمین میں تمام مخلوقات کی گردنیں اس کے لیے جھکی ہوئی ہیں، وہ ہر چیز پر غالب ہے۔ تمام مخلوقات اس کی عظمت و جلال اور قہر و جبروت کی معترف اور اس کے فیصلہ کے سامنے مجبور ہیں۔

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۝﴾ (الانعام: ۶۱)

”اور وہ اپنے بندوں پر پوری طرح غالب ہے، اور وہ تم پر نگران فرشتے

بھیجتا ہے۔“

اس اسم سے تخلیق پیدا کرنے والوں کو دشمنانِ اسلام کے خلاف غلبہ و طاقت کا استعمال کرنا ہوگا۔

جباری و قہاری و قدوسی و جبروت

یہ چار عناصر ہوں تو بنتا ہے مسلمان

۶۴۔ الْقُدُّوسُ

معانی:..... عیوب و نقائص سے پاک۔

جو ہر عیب اور نقص سے پاک ہے۔ ایسی پاکی جو انسانی تصور سے بالا ہو۔ (الغزالی)

اور برکت والا۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۷۴)

معارف:..... یہ پاکیزہ نام قرآن میں (۲) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ أَلَمَلِكُ الْقُدُّوسُ﴾ (الحشر: ۲۳)

”وہ اللہ ہے جس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، وہ شہنشاہ ہے، ہر عیب سے

پاک ہے۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ الْعَزِيزُ

الْحَكِيمُ﴾ (الجمعة: ۱)

”جتنی چیزیں آسمانوں میں ہیں اور جتنی زمین میں، سب اللہ کی پاکی بیان کرتی

ہیں جو بادشاہ ہے، ہر نقص و عیب سے یکسر پاک ہے، زبردست ہے، بڑی

حکمتوں والا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱۔ اے المؤمنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ احمد مجتبیٰ رضی اللہ عنہ اپنے رکوع اور سجدے

میں یہ کہتے تھے:

((سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ)) ❶

”بہت پاکیزگی والا، نہایت مقدس ہے تمام فرشتوں اور روح یعنی جبریل کا رب۔“

۲۔ وتروں کے بعد تین دفعہ یہ ذکر کیا جائے۔ ((سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ)) ❷

”پاک ہے وہ بادشاہ، نہایت پاک۔“

۶۵۔ الْقَدِيرُ

معانی:..... طاقتور

قدر سے ہے۔ قدر کے معنی اندازہ اور طاقت و قدرت کے ہیں۔

(اسماء الحسنیٰ، ص: ۲۰۰)

معارف: یہ نام مبارک (۴۵) مرتبہ واقع ہوا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (البقرہ: ۲۰)

”بے شک اللہ ہر چیز پر قدرت رکھنے والا ہے۔“

”قادر و قدیر“ وہی ہے جو چاہے تو انسان کی ظاہری قوت سماعت و بصارت بھی چھین لے۔

﴿وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيرٌ﴾ (البقرہ: ۲۰)

”اور اگر اللہ چاہتا تو ان کے کان اور ان کی آنکھوں کو لے جاتا بے شک اللہ ہر

چیز پر قدرت رکھنے والا ہے۔“

سورۃ الملک میں ارشاد فرمایا:

❶ صحیح مسلم، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۸۴۷۔

❷ سنن ابوداؤد، باب فی الدعاء بعد الوتر، رقم: ۱۴۳۰۔ شیخ البانی رحمہ اللہ نے اس کو ”صحیح“ کہا ہے۔

﴿تَبَرَّكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

(الملک: ۱)

”بے حساب برکتوں والا ہے وہ (اللہ) جس کے ہاتھ میں (سارے جہان کی) بادشاہی ہے، اور وہ ہر چیز پر قدرت رکھنے والا ہے۔“

قدرت الہی کے نمونے:

ذیل میں دی گئی آیات کریمہ سے قدرت الہی کے نمونے دیکھئے اور اپنے ایمان کو تازگی بخشئے:

۱۔ لفظ ”کن“ سے جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ﴾ (یس: ۸۲)

”اس کی شان تو یہ کہ جب وہ کسی چیز کا ارادہ کرتا ہے تو اس سے کہتا ہے ”ہو جا“ اور وہ چیز ہو جاتی ہے۔“

اللہ تعالیٰ کے عظیم و برتر اور قادر ہونے کی دلیل یہ بھی ہے کہ وہ لفظ ”کن“ سے جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے۔

۲۔ بانجھ عورت سے بچہ پیدا کرتا ہے:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قَالَ رَبِّ اِنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِي عَاقِرٌ قَالَ

كَذٰلِكَ اللهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ﴾ (آل عمران: ۴۰)

”زکریا نے کہا، اے میرے رب! مجھے لڑکا کیسے ہو سکتا ہے جبکہ میں بوڑھا ہو چکا ہوں، اور میری بیوی بانجھ ہے؟ کہا، اسی طرح اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے۔“

جب سیدنا زکریا علیہ السلام کو یقین ہو گیا کہ اللہ انھیں بیٹا عطا کرے گا، تو ظاہری حالات کے

پیش نظر تعجب کرنے لگے، اور کہنے لگے کہ اے میرے رب! مجھے لڑکا کیسے ہوگا، میں تو بوڑھا ہو چکا ہوں، اور میری بیوی بانجھ ہے، تو اللہ نے فرمایا کہ تم اور تمہاری بیوی جس حال میں ہو اسی حال میں لڑکا پیدا ہوگا، اس لیے کہ اللہ کسی ظاہری سبب کا محتاج نہیں، اسے کوئی چیز عاجز نہیں کر سکتی اور اس کے نزدیک کوئی بات بھی بڑی نہیں ہے۔

۳۔ بے موسے پھل عطا کر سکتا ہے:

ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلًّا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَمْرِئُؤُا۟نِىٰ لَئِىۤنِ لِّكَ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۳۷﴾

(آل عمران: ۳۷)

”تو اس کے رب نے اُسے شرف قبولیت بخشا، اور اُس کی اچھی نشوونما کی، اور زکریا کو اس کا کفیل بنایا، جب بھی زکریا اُس کے پاس محراب میں جاتے، اُس کے پاس کھانے کی چیزیں پاتے، وہ پوچھتے کہ اے مریم! یہ چیزیں کہاں سے تیرے لیے آئی ہیں، وہ کہتے ہیں کہ یہ اللہ کے پاس سے آئی ہیں، بے شک اللہ جسے چاہتا ہے بے حساب روزی عطا کرتا ہے۔“

مفسرین نے لکھا ہے کہ جب بھی سیدنا زکریا علیہ السلام سیدہ مریم صدیقہ علیہا السلام کے پاس جاتے تو موسم سرما کا پھل موسم گرما میں، اور گرما کا سرما میں پاتے تھے۔ آیت کریمہ میں اشارہ ہے کہ سیدہ مریم علیہا السلام دن رات عبادت میں لگی رہتی تھیں، اور محراب سے صرف بشری تقاضوں کے لیے ہی نکلتی تھیں۔

اس آیت کریمہ میں دلیل ہے کہ اللہ کے دوستوں کے ذریعہ کرامات صادر ہوتے ہیں۔ اس کی تصدیق سیدنا خبیب بن عدی انصاری رضی اللہ عنہ کے واقعہ سے بھی ہوتی ہے، جنہیں مکہ مکرمہ میں کافروں نے شہید کر دیا تھا، اور جن کے پاس قید کے زمانے میں انگوڑا ملا

کرتے تھے۔ ①

اللہ کا دوست وہی ہوگا جو پابند شریعت، قرآن و سنت کا متبع اور بدعات و خرافات سے ہزاروں کوس دور ہوگا، اور جس کے بارے میں قرآن و سنت کے متبع علماء اور فضلاء اس بات کی گواہی دیں کہ وہ عقیدہ صحیحہ اور دین خالص کے ساتھ تمام شرائع اسلامیہ کا پابند ہے۔ مشرک، بدعتی قرآن و سنت سے دور اور عمل صالح میں کوتاہ کبھی بھی اللہ کا ولی نہیں ہو سکتا، اور ایسے لوگوں سے جن خرقہ عادت اُمور کا ظہور ہوتا ہے وہ جادو اور شیطانی عمل کا نتیجہ ہوتا ہے۔ مسلمانوں کو ایسے لوگوں سے ہوشیار رہنا چاہیے۔

۴۔ اصحاب کہف کو تین سو نو سال سلانا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَكَيْفُؤُا۟ فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِا۟ةٍ سِنِي۟نٍ وَّاٰزْدَادُو۟ا۟ تِسْعًا ۖ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَيْفُؤُا۟ لَّهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَاَلْاَرْضِ ؕ اَبْصُرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوۡنِهٖ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِي۟ حُكْمِهٖۭ اَحَدًا ۖ﴾ (الکھف: ۲۵ تا ۲۶)

”وہ نو جوان اپنے غار میں تین سو سال اور مزید نو سال رہے۔ آپ کہہ دیجیے کہ ان کے اس حال میں رہنے کی مدت کو اللہ زیادہ جانتا ہے، آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتوں کو صرف وہی جانتا ہے، وہ کیا خوب دیکھنے والا اور کیا خوب سننے والا ہے۔ بندوں کا اس کے سوا کوئی کارساز نہیں، اور وہ اپنے حکم میں کسی کو شریک نہیں کرتا ہے۔“

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ اس آیت کریمہ میں اللہ تعالیٰ نے اس پوری مدت کی خبر دی ہے جس میں اصحاب کہف سوئے رہے تھے۔ وہ شمسی حساب سے تین سو سال اور قمری حساب سے تین سو نو سال کی مدت تھی۔ اسی لیے کہ ہر شمسی سو سال، قمری ایک سو تین سال کے برابر ہوتا ہے۔ یہ ان کے سوئے رہنے کی مدت تھی، لیکن بیدار ہونے کے بعد انھیں موت

آنے تک یا نزول قرآن تک کتنی مدت تھی، اس کا علم صرف اللہ کو ہے۔ اس لیے کہ آسمانوں اور زمین کی غیبی باتوں کا علم صرف اسی کو ہے۔ وہ چیز کو خوب دیکھ رہا ہے، اور ہر آواز کو خوب سن رہا ہے، اس کے علاوہ بندوں کا کوئی حقیقی یار و مددگار نہیں۔ اس نے سارے جہان کی تخلیق اور اس کی تدبیر میں کسی کو اپنا شریک نہیں بنایا ہے، نہ اس کا کوئی وزیر ہے، نہ ہی کوئی مشیر، وہ تمام نقائص سے برتر و بالا اور پاک ہے۔

۵۔ بغیر باپ کے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی پیدائش:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَ لَمْ يَنْسَسْنِي بَشَرٌ وَ لَمْ أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّئٌ ۖ وَلِنَجْعَلَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَ رَحْمَةً مِّنَّا وَ كَانْ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ۖ﴾ (مریم: ۲۰ تا ۲۱)

”مریم نے کہا مجھے لڑکا کیسے ہوگا، جبکہ مجھے کسی انسان نے نہیں چھوا ہے، اور میں بدکار بھی نہیں ہوں۔ (جبریل نے) کہا، ایسا ہی ہوگا، تمہارا رب کہتا ہے کہ یہ کام میرے لیے آسان ہے، اور تاکہ ہم اسے لوگوں کے لیے (اپنی قدرت کی) ایک نشانی اور رحمت بنائیں، اور یہ ایک ایسی بات ہے جس کا فیصلہ ہو چکا ہے۔“

سیدہ مریم علیہا السلام کو اس خبر سے بہت زیادہ تعجب ہوا، کہنے لگیں کہ مجھے لڑکا کیسے ہوگا، نہ میرا کوئی شوہر ہے اور نہ ہی میں کوئی بدکار عورت ہوں؟ جبریل علیہ السلام نے کہا: ہاں، ایسا ہی ہوگا، اگرچہ تمہارا کوئی شوہر نہیں اور تم کوئی بدکار عورت بھی نہیں ہو، اس لیے کہ تمہارا رب ہر چیز پر قادر ہے، وہ کہتا ہے ایسا کرنا میرے لیے بہت ہی آسان ہے۔ اس نے آدم کو بغیر ماں باپ کے پیدا کیا، اور حوا کو صرف مرد سے پیدا کیا، اور باقی ذریت آدم کو ماں باپ کے ذریعے پیدا کیا، سوائے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کے جنہیں اللہ نے بغیر باپ کے پیدا کیا۔ اور اس طرح تخلیق انسان کے چاروں طریقے اختیار کر کے اللہ نے انسانوں کی ہدایت کے لیے اپنی عظیم قدرت

اور بے مثال عظمت کی قطعی دلیل پیش کر دی۔ اور اللہ نے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کو ان کی قوم کے لیے رحمت بنایا تھا، جیسا کہ ہر نبی اپنی قوم کے لیے رحمت ہوتا ہے۔ چنانچہ وہ اپنی قوم کو توحید الہی اور صرف ایک اللہ کی عبادت کی تعلیم دینے لگے۔ آخر میں جبریل علیہ السلام نے مریم سے کہا کہ ایسا ہونا اللہ کے علم میں مقدر ہو چکا ہے، ایسا ہو کر رہے گا۔

۶۔ سیدنا یونس علیہ السلام کو مچھلی کے پیٹ میں زندہ رکھا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ۖ وَكَذَلِكَ نُثَبِّتُ الْيُسُفَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝﴾ (الانبیاء: ۸۷ تا ۸۸)

”اور یونس جب اپنی قوم سے ناراض ہو کر چل دیے، تو سمجھے کہ ہم ان پر قابو نہیں پائیں گے، پس انھوں نے تاریکیوں میں اپنے رب کو پکارا کہ تیرے سوا کوئی معبود نہیں ہے تو تمام عیوب سے پاک ہے، میں بے شک ظالم تھا، تو ہم نے ان کی دعا قبول کر لی اور ان کو غم سے نجات دی، اور ہم مومنوں کو اسی طرح نجات دیتے ہیں۔“

ان آیات کریمہ کی روشنی میں پتہ چلتا ہے کہ سیدنا یونس علیہ السلام کو جب مچھلی نے نگل لیا، تو وہ تین دن یا اس سے زیادہ دن مچھلی کے پیٹ میں زندہ رہے، پھر اللہ تعالیٰ سے دعا کی تو اللہ نے ان کی دعا قبول کر لی اور مچھلی نے ساحل پر آ کر اپنے پیٹ سے انھیں باہر کر دیا۔ مچھلی کے پیٹ میں ان کا زندہ رہنا اللہ تعالیٰ کے الہ العالمین ہونے کی بہت بڑی نشانی ہے۔

۷۔ کھجور کی گٹھلی اور انسانیت کی بے بسی:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿يُولِجُ اللَّيْلُ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارُ فِي اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذِكُّكُمْ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ الْمُلْكُ ۖ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ يَكْفُرُونَ ۚ﴾

دُونِهِ مَا يَلْكُونُ مِنْ قُطْبِيٍّ ﴿١٣﴾ (الفاطر: ١٣)

”وہ رات کو دن میں داخل کرتا ہے، اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے، اور اس نے آفتاب و ماہتاب کو اپنے حکم کے تابع بنا رکھا ہے، ہر ایک اپنے مقرر وقت تک چلتا رہتا ہے، وہی اللہ تمہارا رب ہے، اسی کی بادشاہی ہے، اور اس کے سوا جنہیں تم پکارتے ہو وہ کھجور کی گٹھلی کی جھلی کے بھی مالک نہیں ہیں۔“

اس آیت کریمہ میں اللہ رب العزت نے اپنے مظاہر قدرت و علم و حکمت اور بندوں کے ساتھ اپنے لطف و کرم کے بیان کے ساتھ، تمام جہان والوں کے لیے اعلان کر دیا کہ وہی قادرِ مطلق سب کا رب اور مالکِ کل ہے، اور مشرکین اس کے سوا جن معبودوں کو پکارتے ہیں وہ تو ایک تنکے کے بھی مالک نہیں ہیں۔ وہ اگر انھیں پکاریں گے تو ان کی پکار کا جواب نہیں دیں گے، اس لیے کہ وہ بے جان ہیں، اور اگر بفرض محال سن بھی لیں، تو تمہیں کوئی فائدہ نہیں پہنچا سکتے ہیں، کیونکہ وہ نفع و نقصان کی ایک ذرہ کے برابر بھی قدرت نہیں رکھتے ہیں، اور قیامت کے دن تو وہ اپنے معبود ہونے اور اس بات کا قطعی طور پر انکار کر دیں گے کہ مشرکین ان کی پرستش کرتے تھے، یا وہ ان کی پرستش پر راضی تھے۔

۸۔ مکھی کی تخلیق تو کیا، مکھی کی چھینی چیز کو واپس لانے میں انسانیت کی بے بسی:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضَرِبْ مَثَلٌ ۖ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا ۚ وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۚ وَإِنْ يَسْأَلْهُمْ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ۚ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَكَهَّيْ عَزِيزٌ ۝﴾ (الحج: ۷۳ تا ۷۴)

”اے لوگو! ایک مثال بیان کی جاتی ہے، جسے غور سے سنو، اللہ کے سوا جن معبودوں کو تم پکارتے ہو وہ ایک مکھی بھی پیدا نہیں کر سکتے ہیں، چاہے اس کے لیے سبھی اکٹھے ہو جائیں، اور اگر مکھی اُن سے کوئی چیز چھین لے، تو اس سے وہ

چیز چھڑا نہیں سکتے، چاہنے والا اور جسے چاہا جا رہا ہے، دونوں کمزور ہیں۔“
اس آیت کریمہ میں معبودانِ باطلہ کی حقارت بیان کی جا رہی ہے، اور ان کے پجاریوں کی عقلوں پر ماتم کیا جا رہا ہے کہ ذرا ہوش کے ناخن تو لو، اور غور تو کرو کہ جن کی تم اللہ کے علاوہ پوجا کرتے ہو، وہ تمام اکٹھے ہو کر ایک مکھی بھی تخلیق نہیں کر سکتے ہیں جو اللہ کی حقیر ترین مخلوق ہے، اور وہ حقیر ترین مخلوق اگر ان سے کوئی چیز چھین کر لے جائے تو اُسے وہ واپس نہیں لے سکتے ہیں۔ درحقیقت تمہارے معبودانِ باطل اور مکھی دونوں ہی حقیر اور کمزور ہیں۔ بلکہ تمہارے معبود تو زیادہ حقیر اور کمزور ہیں کہ وہ اپنے آپ سے مکھی کو بھی نہیں بھگا سکتے ہیں۔

۹۔ مشرک کی مثال مکڑی اور اس کے جالے کی اور معبودانِ باطل کی بے بسی:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۚ اتَّخَذَتْ

بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝﴾

(العنکبوت: ۴۱)

”جو لوگ اللہ کے سوا دوسروں کو اپنا کارساز بنا لیتے ہیں، ان کی مثال مکڑی کی ہے جو اپنا ایک گھر بناتی ہے، اور سب سے کمزور گھر مکڑی کا ہوتا ہے، کاش کہ وہ اس بات کو سمجھتے۔“

اس آیت کریمہ میں اللہ تعالیٰ نے ”شُرک“ کی شناعیت و قباحیت کو ایک مثال کے ذریعہ واضح کیا کہ جو لوگ اللہ کے سوا غیروں کو اپنا یار و مددگار مانتے ہیں اور ان کے سامنے سرسجود ہوتے ہیں، ان کی مثال مکڑی اور اس کے بنے جالے کی ہے۔ مکڑی اپنا جالا اپنے ارد گرد بن کر سمجھتی ہے کہ اب وہ سردی گرمی اور ہر دشمن سے محفوظ ہے، لیکن وہ جالا کتنا کمزور ہوتا ہے، اس سے ہر کوئی باخبر ہے۔ یہی حال مشرکوں اور ان کے اولیاء کا ہے، وہ سمجھتے ہیں کہ یہ اصنام ان کے نفع و نقصان کے مالک و مختار ہیں، حالانکہ ان کی بے بضاعتی، بے بسی اور کمزوری کا جو حال ہے، اس سے کوئی بھی بے خبر نہیں کہ اگر مکھی بھی ان بتوں پر بیٹھ جائے تو

اسے دور ہٹانے کی ان کے اندر سکت نہیں۔ اور یہ بات اتنی واضح ہے کہ ادنیٰ عقل کا انسان بھی اسے سمجھتا ہے، لیکن شرک نے ان کی عقلوں پر پردہ ڈال دیا ہے، لہذا ان کو کچھ بھی سمجھ نہیں آتا ہے۔

۱۰۔ معبودانِ باطلہ کی بے بسی کہ وہ ایک ذرہ کے بھی مالک نہیں:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ شَرْكٍ وَمَا لَكُمْ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ۝﴾

(سبا: ۲۲)

”اے میرے نبی! آپ مشرکوں سے کہیے کہ جنہیں تم اللہ کے سوا معبود بنا بیٹھے ہو انہیں پکارو تو سہی، وہ تو آسمانوں اور زمین میں ایک ذرہ کے برابر چیز کے بھی مالک نہیں ہیں، اور نہ ان دونوں کی تخلیق میں ان کا کوئی حصہ ہے، اور نہ لوگوں میں سے کوئی اس کا مددگار ہے۔“

اللہ عزوجل نے رسول اللہ ﷺ کی زبانِ اقدس پر تمام کفار سے بالخصوص فرمایا کہ جن بتوں کو اللہ کے سوا تم نے اپنا معبود سمجھ رکھا ہے ذرا انہیں پکارو تو سہی، کیا وہ تمہاری پکار کا جواب دیتے ہیں۔ جواب یقیناً نفی میں ہوگا، اس لیے کہ وہ پتھر کی بے جان مورتیاں ہیں، آسمانوں اور زمین میں پائی جانے والی چیزوں میں سے ایک ذرہ کے بھی مالک نہیں ہیں، نہ ہی ان کی تخلیق و ملکیت میں وہ اللہ کے کسی بھی حیثیت سے شریک ہیں، اور نہ کارہائے کائنات کے چلانے میں اللہ تعالیٰ کو ان کی مدد و نصرت کی ضرورت ہے۔ مفسرین لکھتے ہیں کہ جب ان کی عاجزی اور بے بسی اس حد کو پہنچی ہوئی ہے تو اللہ تعالیٰ کی طرح انہیں پکارنا اور ان سے امید لگانا کہاں کی عقلمندی ہے۔

۱۱۔ معبودانِ باطلہ کی بے بسی کہ انہیں کچھ خبر نہیں کہ قبروں سے مردے کب اُٹھائے جائیں گے:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّٰنَ يُبْعَثُوْنَ ۝ۙ بَلْ اِذْكُرْ عَلَيْهِمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝ۙ﴾ (النمل: ۶۵ تا ۶۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ آسمانوں اور زمین میں جتنی مخلوقات ہیں، ان میں سے کوئی بھی اللہ تعالیٰ کے سوا غیب کی باتیں نہیں جانتا ہے، اور نہ انھیں معلوم ہے کہ وہ دوبارہ کب اٹھائے جائیں گے۔ بلکہ آخرت کے بارے میں ان کا علم یکسر عاجز ہے، بلکہ وہ اس کے بارے میں شک میں مبتلا ہیں، بلکہ اس سے اندھے ہیں۔“

اللہ تعالیٰ نے مشرکین مکہ سے جو الزامی باتیں کیں، ان میں سے یہ بھی ہے کہ نبی امور کا علم آسمانوں اور زمین میں بسنے والی تمام مخلوقات میں سے کسی کو نہیں ہے، اُن کا علم تو صرف اللہ تعالیٰ کو ہے۔

قیامت کب آئے گی اور قبروں سے مُردے کب اُٹھائے جائیں گے، اس کا علم بھی اللہ کے سوا کسی کو نہیں ہے۔ اور جن معبودوں کی تم پوجا کرتے ہو، انہیں تو کچھ بھی خبر نہیں کہ قیامت کب آئے گی، اور کب وہ اپنے خالق کے سامنے حساب کے لیے کھڑے ہوں گے۔ اس لیے وہ معبود کیسے ہو سکتے ہیں۔ اگر وہ معبود ہوتے تو انہیں قیامت کی خبر ضرور ہوتی، حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ نے ﴿بَلْ اِذْكُرْ عَلَيْهِمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ﴾ کا معنی یہ کیا ہے کہ لوگوں کا علم قیامت کا وقت جاننے سے عاجز ہو گیا۔ (تفسیر ابن کثیر، تحت الآیۃ)

۱۲۔ معبودانِ باطلہ کی بے بسی کہ وہ کسی موت و حیات کے مالک و مختار نہیں:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِہِ الْہٰٓٔةَ لَا یَخْلُقُوْنَ شَیْئًا ۚ وَ هُمْ یُخْلَقُوْنَ ۚ وَ لَا یَمْلِكُوْنَ

لَا أَنْفُسَهُمْ ضَرَّاءٌ وَلَا نَفْعًا وَلَا يَبْلُكُونُ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً وَلَا نُشُورًا ﴿١٠﴾

(الفرقان: ۳)

”اور مشرکوں نے اللہ کے سوا بہت سے معبود بنالیے ہیں جو کسی چیز کو پیدا نہیں کرتے ہیں، بلکہ وہ خود پیدا کیے گئے ہیں، اور اپنے لیے کسی نفع اور نقصان کا اختیار نہیں رکھتے، اور نہ موت، اور نہ زندگی، اور نہ دوبارہ زندہ کرنا ان کے اختیار میں ہے۔“

اس آیت کریمہ میں بتلایا گیا ہے وہ لوگ مشرک ہیں جو معبودِ حقیقی اور مالکِ کل و مختارِ کل کو چھوڑ کر غیروں کو اپنا معبود تصور کرتے ہیں جو کوئی چیز نہیں پیدا کر سکتے ہیں، اور اپنے لیے کسی نفع و نقصان کا اختیار نہیں رکھتے ہیں، چہ جائیکہ وہ اپنی پوجا کرنے والوں کو نفع یا نقصان پہنچا سکیں۔ اور نہ وہ کسی کو زندگی دے سکتے ہیں نہ ہی موت، اور نہ مرجانے کے بعد دوبارہ کسی کو زندہ کر سکتے ہیں۔ ان سب قدرتوں کا مالک صرف اللہ ہے، اس لیے وہی عبادت کا مستحق ہے، مشرکین اپنی عقل پر ماتم کیوں نہیں کرتے کہ اتنی صاف ستھری بات ان کے دماغ میں نہیں آتی ہے۔

۱۳۔ معبودانِ باطل کی بے کسی کہ وہ اپنی عبادت کرنے والوں کی ادنیٰ مانگ بھی پوری نہیں کر سکتی:

ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَّيْهِ إِلَى السَّمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دَعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ﴾ (الرعد: ۱۴)

”صرف اسی کو پکارنا حق ہے، اور جو لوگ اس کے سوا دوسروں کو پکارتے ہیں، وہ ان کی کوئی حاجت پوری نہیں کرتے ہیں، ان کی حالت اس آدمی کی ہے جو اپنے دونوں ہاتھ پانی کی طرف پھیلائے، تاکہ اس کے منہ تک پہنچ جائے،

حالانکہ وہ کبھی بھی نہیں پہنچ سکتا، اور کافروں کا اپنے معبودوں کو پکارنا رنگاں ہی جاتا ہے۔“

اس آیت کریمہ میں بتلایا گیا ہے کہ جو لوگ غیروں کی پوجا کرتے ہیں، ان کی مثال اس آدمی کی ہے جو اپنے دونوں ہاتھ پانی کی طرف بڑھائے تاکہ اس کے منہ تک پہنچ جائے، لیکن پانی اس کی پیاس کو محسوس نہیں کرتا اور نہ ہی دیکھ پاتا ہے کہ کوئی اپنے ہاتھ اس کے سامنے پھیلائے ہوئے ہے، اس لیے وہ نہ اس کی فریاد سن پاتا ہے اور نہ اس کے منہ تک پہنچتا ہے۔ معبودانِ باطلہ کا حال بھی ایسا ہی ہے، وہ اپنی عبادت کرنے والوں کی ادنیٰ پکار کا بھی جواب نہیں دے پاتے ہیں اور نہ ان کی حاجت کو پورا کر سکتے ہیں۔

۱۴۔ صفاتِ الہیہ کا شمار اور انسانیت کی بے بسی:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكَفَيْتُ رَبِّي لِنَفْعِ الْبَحْرِ قَبْلَ أَنْ تَنْفَعَا كَلِمَتُ رَبِّي وَكُوْنُجْنَا بِسُبُلِهِ مَدَدًا ۝﴾ (الكهف: ۱۰۹)

”آپ کہہ دیجیے کہ اگر میرے رب کے کلمات لکھنے کے لیے سارا سمندر روشنائی بن جائے، تو میرے رب کے کلمات ختم ہونے سے پہلے سمندر خشک ہو جائے گا، چاہے مدد کے لیے ہم اسی جیسا اور سمندر لے آئیں۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمْدُكُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝﴾ (لقمان: ۲۷)

”اور زمین میں جتنے درخت ہیں اگر وہ سب قلم بن جائیں، اور سمندر روشنائی بن جائے، اور اس کے بعد مزید سات سمندر اس کی مدد کریں تو بھی اللہ کے کلمات ختم نہیں ہوں گے، بے شک اللہ بڑا زبردست اور حکمت والا ہے۔“

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ لکھتے ہیں: (آیت کا شانِ نزول دلیل ہے کہ یہ مدینہ میں نازل

ہوئی تھی) جس میں نبی کریم ﷺ کے جواب کی تائید تھی کہ اگر زمین کے سارے درخت کاٹ کر قلم بنائے جائیں اور بحر محیط اور اس جیسے دوسرے سات سمندروں کا پانی بطور روشنائی استعمال کیا جائے اور اللہ کا کلام لکھا جائے تو سارے درخت اور سارے سمندروں کا پانی ختم ہو جائے اور اللہ کا کلام ختم نہ ہو۔ (تفسیر ابن کثیر، تحت الآیۃ)

اسم ”قدیر“ کے ذریعے دعا:

۱۔ ((رَبِّ اغْفِرْ لِيْ خَطِيئَتِيْ وَ جَهْلِيْ وَ اِسْرَافِيْ فِيْ اَمْرِيْ كُلِّهِ ،
وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّي ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطَايَايَ وَ عَمَدِيْ وَ
جَهْلِيْ وَ هَزْلِيْ وَ كُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ . اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَ
مَا اَخَّرْتُ وَ مَا اَسْرَرْتُ وَ مَا اَعْلَنْتُ ، اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَ اَنْتَ
الْمُؤَخِّرُ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ)) ❶

”میرے رب! میری خطا، میری نادانی اور تمام معاملات میں میرے حد سے تجاوز کرنے میں میری مغفرت فرما، اور وہ گناہ بھی جن کو تو مجھ سے زیادہ جاننے والا ہے۔ اے اللہ! میری مغفرت کر، میری خطاؤں میں، میرے بالا ارادہ اور بلا ارادہ کاموں اور میرے ہنسی مزاح کے کاموں میں اور یہ سب میری ہی طرف سے ہیں۔ اے اللہ! میری مغفرت کر ان کاموں میں جو میں کر چکا ہوں اور جو کروں گا اور جنہیں میں نے ظاہر کیا ہے، تو ہی سب سے پہلے ہے اور تو ہی سب سے بعد میں ہے اور تو ہر چیز پر قدرت رکھنے والا ہے۔“

۲۔ ((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ .))

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اسی کے لیے ملکیت ہے اور اس کے لیے تعریف ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح

❶ سنن ابو داؤد، باب مقدار الركوع والسجود، رقم: ۸۸۵۔ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

قدرت رکھنے والا ہے۔“

فضیلت: سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: جس نے نماز کے بعد (یہ ایک مرتبہ) کہا تو اس کے سارے گناہ (خواہ سمندر کے جھاگ کے برابر ہی کیوں نہ ہوں) معاف کر دیے گئے۔^①

۳۔ ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.))

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اسی کے لیے ملکیت ہے اور اس کے لیے تعریف ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔“

فضیلت: جو شخص صبح کے وقت سو مرتبہ یہ دعا پڑھے گا، اسے دس غلام آزاد کرنے کے برابر ثواب ملے گا، ایک سونکیاں اس کے نامہ اعمال میں لکھی جائیں گی اور اس کے ایک سو گناہ مٹا دیے جائیں گے، اور ان الفاظ کی برکت سے اس دن شام تک وہ شیطان سے محفوظ رہے گا اور کوئی شخص اس سے افضل عمل لے کر نہیں آئے گا۔ تاہم اگر کوئی شخص سو سے زیادہ دفعہ پڑھے۔^②

۴۔ یوم عرفہ (۹ ذوالحجہ) اور میدانِ عرفات قبولیت دعا کا بہترین دن اور بہترین جگہ ہیں۔ اس دن کی بہترین دعا جو نبی کریم ﷺ کے علاوہ تمام انبیاء کرام علیہم السلام نے مانگی، یہی ہے۔

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.))

① صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۰۲۔

② صحیح بخاری، کتاب الدعوات، رقم: ۶۴۰۳۔ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء،

رقم: ۶۹۰۸۔ صحیح الترغیب: ۲۷۲/۱۔

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اسی کے لیے ملکیت ہے اور اس کے لیے تعریف ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔“^①

۶۶۔ الْقَرِیْبُ

معانی:..... انتہائی قریب و نزدیک۔

معارف:..... قرآن کریم میں یہ نام تین جگہ پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَإِذْ أَسْأَلُكَ عَبْدًا ذِي عَيْنَيْنِ قَرِیْبٌ﴾ (البقرہ: ۱۸۶)

”اور (اے نبی!) اگر آپ سے میرے بندے میرے بارے میں پوچھیں، تو آپ کہہ دیجیے کہ میں قریب ہوں۔“

ابن جریر اور ابن ابی حاتم نے روایت کی ہے کہ ایک آدمی رسول اللہ ﷺ کے پاس آیا اور پوچھا کہ اے اللہ کے رسول! کیا ہمارا رب قریب ہے تاکہ ہم اس سے سرگوشی کریں، یا دُور ہے تاکہ اسے پکاریں؟ نبی کریم ﷺ خاموش رہے، یہاں تک کہ یہ آیت نازل ہوئی۔ اللہ اپنے بندوں سے ”قریب“ ہے، اس لیے کہ وہ ”زقیب“ ہے، ”شہید“ ہے، طاہر و پوشیدہ کو جانتا ہے، دلوں کے بھید جانتا ہے، اس لیے وہ اپنے پکارنے والوں سے قریب ہے، ان کی پکار سنتا ہے۔

سیدنا ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ ہم ایک سفر میں رسول اللہ ﷺ کے ساتھ تھے۔ جب ہم کسی وادی میں اترتے تو ”اللَّهُ أَكْبَرُ“، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ کا نعرہ زور سے لگاتے۔ تب رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((أَيُّهَا النَّاسُ اِرْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ فَإِنَّكُمْ لَا تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِیْبًا))^②

① سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۸۵۔ سلسلة الصحيحة، رقم: ۱۵۰۳۔

② صحیح بخاری، کتاب المغازی، رقم: ۴۲۰۲۔ صحیح مسلم، رقم: ۲۷۰۴۔

”اے لوگو! اپنی جانوں پر رحم کھاؤ، کیونکہ تم کسی بہرے گراں گوش یا غائب کو نہیں پکار رہے ہو، بے شک تم ”سمیع و قریب“ سننے والے، قبول کرنے والے اور قریب کو پکار رہے ہو۔“

سورۃ ق میں ارشاد فرمایا:

﴿وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ﴾ (ق: ۱۶)

”اور ہم انسان سے اس کی شہ رگ سے زیادہ قریب ہیں۔“

سورۃ الواقعہ میں ارشاد فرمایا:

﴿وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ﴾ (الواقعة: ۸۵)

”اور تمہارے بہ نسبت ہم اس سے زیادہ قریب ہوتے ہیں، لیکن تم مجھے دیکھ نہیں پاتے ہو۔“

سورۃ ہود میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ﴾ (ہود: ۶۱)

”بے شک میرا رب قریب ہے اور دعا قبول کرتا ہے۔“

یہ الفاظ سیدنا ہود علیہ السلام نے اپنی قوم سے اس وقت ارشاد فرمائے جب وہ انہیں شرک سے توبہ کرنے اور رجوع الی اللہ کی تبلیغ کر رہے تھے، فرمایا کہ اللہ بڑا ہی قریب ہے اس کا قرب حاصل کرو، وہ اپنے بندوں کی دعاؤں کو قبول فرماتا ہے۔

﴿إِلَّا أَنْ نَصَرَ اللَّهُ قَرِيبٌ﴾ (البقرة: ۲۱۴)

”اللہ کی مدد قریب ہے۔“

”قریب“ کا قرب حاصل کرنے میں جولنت ہے، وہ دنیا و مافیہا سے بہتر ہے۔

﴿وَأَسْجُدْ وَاقْتَرِبْ﴾ (العلق: ۱۹)

”اور اپنے رب کے سامنے سجدہ کیجیے، اور اس کا قرب حاصل کیجیے۔“

صحیح مسلم میں سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے، رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثَرُوا
الدُّعَاءَ)) ❶

”بندہ اپنے رب سے سب سے زیادہ قریب حالت سجدہ میں ہوتا ہے، اس لیے
تم لوگ سجدہ میں کثرت سے دُعا کرو۔“

”قریب“ کا قرب حاصل کرنے والی مقربین کی جماعت کو روزِ قیامت اللہ تعالیٰ دنیا
کی تکلیفوں اور مصیبتوں سے ہمیشہ کے لیے آرام دے دے گا، اس پر اپنی رحمتیں نازل کرے
گا، اور اس کے قلب و روح کو سکون و راحت پہنچائے گا، اور جنت میں اسے نہایت لذیذ
روزی عطا کرے گا، اور اس جنتِ نعیم میں داخل کرے گا جسے نہ کسی آنکھ نے دیکھا ہے، نہ کسی
کان نے سنا ہے، اور نہ کسی انسان کے دل نے اس کا تصور کیا ہے۔

﴿فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ۝﴾

(الواقعة : ۸۸-۸۹)

۶۷۔ الْقَهَّارُ

معانی:..... زبردست۔

وہ زبردست ہے۔ سرکش اور دشمن پر قوت اور غلبہ سے، مخالفین پر آیات اور دلائل سے
اور عام مخلوق پر موت کے ذریعے۔ ہر موجود چیز اس کی قدرت کے آگے عاجز ہے اور اس
کے قبضہ میں ہے۔ (الزجاج والغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۷۷)

معارف:..... یہ نام مبارک (۶) مقام پر وارد ہوا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝﴾ (الرعد: ۱۶)

”آپ کہہ دیجئے کہ اللہ ہی ہر چیز کا خالق ہے، اور وہ تنہا، زبردست ہے۔“

”قہار“ وہی ہے جس پر کوئی غالب نہیں آ سکتا۔ سیدنا یوسف علیہ السلام نے اپنے جیل کے
ساتھیوں کے سامنے اپنا مضبوط عقیدہ توحید بیان کرنے کے بعد نہایت ہی حکمت و دانائی کے

ساتھ ان کی قوم کے مشرکانہ عقیدہ کی خرابی بیان کرنے کے لیے انہی سے سوال کیا کہ:

﴿يَصَاحِبِيَ السَّجْنِ ۚ أَرَبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝﴾

(یوسف: ۳۹)

”اے جیل کے ساتھیو! کیا کئی مختلف معبود اچھے ہیں یا اللہ جو ایک اور زبردست ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کو حکم دیا کہ وہ کفار قریش سے کہہ دیں کہ میں اللہ کے عذاب سے ہر اس شخص کو ڈرانے والا ہوں جو کفر کی راہ اختیار کرے گا، اور اللہ کے بجائے شیطان کی عبادت کرے گا، اور ان سے آپ یہ بھی کہہ دیں کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں ہے جو اپنی ذات و صفات اور ربوبیت و عبادت میں وحدہ لا شریک ہے، اور اپنی تمام مخلوقات پر قاہر و غالب ہے۔

﴿قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۚ وَمَا مِّنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝﴾ (ص: ۶۵)

”اے میرے نبی! آپ کہہ دیجئے کہ میں تو صرف ڈرانے والا ہوں، اور اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، جو اکیلا ہے، سب پر غالب ہے۔“

روزِ قیامت زمین و آسمان کا نقشہ ہی بدلا ہوگا، پہاڑ روئی کے گالے کی طرح اُڑ رہا ہوگا، سمندر کا پانی پھوٹ پڑے گا، اور زمین ہموار ہو جائے گی۔ آسمان کے ستارے بکھر جائیں گے اور شمس و قمر بے نور ہو جائیں گے اور لوگ اپنی قبروں سے نکل کر اللہ تعالیٰ قہار و قاہر کے سامنے حاضر ہونے کے لیے دوڑ رہے ہوں گے، تاکہ وہ انہیں ان کے اعمال کا بدلہ چکائے۔

﴿يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضُ عَيِّدَ الْأَرْضِ وَ السَّيُّوْتُ وَ بَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ

الْقَهَّارِ ۝﴾ (ابراہیم: ۴۸)

”جس دن اس سر زمین کے علاوہ کوئی اور زمین ہوگی اور آسمان بھی بدل دیے جائیں گے، اور تمام لوگ اللہ کے سامنے حاضر ہوں گے جو ایک ہے، سب پر

غالب ہے۔“

لوگ اپنے خالق کے سامنے حاضر ہوں گے، جس دن تمام لوگ اپنی قبروں سے نکل پڑیں گے، کوئی چیز انہیں اللہ جبار و قہار سے نہیں چھپائے گی، جب تمام مخلوقات کی روحيں قبض کر لی جائیں گی، اللہ کے سوا کوئی باقی نہیں رہے گا۔ اس وقت اللہ تعالیٰ تین بار کہے گا: آج بادشاہت کس کی ہے؟ پھر خود ہی جواب دے گا، اس اللہ کی ہے جو تنہا ہے اور جو ہر چیز پر قاہر و غالب ہے:

﴿يَوْمَ هُمْ بَرْزُونٌ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِّلْمَلِكِ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝﴾ (المؤمن: ۱۶)

”جس دن لوگ اپنی قبروں سے نکل کر باہر آ جائیں گے، اُن کی کوئی بات اللہ سے پوشیدہ نہیں رہے گی (اللہ کہے گا) آج کس کی بادشاہی ہے؟ (پھر خود ہی جواب دے گا) اللہ کی ہے جو اکیلا ہے، ہر چیز پر غالب ہے۔“

سیدنا ابن عمر رضی اللہ عنہما سے مروی حدیث ہے کہ اللہ تعالیٰ آسمانوں اور زمین کو لپیٹ کر اپنے ہاتھ میں لے لے گا اور فرمائے گا:

(([أَنَا الْجَبَّارُ ، أَنَا الْمُتَكَبِّرُ] ، [أَنَا الْمَلِكُ ، أَيْنَ مُلْكُ الْأَرْضِ؟] ، [أَيْنَ الْجَبَّارُونَ؟ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ؟] ❶

”میں ہوں زبردست، میں ہوں بڑائی والا، میں ہوں بادشاہ۔ کہاں ہیں زمین کے بادشاہ؟ کہاں ہیں سرکش؟ کہاں ہیں بڑائی والے۔“

اور حدیث صور میں ہے کہ اللہ عزوجل جب اپنی تمام مخلوق کی روحوں کو قبض فرمائے گا

❶ [پہلی تفسیر والے الفاظ مسند احمد: ۷۲/۲۔ السنن الكبرى للنسائی: ۴۰۲/۲، حدیث رقم:

۷۶۹۶۔ دوسری تفسیر والے الفاظ صحیح بخاری، کتاب التوحید، حدیث رقم: ۷۳۸۲۔ صحیح

مسلم، کتاب صفات المنافقین، حدیث رقم: ۲۷۸۷۔ جب کہ تیسری تفسیر والے الفاظ صحیح مسلم،

کتاب صفات المنافقین، حدیث رقم: ۲۷۸۸ میں موجود ہیں۔]

اور اس وحدہ لا شریک لہ کے سوا اس وقت کوئی نہ بچے گا تو وہ فرمائے گا آج کس کی بادشاہت ہے۔ تین بار فرمائے گا اور پھر اپنے آپ کو اس کا جواب دیتے ہوئے فرمائے گا:

﴿لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ﴾ ”اللہ کی جو اکیلا، بڑا زبردست ہے۔“ ①

یعنی وہ ذات پاک جو وحدہ لا شریک ہے، اس نے ہر چیز کو مقہور اور مغلوب کر دیا ہے۔

﴿سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝﴾ (الزمر: ۴)

”وہ تو نقص و عیب سے پاک ہے، وہ تو اللہ ہے جو اکیلا ہے، ہر چیز پر غالب ہے۔“

پس اللہ تعالیٰ کی ذات ہر نقص و عیب سے پاک ہے، اور وہ تنہا اللہ ہے جس کے قہر و جبروت کے سامنے تمام مخلوقات کی گردنیں جھکی ہوئی ہیں۔ اس اسم پاک سے تخلق پیدا کرنے والوں کو خشیت الہی کرنی بہت ضروری ہے۔ بقول اقبال ۛ

جباری و قہاری و قدوسی و جبروت
یہ چار عناصر ہوں تو بنتا ہے مسلمان
۶۸۔ الْقَوِيُّ

معانی:..... سب سے زیادہ طاقتور۔

جس کی طاقت پوری اور کامل ہو۔ (الزجاج)
کسی حال میں بھی اس پر عاجزی نہ آئے۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۸)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام (۹) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝﴾ (الحج: ۴۰)

”اور اللہ یقیناً اس کی مدد کرتا ہے جو اس کے دین کی مدد کرتے ہیں، بے شک

اللہ بڑا طاقتور، بڑا ہی زبردست ہے۔“

① الأحادیث الطوال للطبرانی، حدیث الصور، ص: ۱۰۴-۱۱۴، رقم: ۴۸.

پس جو اللہ کے دین کے لیے اٹھ کھڑا ہوتا ہے اللہ اس کی ضرور مدد کرتا ہے۔ اور اللہ پر کوئی غالب نہیں آ سکتا وہ تو نہایت قوی اور ہر حال میں غالب ہے، وہ جس کی مدد کرنی چاہے ساری دنیا مل کر اسے مغلوب نہیں کر سکتی۔

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ٥﴾

(محمد: ۷)

”اے ایمان والو! اگر تم اللہ (کے دین) کی مدد کرو گے تو وہ تمہاری مدد کرے گا، اور تمہیں ثابت قدمی عطا کرے گا۔“

فراخی رزق اور تنگی کے بھید کو وہ ”قوی“ ہی جانتا ہے۔

﴿اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ٦﴾

(الشوری: ۱۹)

”اللہ اپنے بندوں پر بڑا مہربان ہے، وہ جسے چاہتا ہے روزی دیتا ہے، اور وہ قوت والا، زبردست ہے۔“

اہل ایمان کو عذاب سے نجات دینے والا وہی ”قوی“ ہے۔

﴿فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن خِزْيِ

يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ٦٦﴾ (ہود: ۶۶)

”پس جب ہمارا عذاب آ گیا، تو ہم نے اپنی رحمت سے صالح اور ان کے مومن ساتھیوں کو نجات دے دی، اور اس دن کی ذلت سے بچا لیا، بے شک آپ کا رب ہی حقیقی قوت والا، بڑا زبردست ہے۔“

تمام قوت صرف اللہ عزوجل کے پاس ہے۔

﴿إِنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ١٦٥﴾ (البقرة: ۱۶۵)

”بے شک تمام قوت صرف اللہ کے پاس ہے۔“

اسم ”قوی“ دو مقامات پر ”شدید العقاب“ کے ساتھ اور سات مقامات پر اسم

”عزیز“ کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ)) ①

”اللہ کے سوا کوئی برائی سے بچنے کی توفیق اور نیکی کی قوت بخشنے والا نہیں۔“

فضیلت:

① سیدنا ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ مجھ سے نبی کریم ﷺ نے فرمایا: ”کیا میں تجھے ایسا کلمہ نہ بتاؤں جو جنت کے خزانوں میں سے ایک خزانہ ہے؟ تو میں نے کہا: کیوں نہیں! بلکہ اے اللہ کے رسول! ضرور بتائیے تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: تم کہا کرو: ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ))

② جناب قیس بن سعد بن عباد رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ یقیناً ان کے باپ نے انہیں نبی کریم ﷺ کی خدمت کے لیے آپ ﷺ کے پاس بھیج دیا۔ وہ بیان کرتے ہیں: نبی کریم ﷺ میرے پاس سے گزرے اور میں اس وقت نماز پڑھ چکا تھا، تو آپ ﷺ نے اپنے پاؤں مبارک سے مجھے ٹھوک لگائی اور ارشاد فرمایا: کیا میں تمہیں جنت کے دروازوں میں سے ایک دروازے کے بارے میں نہ بتلاؤں؟ تو میں نے عرض کیا: کیوں نہیں؟ تو آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ)) ③

③ سیدنا ابوالیوب انصاری رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ اسراء والی رات ابراہیم علیہ السلام کے پاس سے گزرے، تو انہوں نے دریافت فرمایا: ”اے جبریل! آپ کے ساتھ کون ہیں؟“

انہوں نے جواب دیا: یہ محمد ﷺ ہیں۔

① صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم: ۷۳۸۶۔

② سنن ترمذی، رقم: ۳۸۱۶۔ امام ترمذی نے اسے ”حسن صحیح“ اور محدث البانی نے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

سیدنا ابراہیم علیہ السلام نے آنحضرت ﷺ سے ارشاد فرمایا: اپنی امت کو حکم دیجیے، کہ وہ جنت کے پودے بکثرت لگائیں، کیونکہ اس کی مٹی پاکیزہ اور زمین وسیع ہے۔

آپ ﷺ نے پوچھا: ”جنت کے پودے کیا ہیں؟“
انہوں نے جواب دیا: ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ .)) ❶

۶۹۔ الْقِيَوْمُ

معانی:..... بذاتِ خود قائم و دائم اور سب کو قائم اور تھامنے والا۔

ہمیشہ سے قائم ہے (ممکن) بغیر کسی فنا اور زوال کے۔ اس کی قدرت سے پوری خلق کا

قیام ہے۔ (تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۰)

معارف:..... رب تعالیٰ کا یہ نام قرآن کریم میں (۳) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَعَنْتَ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ﴾ (طہ: ۱۱۱)

”اور (اُس دن) تمام چہرے اس ذات کی بارگاہ میں جھکے ہوں گے جو ہمیشہ سے زندہ ہے اور ہمیشہ زندہ رہے گا اور جس کے ذریعے آسمان و زمین کی ہر چیز قائم ہے۔“

سورة البقرة میں ارشاد فرمایا:

﴿اِنَّهُ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ (البقرة: ۲۵۵)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور ہمیشہ قائم ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے۔“

سورة آل عمران میں ارشاد فرمایا:

﴿اَلَمْ يَكُنْ اِلَهُ الْاِلَٰهَةِ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ (آل عمران: ۱-۲)

”اَلَمْ، اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور ہمیشہ قائم ہے

❶ مسند أحمد، رقم: ۲۳۵۵۲۔ الإحسان في تقريب صحيح ابن حبان، رقم: ۸۲۱۔ صحيح

الترغيب والترهيب: ۲/۲۵۰.

اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے۔“

اسم ”قیوم“ تینوں مقام پر اسم ”حی“ کے ساتھ معاً بیان ہوا ہے۔

پس اللہ تعالیٰ قائم بنفسہ ہے، تمام مخلوقات سے بے نیاز ہے، اور تمام موجودات کو اسی نے پیدا کیا ہے، اسی نے انہیں باقی بھی رکھا ہے، اور اپنے وجود و بقا کے لیے انہیں جن چیزوں کی ضرورت ہے اللہ ہی انہیں وہ چیزیں عطا کرتا ہے۔

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

(۱) ﴿اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ۚ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِى يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَاَخْفَاهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهٗ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔودُهٗ حِفْظُهٗمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ۝﴾

(البقرہ: ۲۵۵)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے، اسے نہ اُونگھ آتی ہے اور نہ نیند، آسمانوں اور زمینوں میں جو کچھ ہے، سب اس کی ملکیت ہے، کون ہے جو اُس کی جناب میں بغیر اُس کی اجازت کے کسی کے لیے شفاعت کرے، وہ تمام وہ کچھ جانتا ہے جو لوگوں کے سامنے اور اُن کے پیچھے ہے، اور لوگ اُس کے علم میں سے کسی بھی چیز کا احاطہ نہیں کرتے ہیں، سوائے اُتنی مقدار کے جتنی وہ چاہتا ہے، اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے، اور ان کی حفاظت اُس پر بھاری نہیں، وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

فضیلت: ﴿: جو شخص ہر نماز کے بعد آیۃ الکرسی پڑھے، اُس کے جنت میں

داخل ہونے کے درمیان صرف موت حائل ہے۔ ❶

❶ عمل الیوم واللیلة، لابن السنی، رقم: ۱۲۱۔ سلسلة الأحادیث الصحیحة، رقم: ۹۷۲۔

﴿۲﴾: سیدنا حسن بن علی رضی اللہ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جس شخص نے فرض نماز کے بعد آیت الکرسی پڑھی، وہ آئندہ نماز تک اللہ تعالیٰ کی حفاظت اور ذمہ داری میں ہوتا ہے۔“^①

((۲)) (يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ ، اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ .))

”اے زندہ جاوید ہستی! میں تیری رحمت کے وسیلہ سے ہی مدد کا طلب گار ہوں، میرے لیے میرا ہر کام درست کر دے، اور مجھے میرے نفس کی طرف کبھی آنکھ جھکنے کے برابر بھی سپرد نہ کرنا۔“

فضیلت:..... اس سے متعلق رسول ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جو کوئی اسے روزانہ ہر صبح و شام پڑھتا رہے گا، اللہ تعالیٰ اس کو دنیا اور آخرت کی تمام مصیبتوں اور رنج و غم سے نجات دے گا۔“^②

(۳) سیدنا زید بن ثابت رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ ﷺ سے اپنی بے خوابی کی شکایت کی تو آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: یہ دعا پڑھا کرو:

((اَللّٰهُمَّ غَارِبَ النُّجُوْمِ وَهَدَاةِ الْعَيُوْنِ وَاَنْتَ حَيُّ قَيُّوْمٌ لَا تَاْخُذُكَ سِنَّةٌ وَّلَا نَوْمٌ . يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! اِهْدِنِيْ لَيْلِيْ وَاَنْمِ عَيْنِيْ .))

”اے اللہ! ستارے ڈوب گئے، آنکھیں آرام لینے لگیں، جبکہ تیری ذات ہمیشہ ہمیشہ کے لیے زندہ اور قائم ہے، تجھے نیند آتی ہے نہ اونگھ، اے زندہ اور قائم

① الترغیب والترہیب: ۴۵۳/۲۔ مجمع الزوائد: ۱۰۹/۱۔ علامہ منذری اور بیہقی نے اس کی سند ”حسن“ قرار دیا ہے۔

② مستدرک حاکم: ۱۰۵۴/۱۔ الترغیب والترہیب: ۲۱/۳۔ امام حاکم رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے، اور ذہبی رحمہ اللہ نے اس کی موافقت کی ہے۔

رہنے والی ذات! اس رات مجھے سکون دے اور میری آنکھوں کو سلا دے۔“

فضیلت:..... سیدنا زید رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے یہ الفاظ ادا کیے تو اللہ تعالیٰ نے میری

بے قراری دور کر دی اور مجھے نیند آ گئی۔ ❶



❶ عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی ص: ۲۰۱، طبع دار المعارف العثمانیۃ حیدر آباد دکن الہند۔

مجمع الزوائد: ۱۰/۱۲۸۔ الأذکار للنووی، ص: ۱۴۶۔

حرف الکاف

۷۰۔ اَلْكَافِي

معانی:..... کافی۔

کفایت کے معنی: کمی کو پورا کر دینا، حسب مراد کام بن جانا ہے۔ (الاسماء الحسنی، از منصور پوری، ص: ۲۳۳)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن کریم میں صرف ایک مقام پر آیا ہے، وہ اللہ تعالیٰ کا یہ فرمان ہے:

﴿اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدًا﴾ (الزمر: ۳۶)

”کیا اللہ اپنے بندے (نبی ﷺ) کے لیے کافی نہیں ہے۔“

پس منظر:..... کفار مکہ نبی کریم ﷺ کی موت کی تمنا کرتے تھے، اور انہوں نے اپنی اس خواہش کی تکمیل کے لیے آپ کو قتل بھی کرنا چاہا۔ اسی پس منظر میں اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول کریم کو اطمینان دلایا کہ آپ کا رب آپ کے لیے یقیناً کافی ہے۔ اس لیے کفار آپ کا بال بھی بیکا نہیں کر سکیں گے اور ان کی سازشیں دھری کی دھری رہ جائیں گی۔ کچھ رؤسائے قریش آپ ﷺ کا مذاق اڑاتے تھے، آپ کو اللہ تعالیٰ نے ضمانت دے دی کہ ہم ان سے نمٹ لیں گے، وہ آپ کا کچھ بھی بگاڑ نہ سکیں گے۔

﴿اِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ﴾ (الحجر: ۹۵)

”ہم مذاق اڑانے والوں سے نمٹنے کے لیے آپ کی طرف سے کافی ہیں۔“

پس منظر:..... ابن اسحاق نے عروہ بن زبیر سے روایت کی ہے کہ آپ ﷺ سے مذاق اڑانے والے کافروں میں پانچ بڑے مشہور تھے۔ ولید بن مغیرہ، عاص بن وائل، اسود

بن مطلب بن حارث بن زمعه، اسود بن یغوث اور حارث بن طلاطلہ۔ اللہ تعالیٰ نے ان سب کو ایک دن ہلاک کر دیا۔^①

سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار قریش، ابو جہل، عتبہ، شیبہ، ولید بن عتبہ، امیہ بن خلف اور عقبہ بن ابی معیط تھے، جو میدان بدر میں بُری طرح قتل کر دیئے گئے اور دیگر مقتولین کے ساتھ ایک کنواں میں ڈال دیئے گئے۔ انہی لوگوں نے کچھ کافروں کے ساتھ مل کر رسول اللہ ﷺ کے کندھے پر کعبہ کے سامنے نماز پڑھنے کی حالت میں اونٹ کی اوجھڑی ڈال دی تھی، تو آپ نے بددعا کر دی تھی کہ اے اللہ! تو اہل قریش اور ان بد معاشوں سے نمٹ لے۔^②

سورۃ الاحزاب میں کفایت باری تعالیٰ کا نمونہ دیکھ کر اپنی آنکھوں کو سرور اور دلوں کو نور بخشیں۔

﴿وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ﴾ (الاحزاب: ۲۵)

”اور (غزوۂ احزاب میں) اللہ نے کافروں کو ان کے (ناکامی کے) غصے میں لوٹا دیا، وہ کوئی خیر و بھلائی نہ پاسکے، اور (اس) لڑائی میں اللہ مومنوں کے لیے کافی ہو گیا۔“

پس منظر:..... غزوۂ احزاب کے موقع پر اللہ تعالیٰ نے ہوا اور فرشتوں کی فوج کے ذریعہ لشکر کفار کو اس طرح مار بھگایا کہ وہ مارے غیظ و غضب کے چھٹے پڑ رہے تھے، اس لیے کہ ان کی جنگی تیاریاں اور تمام قبائل عرب کے ساتھ مدینہ پر دھاوا بول دینے کی زبردست سازش دھری کی دھری رہ گئی، نہ مدینہ پر حملہ کر سکے اور نہ کوئی مال غنیمت انہیں ہاتھ آیا۔ اللہ تعالیٰ نے ان کی تمام جنگی چالوں کو ناکام بنا دیا، اور مسلمانوں کو جنگ کرنے کی ضرورت نہیں

① السیرۃ لابن ہشام: ۴۱۰/۲۔

② صحیح بخاری، کتاب الوضوء، رقم: ۲۴۰۔

پڑی۔ اس لیے رسول اللہ ﷺ یہ دعا پڑھا کرتے تھے:
 ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، صَدَقَ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدُهُ وَعَزَّ جُنْدُهُ
 وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ، فَلَا شَيْءَ بَعْدَهُ))

”اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں، جس نے اپنا وعدہ سچ کر دکھایا، اور اس نے اپنے
 بندے کی مدد کی، اور اپنے لشکر کو عزت دی، اور تمام لشکرِ کفار کو تنہا شکست دی،
 اس لیے کہ اس کے اوپر کوئی چیز نہیں ہے۔“^①

اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کی زبان اقدس پر کفار کہہ کو فرمایا کہ:

﴿قُلْ كَفَىٰ بِاللّٰهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا﴾ (العنکبوت: ۵۲)

”اے میرے نبی! آپ کہہ دیجئے کہ ہمارے اور تمہارے درمیان بحیثیت گواہ
 اللہ کافی ہے۔“

یعنی میرے اور تمہارے درمیان، میری نبوت اور قرآنِ کریم کی صداقت سے متعلق جو
 باتیں ہوئی ہیں، قرآن کی زبان میں میں نے جو دلیلیں پیش کی ہیں، اور تم لوگوں نے ڈھٹائی
 کے ساتھ ان کا انکار کر دیا ہے، اللہ تعالیٰ ان سب باتوں کا گواہ ہے۔

سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ نے ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا کی خدمت میں لکھا کہ ”مجھے
 ایسا خط لکھو اس میں مجھے وصیت فرمائیں اور زیادہ بھی نہ ہو مختصر ہو۔ سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا
 نے تحریر فرمایا: السلام علیکم! کے بعد گزارش ہے کہ میں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے
 آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جس نے اللہ کی رضا لوگوں کی ناراضی کے باوجود تلاش کی اللہ
 لوگوں کی مومنیت سے اسے کفایت کرے گا۔ اور جس نے لوگوں کی رضا اللہ کی ناراضی سے
 تلاش کی اللہ اسے لوگوں کے سپرد کر دیتا ہے، والسلام۔“^②

① صحیح بخاری، کتاب المغازی، رقم: ۴۱۱۴ و کتاب العمرہ، رقم: ۱۷۹۷۔ صحیح مسلم،

کتاب الحج، رقم: ۱۳۴۴ و کتاب الذکر والدعاء، رقم: ۲۷۲۴۔

② جامع ترمذی، کتاب الشهادات، رقم: ۲۴۱۴۔ سلسلۃ الصحیحۃ، رقم: ۲۳۱۱۔

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَ اغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ))

”اے اللہ! تو میری کفایت فرما حلال کے ساتھ اپنے حرام سے، اور اپنے فضل سے دوسروں سے بے نیاز کر دے۔“

فضیلت: اس دعا کو پڑھنے سے پہاڑ کے برابر قرض بھی اللہ تعالیٰ ادا کر دے گا۔ چنانچہ سیدنا علی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ اُن کے پاس ایک غلام آیا اور عرض کیا کہ امیر المومنین میں اپنی مکاتبت سے عاجز ہوں آپ میری مدد فرمادیں۔ آپ نے فرمایا: کیا تمہیں وہ کلمات نہ سکھاؤں جو رسول اللہ ﷺ نے مجھے سکھلا کر فرمایا کہ اگر تم پر پہاڑ کے برابر بھی قرض ہو تو اللہ تجھ سے ادا کر دے گا۔ (تو آپ نے یہ دعا سکھائی) ❶

۷۱۔ الْكَبِيرُ

معانی: سب سے بڑا۔

اس کی شان و جلال کے سامنے بڑے سے بڑے بھی حقیر ہیں۔ (بیہقی بحوالہ

تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۸۵)

معارف: یہ نام قرآن مجید میں (۶) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ﴾ (لقمان: ۳۰)

”اور بے شک اللہ ہی برتر اور سب سے بڑا ہے۔“

پس اس ”کبیر“ کے سامنے سب ہیچ ہیں۔

﴿ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۶۳۔ مسند احمد: ۱/۱۳۱۹۔ مستدرک حاکم، رقم:

۲۰۱۶۔ امام حاکم رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾ (الحج: ٦٢)

”اللہ کی ذات برحق ہے، اور اللہ کے سوا جس کی وہ پرستش کرتے ہیں، وہ باطل ہے، اور بے شک اللہ سب سے عالی مقام، سب سے بڑا ہے۔“

حکم بھی اسی ”کبیر“ کا چلتا ہے۔

﴿فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾﴾ (المؤمن: ١٢)

”پس حکم (فیصلہ) صرف اللہ کے ہاتھ میں ہے جو سب سے بلند، سب سے بڑا ہے۔“

وہ ”کبیر“ ہے جو ہر غائب و حاضر اور ہر معدوم و موجود کی خبر رکھتا ہے، وہ عظیم ہے، ہر چیز اس کے نیچے ہے، اور وہ اپنی قدرت و عظمت کے ذریعہ ہر چیز پر غالب ہے۔

﴿عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾﴾ (الرعد: ٩)

”وہ غائب و حاضر کا علم رکھنے والا، سب سے بڑا، سب سے عالی شان والا ہے۔“ وہ ”کبیر“ ہے جو تمام عیوب و نقائص سے پاک ہے۔

﴿سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾﴾ (بنی اسرائیل: ٤٣)

”وہ تمام عیوب سے پاک ہے، اور جو کچھ مشرکین کہتے ہیں اس سے بہت ہی برتر و بالا ہے۔“

اسم ”کبیر“ ان اسماء کے ساتھ بیان ہوا ہے۔ اسم ”عالم الغیب و الشهادة“ اور اسم ”المتعال“ کے ساتھ ایک مقام پر، چار مقامات پر اسم ”العلی“ کے ساتھ، اور ایک مقام پر اکیلا بیان ہوا ہے۔

اس اسم پاک سے مخلوق پیدا کرنے والوں کے لیے ضروری ہے کہ وہ اس دعا کا سہارا لیا کریں۔

((اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي شُكُورًا، وَاجْعَلْنِي صَبُورًا، وَاجْعَلْنِي فِي

عَيْنِي صَغِيرًا، وَفِي أَعْيُنِ النَّاسِ كَبِيرًا))

”اے اللہ! مجھے شکر کرنے والا، صبر کرنے والا بنادے، اپنی نظر میں چھوٹا اور

دوسرے لوگوں کی نظر میں بڑا بنادے۔“^①

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

جنابِ عکرمہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما (بایں الفاظ) تکبیرات کہا کرتے تھے:

((اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللَّهُ أَكْبَرُ وَ أَجَلُّ، اللَّهُ أَكْبَرُ وَ لِلَّهِ الْحَمْدُ))^②

۷۲۔ اَلْكَرِيمُ

معانی:..... کرم والا، مہربان، سخی۔

معارف:..... یہ بابرکت نام قرآن کریم میں (۳) جگہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّبَكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ﴾ (الانفطار: ۶)

”اے انسان! تجھے تیرے رب کریم سے کس چیز نے بہکا یا۔“

جو کوئی اللہ کا شکر گزار ہوتا ہے تو اس کا فائدہ اسے ہی پہنچتا ہے کہ اس کی نعمت باقی رہتی ہے، اور جو ناشکری کرتا ہے، تو اللہ اپنے بندوں کے شکر سے یکسر بے نیاز ہے، کسی کا محتاج نہیں ہے، اور وہ کریم ہے کہ بندوں کے کفر کے باوجود اپنی نعمتیں ان سے چھینتا نہیں۔

﴿وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيَ غَنِيٌّ كَرِيمٌ﴾

(النمل: ۴۰)

”اور جو آدمی شکر ادا کرتا ہے، وہ درحقیقت اپنے لیے شکر ادا کرتا ہے، اور جو

ناشکری کرتا ہے، تو جان لینا چاہیے کہ میرا رب بے نیاز، کرم والا ہے۔“

وہ ”کریم“ ہے کہ جس نے قرآن کریم کو نازل کیا۔

① مسند البزار بحوالہ دعا کے مسائل از اقبال کیلانی، ص: ۱۲۷۔

② مصنف ابن ابی شیبہ: ۱۵۶۴۵۔

﴿إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ﴾ (الواقعة: ۷۷)

”بے شک وہ قرآن کریم ہے۔“

وہ ”کریم“ ہے کہ جو اجر کریم سے عطا فرماتا ہے۔

﴿وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ﴾ (الحديد: ۱۸)

”اور ان کے لیے اجر کریم ہے۔“

وہ ”کریم“ ہے جس کی طرف سے ”مخل کریم“ کے داخلے کا حکم صادر ہوگا۔

﴿وَنَدْخِلْكُمْ مَدْخَلًا كَرِيمًا﴾ (النساء: ۳۱)

”اور ہم تم کو عزت دار بنا کے داخل ہونے کا حکم صادر کرتے ہیں۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں: میں نے عرض کیا: یا رسول اللہ! اگر مجھے پتہ چل جائے

القدر کی کون سی رات ہے؟ تو میں کیا دعا کروں؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہو:

((اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ [كَرِيمٌ] تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي))

”اے اللہ! تو معاف کرنے والا ہے، کرم والا ہے، معاف کرنے کو پسند کرتا ہے

پس مجھے معاف فرما۔“ ❶

۷۳۔ الْكَفِيلُ

معانی:.....ضامن، گواہ۔

معارف:.....رب تعالیٰ کا یہ اسم مبارک قرآن میں صرف (۱) مرتبہ وارد ہوا ہے:

﴿وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ﴾ ❶

(النحل: ۹۱)

”حالانکہ تم نے اس پر اللہ کو گواہ بنایا تھا، بے شک اللہ تمہارے افعال کو خوب

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۵۱۳۔ مسند أحمد: ۱۷۱/۶۔ شیخ البانی نے اسے ”صحیح“

کہا ہے۔

جانتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ سے اس کی کفالت کا سوال کیا کرو۔

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَ

يَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا﴾ (الحديد: ۲۸)

”اے ایمان والو! اللہ سے ڈرو اور اس کے رسول پر ایمان لے آؤ، تو وہ تمہیں

اپنی رحمت کا دو گنا حصہ دے گا، اور تمہیں ایک نور عطا کرے گا۔“

اس اسم پاک سے تخلق اختیار کرنے والوں کے ضروری ہے کہ اپنے آپ میں مادہ

کفالت پیدا کریں، سیدنا زکریا علیہ السلام نے سیدہ مریم علیہا السلام کی کفالت کا ذمہ اٹھایا تھا۔

﴿وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا﴾ (آل عمران: ۳۷)

”اور زکریا کو اس کا کفیل، ذمہ دار ٹھہرایا۔“



حرف اللام

۷۴۔ اَللَّطِيفُ

معانی:..... نرمی کرنے والا، باریک بین۔

لطف کے معنی گفتار اور کردار میں نرمی اور مہربانی کے ہیں۔ اس کی مہربانی اور لطف جملہ امور میں ہے۔ اس کے لطف نے صوری مادی چیزوں، حسین صورتوں، موزوں ہیئت اجسام لطیفہ اور اجسام نورانیہ کو عمدہ مناسبت اور نورانیت، شفاف اور ہمہ اقسام رنگ بخشے اس کے علمی لطف نے انبیاء، اولیاء، علماء، راہنیں، اہل بصیرت اور مجاہدین کو ان کے علمی مرتبہ کے مطابق معرفت نصیب فرمائی اور اس کے عملی لطف نے اہل دانش کو معاش اور معاملات میں منفعت اور اہل شعور کو آگاہی اور متقین کو بصیرت عطا فرمائی اور اس کے باطنی لطف نے پاک و صاف طبع لوگوں، اہل قناعت اور آزاد طبع انسانوں کو پورا حصہ عطا فرمایا۔ اس کے لطف تکوینی نے ہر موجود شے کو عدم سے وجود بخشا اور اس کے معنوی لطف کا اثر صالح اور نیک بندوں پر ہوا اور اس کے دنیاوی لطف نے بادشاہ اور امراء کو دنیا کا بڑا حصہ اور کامرانی عطا کی۔ اس کے اخروی لطف نے صالح اور نیکوں کو اپنی معیت نصیب فرمائی۔ اسی لطف سے آخرت میں ایمان داروں کی نجات اور صالحین کے درجات بلند ہوں گے۔ (شرح اسماء الحسنیٰ از قاضی محمد سلیمان منصور پوری، ص ۱۰۲، ۱۰۳)

معارف:..... یہ نام مبارک (۷) مرتبہ قرآن مجید میں واقع ہوا ہے، ایک مقام پر ارشاد

ہوا:

﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝﴾ (الملك: ۱۴)

”کیا اسے علم نہیں ہوگا جس نے (سب کچھ) پیدا کیا ہے، اور وہ نہایت باریک

میں اور بڑا باخبر ہے۔“

اللہ لطیف ہے کہ جس نے یوسف علیہ السلام کو جیل سے نکالا اور مزید لطف و کرم یہ فرمایا کہ ان کے برادران کو بادیہ سے ان کے پاس پہنچایا۔

﴿إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝﴾ (یوسف: ۱۰۰)

”بے شک میرا رب جو چاہتا ہے اس کی نہایت اچھی تدبیر کرتا ہے، بے شک وہ بڑا جاننے والا، بڑی حکمت والا ہے۔“

اللہ لطیف ہے کہ وہ اپنے لطف و کرم سے مومن و کافر اور نیک و بد سب کو روزی دیتا ہے۔ کافر کفر کا ارتکاب کرتا ہے، اور فاجر فسق و فجور سے دُنیا کو بھر دیتا ہے، پھر بھی انہیں ہلاک نہیں کرتا، بلکہ زندگی کی آخری سانس تک کھلاتا اور پلاتا رہتا ہے۔

﴿اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝﴾ (الشوری: ۱۹)

”اللہ اپنے بندوں پر بڑا مہربان ہے، وہ جسے چاہتا ہے روزی دیتا ہے، اور وہ قوت والا زبردست ہے۔“

اللہ لطیف ہے کہ روز قیامت ہر عمل خیر و شر کو ظاہر کر دے گا، حساب لے گا، اور اس کے مطابق جزا یا سزا دے گا۔ اس لیے کہ اللہ تعالیٰ سے کوئی چیز بھی مخفی نہیں ہے۔ ہر دقیق و خفی اس کے لیے عیاں ہے، اور ہر ایک کی وہ خبر رکھتا ہے۔

﴿يُبَيِّنُ لَهَا إِن تَكُ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي

السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝﴾ (لقمن: ۱۶)

”اے میرے بیٹے! اگر ایک رائی کے دانے کے برابر کوئی چیز کسی چٹان کے اندر ہے، یا آسمانوں میں ہے، یا زمین میں ہے، تو اللہ اسے سامنے لائے گا۔ بے شک اللہ بڑا باریک بین، بڑا باخبر ہے۔“

اسم لطیف پانچ مقامات پر اسم ”خبیر“ کے ساتھ اور دو مقامات پر اکیلا بیان ہوا ہے۔

حرف المیم

۷۵۔ اَلْمَالِکُ

معانی:..... سلطنت و بادشاہت کا مالک۔

جس کو چاہے دے دے، جس سے چاہے چھین لے۔ بادشاہوں کا بادشاہ جن کو وہ اپنے امر و نہی سے چلاتا ہے۔ (الزجاج)

جس طرح چاہے اپنے ملک میں اپنی مرضی چلائے، معدوم کرے، فنا کرے یا باقی رکھے۔ (الغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۵)

معارف:..... اللہ وحدہ لا شریک لہ کا یہ نام قرآن میں دو مرتبہ آیا ہے، ایک جگہ ارشاد فرمایا:

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ مِمَّنْ

تَشَاءُ﴾ (آل عمران: ۲۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے، اور جس سے چاہتا ہے بادشاہی چھین لیتا ہے۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ﴾ (الفاتحہ: ۳)

”قیامت کے دن کا مالک ہے۔“

اللہ تعالیٰ جس طرح روزِ قیامت کا مالک ہے، اسی طرح وہ دوسرے تمام دنوں کا مالک ہے۔ یہاں قیامت کے دن کا ذکر بالخصوص اس لیے آیا کہ اس دن تمام مخلوقات کی بادشاہت ختم ہو جائے گی۔ تمام شاہانِ دنیا اور ان کی رعایا، تمام آزاد و غلام اور چھوٹے بڑے سب

برابر ہو جائیں گے اور صرف ایک اللہ کی ملوکیت و بادشاہت باقی رہے گی، سبھی اس کے جلال و جبروت کے سامنے سرنگوں ہوں گے، اس کی جنت کے امیدوار اور اس کے عذاب سے خائف ہوں گے۔

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿لَیْسَ الْمُلْكُ الْیَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝﴾ (الغافر: ۱۶)

”آج کس کی بادشاہت ہے، (پھر خود ہی جواب دے گا:) صرف اللہ کی، جو ایک ہے اور زبردست غالب ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

﴿اَللّٰهُمَّ مَلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۚ بِیْدِكَ الْخَیْرُ ۚ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝﴾ (آل عمران: ۲۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے، اور جس سے چاہتا ہے، بادشاہی چھین لیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے عزت دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے ذلیل بنا دیتا ہے، تمام بھلائیاں تیرے ہاتھ میں ہیں، بے شک تو ہر چیز پر قادر ہے۔“

پس منظر و پیش منظر:..... اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کو طریقہ دعا

سکھلایا ہے، اور تسبیح و تحمید کی تعلیم دی ہے۔ اللہ تعالیٰ مالک کل، مالک مطلق اور مالک حقیقی ہے۔ اپنے ملک میں جیسے چاہتا ہے تصرف کرتا ہے، ایجاد کرتا ہے، ختم کرتا ہے، مارتا ہے، زندہ کرتا ہے، عذاب یا ثواب دیتا ہے، کوئی اس کا شریک نہیں اور نہ کوئی اُسے روک سکتا ہے، وہ جسے چاہتا ہے، بادشاہ بنا دیتا ہے، اس لیے کہ حقیقی بادشاہت اسی کے ساتھ خاص ہے، اور دوسروں کی بادشاہت مجازی اور عارضی ہے۔ اسی کے ہاتھ میں عزت و ذلت ہے، اور اسی

کے ہاتھ میں تمام بھلائیاں ہیں۔

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ کہتے ہیں: ”آیت میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ اور اُمت مسلمہ پر احسان کر کے نبوت بنی اسرائیل سے نبی کریم ﷺ کی طرف منتقل کردی، اور ان کے دین کو تمام ادیان پر غالب کر دیا، اور پوری دنیا میں پھیلا دیا، اس لیے مسلمانوں کو اس نعمت عظمیٰ کا شکر ادا کرتے رہنا چاہیے۔“

امام طبری اور ابن ابوحاتم رحمہ اللہ نے روایت بیان کی ہے کہ ”یقیناً نبی کریم ﷺ نے اپنے رب عزوجل ثاؤہ سے دعا کی کہ اے اللہ! فارس و روم کے لوگوں کو مسلمان کر دے تو اللہ عزوجل نے یہ آیت نازل فرمائی۔“

۷۶۔ اَلْمُؤْمِنُ

معانی:..... امن و سکون دینے والا۔

جس سے امن و امان مانگا جائے اور کسی کے لیے بھی امن، اس کے سوا کسی اور سے متصور نہ ہو۔ (الغزالی)

نیز بقول زجاج ایمان بمعنی تصدیق اور اللہ تعالیٰ اپنی وحدانیت کی تصدیق کرنے والے ہیں۔ فرمایا: ﴿شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ الْمَلِكُ ۖ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝﴾ (آل عمران: ۱۸) ”اللہ تعالیٰ اور اس کے سب فرشتے اور اہل علم یہ گواہی دیتے ہیں کہ اس اللہ کے سوا کوئی اور معبود نہیں، جو انصاف سے قائم ہے، اس اللہ کے سوا کوئی اور معبود نہیں، وہ غالب اور حکمت والا ہے۔“ (تشریح الأسماء والحسنی، ص: ۷۴، ۷۵)

معارف:..... یہ اسم مبارک صرف ایک بار قرآن میں آیا ہے، اور وہ مقام یہ ہے:

﴿هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ أَلَمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ ۚ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ

الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ (الحشر: ٢٣)

”وہ اللہ ہے جس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، وہ شہنشاہ ہے، ہر عیب سے پاک ہے، سلامتی دینے والا ہے، امن و سکون دینے والا ہے، سب کا نگہبان ہے، زبردست ہے، ہر چیز پر غالب ہے، شانِ کبریائی والا ہے، اللہ مشرکوں کے شرک سے پاک ہے۔“

﴿وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا﴾ (الکھف: ٤٩)

”اور تیرا رب کسی پر ظلم نہیں کرتا۔“

اللہ تعالیٰ مومن ہے، وہی یقین و ایمان کی دولت سے سرفراز کرتا ہے۔

﴿وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ﴾ (الحجرات: ٧)

”اور اللہ نے تمہارے لیے ایمان کو محبوب بنا دیا ہے۔“

اللہ تعالیٰ مؤمن ہے جس نے لوگوں کے لیے کعبہ کو گہوارہ امن بنایا:

﴿وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا﴾ (آل عمران: ٩٧)

”اور جو (بیت اللہ میں) داخل ہو جاتا ہے امن میں آ جاتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ مؤمن ہے کہ وہ لوگوں کو امن و سکون عطا فرماتا ہے۔

﴿وَلِكَيْدًا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا﴾ (النور: ٥٥)

”اور (اللہ) ان کے خوف و ہراس کو امن سے بدل دے گا۔“

﴿الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ﴾ (قریش: ٤)

”وہی ذات ہے جس نے انہیں بھوک دور کرنے کے لیے کھانا دیا، اور خوف

سے امن دیا۔“

سیدنا عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما فرماتے ہیں کہ مؤمن وصف وہ صفت ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنی

مخلوق کو ظلم سے بے خوف کر دیتا ہے۔^①

① تفسیر ابن کثیر: ٥٥٢/٨

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

((اللَّهُمَّ أَهْلَهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ.)) ❶

”اے اللہ! تو اس چاند کو ہم پر امن و ایمان، سلامتی اور اسلام کے ساتھ طلوع فرما۔ میرا اور تیرا رب ایک اللہ ہے۔“

۷۷۔ الْمُبِينُ

معانی:..... آشکارا۔

معارف:..... یہ نام بھی صرف ایک مرتبہ قرآن کریم میں آیا ہے، اور وہ مقام یہ ہے:

﴿وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ﴾ (النور: ۲۵)

”اور جان لیں گے کہ بے شک اللہ ہی برحق و آشکارا ہے۔“

اللہ تعالیٰ مبین ہے کہ جس نے رسول اللہ ﷺ کو ”نذیر مبین“ بنایا۔

﴿وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ﴾ (الحجر: ۸۹)

”اور کہہ دیجیے کہ میں تمہیں واضح طور پر عذاب الہی سے ڈرنے والا ہوں۔“

اللہ تعالیٰ مبین ہے کہ جس نے رسول مبین کو کتاب مبین عطا فرمائی۔

﴿الرَّ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ﴾ (الحجر: ۱)

”الر یہ کتاب کامل اور تمام اُمور کو بیان کرنے والی، قرآنی آیتیں ہیں۔“

اللہ تعالیٰ مبین ہے کہ جس نے رسول مبین کی ڈیوٹی لگائی کہ وہ بلاغ مبین کا فریضہ

سرا انجام دیں۔

﴿وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ﴾ (العنکبوت: ۱۸)

”اور رسول کی ذمہ داری تو صاف پیغام پہنچا دینا ہے۔“

❶ سنن ترمذی، رقم: ۲۴۵۱۔ سنن دارمی: ۳۳۶/۱۔ الکلم الطیب: ۱۱۴/۱۶۱۔ سلسلۃ

الصحيحة، رقم: ۱۸۱۶۔

اللہ تعالیٰ مبین ہے کہ جس نے آپ ﷺ کو حق مبین عطا فرمایا:

﴿إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝﴾ (النمل: ۷۹)

”آپ یقیناً صریح حق پر ہیں۔“

۷۸۔ اَلْمُبْتَعَالُ

معانی:..... بہت بلند۔

معارف:..... قرآن مجید میں یہ نام بھی صرف ایک مرتبہ قرآن کریم میں آیا ہے، اور وہ

مقام یہ ہے:

﴿عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُبْتَعَالُ ۝﴾ (الرعد: ۹)

”وہ غائب و حاضر کا علم رکھنے والا، سب سے بڑا، سب سے بلند شان والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ سے زیادہ کوئی بلند و عظیم نہیں ہے:

﴿فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۝﴾ (طہ: ۱۱۴)

”پس بہت ہی عالی شان والا ہے وہ اللہ جو سارے جہان کا بادشاہ حق ہے۔“

جب اللہ تعالیٰ نے جنوں کو قرآن کریم سننے کے بعد توحید و ایمان کی توفیق بخشی، اور ایمان لانے سے پہلے عقیدہ توحید کے خلاف جن غلطیوں میں پڑے تھے، ان کا انہیں احساس ہوا، اور معلوم ہو گیا کہ اللہ تعالیٰ اپنی کسی مخلوق کے مشابہ نہیں ہے اور نہ اس کی کوئی بیوی ہے اور نہ اولاد، تو اللہ کی پاکی اور عظمتیں بیان کرتے ہوئے کہنے لگے کہ:

﴿وَأَنْتَ تَعَالَى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝﴾ (الجن: ۳)

”اور یہ کہ ہمارے رب کی شان بڑی اونچی ہے، اس نے اپنی نہ کوئی بیوی بنائی

ہے اور نہ اولاد۔“

وہ متعال ہے، کہ مشرکوں کے شرک سے بالاتر ہے:

﴿تَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝﴾ (النحل: ۳)

”وہ مشرکوں سے شرک سے بلند و برتر ہے۔“

رسول اللہ ﷺ اپنے جہود میں اللہ تعالیٰ کی علو و مرتبت کا بایں الفاظ اظہار اور اقرار فرماتے:

((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) ❶

”میرا رب پاک ہے، اور سب سے بلند و بالا ہے۔“

۷۹۔ اَلْمُتَكَبِّرُ

معانی:..... بڑائی اور بزرگی والا۔

وہ ذات جس کے سامنے ہر چیز حقیر نظر آتی ہے اور ایسی بڑائی اس کی ہی شان ہے۔

(الغزالی)

نام میں ”ت“، تخصیص کے لیے اور تفرد کے لیے ہے۔ اس لیے کسی مخلوق کے لیے تکبر روا نہیں بلکہ ان کے لائق تو عجز و انکساری اور بندگی ہے۔

(تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۷۶)

معارف:..... یہ بھی صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ﴾ (الحشر: ۲۳)

”زبردست ہے، ہر چیز پر غالب ہے، شانِ کبریائی والا ہے۔“

اگر کوئی متکبر کی صفت تکبر کو اپنے میں پیدا کرے تو وہ اسے پسند نہیں فرماتا:

﴿إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ﴾ (النحل: ۲۳)

”وہ بے شک تکبر کرنے والوں کو پسند نہیں کرتا ہے۔“

تکبر کرنے والوں کا مقام جہنم ہے:

﴿الَّذِينَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّمُتَكَبِّرِينَ﴾ (الزمر: ۶۰)

”کیا جہنم میں تکبر کرنے والوں کے لیے ٹھکانا نہیں ہے۔“

سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ”اللہ

سبحانہ و تعالیٰ فرماتے ہیں: تکبر میری چادر ہے اور عظمت میرا ازار ہے۔ جو شخص ان دونوں میں

❶ سنن ترمذی، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۲۶۱ و ۲۶۲۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

سے کوئی ایک چیز مجھ سے چھیننے کی کوشش کرے گا میں اسے جہنم میں ڈال دوں گا۔“^①
 سیدنا عبداللہ کہتے ہیں رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جس شخص کے دل میں رائی کے دانے کے برابر تکبر ہوگا وہ جنت میں نہیں جائے گا اور جس شخص کے دل میں رائی کے دانے برابر ایمان ہوگا وہ جہنم میں نہیں جائے گا۔“^②
 بڑائی اور کبریائی والا تو صرف وہی متکبر ہے۔

﴿وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾

(الحاثیہ: ۳۷)

”اور آسمانوں اور زمین میں کبریائی صرف اسی کے لیے ہے، اور وہ زبردست بڑی حکمتوں والا ہے۔“

رسول اللہ ﷺ حالت رکوع میں اللہ تعالیٰ کی کبریائی اور بڑائی بیان کرتے ہوئے انتہائی تواضع اختیار فرماتے۔ سیدنا عوف بن مالک رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ اپنے رکوع میں کہتے تھے:

((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ.))^③

”پاک ہے وہ اللہ جو بڑی طاقت اور بادشاہی والا ہے، وہ بہت بڑائی والا اور صاحب عظمت ہے۔“

۸۰۔ الْمُجِيبُ

معانی:.....دُعا قبول کرنے والا۔

جوسائل کی مدد کرے، پکارنے والوں کو جواب دے، حاجت مندوں کی ضروریات کو نہ

① سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب البراءة من الکبر، رقم: ۴۱۷۴۔ سلسلۃ الصحیحۃ، رقم: ۵۴۱۔

② سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب البراءة من الکبر والتواضع، رقم: ۴۱۷۳۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ قرار دیا ہے۔

③ صحیح سنن ابو داؤد: ۵ / ۱، ۲۴۷، رقم: ۸۷۳۔

صرف پورا کرے بلکہ پکارنے سے پیشتر انعامات کی بارش سے نوازتا رہے۔ اور دُعاء سے پہلے نوازشیں کرتا رہے۔ یہ شان صرف ایک اللہ کی ہے جو بندوں کی ضروریات کو ان کے سوال کرنے سے پیشتر جانتا ہے۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنیٰ، ص: ۸۶)

معارف: یہ نام بھی صرف ایک ہی جگہ آیا ہے اور اسمِ قریب کے ساتھ بیان ہوا ہے:

﴿ثُمَّ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۝۱﴾ (ہود: ۶۱)

”پھر اس کی جناب میں توبہ کرو، بے شک میرا رب قریب ہے اور دُعا قبول کرتا ہے۔“

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۚ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۚ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝۱۸۶﴾ (البقرة: ۱۸۶)

”اور (اے میرے نبی!) اگر آپ سے میرے بندے میرے بارے میں پوچھیں، تو آپ کہہ دیجئے کہ میں قریب ہوں، پکارنے والے کی پکار کا جواب دیتا ہوں جب وہ مجھے پکارتا ہے، پس انہیں چاہیے کہ میرے حکم کو مانیں اور مجھ پر ایمان لائیں، تاکہ راہِ راست پر آجائیں۔“

اللہ تعالیٰ مجیب ہے، تو اس نے اپنے بندوں کو ازراہِ خیر خواہی اپنے رسول ﷺ کی زبانی یہ تعلیم دی:

﴿وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ۝۶۰﴾ (المومن: ۶۰)

”اور تمہارے رب نے کہہ دیا ہے، تم سب مجھے پکارو میں تمہاری دعائیں قبول کروں گا۔“

اللہ تعالیٰ مجیب ہے، جو مضطر کی دُعا کو سنتا اور قبول فرماتا ہے:

﴿أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَ يُكْشِفُ السُّوءَ وَ يُجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ

الْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ مُتَعَلِّمٌ مَّا تُدَكِّرُونَ ﴿٦٢﴾ (النمل: ۶۲)

”یا وہ ذات بہتر ہے، جسے پریشان حال جب پکارتا ہے تو وہ اس کی پکار کا جواب دیتا ہے، اور اس کی تکلیف کو دور کر دیتا ہے، اور تمہیں زمین میں جانشین بناتا ہے، کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود یہ کام کرتا ہے۔ لوگو! تم بہت ہی کم نصیحت قبول کرتے ہو۔“

واقعہ:..... حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ رقمطراز ہیں: ایک صاحب فرماتے ہیں کہ میں ایک نچر پر لوگوں کو دمشق سے زیدانی لے جایا کرتا تھا اور اسی کرایہ پر میری گزر بسر تھی ایک مرتبہ ایک شخص نے نچر کرایہ پر لیا میں نے اسے سوار کیا اور لے چلا۔ ایک جگہ جہاں دو راستے تھے پہنچے تو اس نے کہا اس راہ چلو میں نے کہا میں اس سے واقف نہیں ہوں سیدھی راہ یہی ہے اس نے کہا نہیں میں پوری طرح واقف ہوں یہ بہت نزدیک کا راستہ ہے۔ میں اس کے کہنے سے اسی راہ پر چلا تھوڑی دیر کے بعد میں نے دیکھا کہ ایک لق و دق بیابان میں ہم آ گئے ہیں جہاں کوئی راستہ نظر نہیں آتا نہایت خطرناک جنگل اور ہر طرف لاشیں پڑی ہوئی ہیں میں سہم گیا۔ وہ مجھ سے کہنے لگا ذرا لگام تھام لو مجھے یہاں اترنا ہے۔ میں نے لگام تھام لی وہ اتر ا اور اپنا تہہ اونچا کر کے کپڑے ٹھیک کر کے چھری نکال کر مجھ پر حملہ کیا۔ میں وہاں سے سرپٹ بھاگا لیکن اس نے میرا تعاقب کیا اور مجھے پکڑ لیا۔ میں اسے قسمیں دینے لگا لیکن اس نے خیال بھی نہ کیا۔ میں نے کہا اچھا یہ نچر اور کل سامان جو میرے پاس ہے تو لے لے اور مجھے چھوڑ دے۔ اس نے کہا یہ تو میرا ہو ہی چکا لیکن میں تو تجھے زندہ چھوڑنا چاہتا ہی نہیں۔ میں نے اسے اللہ تعالیٰ کا خوف دلایا آخرت کے عذابوں کا ذکر کیا لیکن اس چیز نے بھی اس پر کوئی اثر نہ کیا اور وہ میرے قتل پر تلا رہا۔ اب میں مایوس ہو گیا اور مرنے کے لئے تیار ہو گیا اور اس سے بہ منت التجا کی کہ آپ مجھے دو رکعت نماز ادا کر لینے دیجئے۔ اس نے کہا اچھا جلدی پڑھ لے۔ میں نے نماز شروع کی لیکن رب کی قسم! میری زبان سے قرآن کا ایک حرف نہیں نکلتا

تھا یونہی ہاتھ باندھے دہشت زدہ کھڑا ہوا تھا اور وہ جلدی مچا رہا تھا۔ اسی وقت اتفاق سے یہ آیت میری زبان پر آگئی:

﴿اَکُنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَا وَيَكْشِفُ السُّوْءَ.....﴾ (النمل: ۶۲)

”یعنی اللہ تعالیٰ ہی ہے جو بے قراری کی بے قراری کے وقت کی دعا کو سنتا اور قبول فرماتا ہے اور بے بسی بے کسی کو سختی اور مصیبت کو دور کر دیتا ہے۔“

پس اس آیت کا زبان سے جاری ہونا تھا جو میں نے دیکھا کہ بچوں بیچ جنگل میں سے ایک گھوڑے پہ سوار تیزی سے اپنا گھوڑا بھگائے نیزہ تانے ہماری طرف چلا آ رہا ہے اور بغیر کچھ کہے اس ڈاکو کے پیٹ میں اس نے اپنا نیزہ گھونپ دیا جو اس کے جگر کے آر پار ہو گیا وہ اسی وقت بے جان ہو کر گر پڑا۔ سوار نے باگ موڑی اور جانا چاہا لیکن میں اس کے قدموں سے لپٹ گیا اور بالاح کہنے لگا اللہ کے لئے یہ تو تلاؤ کہ تم کون ہو؟ اس نے کہا میں اس کا بھیجا ہوا ہوں جو مجبوروں بے کسوں اور بے بسوں کی دعا قبول فرماتا ہے اور مصیبت و آفت کو ٹال دیتا ہے۔ میں نے اللہ تعالیٰ کا شکر کیا اور وہاں سے اپنا نچر اور مال لے کر صحیح سالم واپس لوٹا۔

(تفسیر ابن کثیر: ۹۹/۴)

مضطر کی دُعا کی مناسبت سے حافظ ابن قیم رحمہ اللہ نے اپنی کتاب ”الاجواب الکافی“ میں لکھا ہے کہ ”اگر دُعا کرتے وقت پورے طور حضور قلب کے ساتھ ہو، اپنی حاجت و ضرورت کا شدید احساس ہو، اور رب العالمین کے حضور انتہائی عاجزی و انکساری اور غایت درجہ کا خشوع و خضوع حاصل ہو، اور دل پر رقت طاری ہو، اور اس حال میں بندہ اپنے رب کے پاکیزہ ناموں اور اعلیٰ صفات کا وسیلہ بنا کر دُعا کرے، تو ایسی دُعا شاید ہی رد کی جاتی ہو۔“ انتہی

۸۱۔ اَلْمُجِیْدُ

معانی:..... بڑی شان والا۔

جس کی ذات بلند، شان، صفات با شرف، کام سب عمدہ، انعامات اور ذات بے مثل

ہیں۔ (الغزالی والبونى بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۷)

معارف: یہ اسم مبارک قرآن مجید میں دو مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿رَحِمْتُ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ﴾

(ہود: ۷۳)

”اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں تم اہل بیت کے لیے ہیں، وہ بے شک لائق حمد و ثناء، بزرگی والا ہے۔“

اور وہ عرش پر مستوی شہنشاہ دو جہاں ہے، اور وہ عظمت و کبریائی والا ہے۔

﴿ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ﴾ (البروج: ۱۵)

”وہ عرش والا، بڑی عظمت و شان والا ہے۔“

مجید وہ ہے، جس نے رسول اللہ ﷺ پر قرآن مجید نازل فرمایا:

﴿بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ﴾ (البروج: ۲۱)

”بلکہ یہ بڑی عظمت والا قرآن ہے۔“

﴿قُلْ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ﴾ (ق: ۱)

”ق- قسم ہے قرآن کی جو عالی مرتبت عظیم المنافع ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

سیدنا ابی بن کعب رضی اللہ عنہ کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ ﷺ سے عرض کیا: یا رسول اللہ! میں آپ پر بکثرت دُود بھیجتا ہوں، میں اپنی دعا میں کتنا وقت دُود کے لیے وقف کروں؟ رسول اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا: جتنا تو چاہے۔ میں نے عرض کیا: ایک چوتھائی صحیح ہے؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر اس سے زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: نصف وقت مقرر کروں؟ آپ نے ارشاد فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر اس سے زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: دو تہائی مقرر کروں، رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: میں ساری دعا کا وقت دُود شریف کے لیے وقف

کرتا ہوں۔ اس پر رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ”یہ تیرے سارے دُکھوں اور غموں کے لیے کافی رہے گا، تیرے گناہوں کی بخشش کا باعث ہوگا۔“^①

رسول اللہ ﷺ کی ذاتِ اقدس پہ درود بھیجنے کے لیے یہ الفاظ یاد رکھیں:

((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ.))^②

”اے اللہ! رحم و کرم فرما محمد پر اور ان کی آل پر جس طرح تو نے رحمت نازل فرمائی ابراہیم پر اور ان کی آل پر، بے شک تو حمد و تعریف والا اور بزرگی والا ہے۔ اے اللہ! برکت نازل فرما محمد پر اور ان کی آل پر جس طرح تو نے برکت نازل فرمائی ابراہیم پر اور ان کی آل پر، بے شک تو تعریف کے لائق اور بزرگی والا ہے۔“

۸۲۔ الْمُحِيطُ

معانی:..... احاطہ کرنے والا، حفاظت کرنے والا۔

معارف:..... رب تعالیٰ کا یہ نام قرآن مجید میں (۸) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد

فرمایا:

﴿وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ۝﴾ (النساء: ۱۲۶)

”اور اللہ ہر چیز کا احاطہ کیے ہوئے ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے لوگوں کا احاطہ کر رکھا ہے۔

﴿إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۝﴾ (الاسراء: ۶۰)

① صحیح سنن ترمذی، الجزء الثانی، رقم: ۱۹۹۹۔

② صحیح بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، رقم: ۳۳۷۰۔

”بے شک تیرا رب لوگوں کا احاطہ کیے ہوئے ہے۔“

اللہ تعالیٰ محیط ہے، وہ تمام مخلوقات کی حفاظت فرماتا ہے:

﴿اِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝۵۴﴾ (فصلت: ۵۴)

”اللہ ہر چیز کی حفاظت کیے ہوئے ہے۔“

اللہ تعالیٰ محیط ہے، ہر شے کے متعلق علم رکھتا ہے:

﴿وَ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝۱۲﴾ (الطلاق: ۱۲)

”اور بے شک اللہ اپنے علم کے ذریعے ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے۔“

﴿اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُّحِيطٌ ۝﴾ (آل عمران: ۱۲۰)

”بے شک اللہ ان کے کرتوتوں کو اچھی طرح جانتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ محیط ہے، اس نے مسلمانوں کو وہ علاقہ جات عطا فرمائے کہ جنہیں حاصل

کرنے کی اُن میں طاقت نہ تھی۔

﴿وَ اٰخَرٰی لَمْ تَغْفِرُوْا عَلَیْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۚ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيْرًا ۝﴾ (الفتح: ۲۱)

”اور وہ تمہیں ایک دوسرا مال غنیمت بھی دے گا، جس پر ابھی تم نے قدرت نہیں

پائی ہے، اللہ نے اسے گھیر لیا ہے، اور اللہ ہر چیز پر قادر ہے۔“

ابن عباس، مجاہد حسن اور مقاتل نے اس سے وہ تمام فتوحات مراد لی ہیں جو اللہ نے

مسلمانوں کو صلح حدیبیہ کے بعد عطا کیں، ان میں فارس اور روم کے علاقے بھی شامل ہیں۔

ضحاک وغیرہ کا خیال ہے کہ اس سے مراد ”فتح“ خیبر ہے۔ اور قتادہ اور ابن جریر کہتے ہیں کہ

اس سے مراد ”فتح مکہ“ ہے۔ اور عکرمہ کے نزدیک اس سے مراد ”حنین“ ہے۔ علامہ شوکانی

نے پہلی رائے کو ترجیح دی ہے۔

اللہ تعالیٰ کا علم تمام کائنات کو محیط ہے، کسی بھی مخلوق کا ماضی، حاضر اور مستقبل اس

کے علم کی حدود سے خارج نہیں:

﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝﴾

(البقرہ: ۲۵۵)

”اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، وہ ہمیشہ سے زندہ ہے اور تمام کائنات کی تدبیر کرنے والا ہے، اسے نہ اُگھ آتی ہے اور نہ نیند، آسمانوں اور زمینوں میں جو کچھ ہے، سب اس کی ملکیت ہے، کون ہے جو اُس کی جناب میں بغیر اُس کی اجازت کے کسی کے لیے شفاعت کرے، وہ تمام وہ کچھ جانتا ہے جو لوگوں کے سامنے اور اُن کے پیچھے ہے، اور لوگ اُس کے علم میں سے کسی بھی چیز کا احاطہ نہیں کرتے ہیں، سوائے اتنی مقدار کے جتنی وہ چاہتا ہے، اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے، اور ان کی حفاظت اُس پر بھاری نہیں، وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے ملائکہ کے بارے میں خبر دیتے ہوئے ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا نَنْزِلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۚ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝﴾ (مریم: ۶۴)

”ہم بغیر آپ کے رب کے حکم کے اُتر نہیں سکتے۔ ہمارے آگے پیچھے اور ان کے درمیان کی کل چیزیں اس کی ملکیت میں ہیں، اور آپ کا پروردگار بھولنے والا نہیں۔“

۸۳۔ اَلْبُسْتَعَانُ

معانی:.....مدد و حمایت کرنے والا۔

عون سے ہے جس کے معنی مدد و حمایت ہیں۔

استعانتِ مدد مانگنا۔

استعانت ان اُمور میں ہے جو انسان کی طاقت سے بالاتر ہیں اور ان کا تعلق صرف قدرتِ الہیہ سے ہوتا ہے۔ مصائب کو دُور کرنا، نوائب کا ہٹانا، عطیہ، انعامات و سعادات، مرادوں کو پورا کرنا، آرزوؤں کو برلانا، گناہوں و تقصیراتِ ماضیہ سے درگزر، مستقبل کی اصلاح و فلاحِ آخرت کی بہبودی، دنیا کی سلامتی، حیات و ممات، عطیہ مال و اولاد، کشائشِ رزق، افزائشِ عمر وغیرہ وغیرہ کی استعانتِ خاص رب العالمین کا خاصہ ہے۔

(اسماء اللہ الحسنیٰ، از منصور پوری، ص: ۲۲۸، ۲۲۹)

معارف: یہ اسم مبارک دو جگہ پر آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝﴾

(الانبیاء: ۱۱۲)

”رسول اللہ ﷺ نے کہا: میرے رب! تو حق کے مطابق فیصلہ کر دے، اور تم لوگ جو کچھ (اللہ کے بارے میں یا میرے بارے میں) بیان کرتے ہو، اس پر ہم اپنے رب سے مدد مانگتے ہیں جو رحمن ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کی دُعا نقل کی ہے، جو انہوں نے اللہ کی جانب سے مشرکوں کے خلاف اعلانِ جنگ کے بعد کی تھی کہ اے میرے رب! تو میرے اور میری قوم کے درمیان اب فیصلہ کر ہی دے، جن کا شیوہ اسلام اور مسلمانوں سے عداوت کرنا بن گیا ہے۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کی دُعا قبول فرمائی۔ کافروں کو مسلمانوں کے ہاتھوں میدانِ بدر میں کاری ضرب لگوائی۔ بہت سے قتل کر دیے گئے اور بہت سے پابند سلاسل بنا لیے گئے۔ دعا کے آخر میں آپ نے فرمایا کہ ہمارا رب اپنے بندوں پر بہت زیادہ رحم کرنے والا ہے، اور اس کی ذات ایسی ہے جس سے تمام اُمور میں مدد مانگنی چاہیے۔ منجملہ ان اُمور کے کافروں کا یہ کہنا ہے کہ غلبہ انہی کو حاصل ہوگا، تو میں اللہ ہی سے مدد مانگتا ہوں کہ وہ ان کے دعویٰ کو جھوٹا کر دکھائے۔

برادرانِ یوسف نے سیدنا یوسف علیہ السلام کی قمیص کو ایک بکرے کے خون میں لت پت کر دیا، اور اسے اپنے باپ کے سامنے رکھ کر کہا کہ یہ دیکھیے یوسف کی قمیص جو اس کے ہلاک ہو جانے کے بعد ہمیں ملی ہے، لیکن یعقوب علیہ السلام نے ان کی بات نہیں مانی اور کہا:

﴿بَلْ سَوَّيْتُمْ لَكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْرًاۚ فَصَبِّرْۖ جَمِيلًاۚ وَاللَّهُ الْهُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَۖ ۝۱۸﴾ (یوسف: ۱۸)

”بلکہ تمہارے ذہنوں نے ایک سازش گھڑ لی ہے، پس مجھے اچھے صبر سے کام لینا ہے، اور جو کچھ تم بیان کر رہے ہو اس پر اللہ سے ہی مدد مانگی ہے۔“
مصیبت، اضطراب، بے قراری کے عالم میں استعانت من اللہ کا طریق اختیار کرنا چاہیے:

﴿وَأَسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِۚ﴾ (البقرة: ۴۵)

”اور مدد طلب کرو صبر اور نماز کے ذریعے۔“

اللہ تعالیٰ نے بندوں کو بتایا ہے کہ مومن کی زندگی میں صبر اور نماز دونوں چیزوں کی بڑی اہمیت ہے، اور اللہ کی راہ میں مصائب جھیل جانے کا اہم ترین نسخہ صبر اور نماز ہے۔ اسی لیے تو اللہ نے اسی سورت کی آیت (۱۵۳) میں فرمایا ہے:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَۖ ۝۱۵۳﴾

(البقرة: ۱۵۳)

”اے ایمان والو! صبر اور نماز سے مدد لو، بے شک اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے۔“

مسند احمد میں حذیفہ بن یمان رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ کو جب کوئی اہم معاملہ پیش آتا، تو نماز پڑھتے تھے۔ ❶

مرض بڑھتا نہیں مٹ جاتا ہے عشرت ان کا
جس نے دربارِ الہی سے شفا مانگی ہے

❶ سنن ابو داؤد، کتاب الصلاة، رقم: ۱۳۱۹۔ محدث البانی رحمہ اللہ نے اسے ”حسن“ کہا ہے۔

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

﴿اَحْمَدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ ۝﴾ (الفاتحة)

”سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سارے جہاں کا پالنے والا ہے۔ نہایت مہربان بے حد رحم کرنے والا ہے۔ قیامت کے دن کا مالک ہے۔ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تجھ ہی سے مدد مانگتے ہیں۔ ہمیں سیدھی راہ پر چلا۔ ان لوگوں کی راہ پر جن پر تو نے انعام کیا۔ ان کی راہ نہیں جن پر تیرا غضب نازل ہوا، اور نہ ان کی جو گمراہ ہو گئے۔“

فائدہ:..... موذی جانور کے کاٹ لینے پر ”سورۃ فاتحہ“ پڑھ کر دم کرنا انتہائی مفید ہے،

جیسا کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے ایک واقعہ سے ثابت ہوتا ہے۔^❶

۸۴۔ الْمَصْوْرُ

معانی:..... صورت بنانے والا۔

یعنی خوبصورت ترتیب دے کر بنانے والا۔ (الغزالی)

اور ہر صورت کو بغیر کسی نقل یا مثال کے بنانے والا۔ (الزجاج بحوالہ تشریح

الأسماء الحسنى، ص: ۷۷)

معارف:..... یہ نام صرف ایک مقام پر آیا ہے:

﴿هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾ (الحشر: ۲۴)

”وہ اللہ پیدا کرنے والا ہے، ہر مخلوق کو اس کا وجود دینے والا ہے، اس کی

❶ صحیح بخاری، کتاب الاجارہ، رقم: ۲۲۷۶۔ صحیح مسلم، کتاب السلام، رقم: ۵۷۳۳۔

صورت بنانے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ مصور ہے، مرد و عورت، خوبصورت و بدصورت جیسا چاہتا ہے رحم میں پیدا کرتا ہے:

﴿هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ﴾ (آل عمران: ۶)

”وہی ماں کے پیٹ میں تمہیں جیسی چاہتا ہے صورت عطا کرتا ہے۔“

﴿اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ

وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ ۚ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿۳۷﴾﴾

(المؤمن: ۶۴)

”اللہ نے ہی تمہارے لیے زمین کو ثابت اور آسمانوں کو چھت بنا دیا ہے، اور

تمہاری صورتیں بنائیں، تو تمہیں اچھی شکل و صورت دی، اور تمہیں بطور روزی

عمدہ چیزیں عطا کیں، وہی اللہ تمہارا رب ہے، پس اللہ عالی شان والا ہے،

سارے جہان کا پالنے والا ہے۔“

یعنی اُس نے تمہیں ماؤں کے بطن میں اچھی شکل و صورت میں تخلیق کیا، یعنی ہر عضو کو

مناسب ترین جگہ پر رکھا تاکہ تم ان سے فائدہ اٹھا سکو۔

۸۵۔ الْمُقْتَدِرُ

معانی:..... مکمل قدرت رکھنے والا۔

جس کی قدرت سے کوئی چیز باہر نہ ہو۔ ہر کام میں اپنی قدرت و طاقت دکھانے والا اور

جو کام نہیں کرتا (تو بے بسی کی وجہ سے نہیں بلکہ) اگر چاہے تو کر سکتا ہے۔ (البیہقی)

لفظ میں (حرف کی) زیادتی معنی میں زیادتی پر دلالت کرتی ہے۔ (تشریح الأسماء

الحسنی، ص: ۹۱)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن مجید میں (۲) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝﴾ (الکھف: ۴۵)

”اور اللہ ہر چیز پر مکمل قدرت رکھنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ قادرِ مطلق ہے کہ اس نے فرعون اور فرعونیوں کی سخت گرفت کی، جس سے دُنیا کی کوئی طاقت انہیں نہ بچا سکی:

﴿كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذْبًا فَآخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ۝﴾ (القمر: ٤٢)

”انہوں نے ہماری تمام نشانیوں کی تکذیب کی، تو ہم نے اس طرح پکڑ لیا جس طرح زبردست قدرت والا پکڑتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ مقتدر ہے کہ وہ متقین کو جنتیں عطا فرمائے گا جن کے پاس نہریں جاری ہوں گی۔
﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۖ فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝﴾

(القمر: ٥٤، ٥٥)

”بے شک پرہیزگار لوگ باغوں اور نہروں میں ہوں گے۔ صدق و صفا کی مجلس میں، قدرت والے بادشاہ کے پاس۔“

اسم مقتدر کا استعمال عزت و ملک و فرماں روائی کی شان کے ساتھ ہوا ہے۔^①
۸۶۔ اَلْبَقِيَّةُ

معانی:..... روزی دینے والا۔

خود پیدا کرے اور بندوں تک پہنچائے یا سب کو کافی ہو۔ (الغزالی)
اور بقول زجاج یہ معنی بھی ہیں کہ وہ ہر چیز پر قدرت و نگاہ رکھنے والا ہے۔ قرآن کریم میں ہے: ﴿وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝﴾ (النساء: ۸۵) ”اور اللہ تعالیٰ ہر چیز پر نگہبان ہے۔“ (بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۵)

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب شرح اسماء الحسنی، ص: ۱۱۷ پر لکھتے ہیں: ”مقیّت وہ ہے جو جملہ قوائے بدن کو توانائی دیتا ہے۔ مقیّت وہ ہے جو قوائے روحانی کو غذا بخشتا ہے۔ مقیّت وہ ہے کہ نباتات و جمادات و حیوانات جن و ملک اپنی اپنی ساخت اور اقتضائے فطرت کے مطابق اس کی روزی سے پل رہے، بڑھ رہے اور نشوونما پا رہے ہیں۔“

① اسماء اللہ الحسنی، از منصور پوری، ص: ۱۷۳۔

معارف: یہ مبارک نام صرف ایک جگہ واقع ہوا ہے:

﴿وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ۝﴾ (النساء: ۸۵)

اور اللہ ہر چیز کی نگرانی کرتا ہے اور اسے روزی دیتا ہے۔“

۸۷۔ اَلْمَلِكُ

معانی: حقیقی بادشاہ۔

جو اپنے ہر حکم کو نافذ کر سکے کسی اور بادشاہ کی یہ صفت نہیں بلکہ وہ بادشاہوں کا بادشاہ

ہے۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء و الحسنى، ص: ۷۴)

معارف: رب ذوالجلال کا یہ نام قرآن کریم میں (۵) جگہ وارد ہوا ہے، ایک مقام

پر ارشاد فرمایا:

﴿فَتَعَلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۝﴾ (المؤمنون: ۱۱۶)

”پس بہت ہی برتر و بالا ہے وہ اللہ جو بادشاہ برحق ہے۔“

اللہ تعالیٰ ہی ملک ہے، کیونکہ وہ عظمت والا ہے اس سے زیادہ کوئی بلند و عظیم نہیں۔

﴿فَتَعَلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۝﴾ (طہ: ۱۱۴، المؤمنون: ۱۱۶)

”پس بہت ہی عالی شان والا ہے وہ اللہ جو سارے جہاں کا بادشاہ ہے۔“

اللہ تعالیٰ کی ذات تو وہ ہے جس کے سوا کوئی معبود حقیقی نہیں، وہ تو شاہِ بے نیاز ہے،

جس کا ہر کوئی محتاج ہے، اسی کا نظام اور اسی کا حکم ہر چیز پر نافذ ہے۔

﴿هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ ۝﴾ (الحشر: ۲۳)

”وہ اللہ ہے جس کے سوا کوئی معبود نہیں ہے، وہ شہنشاہِ حق ہے، ہر عیب سے

پاک ہے۔“

سورة الملك میں ارشاد فرمایا:

﴿تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمَلِكُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾ (الملك: ۱)

”بے حساب برکتوں والا ہے وہ (اللہ) جس کے ہاتھ میں (سارے جہان کی)

بادشاہی ہے، اور وہ ہر چیز پر قادر ہے۔“

اور سورۃ الزخرف میں ارشاد فرمایا:

﴿وَتَبَرَّكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا﴾ (الزخرف: ۸۵)

”اور بڑی برکتوں والا ہے، وہ اللہ جو آسمانوں اور زمین اور ان کے درمیان کی

ہر چیز کا مالک ہے۔“

ان آیات میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ وہ بڑی عظمت و بزرگی والا ہے، اس کی خیر و

برکت عام اور اس کا احسان تمام مخلوقات کو شامل ہے۔

اس کے عظیم ہونے کی ایک دلیل یہ ہے کہ وہی ملک یعنی عالم بالا اور عالم زیریں کا

شہنشاہ ہے۔

۸۸۔ الْمَلِكُ

معانی:..... بادشاہ۔

ملیک بھی بمعنی الملک ہے۔ (أسماء الله الحسنى، از منصور پوری، ص: ۷۳)

معارف:..... رب تعالیٰ کا یہ نام صرف ایک مقام پر قرآن کریم میں آیا ہے:

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۖ فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝﴾

(القمر: ۵۴، ۵۵)

”بے شک پرہیزگار لوگ باغوں اور نہروں میں ہوں گے۔ صدق و صفا کی مجلس

میں، قدرت والے بادشاہ کے پاس۔“

یعنی اس عظیم بادشاہ کے ہاں جو تمام اشیاء کا خالق اور ان کی تقدیر مقرر فرمانے والا ہے

اور وہ اپنے ان وفا شعار بندوں کے طلب و ارادہ میں سے جو چاہے اسے پورا کرنے پر مکمل

طور پر قادر ہے۔

امام احمد رحمہ اللہ نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت کیا ہے کہ نبی ﷺ نے فرمایا:

((الْمُقْسِطُونَ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُورٍ عَنْ يَمِينِ

الرَّحْمَنِ عَزَّ وَجَلَّ، وَكَلَّمَا يَدِيهِ يَمِينٌ، الَّذِينَ يَعْدِلُونَ فِي حُكْمِهِمْ وَأَهْلِيهِمْ وَمَا وَلَوْا))

”انصاف کرنے والے روز قیامت رحمٰن کی دائیں جانب نور کے منبروں پر جلوہ افروز ہوں گے اور رحمٰن کے دونوں دست مبارک دائیں ہیں اور ان سے مراد وہ لوگ ہیں جو اپنے فیصلے، اپنے اہل و عیال اور جس منصب پر وہ فائز ہوں، عدل و انصاف کرتے ہیں۔“ ❶

اللہ تعالیٰ ملیک ہے، ہر شے کی ملکوت اسی کے ہاتھ میں ہے۔

﴿بَيِّدَهُ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ﴾ (یسین: ۸۳)

”اُسی کے ہاتھ میں ہر چیز کی ملکیت ہے۔“

اللہ تعالیٰ ملیک ہے، جسے چاہتا ہے ملک عطا کرتا ہے، اور جس سے چاہتا ہے ملک چھین لیتا ہے:

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

تَشَاءُ﴾ (آل عمران: ۲۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے بادشاہی عطا کرتا ہے اور جس سے چاہتا ہے بادشاہی چھین لیتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

رسول ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جب تم بستر پر لیٹو تو یہ دعا پڑھا کرو:

((اَللّٰهُمَّ! عَالِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَ الْاَرْضِ

رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ وَ مَلِيكِهِ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ

شَرِّ نَفْسِيْ وَ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ شَرِّكَهٖ وَ اِنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ

سُوءًا أَوْ أَجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ)) ❶

”اے اللہ! غیب اور ظاہر کو جاننے والے، آسمان وزمین کو پیدا کرنے والے، ہر چیز کے پروردگار اور مالک۔ میں گواہی دیتا ہوں کہ تیرے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں، میں اپنے نفس کے شر اور شیطان کے شر اور شرک سے تیری پناہ چاہتا ہوں، اور (ہر) اس چیز سے بھی کہ میں خود سے کسی برائی کا ارتکاب کر بیٹھوں یا کسی مسلمان سے کوئی برائی کروں۔“

۸۹۔ اَلْمَوْلٰی

معانی:..... حامی، آقا۔

ولا سے ہے۔ ولا کے معنی وہ تعلق ہے جو دو چیزوں کے درمیان ہو۔

(أسماء الله الحسنى، از منصور پوری، ص: ۲۱۳)

معارف: یہ نام قرآن کریم میں (۱۲) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے

ارشاد فرمایا:

﴿وَاَعْتَصِمُوا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِيْرُ﴾

(الحج: ۷۸)

”اور اللہ سے اپنا رشتہ مضبوط رکھو، وہی تمہارا آقا ہے، پس وہ بہت ہی اچھا آقا،

اور بہت ہی بہترین مددگار ہے۔“

اللہ تعالیٰ مولیٰ ہے، اور وہی سچا آقا ہے۔

﴿وَرُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ﴾ (یونس: ۳۰)

”اور تمام لوگ صرف اللہ کی طرف لوٹا دیئے جائیں گے جو ان کا حقیقی آقا و

❶ سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم: ۵۰۶۷۔ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۳۹۲۔

مستدرک حاکم: ۵۱۳/۳، کتاب الدعاء والتکبیر، رقم: ۱۹۳۵۔ صحیح ابن حبان، کتاب الاذکار،

رقم: ۲۳۴۹۔ سلسلہ صحیحہ، رقم: ۷۷۰۳۔

مولیٰ ہے۔“

اللہ تعالیٰ مولیٰ ہے، اور اس کی بہترین حمایت ہمیں حاصل ہے۔

﴿فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ تُنَعَّمُ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ الْمَصِيدُ﴾ (الأنفال: ۴۰)

”پس تم جان لو کہ بے شک تمہارا مولیٰ اللہ ہے، اور وہ بڑا ہی اچھا مولیٰ اور بڑا

ہی اچھا مددگار ہے۔“

اللہ کے علاوہ کوئی مولیٰ و آقا نہیں۔

﴿فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاكَ﴾ (التحریم: ۴)

”پس بے شک اللہ ان کا مولیٰ ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

اللہ تعالیٰ مولیٰ ہے، اور اس کی رحمت خاصہ کا بایں الفاظ سوال کیا کریں:

﴿وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

الْكُفْرِينَ﴾ (البقرة: ۲۸۶)

”اور ہمیں درگزر فرما، او ہماری مغفرت فرما، اور ہم پر رحم فرما، تو ہمارا آقا اور مولیٰ

ہے، پس کافروں کی قوم پر ہمیں غلبہ نصیب فرما۔“

۹۰۔ الْمُهَيِّينُ

معانی:..... نگہبان اور محافظ۔

وہ اپنی خلقت پر ان کی حیات، موت، عمل، رزق اور اجل وغیرہ کا محافظ ہے۔ (الغزالی)

نیز آخرت میں وہ اعمال کے بدلے (تاکہ کسی کو بھی اس کے نیک عمل کا بدلہ کم نہ ملے) پر

بھی نگہبان ہے اور یہ بھی کہ کسی گناہ گار کو اس کے گناہ کی سزا (زیادہ) نہ ملے، اس پر نگہبان و محافظ

ہے۔ (بیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنى، ص: ۷۵)

معارف:..... یہ نام بھی صرف ایک جگہ آیا ہے:

﴿السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيِّينُ﴾ (الحشر: ۲۳)

”وہ سلامتی دینے والا، امن و سکون عطا کرنے والا ہے، سب کا نگہبان ہے۔“
 اللہ تعالیٰ مہیمن ہے، جس نے رسول مہیمن کو کتاب مہیمن عطا فرمائی۔
 ﴿وَاَنْزَلْنَا لَكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ﴾ (المائدة: ۴۸)

”اور ہم نے آپ پر برحق کتاب نازل کی ہے، وہ اس کتاب کی تصدیق کرتی ہے جو اس سے پہلے آچکی ہے، اور اس پر نگہبان و شاہد ہے۔“
 اس آیت کریمہ کا معنی و مفہوم یہ ہے کہ قرآن کریم تمام آسمانی کتابوں (تورہ، انجیل، زبور) کی منزل من جانب اللہ ہونے کی تائید کرتا ہے، ان کے غیر منسوخ احکام کی توثیق کرتا ہے اور منسوخ احکام کی وضاحت کرتا ہے، ان میں موجود اصول و ضوابط کی حفاظت کرتا ہے، اور ان سب کتابوں پر غالب ہے، اس لیے کہ محکم اور منسوخ احکام کا اب صرف قرآن ہی مرجع ہے اور ان سب کا امین اور نگران ہے، اس لیے کہ اب صرف قرآن بتاتا ہے کہ ان سابقہ آسمانی کتابوں کے کون سے احکام قابل عمل ہیں اور کون سے ترک کر دیئے گئے ہیں۔
 اس اسم پاک سے تخلق اختیار کرنے والوں کے لیے ضروری ہے کہ وہ لوگوں کی نگہداشت کریں، اچھائی اور برائی کی تمیز بتلائیں۔ ایک صحابی کا سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ کی مدح میں یہ شعر ہے:

أَلَا إِنَّ خَيْرَ النَّاسِ بَعْدَ نَبِيِّنَا
 مُهَيِّمُهُ النَّالِيهِ فِي الْعُرْفِ وَالنَّكَرِ

”خبردار! ہمارے نبی محمد ﷺ کے بعد بہترین انسان ابوبکر ہے کہ جس نے ہماری نگہداشت کی اور اچھائی و برائی کی تمیز سکھائی۔“



حرف النون

۹۱۔ اَلنَّصِيرُ

معانی:..... مددگار۔

نصرونصرت بمعنی عون و مدد ہے۔ (اسماء اللہ الحسنی، از منصور پوری، ص: ۲۱۵)

معارف:..... یہ نام مبارک قرآن کریم میں (۴) جگہ وارد ہوا ہے، ایک جگہ یہ ہے:

﴿وَكُفِيَ بِرَبِّكَ هَٰذَا وَيَا وَنَصِيرًا ۝﴾ (الفرقان: ۳۱)

”اور آپ کا رب بحیثیت ہادی و مددگار کافی ہے۔“

اللہ تعالیٰ نصیر ہے، جس نے میدانِ بدر میں رسول اللہ ﷺ کی مدد فرمائی۔

﴿وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُشْكُرُونَ ۝﴾ اِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ اَلَنْ يَكْفِيَكُمْ اَنْ يُبَدِّلَكُمْ رُبَّكُمْ بِثَلَاثَةِ اَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ۝ بَلَىٰ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوا وَيَاْثُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُضِدَّكُمْ رُبَّكُمْ بِخَمْسَةِ اَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَّكُمْ وَ لِيُطْمَئِنِّ قُلُوْبُكُمْ بِهِ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝﴾ (آل عمران: ۱۲۳-۱۲۶)

”اور اللہ نے میدانِ بدر میں تمہاری مدد کی، جبکہ تم نہایت کمزور تھے، پس تم لوگ اللہ سے ڈرو، تاکہ تم (اللہ کی اس نعمت کا) شکر ادا کرو۔ جب آپ مومنوں سے کہہ رہے تھے کہ کیا تمہارے لیے یہ کافی نہیں کہ تمہارا رب تین ہزار فرشتے اتار کر تمہاری مدد کرے۔ ہاں، اگر تم لوگ صبر کرو گے، اور اللہ سے ڈرو گے، اور تمہارے دشمن جوش میں آ کر تم تک آجائیں گے، تو تمہارا رب پانچ ہزار نشان زدہ فرشتوں

کے ذریعہ تمہاری مدد کرے گا۔“

جنگ بدر میں مسلمان ہر طرح سے کمزور تھے، لیکن جب انہوں نے اللہ پر بھروسہ کیا، اور صبر و ثبات قدمی سے کام لیا تو اللہ نے انہیں کافروں پر غلبہ دیا۔
فرشتوں کے ذریعہ امداد و نصرت کی خبر مسلمانوں کے لیے ایک خوشخبری تھی، اور مقصد یہ تھا کہ ان کے دل مطمئن ہوں، ورنہ نصرت و فتح تو اللہ کی طرف سے آتی ہے، اللہ کسی سبب کا محتاج نہیں۔

﴿إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٥٠﴾ (التوبة: ٤٠)

”اگر تم لوگ رسول اللہ کی مدد نہیں کرو گے تو (کوئی فرق نہیں پڑتا) اللہ نے ان کی مدد اس وقت کی جب کافروں نے انہیں نکال دیا تھا، اور وہ دو میں سے ایک تھے جب دونوں غار میں تھے، اور اپنے ساتھی سے کہہ رہے تھے کہ غم نہ کیجیے، بے شک اللہ ہمارے ساتھ ہے، تو اللہ نے انہیں اپنی طرف سے تسکین دی، اور ایسے لشکر کے ذریعے انہیں قوت پہنچائی جسے تم لوگوں نے نہیں دیکھا، اور کافروں کی بات نیچی کر دکھائی، اور اللہ کی بات اوپر ہوئی، اور اللہ زبردست بڑی حکمتوں والا ہے۔“

اسی آیت میں نبی کریم ﷺ کو اطمینان و یقین دلایا گیا ہے کہ اللہ ظاہری اسباب کا محتاج نہیں ہے، اگر لوگ آپ کی مدد نہیں کرتے ہیں تو نہ کریں وہ تو ہر حال میں اپنے نبی کی مدد کرتا رہے گا، اور کبھی بھی اسے تنہا نہیں چھوڑے گا۔

امام احمد اور بخاری و مسلم نے سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ جب ہم غار میں تھے تو میری نظر مشرکین کے قدموں پر پڑی، جبکہ وہ ہمارے سروں پر کھڑے تھے۔ میں

نے کہا: اے اللہ کے رسول! اگر دشمنوں میں سے کوئی اپنے قدموں پر نظر ڈالے گا تو ہمیں دیکھ لے گا، آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”اے ابوبکر! آپ کا ان دو کے بارے میں کیا خیال ہے، جن کے ساتھ تیسرا اللہ ہے۔“

چنانچہ اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی ﷺ پر سکون و اطمینان نازل کیا، اور فرشتوں کے ذریعے ان کی مدد کی جو غار میں آپ کی حفاظت کرتے رہے اور کفر و شرک مغلوب ہوا اور توحید و اسلام کو غلبہ حاصل ہوا۔

﴿وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنُصْرِهِۦ مَنِ يَّشَآءُ﴾ (آل عمران: ۱۳)

”اور اللہ اپنی مدد کے ذریعے جس کی چاہتا ہے تائید کرتا ہے۔“

﴿وَإِنَّ اللّٰهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ﴾ (الحج: ۳۹)

”اور اللہ ہر کسی کی مدد کرنے پر قادر ہے۔“

اللہ تعالیٰ نصیر ہے، مگر اس کی نصرت و مدد ان کو حاصل ہوتی ہے جو اللہ کے دین کی مدد کرتے ہیں۔

﴿وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَن يَنْصُرُهُۥ﴾ (الحج: ۴۰)

”اور اللہ یقیناً ان کی مدد کرتا ہے جو اس کے دین کی مدد کرتے ہیں۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُخْرِجْ أَعْدَاءَكُمْ﴾

(محمد: ۷)

”اے ایمان والو! اگر تم اللہ (کے دین) کی مدد کرو گے تو وہ تمہاری مدد کرے گا،

اور تمہیں ثابت قدمی عطا کرے گا۔“

اللہ تعالیٰ کی نصرت و فتح حاصل ہو جانے کے بعد اس نعمت پر اپنے رب کا شکر ادا کرنا

چاہیے۔

﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۖ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللّٰهِ

أَفْوَاجًا ۖ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣١﴾ (النصر)

”اے میرے نبی! جب اللہ کی مدد آگئی ہے، اور مکہ فتح ہو گیا ہے اور آپ لوگوں کو دیکھ رہے ہیں کہ وہ گروہ درگروہ اللہ کے دین میں داخل ہو رہے ہیں۔ تو آپ اپنے رب کی پاکی بیان کیجیے، اس کی حمد و ثنا کیجیے اور اس سے مغفرت طلب کیجیے، بے شک وہ بڑا توبہ قبول کرنے والا ہے۔“

اس سورت میں رسول اللہ ﷺ کے لیے ایک خوشخبری ہے، اور جب وہ خوشخبری ظاہر ہو جائے تو رسول اللہ ﷺ کے لیے ان کے رب کی طرف سے ایک حکم ہے، ایک بات کی طرف اشارہ ہے۔

خوشخبری یہ ہے کہ اللہ اپنے رسول کی مدد کرے گا، مکہ مکرمہ فتح ہوگا، اور لوگ جوق در جوق اسلام میں داخل ہوں گے۔

اور حکم یہ ہے کہ آپ مذکورہ بالا نعمتوں پر اپنے رب کا شکر ادا کریں، اس کی پاکی بیان کریں اور اس سے مغفرت طلب کریں۔

اس میں دو اشارے ہیں: ایک یہ کہ اللہ دین اسلام کی ہمیشہ مدد کرتا رہے گا، اور اس کا شکر ادا کرنے اور اس کی حمد و ثنا میں لگے رہنے سے اس کی نصرت و تائید میں اضافہ ہوتا رہے گا، دوسرا اشارہ یہ ہے کہ نبی کریم ﷺ کی وفات کا وقت قریب آچکا ہے۔

﴿وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝﴾ (الشوری: ۳۱)

”اور اللہ کے علاوہ تمہارا کوئی مددگار اور حامی نہیں ہے۔“

۹۲۔ التَّوْرُ

معانی:.....سرتاپا نور، نور بخشنے والا۔

اس کی توحید کے دلائل بالکل روشن و عیاں ہیں۔ (الزجاج)

وہی ہر چیز کو ظاہر کرنے والا ہے۔ (الغزالی)

کیونکہ اس کے بتائے بغیر کوئی بھی کسی چیز کو سمجھ نہیں سکتا۔ اس کا ادراک نہیں کر سکتا۔

اگر وہ آسانی نہ کرے تو کوئی بھی اپنے مقصد کے حصول میں کامیاب نہ ہو۔ عقل اور حواسِ خمسہ سب اس کے پیدا کردہ اور عطا کردہ ہیں۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۸)

معارف: اللہ تعالیٰ کا یہ نام بصورتِ قرآن مجید میں صرف ایک جگہ آیا ہے:

﴿اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ﴾ (النور: ۳۵)

”اللہ آسمانوں اور زمین کا نور ہے۔“

اس آیت کریمہ میں ”نور“ سے مراد ”نور والا“ یعنی اللہ تعالیٰ کی ذات ہے جس نے پوری کائنات کو شمس و قمر اور کواکب کے ذریعہ روشنی اور نور عطا فرمایا۔ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما نے ”نور“ کی تفسیر ”ہادی“ کی ہے، یعنی جو تمام کائنات کا ہادی و راہنما ہے۔

مفسر ابوالسعود لکھتے ہیں کہ ”نور والے“ کو نور سے تعبیر کر کے روشنی کی ”انتہائی قوت“ کی طرف اشارہ کیا گیا ہے، اور اس طرف بھی اشارہ کرنا مقصود ہے کہ اللہ خود اپنی ذات کے ذریعہ ظاہر ہے، اور اپنے سوا تمام موجودات کو اسی نے ظاہر کیا ہے، جس طرح روشنی بذاتِ خود ظاہر ہوتی ہے، اور دوسری چیزیں اس کے ذریعہ ظاہر ہوتی ہیں۔

اسم ”نور“ کی اضافتِ سماوات و ارض کی طرف کی گئی ہے، تاکہ معلوم ہو کہ اللہ کی ذات پوری کائنات کو روشنی کیے ہوئے ہے۔

”مَثَلُ نُورِهِ“ وہ نور جو باری تعالیٰ کی ذات سے پھوٹتا ہے، اور جو کائنات کی تمام چیزوں کو روشنی کیے ہوئے ہے، اس کی انتہائی قوت اور انتہائی روشنی کا تصور لوگوں کے ذہنوں میں بٹھانے کے لیے، اللہ تعالیٰ نے ایک مثال دی ہے کہ جیسے کسی دیوار میں ایک طاق ہو، اس طاق میں ایک چراغ رکھا ہو، اور وہ چراغ ایک بلوریں شیشے میں ہو، اور وہ شیشہ اتنا صاف و شفاف اور چمک دار ہو کہ جیسے موتی کے مانند چمکتا ہوا کوئی ستارہ، اور اس چراغ کا تیل زیتون کے ایسے درخت کا ہو جو بیجِ باغ میں اونچی جگہ پر ہو، جس پر سارا دن دھوپ پڑتی رہتی ہو (کیونکہ ایسے زیتون کا تیل نہایت عمدہ اور صاف ہوتا ہے) جس کا تیل اتنا صاف

شفاف ہو کہ چراغ کو آگ سے روشن کرنے سے پہلے خود تیل سے روشنی پھوٹ رہی ہو۔ یعنی وہ چراغ کیا ہے گویا نور ہی نور ہے، روشنی ہی روشنی ہے۔ اسی طرح اللہ کا نور بھی روشنی ہی روشنی ہے، وہاں ظلمت و تاریکی کا نام و نشان نہیں ہے۔

مفسر ابوالسعود کہتے ہیں کہ اللہ کے اس نور سے مراد قرآن مبین ہے، جس کی بے پایاں روشنی نے تاریکی کا خاتمہ کر دیا ہے، اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا﴾ (النساء: ۱۷۴)

”لوگو! ہم نے تمہارے لیے ”نور مبین“ نازل کیا ہے۔“

حافظ ابن القیم رحمہ اللہ لکھتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے اپنا نام ”نور“ رکھا ہے، اور اپنی کتاب یعنی قرآن کو نور بنایا ہے، اپنے رسول کو نور بنایا ہے، اور اپنے دین کو نور بنایا ہے۔ وہ اپنی مخلوق کی نگاہوں سے نور کے ذریعہ چھپ گیا ہے، اس نے اپنے اولیاء کا گھر نور سے بنایا ہے جو چمکتا رہتا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: ﴿اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ﴾ اور ”نور“ کی تفسیر ”نور والے“ سے کی گئی ہے جس نے کائنات کو روشن رکھا ہے، اور جو آسمانوں اور زمین والوں کی راہنمائی کرتا ہے۔ اس آیت میں ”نور“ اس کا فعل ہے اور جو ”نور“ اس کی صفت ہے، وہ اس کی ذات کے ساتھ قائم ہے۔

﴿مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكُوتٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ﴾ کے ضمن میں رقم طراز ہیں کہ ہر بندہ مومن کے دل میں اللہ کے نور کی مثال ہے۔ اور اللہ نے اپنے بندے رسول اللہ ﷺ کو اس نور کا سب سے وافر حصہ دیا ہے۔

امام مسلم نے ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ سے ایک حدیث روایت کی ہے، جس میں رسول اللہ ﷺ نے اللہ تعالیٰ کے بارے میں فرمایا ہے کہ ”اس کا حجاب نور ہے، اگر وہ اُسے ہٹا دے تو اس کے چہرے کے انوار ان تمام مخلوقات کو خاستر کر دیں جہاں تک اس کی نگاہ پڑے۔“

اور امام مسلم ہی نے جناب ابو ذر رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے، میں نے رسول اللہ ﷺ

سے پوچھا کہ کیا آپ نے رب کو دیکھا؟ تو آپ نے فرمایا: ”وہ تو ”نور“ ہے اُسے کہاں دیکھ سکتا تھا۔“

شیخ الاسلام ابن تیمیہ فرماتے ہیں:

”اس کا مطلب یہ ہے کہ وہاں ایک نور تھا، جسے نور کے ایک حجاب کی وجہ سے نہیں دیکھ سکتا تھا۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

محسن انسانیت ﷺ سجدے میں کہتے:

۱:..... ((اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا وَفِي يَمِينِي نُورًا، وَفِي يَسَارِي نُورًا، وَفِي فَوْقِي نُورًا، وَفِي تَحْتِي نُورًا، وَأَمَامِي نُورًا، وَخَلْفِي نُورًا، وَعَظَمَ لِي نُورًا)) ①

”اے اللہ! میرے دل، میری بصارت اور سماعت کو منور فرما، میرے دائیں بائیں، اوپر نیچے، سامنے اور پیچھے ہر طرف نور پھیلا دے، اور میری روشنی کو بڑھا دے۔“

۲:..... صحیحین میں سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ جب رات کو

اٹھتے تو کہتے:

((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ.....))

”اے اللہ تیرے ہی لیے سب تعریف ہے، تو ہی آسمانوں اور زمین اور ان مخلوقات کو جو ان میں ہیں قائم رکھنے والا ہے اور تیرے ہی لیے سب تعریف ہے۔ تو آسمانوں اور زمین کا نور ہے۔“ ②

① صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين، باب الدعاء في صلاة الليل وقيامه، رقم: ۷۶۳.

② صحیح بخاری، کتاب التہجد، رقم: ۱۱۲۰۔ صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين، رقم:

حرف الواو

۹۳۔ اَلْوَاَحِدُ

معانی:..... اکیلا، یکتا و یگانہ۔

جو اپنی ذات و صفات میں یکتا ہو بغیر اجزاء و شرکاء کے۔ دوسروں کے شریک بھی ہیں اور ان کے اجزاء بھی ہیں۔ (الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۶۷)

معارف: یہ بابرکت نام (۲۲) مرتبہ قرآن کریم میں آیا ہے، ایک جگہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۱﴾ (الرعد: ۱۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ اللہ ہی ہر چیز کا خالق ہے اور وہ تنہا، زبردست ہے۔“

معبود واحد صرف اللہ تعالیٰ کی ذات ہے۔

﴿قُلِ اِنَّمَا هُوَ اللّٰهُ وَاحِدٌ وَاِنِّیْۤ اَبْرَئِیْۤ اَمَّا تَشْرِکُوْنَ ۝۱۹﴾ (الانعام: ۱۹)

”آپ کہیے کہ وہ اللہ اکیلا معبود ہے اور میں بے شک ان معبودوں سے اظہار براءت کرتا ہوں جنہیں تم لوگ اللہ کا شریک بناتے ہو۔“

بہتر معبود صرف واحد اللہ تعالیٰ کی ذات ہے، باقی تمام معبودان باطل ہیں۔

﴿يٰۤاَصْحٰبِ السِّجْنِ اَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌۭ اَمَّ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۳۹﴾

(یوسف: ۳۹)

”اے جیل کے ساتھیو! کیا کئی مختلف معبود اچھے ہیں یا اللہ جو ایک اور زبردست ہے۔“

سیدنا یوسف علیہ السلام نے جیل کے دونوں ساتھیوں کے سامنے اپنا عقیدہ توحید بیان کرنے

کے بعد اب نہایت ہی حکمت و دانائی کے ساتھ ان کی قوم کے مشرکانہ عقیدہ کی خرابی بیان کرنے کے لیے انہی سے سوال کیا کہ اے جیل کے میرے دونوں ساتھیو! انسانوں کے لیے کئی معبود بہتر ہیں یا ایک اللہ جس پر کوئی غالب نہیں آ سکتا؟

اللہ واحد ہے، بادشاہت اسی کی ہے:

﴿يَوْمَ هُمْ بَرْزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِّلْمَلِكِ الْيَوْمَ ٱللَّهُ

الْوَّاحِدِ الْقَهَّارِ ۝﴾ (المؤمن: ۱۶)

”جس دن لوگ اپنی قبروں سے نکل کر باہر آ جائیں گے، ان کی کوئی بات اللہ سے پوشیدہ نہیں رہے گی اللہ کہے گا آج کس کی بادشاہت ہے؟ (پھر خود ہی

جواب دے گا) اللہ کی ہے جو اکیلا ہے، ہر چیز پر غالب ہے۔“

حدیث میں آیا ہے کہ اللہ عز و جل جب اپنی تمام مخلوق کی روحوں کو قبض فرمائے گا اور اس وحدہ لا شریک لہ کے سوا اس وقت کوئی اور نہ بچے گا تو وہ فرمائے گا کہ آج کس کی بادشاہت ہے۔ تین بار فرمائے گا اور پھر اپنے آپ کو اس کا جواب دیتے ہوئے فرمائے گا: ((لِلَّهِ الْوَّاحِدِ الْقَهَّارِ)) ”اللہ کی جو اکیلا، بڑا غالب ہے۔“^①

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱..... ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ یَا اَللّٰهُ! بِاَنَّكَ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یُکُنْ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَ لِّیْ دُنُوْبِیْ اِنَّكَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ))

اے اللہ! بلاشبہ میں تجھ سے سوال کرتا ہوں، اے اللہ کہ تو واحد، اکیلا اور بے نیاز ذات ہے، تو کسی کا باپ نہیں اور نہ تو کسی کا جنا ہوا ہے، اور تو وہ ہستی ہے کہ اس کا برابری کرنے والا کوئی نہیں ہے۔ تو میرے سب کے سب گناہ معاف کر دے، یقیناً تو ہی بخشنے والا، بے حد مہربان ہے۔“

① الاحادیث الطوال للطبرانی، حدیث الصور، ص: ۱۰۴-۱۱۴، رقم: ۴۸.

فضیلت: نبی کریم ﷺ نے ایک شخص کو شہد میں یہ دعا مانگتے سنا تو تین

مرتبہ ارشاد فرمایا: ”قَدْ غُفِرَ لَهُ“ ”اس کے گناہ بخش دیے گئے۔“ ❶

۲: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطَى لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)) ❷

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں ہے، اس کے لیے بادشاہت ہے اور اسی کی تعریف بھی، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔ اے اللہ! جسے تو عطا کر دے، اسے کوئی منع کرنے والا نہیں اور جسے تو روک دے، اُسے کوئی عطا کرنے والا نہیں۔ اور کسی مالدار کو اُس کے مال و دولت تیری بارگاہ میں نفع نہیں پہنچا سکیں گے۔“

۳: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ. لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ)) ❸

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں ہے، اسی کی ملکیت ہے اور اسی کی تعریف، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے، نصرت الہی کے بغیر، (کسی میں برائی سے) بچنے کی ہمت ہے

❶ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۰۲۔ سنن أبوداؤد، رقم: ۹۸۵۔ محدث البانی نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

❷ صحیح بخاری، کتاب الاذان، رقم: ۸۴۴۔ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۴۲۔

❸ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۴۳۔ سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، رقم: ۱۰۶۔ سنن

نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۴۰۔

اور نہ (نیکی کرنے کی) قوت، اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں۔ (اے اللہ!) ہم صرف تیری ہی عبادت کرتے ہیں، اسی اللہ ہی کی طرف سے انعام اور فضل ہے، اور اسی کے لیے بہترین مدح و ثنا، اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، ہم اپنی بندگی خالص اسی کے لیے کر نیوالے ہیں اگرچہ کفار کو برا ہی کیوں نہ لگے۔“

نوٹ:..... سیدنا عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ جب فرض نماز سے فارغ ہوتے تو باواز بلند یہ کلمات ادا فرماتے۔

۴:..... ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ یکتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اسی کے لیے ملکیت ہے اور اس کے لیے تعریف ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔“

فضیلت:..... سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: جس نے نماز کے بعد (یہ) کہا تو اس کے سارے گناہ (خواہ سمندر کے جھاگ کے برابر ہی کیوں نہ ہوں) معاف کر دیے گئے۔ ①

۹۴۔ اَلْوَاسِعُ

معانی:..... وسعت اور کشادگی والا۔

جس کی جود و سخا مخلوق کے اندازوں سے کہیں بڑھ کر ہے اور اس کی رحمت و علم ہر چیز پر محیط ہے اور اس کا رزق سب کے لیے کافی ہے۔ (بیہقی و اسماء اللہ الحسنی از منصور پوری بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۶)

معارف: یہ نام (۹) مقام پر وارد ہوا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَاللَّهُ يُؤْتِي مَلِكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ﴾ (البقرة: ۲۴۷)
 ”اور اللہ جسے چاہتا ہے اپنا ملک عطا کرتا ہے، اور اللہ بڑی وسعت و کشادگی والا
 اور علم والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ واسع ہے، اس کا علم ہر شے پر حاوی ہے۔ سورۃ الانعام میں ارشاد فرمایا:

﴿وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا﴾ (الانعام: ۸۰)
 ”میرے رب کا علم ہر چیز کو اپنے گھیرے میں لیے ہوئے ہے۔“
 اللہ تعالیٰ واسع ہے، اس کی رحمت ہر چیز پر حاوی ہے۔
 ﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾ (الاعراف: ۱۵۶)
 ”اور میری رحمت ہر چیز کو شامل ہے۔“

سورۃ المؤمن میں ارشاد فرمایا:

﴿رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا﴾ (المؤمن: ۷)
 ”اے ہمارے رب! تیری رحمت اور علم ہر چیز پر محیط ہے۔“
 ﴿إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعٌ مَغْفِرَةً﴾ (النجم: ۳۲)
 ”بے شک آپ کا رب وسیع مغفرت والا ہے۔“
 اللہ تعالیٰ واسع ہے، اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے۔
 ﴿وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ﴾ (البقرة: ۲۵۵)
 ”اس کی کرسی کی وسعت آسمانوں اور زمین کو شامل ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

اس اسم کے متعلق عرش الہی کو تھامنے والے فرشتوں کی اہل ایمان کے حق میں یہ دعایاد
 رکھنی چاہیے:

﴿رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاعْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبِعُوا سَبِيلَكَ وَ

قَهُمْ عَذَابُ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَادْخُلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ
صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩٠﴾

(المؤمن : ۷ تا ۸)

”اے ہمارے رب! تو اپنی رحمت اور اپنے علم کے ذریعہ ہر چیز کو محیط ہے، پس تو ان لوگوں کو معاف کر دے جنہوں نے توبہ کی، اور تیری راہ کی پیروی کی، اور تو انہیں جہنم کے عذاب سے نجات دے۔ اے ہمارے رب! اور تو انہیں ہمیشہ رہنے والے باغات میں داخل کر دے جن کا تو نے اُن سے وعدہ کیا ہے، اور اُن لوگوں کو بھی تو اُن جنتوں میں داخل کر دے جو ان کے ماں باپ، بیویوں اور اولاد میں سے نیک ہوں، توبہ شک زبردست، بڑی حکمتوں والا ہے اور تو انہیں گناہوں کی سزا سے بچالے، اور جس کو تو اُس دن گناہوں کی سزا سے بچالے گا، اُس پر تو نے رحم فرمادیا، اور یہی عظیم کامیابی ہے۔“

۹۰۔ اَلْوَدُودُ

معانی:..... دوست، بھلائی چاہنے والا، محبت کرنے والا۔

جو اپنے بندوں کے اعمال سے خوش ہوتا ہے اور ان کی وجہ سے ان کے ساتھ بھلائیاں کرتا ہے اور ان کی تعریف کرے اور مخلوق میں ان کے دوست بنائے۔ اپنے بندوں پر اتنے احسانات اور انعامات کرے کہ وہ اسے اپنا دوست سمجھیں اور اس کی حمد کریں۔ (بیہقی

بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۷)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا یہ نام قرآن مجید میں دو جگہ آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ﴾ (ہود: ۹۰)

”اور اپنے رب سے مغفرت طلب کرو، پھر اس کی جناب میں توبہ کرو، بے شک

میرا رب نہایت مہربان، بہت محبت کرنے والا ہے۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ﴾ (البروج: ۱۴)

”اور وہ بڑا معاف کرنے والا، بہت محبت کرنے والا ہے۔“

اللہ تعالیٰ ودود ہے، جو شخص اللہ سے محبت کرتا ہے، وہ اس بندے سے محبت کرتا ہے۔

﴿يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ﴾ (المائدة: ۵۴)

”جن سے اللہ محبت کرے گا، اور وہ اللہ سے محبت کرتے ہیں۔“

اللہ تعالیٰ ودود ہے، جو شخص اللہ کے لیے عمل صالح کرتا ہے، وہ اس کی محبت دوسرے

لوگوں کے دلوں میں جاگزیں کر دیتا ہے۔

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا﴾ (مريم: ۹۶)

”بے شک جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے عمل صالح کیا، رحمن ان کی محبت

سب کے دلوں میں جاگزیں کر دے گا۔“

اسم ودود ہر دو مقام پر اسم رحیم اور اسم غفور کے ساتھ وارد ہوا ہے۔

اللہ ودود کی محبت حاصل کرنے کی دعا:

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ جناب داؤد علیہ السلام یہ دُعا کیا کرتے تھے:
 ((اَللّٰهُمَّ! اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ، وَ حُبَّ مَنْ یُّحِبُّكَ، وَ الْعَمَلَ
 الَّذِیْ یُبْلِغُنِیْ حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ! اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ
 وَ مَالِیْ، وَ اَهْلِیْ وَ مِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ)) ❶

”اے اللہ! میں تجھ سے تیری محبت اور جو تجھ سے محبت کرنے والا ہے اس کی،

اور ایسے عمل کی جو مجھے تیری محبت تک پہنچا دے، کی بھیک مانگتا ہوں، اے اللہ!

اپنی محبت کو میرے لیے میری جان، میرے مال، میرے اہل و عیال اور ٹھنڈے

پانی سے بھی زیادہ محبوب کر دے۔“

❶ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۴۹۰۔ سلسلۃ الصحیحۃ، رقم: ۷۰۷۔

۹۶۔ اَلْوَكِيلُ

معانی:..... کارساز۔

جس کے حوالے تمام کام کیے جائیں۔ اس عقیدے کے تحت کہ تمام مخلوق کا وہی مالک ہے اور تمام کام اس کی قدرت میں ہیں نہ کہ کسی اور کے ہاتھ میں۔ (البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۸)

معارف: یہ اسم مبارک قرآن مجید میں (۱۴) مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا﴾ (النساء: ۸۱)

”اور اللہ پر بھروسہ رکھیے، اور اللہ بحیثیت کارساز کافی ہے۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ﴾ (ہود: ۱۲)

”اور اللہ ہر چیز پر کارساز ہے۔“

سورۃ النساء میں ارشاد فرمایا:

﴿وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا﴾ (النساء: ۸۱)

”اور اللہ بحیثیت کارساز کافی ہے۔“

رسول اللہ ﷺ کو حکم صادر ہوا کہ آپ محض باری تعالیٰ کو اپنا وکیل اور کارساز سمجھیں۔

﴿لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا﴾ (المزمل: ۹)

”اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں، پس آپ اسی کو اپنا کارساز بنا لیجیے۔“

اللہ تعالیٰ کے علاوہ کوئی کارساز نہیں۔

﴿وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ﴾ (الانعام: ۱۰۷)

”اور آپ ان کے کارساز نہیں ہیں۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا﴾ (بنی اسرائیل: ۵۴)

”اور ہم نے آپ کو ان کا کارساز اور نگہبان بنا کر مبعوث نہیں کیا۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

﴿حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ (آل عمران: ۱۷۳)

”اللہ تعالیٰ ہمیں کافی ہے اور وہ بہترین کارساز ہے۔“^①

پس منظر: سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ یہ کلمہ جناب ابراہیم علیہ السلام نے

آگ میں ڈالے جاتے وقت کہا تھا اور جناب محمد ﷺ نے اس وقت کہا جب لوگوں نے آپ ﷺ سے کہا کہ:

﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيْثَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا

اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ (آل عمران: ۱۷۳)

”کفار تم سے جنگ کے لیے جمع ہو گئے ہیں، تم ان سے ڈر کر رہو، تو اس خبر نے

ان کا ایمان بڑھا دیا اور انہوں نے کہا کہ اللہ ہمارے لیے کافی ہے اور وہ اچھا

کارساز ہے۔“

سیرت ابن ہشام میں ہے کہ معبد الخزاعی جب ابوسفیان اور اس کی فوج کو مسلمانوں سے مرعوب کرنے کے بعد واپس ہو گئے، تو قبیلہ عبد القیس کا ایک قافلہ ابوسفیان کے پاس سے گزرا، اس نے پوچھا کہ تم لوگ کہاں جا رہے ہو؟ کہا: مدینہ، پوچھا کس لیے؟ کہا: خوراک حاصل کرنے کے لیے، ابوسفیان نے کہا کہ تم لوگ محمد کو ہمارا ایک پیغام پہنچا دو، اس کے بدلے ہم تمہیں عکاظ کے بازار میں کشمش دیں گے۔ انہوں نے کہا: ٹھیک ہے۔ کہا کہ جب محمد سے ملاقات ہو تو کہہ دینا کہ ہم نے باقی مسلمانوں کا صفایا کرنے کے لیے آنے کا فیصلہ کر لیا ہے۔ عبد القیس کا یہ قافلہ حمراء الاسد میں ہی رسول اللہ ﷺ سے جا ملا اور ابوسفیان کا

① صحیح بخاری، کتاب التفسیر، رقم: ۴۵۶۳.

پیغام پہنچا دیا، تو اللہ کے رسول ﷺ اور مسلمانوں نے کہا: ”حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ“ کہ ”اللہ ہمارے لیے کافی ہے اور بہتر کارساز ہے۔“ اس کے بعد یہ آیت نازل ہوئی۔

۹۷۔ اَلْوَلِيُّ

معانی:..... دوست، مددگار۔

جو اپنے دوستوں کی مدد کرے اور دشمنوں کا قلع قمع کرے۔ (تشریح الاسماء

الحسنی، ص: ۸۹)

معارف:..... یہ بابرکت نام قرآن مجید میں (۷) مقام پر آیا ہے، ایک مقام پر فرمایا:

﴿وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝﴾ (الشوری: ۲۸)

”اور وہ اپنی رحمت کو پھیلا دیتا ہے، اور وہی مددگار، ہر تعریف کا سزاوار۔“

اللہ تعالیٰ اہل ایمان کا ولی ہے، انہیں کفر و شک و شبہ کی تاریکیوں سے نکال کر کھلے اور

واضح حق کے راستے پر ڈال دیتا ہے۔

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ﴾ (البقرة: ۲۵۷)

”اللہ ایمان والوں کا دوست ہے، وہ انہیں کفر کے اندھیروں سے نکال کر نور

ایمان تک پہنچاتا ہے۔“

سورۃ آل عمران میں ارشاد فرمایا:

﴿وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝﴾ (آل عمران: ۶۸)

”اور اللہ مومنوں کا دوست ہے۔“

اللہ تعالیٰ اہل تقویٰ کا ولی ہے۔

﴿وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝﴾ (الحاثیة: ۱۹)

”اور اللہ پرہیزگاروں کا دوست اور مددگار ہے۔“

اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کی زبان اقدس پر ارشاد فرمایا کہ میں تو تمہارے

معبودوں کی قطعاً پرواہ نہیں کرتا ہوں، کیونکہ میرا ولی تو اللہ ہے جس نے مجھ پر قرآن نازل

کیا ہے۔

﴿إِنَّ وَلِيََّ لَإِلَٰهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَكَّلُ الصَّالِحِينَ﴾

(الاعراف: ۱۹۶)

”بے شک میرا یار و مددگار وہ اللہ ہے جس نے قرآن نازل کیا ہے۔“

﴿هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ﴾ (الكهف: ۴۴)

”یہاں یہ بات ثابت ہوگئی کہ مدد کرنا اللہ برحق کا کام ہے۔“

اللہ کے علاوہ کوئی ولی نہیں ہے۔

﴿وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ﴾ (الشوری: ۳۱)

”اور اللہ کے سوا تمہارا نہ کوئی دوست ہے اور نہ مددگار۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

اللہ تعالیٰ نے جب اپنی نعمت سیدنا یوسف علیہ السلام پر تمام کر دی، والدین اور بھائیوں کو ان کے پاس پہنچا دیا، اور انہیں علم نبوت، علم تعبیر روایا، اور مصر کی عظیم بادشاہت سے نوازا، تو انہوں نے اپنے رب سے دعا کی:

﴿رَبِّ قَدْ أَتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَنْتَ وَلِيَّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ﴾ (یوسف: ۱۰۱)

”میرے رب! تو نے مجھے بادشاہت عطا کی اور خوابوں کی تعبیر کا علم دیا، اور آسمان و زمین کے پیدا کرنے والے! دنیا و آخرت میں تو ہی میرا یار و مددگار ہے، تو مجھے مسلمان دنیا سے فوت کر، اور نیک لوگوں سے ملا دے۔“

۹۸۔ اَلْوَهَّابُ

معانی:..... بہت زیادہ دینے والا۔

بغیر کسی معاوضہ یا غرض کے۔ (الزجاج)

بغیر مانگے عطا کرنے والا۔ (تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۷۸)
 علامہ قاضی محمد سلیمان منصور پوری شرح اسماء الحسنی، ص: ۹۱ پر تحریر فرماتے ہیں:
 ”وہاب وہ ہے کہ عطائے صوری و معنوی اور عطیات دنیوی و اخروی کا مالک وہی ہے۔ یہی اسم ہے جو بتلاتا ہے کہ بندہ کے پاس اس کے گھر کی کوئی شے نہیں۔ جو کچھ ہے سب دادِ الہی اور جودِ نامتناہی کا نتیجہ ہے۔“

معارف: یہ نام مبارک کتاب اللہ میں تین مرتبہ آیا ہے، ایک مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿أَمْرٌ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝﴾ (ص: ۹)

”یا آپ کے غالب اور عطا کرنے والے رب کی رحمت کے خزانے ان کے پاس ہیں۔“

اللہ تعالیٰ نے اس آیت کریمہ میں فرمایا کہ کیا کفار مکہ آپ کے رب کے خزانوں کے مالک ہیں (جن میں نبوت اور دوسری نعمتیں شامل ہیں) کہ وہ اپنی وحی کے مطابق جسے چاہیں دیں اور جسے چاہیں نہ دیں؟ جب ایسی کوئی بات نہیں ہے، تو انہیں کہاں سے یہ حق حاصل ہو گیا ہے کہ نبی کریم ﷺ کے منصب نبوت پر فائز ہونے پر اعتراض کریں۔

سورۃ الانعام میں اللہ تعالیٰ نے یہ ارشاد فرمایا:

﴿اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۖ﴾ (الانعام: ۱۲۴)

”اللہ بہتر جانتا ہے کہ اپنی رسالت کس کو سونپے۔“

اللہ تعالیٰ وہاب ہے، جس نے جناب ابراہیم علیہ السلام کو اسماعیل و اسحاق علیہما السلام بہہ فرمائے، چنانچہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کا شکر بایں الفاظ ادا کیا:

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ﴾ (ابراہیم: ۳۹)

”ساری تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جس نے بڑھاپے میں مجھے اسماعیل و اسحاق عطا کیا ہے۔“

اللہ تعالیٰ وہاب ہے، جس نے سیدنا داؤد علیہ السلام کو بیٹا سلیمان عطا کیا۔

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمٰنَ﴾ (ص: ۳۰)

”اور ہم نے داؤد کو سلیمان عطا کیا۔“

اللہ تعالیٰ وہاب ہے، جس نے سیدنا زکریا علیہ السلام کو بیٹا یحییٰ علیہ السلام عطا کیا۔

﴿فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيٰى وَاصْلَحْنٰ لَهُ زَوْجَهُ﴾ (الانبیاء: ۹۰)

”پس ہم نے ان کی دعا قبول کر لی اور انہیں یحییٰ (بیٹا) عطا کیا، اور ان کی بیوی

کو اولاد جننے کے قابل بنادیا۔“

اللہ تعالیٰ وہاب ہے، جس نے سیدنا موسیٰ علیہ السلام کی دعا پر ان کے بھائی ہارون علیہ السلام کو

نبوت عطا کی۔

﴿وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَّحْمَتِنَا اَخَاهُ هٰرُونَ نَبِيًّا﴾ (مریم: ۵۳)

”اور ہم نے اپنی رحمت سے ان کے بھائی ہارون کو ان کی خاطر نبی بنادیا۔“

اللہ تعالیٰ وہاب ہے، اس کی وہب میں کسی کا کوئی دخل نہیں ہے، وہ جیسے چاہتا ہے

تصرف کرتا ہے، اور جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے، کسی کو بیٹا دیتا ہے، کسی کو بیٹی دیتا ہے، اور کسی کو

دونوں دیتا ہے، اور کسی کو بانجھ بنا دیتا ہے، یعنی اس کے یہاں اولاد نہیں ہوتی۔

﴿يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ اِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ الذَّكَوْرَ ۚ اَوْ

يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرًا وَاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَآءُ عَقِيْمًا ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ﴾

(الشوری: ۴۹-۵۰)

”وہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے، جسے چاہتا ہے بیٹیاں دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے

لڑکے دیتا ہے۔ یا انہیں لڑکے اور لڑکیاں ملا کر دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے بانجھ

بنادیتا ہے، وہ بے شک بڑا جاننے والا، بڑی قدرت والا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

۱۔ جب سیدنا زکریا علیہ السلام نے سیدہ مریم علیہا السلام کے ساتھ اللہ کا لطف و کرم دیکھا، تو اپنی کبرسنی

اور بیوی کے سن یاس کو پہنچ جانے کے باوجود نیک و صالح لڑکے کے لیے دعا کی، جو

نیکی اور طہارت و نجابت میں مریم کے مانند ہو۔

﴿رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝﴾

(آل عمران : ۳۸)

”اے میرے رب! مجھے تو اپنے پاس سے اچھی اولاد عطا فرما، بے شک تو دعا کو سننے والا ہے۔“

۲۔ قرآن کریم میں راسخین فی العلم کو تعلیم دی گئی ہے کہ اللہ تعالیٰ سے ایمان پر ثابت قدمی کی دعا کریں:

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ

الْوَهَّابُ ۝﴾ (آل عمران : ۸)

”اے ہمارے پروردگار! اس کے بعد کہ تو نے ہمیں سیدھی راہ سمجھا دی ہے، ہمارے دلوں کو ڈالناؤں ڈول نہ کر ڈالنا (راہ حق سے ٹیڑھا نہ ہونے دینا) اور اپنی جناب سے ہمیں خاص رحمت عنایت فرما۔ بلاشبہ تو بہت بڑا عطا کرنے والا ہے۔“



حرف الھاء

۹۹۔ اَلْهَادِی

معانی:..... ہدایت کی توفیق بخشنے والا، ہدایت دینے والا۔

نجات اور اپنی معرفت کی راہ بتانے والا۔ تمام مخلوقات کو اپنی حاجات اور ضروریات پوری کرنے کی راہ دکھانے والا۔ (البیہقی و الزجاج و الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء

الحسنی، ص: ۹۸)

معارف:..... یہ اسم مبارک صرف ایک بار قرآن میں وارد ہوا ہے:

﴿وَكُفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا﴾ (الفرقان: ۳۱)

”اور آپ کا رب بحیثیت ہادی و مددگار کافی ہے۔“

اللہ تعالیٰ ہادی ہے، وہ اپنی مخلوقات کو زندگی گزارنے کا طریقہ سکھاتا ہے۔

﴿رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقًا ثُمَّ هَدَىٰ﴾ (طہ: ۵۰)

”ہمارا رب وہ ہے جس نے ہر چیز کو پیدا کیا ہے، پھر (دنیا میں رہنے کے لیے)

ان کی راہنمائی کی۔“

اللہ تعالیٰ ہادی ہے، وہ ہدایت کے طلب گاروں کو اور زیادہ ہدایت دیتا ہے۔

﴿وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى﴾ (محمد: ۱۷)

”اور جن لوگوں نے ہدایت کو قبول کیا، اللہ نے انہیں اور زیادہ ہدایت دی۔“

﴿وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ﴾ (التغابن: ۱۱)

”اور جو شخص اللہ پر ایمان رکھتا ہے، اللہ اس کے دل کو صبر و استقامت کی راہ

دکھاتا ہے۔“

﴿وَيُزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى﴾ (مریم: ۷۶)

”اور جو لوگ سیدھی راہ پر چلتے ہیں، اللہ ان کی مزید راہنمائی کرتا ہے۔“
پس معلوم ہوا کہ جو لوگ اللہ کی خاطر نفس، شیطان اور اللہ کے دشمنوں کے خلاف لڑتے ہیں، انہیں خوشخبری دی گئی ہے کہ اللہ انہیں اعمالِ صالحہ کی توفیق دیتا ہے، تاکہ ان کے ذریعہ اس کی قربت حاصل کریں۔

﴿وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ (العنکبوت: ۶۹)

”اور جو لوگ ہمارے دین کی خاطر کوشش کرتے ہیں، ہم انہیں اپنی راہ پر ڈال دیتے ہیں۔“

اللہ کے دین کی نصرت کرنے والے لوگوں کو اللہ تعالیٰ اس راہ پر چلنے کی توفیق دیتا ہے جو جنت کی طرف لے جاتی ہے۔

﴿سَيَهْدِيَهُمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ﴾ (محمد: ۵)

”وہ عنقریب اپنی راہ دکھائے گا، اور ان کے حالات کی اصلاح کر دے گا۔“
اللہ تعالیٰ ہادی ہے، جس نے لوگوں کی ہدایت کے لیے رسول بھیجے۔

﴿وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا﴾ (السجدة: ۲۴)

”اور ہم نے ان میں بہت سے راہنما پیدا کیے جو ہمارے حکم کے مطابق لوگوں کی راہنمائی کرتے تھے۔“

اللہ تعالیٰ ہادی ہے، جس نے لوگوں کی ہدایت کے لیے قرآن مجید نازل کیا۔

﴿إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ﴾ (بنی اسرائیل: ۹)

”بے شک یہ قرآن اس راہ کی طرف راہنمائی کرتا ہے جو سب سے سیدھی ہے۔“

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((مَنْ يَهْدِيهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَا هَادِيَ لَهُ)) ❶

”جسے اللہ تعالیٰ ہدایت دے اسے کوئی گمراہ نہیں کر سکتا اور جسے وہ گمراہ کر دے اسے کوئی ہدایت نہیں دے سکتا۔“

سیدنا ابو ذر غفاری رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

”اے میرے بندو! تم سب گمراہ ہو، مگر وہ جسے میں ہدایت دوں، پس تم مجھ سے ہدایت مانگو، میں ہی تمہیں ہدایت دوں گا۔ اے میرے بندو! تم سب بھوکے ہو، سوائے اس کے جسے میں کھانا کھلاؤں، لہذا مجھ سے کھانا طلب کرو، میں تم سب کو کھانا کھلاؤں گا۔ اے میرے بندو! تم سب ننگے ہو، سوائے اس کے جسے میں کپڑا پہناؤں، لہذا تم مجھ سے کپڑے مانگو، میں تمہیں کپڑے پہناؤں گا۔ اے میرے بندو! تم رات دن گناہ کرتے ہو، پس تم مجھ سے گناہوں کی مغفرت طلب کرو، میں تمہارے گناہوں کو بخش دوں گا۔“ ❶

مگر جو لوگ کفر و شرک اور ظلم کا ارتکاب کرتے ہیں، اللہ تعالیٰ ایسے لوگوں کو ہدایت کی توفیق نہیں بخشتا۔

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ (المائدة: ۵۱)

”بے شک اللہ ظالموں کو ہدایت نہیں دیتا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ (۱)

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝﴾ (الفاتحة)

”سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سارے جہاں کا پالنے والا ہے۔ نہایت مہربان بے حد رحم کرنے والا ہے۔ قیامت کے دن کا مالک ہے۔ ہم تیری ہی

❶ صحیح مسلم کتاب البر و الصلة، رقم: ۶۵۷۲۔

عبادت کرتے ہیں اور تجھ ہی سے مدد مانگتے ہیں۔ ہمیں سیدھی راہ پر چلا۔ ان لوگوں کی راہ پر جن پر تو نے انعام کیا۔ ان کی راہ نہیں جن پر تیرا غضب نازل ہوا، اور نہ ان کی جو گمراہ ہو گئے۔“

(۲) سیدنا حسن بن علی رضی اللہ عنہما فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے مجھے دُوروں میں پڑھنے کے لیے یہ دعا قنوت سکھائی:

((اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَ عَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَ تَوَلَّيْنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَ بَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَ قِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ، فَإِنَّكَ تَقْضِي وَ لَا يُقْضَى عَلَيْكَ، وَ إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، وَ لَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكَتَ رَبَّنَا وَ تَعَالَيْتَ))^①

”اے اللہ! تو نے جن لوگوں کو ہدایت دی ہے مجھے بھی (ان کی طرح) ہدایت دے، اور جن کو تو نے عافیت بخشی ہے مجھے بھی عافیت بخش دے، اور جن کا تو خود والی بنا ہے (ان کی طرح) میرا والی بن جا، اور تو نے جو کچھ مجھے عطا کیا ہے اُسے میرے لیے بابرکت بنا دے، اور تو جو فیصلے کرتا ہے اُن کے شر سے مجھے بچالے۔ بے شک تو فیصلے کرتا ہے اور تیرے خلاف کوئی فیصلہ نہیں ہو سکتا۔ جس کا تو دوست بن جائے، وہ کبھی رسوا نہیں ہوتا اور جس سے تو دشمنی رکھے وہ کبھی عزت حاصل نہیں کر سکتا۔ اے پروردگار! تیری ذات بابرکت اور بلند ہے۔“

یہ وہ اسمائے حسنیٰ ہیں جو کوہم نے اپنے ناقص علم و فہم کے مطابق تحقیق و تتبع کے بعد قرآن مجید سے ان کے دلائل کے ساتھ نقل کیے ہیں۔ اس سے قبل بھی ہم یہ کہہ چکے ہیں کہ

① سنن ترمذی، کتاب الوتر، رقم: ۴۶۴۔ سنن ابن ماجہ، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۱۱۷۸۔ ارواء الغلیل: ۱۷۲/۲۔ سنن ابوداؤد، باب القنوت فی الوتر، رقم: ۱۴۲۵۔ سنن الکبریٰ للبیہقی: ۲۹۰/۲۔ شیخ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

اللہ تعالیٰ کے اسمائے حسنیٰ چند محدود عدد میں محصور نہیں ہیں بلکہ جس طرح اللہ کی صفات لامحدود و لامتناہی ہیں، ایسے ہی اللہ کے اسماء بھی لامحدود و لامتناہی ہیں۔ اس لیے جن اہل علم نے اپنے علم و فہم اور تحقیق و تتبع کے مطابق چند اور اسماء بھی بحوالہ قرآن ذکر کیے ہیں تو یہ کوئی حیرت کی بات نہیں، مثلاً: الشَّهِيدُ، الْوَارِثُ، الْحَاكِمُ، ذُو الْفَضْلِ، ذُو الْعَرْشِ، اور ذُو الْمَعَارِجِ وغیرہ۔ جیسا کہ ان کا ذکر حافظ ابن حجر رحمہ اللہ، ابوبکر ابن العربی رحمہ اللہ، ابن قیم رحمہ اللہ اور علامہ محمد حمود نجدی وغیرہ نے کیا ہے، تو یہ بھی قرآنی اسمائے حسنیٰ ہیں۔



قرآن و حدیث سے مزید اسمائِ حسنیٰ کا ثبوت

اب ہم مزید اسمائِ حسنیٰ قرآن و حدیث کے حوالے سے یہاں نقل کرتے ہیں تاکہ معلوم ہو کہ اللہ تعالیٰ کے نام ننانوے کے عدد میں محصور نہیں:

۱۔ الْقَابِضُ

معانی: تنگی کرنے والا۔

۲۔ الْبَاسِطُ

معانی: کشادگی کرنے والا۔

ادب کا تقاضا ہے کہ ان دونوں کا ذکر ایک ساتھ کیا جائے، کیونکہ اللہ تعالیٰ کی پوری قدرت دونوں ناموں کو ایک ساتھ ذکر کرنے کے بعد ہی ظاہر ہوتی ہے۔ مثلاً: اِلٰی فُلَانٍ قَبْضُ اَمْرِیْ وَ بَسْطُهُ ”یعنی میری تنگی اور کشادگی فلاں آدمی کے ہاتھ میں ہے۔“ اس پورے جملے سے کہنے والے کا یہ مقصد ظاہر ہوتا ہے کہ میرے سارے کام اس کے حوالے ہیں۔ اس طرح دونوں صفات کو جمع کرنے سے مقصد ہوگا کہ مخلوق کے سارے کام اللہ تعالیٰ کے زیرِ قدرت ہیں۔ (الزجاج)

یعنی وہ اللہ جو موت کے وقت روحوں کو قبض کرتا ہے اور زندہ کرتے وقت ارواح کو اجسام کے لیے کھولتا ہے۔ دنیا والوں سے صدقات قبول کرتا ہے اور فقراء و مساکین کا رزق کشادہ کرتا ہے۔ کبھی تو دنیا والوں کا رزق اتنا کشادہ کرتا ہے کہ بھوک کا نام بھی نہ رہے اور کبھی فقیر کے لیے اتنی تنگی کرتا ہے کہ اس میں کوئی طاقت نہ رہے۔ وہی اللہ ہے جو اپنے

بندوں کو قبضہ میں لے کر اتنی تنگی کرے کہ وہ اس سے غافل نہ ہوں اور اپنی مہربانی سے اس طرح کشادگی کرے کہ اس کی طرف تقرب حاصل کریں۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۰)

معارف: تنگی کرنے والا اور کشادگی کرنے والا اللہ تعالیٰ ہی ہے۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۖ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝﴾ (البقرة: ۲۴۵)

”کون ہے جو اللہ کو اچھا قرض دے، تو اللہ اسے اس کے لیے کئی گنا بڑھا دے، اور اللہ ہی تنگی دیتا ہے اور کشادگی عطا کرتا ہے، اور اسی کی طرف تمہیں لوٹ کر جانا ہے۔“

۳۔ اَلْخَافِضُ

معانی: گرانے والا۔

۴۔ اَلرَّافِعُ

معانی: اٹھانے والا، بلند کرنے والا۔

اپنے دشمنوں کو گرانے والا، ذلیل کرنے والا، بے نصیب کرنے والا، اور اپنے قرب سے دور کرنے والا، اور اپنے دوستوں کی شان یا مرتبہ کو بلند کرنے والا، دنیا میں ان کے نام اور کلمات کو اٹھانے والا اور آخرت میں درجات بلند کرنے والا۔

(الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۰-۸۱)

معارف: کسی کے درجات بلند کرنا یا اس کے مقام و مرتبہ سے گرا دینا اللہ تعالیٰ کے

اختیار میں ہے۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ﴾ (الزخرف: ۳۲)

”اور ہم نے آپ کے ذکر کو بلندی عطا کی ہے۔“

اللہ تعالیٰ رافع ہے جس نے رسول کریم ﷺ کے ذکر کو بلند فرمایا۔

﴿وَدَعْنَاكَ ذِكْرَكَ﴾ (الانشراح : ۴)

”اور ہم نے آپ کے ذکر کو بلندی عطا کی ہے۔“

اللہ تعالیٰ خافض ہے جو اپنے نفس کے غلاموں، دُنیاوی مال و متاع کو آخرت پر ترجیح دینے والوں کو گرا دیتا ہے۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝ وَكَوْشَيْنَا لَافِعُهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۖ إِنْ تَحَبَّلَ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَاقْصُصْ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝﴾ (الاعراف : ۱۷۵-۱۷۶)

”اور آپ انہیں اس آدمی کی خبر پڑھ کر سنا دیجیے جسے ہم نے اپنی نشانیاں دی تھیں تو وہ ان سے نکل کر باہر چلا گیا، پھر شیطان اس کے پیچھے لگ گیا، پھر وہ گم گشتہ راہ لوگوں میں سے ہو گیا اور اگر ہم چاہتے تو اسے اس کی وجہ سے رفعت و بلندی عطا کرتے، لیکن وہ پستی میں گرتا چلا گیا اور اپنی خواہش کا فرمانبردار ہو گیا، پس اس کی مثال کتے کی سی ہے، اگر تم اس پر کچھ بوجھ ڈال دو گے تو ہانپے گا، یا اگر اسے اس کے حال پر چھوڑ دو گے تب بھی ہانپے گا، یہ ان کی مثال ہے جنہوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا۔ پس آپ ان لوگوں کو یہ قصے سناتے رہیے، شاید کہ وہ غور کریں۔“

سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی روایت کے مطابق جسے امام شوکانی نے کتب احادیث کے دس حوالوں سے نقل کیا ہے یہ آیت ملجم بن باعور کے بارے میں نازل ہوئی تھی، جو سیدنا موسیٰ علیہ السلام کے زمانے میں بنی اسرائیل کا ایک فرد تھا، اور جو تورات کا علم رکھتا تھا، لیکن دنیاوی مصالح کی خاطر اس کا انکار کر دیا اور کفر کی راہ اختیار کر لی۔

اس کے شان نزول کے بارے میں اور بھی احوال ہیں، بہر حال آیت کے نزول کا سبب جو بھی ہو، اس کا حکم عام ہے، اور اس میں بہت بڑی وعید ہے ان علمائے سوء کے لیے جو دنیا کی

عارضی لذتوں کی خاطر آخرت کو فراموش کر دیتے ہیں، اور دنیا ہی کے پیچھے لگ جاتے ہیں۔

۵۔ اَلْمُعْزُ

معانی:..... عزت دینے والا۔

اس کی تین اقسام ہیں:

اول: اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو دنیا میں خوشحالی نصیب فرماتے ہیں اور بلند شان عطا فرماتے ہیں۔ یہ اعزاز محکم اور بالفعل ہے۔

دوم: اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو آزمانے کی خاطر تنگی کرتے ہیں حالانکہ وہ دین کے لحاظ سے اعلیٰ درجات پر فائز ہوتے ہیں مگر ان کے صبر کی وجہ سے ان کا ثواب اور درجہ دن بدن بڑھتا رہتا ہے۔ یہ اعزاز اگرچہ بالفعل نہیں مگر محکم ہے۔

سوم: اللہ تعالیٰ اپنے کتنے ہی دشمنوں کی روزی فراخ کر دیتے ہیں۔ مال اور دولت کی فراوانی ہوتی ہے اور ان کے امر و نہی کی دنیا میں اچھی خاصی حیثیت ہوتی ہے یہ اعزاز بالفعل ہے مگر محکم نہیں کیونکہ ان کے لیے آخرت میں دائمی عذاب ہے۔ دنیا میں ان کو ڈھیل ملی ہوئی ہے۔ جیسے فرمایا:

﴿اَنَّمَا تُنَبِّلُ لَهُمْ خَيْرٌ لَّا لِنَفْسِهِمْ ۚ اِنَّمَا تُنَبِّلُ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْا اِشْمَآءً ۚ وَ لَهُمْ

عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿۱۷۸﴾ (آل عمران: ۱۷۸)

”ہم ان کو اس لیے مہلت دیتے ہیں کہ وہ گناہوں میں بڑھتے چلے جائیں اور آخر کار ان کو ذلیل کرنے والا عذاب ہوگا۔“

یہ اللہ کی قدرت ہے کہ جس کو چاہے عزت عطا فرمائے۔

(الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۱)

۶۔ اَلْمُنْذِلُ

معانی:..... ذلیل و خوار کرنے والا۔

سرکش اور ضدی انسانوں کو۔ ذلت محکم ہو یا بالفعل۔ جیسا کہ دنیا کے ظاہری امور میں یعنی ان کو غلام بنانا اور ان کے پیچھے ذلت لگانا یا ان سے جزیہ لینا۔ فرمایا:

﴿حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ﴾ (التوبة: ٢٩)

”یہاں تک کہ وہ اپنے ہاتھ سے ذلیل ہو کر جزیہ دیں یعنی آخرت کی ذلت تو

الگ ہے۔“ (الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۲)

معارف: یہ دونوں اسماء مبارکہ بھی ایک ساتھ ذکر کیے جاتے ہیں۔ یاد رہے کہ ہر دو اسماء

مبارکہ قرآن مجید میں بطور اسماء وارد نہیں ہوئے، بلکہ اس قرآنی آیت سے مستنبط و مستخرج ہیں:

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ

وَتُعْزِّزُ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيرٌ ۝﴾ (آل عمران: ۲۶)

”آپ کہہ دیجیے کہ اے میرے اللہ! حقیقی بادشاہی کے مالک! تو جسے چاہتا ہے

بادشاہی عطا کرتا ہے اور جس سے چاہتا ہے بادشاہی چھین لیتا ہے، اور جسے چاہتا

ہے عزت دیتا ہے، اور جسے چاہتا ہے ذلیل بنا دیتا ہے، تمام بھلائیاں تیرے

ہاتھ میں ہیں، بے شک تو ہر چیز پر قادر ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

سیدنا حسن بن علیؓ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے مجھے وتروں میں پڑھنے کے

لیے یہ دعائوت سکھائی:

((اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَ

تَوَلَّيْنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِي شَرَّ مَا

قَضَيْتَ، فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَىٰ عَلَيْكَ، وَإِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ

وَأَلَيْتَ، وَلَا يَعْزُّزُ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ.)) ❶

❶ سنن ترمذی، کتاب الوتر، رقم: ۴۶۴۔ سنن ابن ماجہ، کتاب الصلوٰۃ، رقم: ۱۱۷۸۔ ارواء

الغلیل: ۱۷۲/۲۔ سنن ابوداؤد، باب القنوت فی الوتر، رقم: ۱۴۲۵۔ سنن الکبریٰ للبیہقی:

۲۹۰/۲۔ شیخ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

”اے اللہ! تو نے جن لوگوں کو ہدایت دی ہے مجھے بھی (ان کی طرح) ہدایت دے، اور جن کو تو نے عافیت بخشی ہے مجھے بھی عافیت بخش دے، اور جن کا تو خود والی بنا ہے (ان کی طرح) میرا والی بن جا، اور تو نے جو کچھ مجھے عطا کیا ہے اُسے میرے لیے بابرکت بنا دے، اور تو جو فیصلے کرتا ہے اُن کے شر سے مجھے بچالے۔ بے شک تو فیصلے کرتا ہے اور تیرے خلاف کوئی فیصلہ نہیں ہو سکتا۔ جس کا تو دوست بن جائے، وہ کبھی رسوا نہیں ہوتا اور جس سے تو دشمنی رکھے وہ کبھی عزت حاصل نہیں کر سکتا۔ اے پروردگار! تیری ذات بابرکت اور بلند ہے۔“

۷۔ الْعَدْلُ

معانی:..... انصاف کرنے والا۔

جس کا فیصلہ، قول اور فعل سب حق اور عین انصاف ہیں۔ (بیہقی بحوالہ تشریح

اسماء الحسنی، ص: ۸۲)

معارف:..... اللہ تعالیٰ ”عدل“ ہے اور عدل کرنے کا حکم دیتا ہے، چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ﴾ (النحل: ۹۰)

”بے شک اللہ انصاف اور احسان اور رشتہ داروں کو (مالی) تعاون دینے کا حکم دیتا ہے، اور بے حیائی اور ناپسندیدہ افعال اور سرکشی سے روکتا ہے، وہ تمہیں نصیحت کرتا ہے تاکہ تم اسے قبول کر لو۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَّتِكَ ، نَاصِیْتِیْ بِیَدِكَ ، مَاضٍ فِیْ حُكْمِكَ ، عَدْلٌ فِیْ قَضَاوُكَ ، اَسْأَلُكَ بِکُلِّ اِسْمٍ هُوَ لَكَ سَمِیْتَ بِهٖ نَفْسُكَ اَوْ عَلِمْتَهُ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ اَوْ اَنْزَلْتَهُ فِیْ

كِتَابِكَ اَوْ اسْتَاثَرْتَ بِهِ فِى عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِى، وَنُورَ صَدْرِى وَجَلَاءَ هُزْنِى وَذَهَابَ هَمِّى.))

”اے اللہ! میں تیرا بندہ ہوں۔ میں تیرے بندے اور تیری بندی کا بیٹا ہوں۔ میری پیشانی تیرے قابو میں ہے۔ میرے حق میں تیرا حکم جاری ہے۔ میرے بارے میں تیرا فیصلہ انصاف کے ساتھ ہے، میں تجھ سے تیرے ہر اس نام کے ساتھ سوال کرتا ہوں کہ جسے تو نے اپنے لیے پسند کیا ہے، یا اسے تو نے اپنی مخلوق میں سے کسی کو سکھا دیا ہو، یا تو نے اپنی کتاب میں اُتارا ہے، یا اس کو تو نے اپنے ہاں غیب کے خزانوں میں مخفی رکھا ہے کہ قرآن کو تو میرے دل کی بہار اور میرے سینے کا نور بنا دے، اور قرآن کو میرے غم کو دور کرنے والا اور میرے دُکھ کو مٹا دینے والا بنا دے۔“

فضیلت: سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: جس آدمی کا حزن و ملال زیادہ ہو جائے، اور وہ یہ کلمات پڑھے تو اللہ تعالیٰ اس کے غم اور ملال کو دور کر کے اسے فرحت و مسرت میں تبدیل کر دیتا ہے۔

آپ ﷺ سے پوچھا گیا: یا رسول اللہ! کیا ہم لوگوں کو یہ دُعا نہ سکھائیں؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: کیوں نہیں، جو بھی اس دُعا کو سنے، اسے چاہیے کہ وہ آگے سکھائے۔“ ①

۸۔ الْجَلِيلُ

معانی: بزرگی والا۔

اس کی صفات بزرگانہ ہیں۔ مثلاً بادشاہت، پاکیزگی، علم و قدرت وغیرہ۔ (الغزالی

① عمل اليوم واللیة، لابن السنی، رقم: ۳۳۶۔ مسند احمد: رقم: ۳۷۱۲۔ صحیح ابن حبان، رقم: ۲۳۷۲۔ مستدرک حاکم: ۵۰۹/۱، ۵۱۰۔ الفرج بعد الشدة، رقم: ۵۳۔ ابن حبان اور حاکم نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔ سلسلة الصحيحة، رقم: ۱۹۹۔

بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۶)

معارف: یہ نام قرآن مجید میں نہیں آیا لیکن ذوالجلال آیا ہے اور غالباً یہی اس

کا ماخذ ہے۔^①

اللہ تعالیٰ کی یہ صفت بطور نام و اسم جامع ترمذی، ابن ماجہ اور مستدرک حاکم میں وارد ہوئی ہے۔

۹۔ اَلْبَاعِثُ

معانی: اٹھانے والا۔

موجودات کو عدم سے وجود میں لانے والا، انسانوں کو قبروں سے اٹھانے والا، سوئے ہوؤں کو نیند سے جگانے والا، غفلوں کو غفلت سے اٹھانے والا اور مخلوق کی ہدایت کے لیے انبیاء و رسل کو بھیجنے والا۔

(الزجاج و الغزالی و المنصور پوری بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۸۷)

معارف: قیامت آئے گی تو اللہ تعالیٰ ہی مردوں کو قبروں سے دوبارہ زندہ کر کے

اٹھائے گا، اور ان کے اعمال کا انہیں بدلہ دے گا۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿وَإِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۝﴾

(الحج: ۷)

”اور بے شک قیامت آنے والی ہے، اس میں کوئی شک نہیں ہے، اور بے شک

اللہ ان سب کو اٹھائے گا جو قبروں میں مدفون ہیں۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((رَبِّ قِنِّي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ أَوْ تَجْمَعُ عِبَادَكَ))^②

”اے میرے پروردگار! مجھے اس دن کے (اپنے) عذاب سے بچانا کہ جس

روز تو اپنے بندوں کو اٹھائے گا اور اکٹھا کرے گا۔“

① اسماء اللہ الحسنی، ص: ۲۴۰. ② صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین، رقم: ۱۶۴۲.

۱۰۔ اَلْمَتِّينُ

معانی:..... زبردست، قوت والا۔

جس کی قوت و قدرت کی کوئی انتہا نہ ہو۔ (الزجاج)
جس میں کبھی بھی نقص اور تغیر واقع نہ ہو۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۸-۸۹)

معارف:..... اللہ تعالیٰ متین ہے، اس کی قوت ایسی زبردست اور ناقابل شکست ہے

کہ آسمان و زمین میں کوئی چیز اسے عاجز نہیں بنا سکتی۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْبَتِّينِ﴾ (الذاریات: ۵۸)

”بے شک اللہ ہی روزی رساں ہے، زبردست طاقت والا ہے۔“

۱۱۔ اَلْمُحْصِي

معانی:..... گنتی کرنے والا۔

جس سے کوئی چیز گم شدہ نہ ہو، جس کے واسطے ہر چیز کی حد اور عدد معلوم ہو۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۹)

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے سورہ الجن میں ارشاد فرمایا:

﴿وَاحْطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا﴾ (الجن: ۲۸)

”اور اللہ نے ان تمام چیزوں کا احاطہ کر رکھا ہے جو ان (رسولوں) کے ارد گرد ہیں، اور اس نے ہر چیز کو شمار کر رکھا ہے۔“

۱۲۔ اَلْمُبْدِي

معانی:..... پہلے پہل پیدا کرنے والا۔

وہ ہر چیز کا موجد ہے یعنی نہ کسی اور کی صنعت (وحرقت) نقل کرنے والا۔ (الزجاج و

الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۸۹)

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ﴾ (يونس : ٤)

”بے شک وہی انسان کو ابتداء میں پیدا کرتا ہے، پھر اسے قیامت کے دن دوبارہ زندہ کرے گا، تاکہ پورے انصاف کے ساتھ ان لوگوں کو اچھا بدلہ عطا کرے جو ایمان لائے اور عمل صالح کیا، اور کافروں کو ان کے کفر کے سبب کھولتا ہوا پانی اور دردناک عذاب دیا جائے گا۔“

۱۳۔ اَلْمُعِيدُ

معانی:..... دوبارہ پیدا کرنے والا۔

یعنی قیامت کے دن حساب و کتاب کے لیے دوبارہ پیدا کرنے والا۔ (الزجاج و

الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص : ۸۹)

معارف:..... ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ (الروم : ۲۷)

”اور وہی ہے جو مخلوق کو پہلی بار پیدا کرتا ہے، پھر اسے دوبارہ زندہ کرے گا، اور یہ اس کے لیے زیادہ آسان ہے، اور آسمانوں اور زمین میں وہی اعلیٰ صفت والا ہے، اور وہ بڑا زبردست، بڑی حکمتوں والا ہے۔“

۱۴۔ اَلْمُحْيِي

معانی:..... زندہ کرنے والا۔

جس نے خلق میں زندگی پیدا کی۔ ان کو زندہ کیا یا مردہ زمین کو آباد کر کے زندہ کیا۔ (الزجاج)
اور مردہ قلوب کو دین (کی روشنی) سے روشن کیا۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص : ۸۹-۹۰)

معارف: اللہ تعالیٰ ہی زندگی عطا کرنے والا ہے۔

﴿لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْاَرْضِ ۚ يُحْيِیْ وَيُمِیْتُ ۗ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝﴾

(الحديد : ۲)

”آسمانوں اور زمین کی بادشاہی اسی کی ہے، وہ زندہ کرتا ہے اور مارتا ہے، اور وہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔“

۱۵۔ اَلْمُیِّتُ

معانی: مارنے والا۔

مخلوق سے زندگی چھین کر موت دینے والا۔ اس نام میں زندہ کرنے والی صفت کی طرح مدح شامل ہے۔ کیونکہ اسی کے ہاتھ میں زندگی اور موت ہے نہ کسی اور کے ہاتھ میں۔ (البیہقی) اسی نے زندگی اور موت کو پیدا کیا ہے۔

(الزجاج بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۰)

معارف: اللہ تعالیٰ ہی مارنے والا ہے۔

﴿لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْاَرْضِ ۚ يُحْيِیْ وَيُمِیْتُ ۗ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝﴾

(الحديد : ۲)

”آسمانوں اور زمین کی بادشاہی اسی کی ہے، وہ زندہ کرتا ہے اور مارتا ہے، اور وہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔“

﴿كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِیْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِیْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝﴾ (البقرة : ۲۸)

”کیسے اللہ کا انکار کرتے ہو، حالانکہ تم بے جان تھے، تو اس نے تمہیں زندہ کیا، پھر تم پر موت طاری کر دے گا، پھر تمہیں (دوبارہ) زندہ کرے گا، پھر اس کی طرف لوٹائے جاؤ گے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ،
يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ، بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ.))^❶

”اللہ کے علاوہ کوئی عبادت کے لائق نہیں، وہ اکیلا ہے، اس کا کوئی شریک
نہیں، اسی کا ملک ہے اور اسی کے لیے حمد، وہ زندہ کرتا ہے اور مارتا ہے، اور
وہ زندہ ہے مرتا نہیں ہے۔ اسی کے ہاتھ میں خیر ہے، اور وہ ہر چیز پر پوری
طرح قادر ہے۔“

فضیلت:..... رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جو شخص بازار میں داخل ہو کر یہ
(کلمات) کہے، اللہ اس کے لیے دس لاکھ نیکیاں لکھ دیتا ہے، دس لاکھ خطائیں اس سے
معاف کر دیتا ہے اور اس کے دس لاکھ درجات بلند کر دیتا ہے اور اس کے لیے جنت میں ایک
گھر بنا دیا جاتا ہے۔

۱۶۔ اَلْوَاٰجِدُ

معانی:..... پانے والا۔

ہر چیز کو پانے والا۔ کوئی چیز اس سے اوچل نہیں۔ (الغزالی)
کسی بھی چیز کے لیے کسی کا محتاج نہیں۔

(الزجاج بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۰)

معارف:..... سورہ النساء میں ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَكَوُا لَهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
جَاءَهُمْ فَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝﴾

(النساء: ۶۴)

❶ صحیح سنن ترمذی: ۱۵۲/۲، کتاب الدعاء للطبرانی، رقم: ۷۸۹، ۷۹۰۔ مستدرک حاکم:

۵۳۸/۱۔ امام حاکم نے اسے ”صحیح“ کہا ہے۔

”اور ہم نے ہر رسول کو صرف اس لیے بھیجا کہ اللہ کی اجازت سے اس کی اطاعت کی جائے، اور اگر یہ لوگ، جب انہوں نے اپنے آپ پر ظلم کیا، آپ کے پاس آتے، پھر اللہ سے مغفرت طلب کرتے، اور رسول ان کے لیے مغفرت طلب کرتے، تو اللہ کو توبہ قبول کرنے والا اور نہایت مہربان پاتے۔“

۱۷۔ الْمَاجِدُ

معانی:..... بڑی عزت اور شرف والا۔

الماجد بھی المجید کے ہی ہم معنی ہے لیکن اس میں مبالغہ کے معنی زیادہ ہیں۔

(الزجاج و الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۰، ۹۱)

معارف:..... اللہ تعالیٰ بڑی عظمت اور شرف والا ہے، چنانچہ فرمایا:

﴿ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ﴾ (البروج: ۱۵)

”وہ عرش والا، بڑے شرف والا ہے۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دُعا:

سیدنا ابی بن کعب رضی اللہ عنہ کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ ﷺ سے عرض کیا: یا رسول اللہ! میں آپ پر بکثرت درود بھیجتا ہوں، میں اپنی دعا میں کتنا وقت درود کے لیے وقف کروں؟ رسول اکرم ﷺ نے ارشاد فرمایا: جتنا تو چاہے۔ میں نے عرض کیا: ایک چوتھائی صحیح ہے؟ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر اس سے زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: نصف وقت مقرر کروں؟ آپ ﷺ نے فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر اس سے زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: دو تہائی مقرر کروں، رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ”جتنا تو چاہے، لیکن اگر زیادہ کرے تو تیرے لیے اچھا ہے۔“ میں نے عرض کیا: میں ساری دعا کا وقت درود شریف کے لیے وقف کرتا ہوں۔ اس پر رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

”یہ تیرے سارے دُکھوں اور غموں کے لیے کافی رہے گا، تیرے گناہوں کی بخشش کا باعث ہوگا۔“ ❶

دُرود شریف کے مسنون الفاظ یہ ہیں:

((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ.)) ❷

”اے اللہ! رحم و کرم فرما محمد پر اور ان کی آل پر جس طرح تو نے رحمت نازل فرمائی ابراہیم پر اور ان کی آل پر، بے شک تو حمد و تعریف والا اور بزرگی والا ہے۔ اے اللہ! برکت نازل فرما محمد پر اور ان کی آل پر جس طرح تو نے برکت نازل فرمائی ابراہیم پر اور ان کی آل پر، بے شک تو تعریف کے لائق اور بزرگی والا ہے۔“

۱۸۔ اَلْمُقَدِّمُ ۱۹۔ اَلْمَوْخِرُ

معانی: آگے کرنے والا۔ پیچھے کرنے والا۔

شان اور شرف میں، علم و عمل میں، دولت و عزت میں اپنے خاص بندوں کو قریب کرے اور دشمنوں کو دور کرے۔ جسے چاہے ہمیشہ کے لیے یا بالفعل آگے کرے اور جسے چاہے پیچھے کر دے۔ ان سب باتوں میں اس کی حکمت کا فرما ہے۔ اللہ تعالیٰ نے جسے آگے کیا وہ ہمیشہ آگے اور جسے پیچھے کیا وہ ہمیشہ پیچھے رہے گا۔

(الزجاج و الغزالی و البونی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۲)

❶ صحیح سنن ترمذی، الجزء الثانی، رقم: ۱۹۹۹۔

❷ صحیح بخاری، کتاب احادیث الأنبياء، رقم: ۳۳۷۰۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَرَهُمْ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي

إِمَّاكِ مُبِينٌ ۝﴾ (یس: ۱۲)

”ہم یقیناً مردوں کو زندہ کریں گے، اور ہم ان تمام اعمال کو لکھ بیٹھتے ہیں، اور ان آثار کو بھی جنہیں وہ پیچھے چھوڑ جاتے ہیں، اور ہم نے ہر چیز کو روشن کتاب (لوح محفوظ) میں درج کر رکھا ہے۔“

ان اسماء کے ذریعہ دعا:

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَسْرَفْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ))^①

”اے اللہ! مجھے بخش دے جو میں نے پہلے کیا اور جو پیچھے کیا۔ جو میں نے چھپ کر کیا اور جو میں نے علانیہ کیا۔ اور جو میں نے زیادتی کی اور جسے تو مجھ سے زیادہ جانتا ہے۔ تو ہی آگے کرنے والا ہے اور تو ہی پیچھے کرنے والا ہے۔ تیرے علاوہ کوئی عبادت کے لائق نہیں۔“

۲۰۔ الْوَالِي

معانی:..... مالک۔

تمام اشیاء کا مالک اور اپنی مرضی سے ان میں تصرف کرنے والا اور اس کی تدبیر کرنے والا۔
(الزجاج و البیهقی و المنصور بوری اور اسماء الحسنیٰ مصنفہ محمد درویش بحوالہ تشریح الاسماء الحسنیٰ، ص: ۹۳)

معارف:..... سورۃ الرعد میں ارشاد فرمایا:

① صحیح بخاری، کتاب الاذان، رقم: ۸۳۴۔ صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعا، رقم: ۶۸۶۹۔

سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم: ۳۰۳۱۔ سنن نسائی، کتاب السہو، رقم: ۱۳۰۳۔

﴿وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ ءَالٍ ۖ﴾ (الرعد: ۱۱)

”اور اللہ کے علاوہ کوئی ان کا مالک اور یار و مددگار نہیں ہوتا۔“

۲۱۔ اَلْمُنْتَقِمُ

معانی:..... بدلہ لینے والا۔

جو سرکش اور نافرمانوں کی کمر توڑ دے اور سخت عذاب کرے، لیکن مہلت دینے اور ڈرانے وغیرہ کے بعد، تاکہ ان کو سوچنے کا موقع ملے اور شاید کہ وہ رجوع کریں۔ لیکن جو اللہ کی طرف رجوع نہ کرے تو پھر اس کے لیے سخت عذاب ہے۔ (الغزالی)

وہ ہر ایک کو عذاب قوتِ برداشت کے مطابق کرتا ہے۔

(البیہقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۴)

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۖ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝۱۰﴾

(المائدة: ۹۵)

”اور جو شخص دوبارہ ایسا کرے گا تو اللہ اس سے بدلہ لے گا، اور اللہ زبردست بدلہ لینے والا ہے۔“

۲۲۔ اَلْمُقْسِطُ

معانی:..... انصاف کرنے والا۔

مظلوم کو ظالم سے اس کے حقوق دلوائے۔ اپنے تمام فیصلوں میں مخلوق کے ساتھ انصاف کرنے والا۔ اس کے انصاف کا یہ کمال ہے کہ وہ بعض اوقات ظالم اور مظلوم دونوں کو راضی کرتا ہے۔ انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ قیامت میں مظلوم کو (ظالم کے) ظلم کے بدلے میں ظالم کی نیکیاں دی جائیں گی اور مظلوم کے گناہ ظالم کو دیئے جائیں گے۔ مظلوم کو جنت کے بنگلے محل دکھائے جائیں گے اور اس سے کہا جائے گا کہ ان کی قیمت یہ ہے کہ تو گناہ گار کو معاف کر دے پھر وہ مظلوم شخص ظالم کو معاف کر دے گا اور جنت میں ظالم

کو اپنے ساتھ لے جائے گا۔ (الدر المنثور: ۳/۲۶۱، بحوالہ ابو یعلیٰ وغیرہ)
اس قسم کا انصاف صرف رب العالمین کی ذات ہی کر سکتی ہے۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۶)

معارف:..... اللہ تعالیٰ عدل و انصاف کے ساتھ فیصلہ کرتا ہے۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:
﴿وَ لِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَ هُمْ لَا يَظْلَمُونَ﴾ (یونس: ۴۷)

”اور ہر قوم کے لیے ایک رسول آیا ہے، پس جب ان کا رسول آ جاتا تھا تو ان کے درمیان انصاف کے ساتھ فیصلہ ہو جاتا تھا، اور ان پر ظلم نہیں کیا جاتا تھا۔“
اللہ تعالیٰ مقسط ہے، انصاف کا حکم دیتا ہے:

﴿أَوْفُوا بِالْكَيْالِ وَالْبَيْزَانَ بِالْقِسْطِ﴾ (ہود: ۸۵)

”اور تم عدل و انصاف کے ساتھ ناپ پورا کیا کرو۔“
۲۲۔ اَلْغُفِيُّ

معانی:..... بے پروا کرنے والا۔

جس کو چاہے رزق دے، نعمتوں سے نوازے اور دوسروں کو محتاجی سے بچائے۔

(الزجاج و البیهقی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۷)

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ﴾

(النور: ۳۲)

”اگر وہ فقیر ہوں گے تو اللہ اپنے فضل سے انہیں مالدار بنا دے گا، اور اللہ بڑی کثادگی والا، خوب جاننے والا ہے۔“

۲۴۔ الْمَانِعُ

معانی:..... روکنے والا۔

جس کو چاہے روک دے۔ کسی بھی چیز سے اس کا روکنا حکمت سے خالی نہیں۔

(الزجاج)

معارف:..... دین و دنیا میں ہلاکت اور نقصان کے اسباب کو وہی روکنے والا ہے۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۷)

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))^①

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ کہتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں ہے، اس کے لیے بادشاہت ہے اور اسی کی تعریف بھی، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔ اے اللہ! جسے تو عطا کر دے، اسے کوئی منع کرنے والا نہیں اور جسے تو روک دے، اُسے کوئی عطا کرنے والا نہیں۔ اور کسی مالدار کو اُس کے مال و دولت تیری بارگاہ میں نفع نہیں پہنچا سکیں گے۔“

۲۵۔ الضَّارُّ ۲۶۔ النَّافِعُ

معانی:..... نقصان پہنچانے والا، نفع دینے والا۔

ان دونوں ناموں کو ساتھ ذکر کرنے کا مقصد یہ ہے کہ دونوں مل کر مکمل معنی ادا کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ ہی نفع یا نقصان دینے والا ہے۔ یہ اس کی کامل قدرت پر دلالت کرتے ہیں اور حکمت پر بھی۔ سب اچھائیاں اور برائیاں اس کے ہاتھ میں ہیں۔ وہ تمام بھلائیوں کا

① صحیح بخاری، کتاب الاذان، رقم: ۸۴۴۔ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۴۲۔

مسبب الاسباب اور برائیوں کو دفع کرنے والا ہے۔ (الزجاج)
کسی سے بھی نفع یا نقصان ہو یا سب اس کی مشیت کے تحت ہوتا ہے۔

(تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۷)

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کی زبان اقدس پر فرمایا:

﴿قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا﴾ (الحج: ۲۱)

”آپ کہہ دیجیے، میں تمہارے لیے کسی نقصان یا نفع کا مالک نہیں ہوں۔“

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ))^①

”شروع اللہ کے نام کے ساتھ کہ زمین و آسمان میں اس کے نام کی وجہ سے کوئی چیز نقصان نہیں پہنچا سکتی، اور وہی خوب سننے والا، خوب جاننے والا ہے۔“

۲۷۔ الْبَاقِي

معانی:..... باقی رہنے والا۔

ہمیشہ باقی رہنے والا۔ باقی سب مخلوق کو فنا ہونا ہے۔ (البیہقی بحوالہ تشریح

الاسماء الحسنی، ص: ۹۸)

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۖ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ﴾

(الرحمن: ۲۶، ۲۷)

”ہر چیز جو زمین پر ہے ختم ہو جانے والی ہے اور آپ کے رب کی ذات باقی رہ جائے گی جو جلال اور عزت والا ہے۔“

① سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم: ۵۰۸۸۔ سنن ترمذی، کتاب الدعوات، ۳۳۸۸۔ سنن ابن

ماجہ، کتاب الدعاء، رقم ۳۸۶۹۔ علامہ البانی رحمہ اللہ نے اسے ”حسن صحیح“ کہا ہے۔

۲۸۔ الْوَارِثُ

معانی:..... حقیقی وارث ہونے والا۔

باقی تمام وارث مال و اولاد فنا ہونے والے ہیں۔ بادشاہ، نواب، سرمایہ دار، وڈیرے، زمیندار، دولت مند سب فانی ہیں۔ ان کی وراثت عارضی ہے۔ بالآخر تمام چیزوں کا وارث وہی ہے جو ہمیشہ باقی رہنے والا ہے۔

(الزجاج و الغزالی و البیهقی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۸-۹۹)

معارف:..... ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

﴿وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ﴾ (القصص: ۵۸)

”اور ہم ہی ان کے وارث رہ گئے۔“

۲۹۔ الرَّشِيدُ

معانی:..... سیدھی اور مستقیم راہ بتانے والا۔

جس کے تمام کام اور حکم رشد اور ہدایت پر مبنی ہیں۔ قرآن کریم میں ہے۔ ﴿إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ﴾ (ہود: ۵۶) ”بے شک میرا رب سیدھی راہ پر ہے۔ یعنی فاعل بمعنی فاعل کے بھی ہیں اور بمعنی مُفْعَل کے بھی ہیں۔ وہ ہی مرشد اور سب کو راستہ دکھانے والا ہے۔ عام مخلوق، انسان، جن، حیوان، پرند و چرند اور حشرات الارض وغیرہ کو اپنی زندگی کی ضروریات کے لیے اور مسلمانوں کو جنت اور ثواب کے حصول کے لیے راہ بتلانے والا۔

(الزجاج)

یہ سب وہ اپنے علم سے کرتا ہے نہ کہ کسی سے صلاح و مشورہ یا تجویز و راہنمائی حاصل کرنے کے بعد۔ تَعَالَى اللَّهُ عَنْ ذَلِكَ عُلُوًّا كَبِيرًا۔

(الغزالی بحوالہ تشریح الأسماء الحسنی، ص: ۹۹)

معارف:..... اصحابِ کہف نے دعا کی:

﴿رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝۱۰﴾

(الکھف: ۱۰)

”اے ہمارے رب! تو ہمیں اپنی رحمت عطا کر، اور ہمیں ہمارے معاملے میں راہِ راست پر رکھ۔“

۳۰۔ الصَّبُورُ

معانی:..... صبر کرنے والا۔

گناہ گاروں کو مہلت دینے والا اور عذاب کرنے میں جلدی نہ کرنے والا۔ (البیہقی و

الغزالی بحوالہ تشریح الاسماء الحسنی، ص: ۹۹)

معارف:..... سیدنا ابو موسیٰ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَىٰ آذَى سَمِعَهُ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ يَدْعُوْنَ لَهُ

الْوَلَدَ ثُمَّ يَعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ))^①

”تکلیف دہ بات سن کر اللہ سے زیادہ صبر کرنے والا کوئی نہیں ہے۔ کم بخت

مشرک کہتے ہیں کہ اللہ اولاد رکھتا ہے اور پھر بھی وہ انہیں معاف کرتا ہے اور

روزی دیتا ہے۔

۳۱۔ الْمَنَّانُ

معانی:..... احسان کرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ منان ہے، چنانچہ اس نے مسلمانوں کے اوپر اپنے احسان عظیم

کا ذکر کیا:

﴿لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا

عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي

ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝۳۱﴾ (آل عمران: ۱۶۴)

① صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم: ۷۳۷۸۔

”اللہ کا مومنوں پر یقیناً یہ احسان ہے کہ اس نے ان کے لیے انہی میں سے ایک رسول بھیجا، جو اس کی آیتوں کی ان لوگوں پر تلاوت کرتے ہیں، اور انہیں پاک کرتے ہیں، اور انہیں کتاب و حکمت کی تعلیم دیتے ہیں، اور اس سے پہلے وہ لوگ کھلی گمراہی میں تھے۔“

۳۲۔ اَلْجَوَادُ

معانی:..... سب سے زیادہ نوازنے والا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((إِنَّ اللَّهَ جَوَادٌ يُحِبُّ الْجَوَادَ))^①

”بے شک اللہ بخشنے والا ہے، اور سخاوت کرنے کو پسند کرتا ہے۔“

۳۳۔ اَلْسَّيِّدُ

معانی:..... سردار۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((السيد الله تبارك وتعالى))^② ”اللہ تبارک و تعالیٰ سردار ہے۔“

۳۴۔ اَلْمُعْطٰی

معانی:..... دینے والا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ کی یہ دُعا ہوتی تھی:

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))^③

① سلسلۃ الصحیحۃ: ۱۶۹/۴۔

② سنن ابو داود، کتاب الادب، رقم: ۴۸۰۶۔

③ صحیح بخاری، کتاب الاذان، رقم: ۸۴۴۔ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۳۴۲۔

”اللہ کے سوا کوئی معبود برحق نہیں، وہ کیتا ہے اس کا کوئی شریک نہیں ہے، اس کے لیے بادشاہت ہے اور اسی کی تعریف بھی، اور وہ ہر چیز پر پوری طرح قدرت رکھنے والا ہے۔ اے اللہ! جسے تو عطا کر دے، اسے کوئی منع کرنے والا نہیں اور جسے تو روک دے، اُسے کوئی عطا کرنے والا نہیں۔ اور کسی مالدار کو اُس کے مال و دولت تیری بارگاہ میں نفع نہیں پہنچا سکیں گے۔“

۳۵۔ اَلْوُتْرُ

معانی:..... تنہا و کیتا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((إِنَّ اللَّهَ وَتَرْيُحِبُّ الْوُتْرَ)) ①

”بے شک اللہ اکیلا ہے اور وتر چیز کو پسند کرتا ہے۔“

۳۶۔ اَلْمُحْسِنُ

معانی:..... احسان کرنے والا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((إِنَّ اللَّهَ مُحْسِنٌ يُحِبُّ الْإِحْسَانَ)) ②

”بے شک اللہ احسان کرنے والا ہے اور احسان کرنے کو پسند کرتا ہے۔“

۳۷۔ اَلْكَاشِفُ

معانی:..... کھولنے والا، دور کرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝﴾ (الانعام: ۱۷)

”اور اگر تمہیں کسی تکلیف میں مبتلا کر دے، تو اللہ کے سوا کوئی اسے دور ہٹانے

② صحیح الجامع الصغیر، رقم: ۱۸۲۴۔

① صحیح مسلم، رقم: ۲۶۷۷۔ سنن ترمذی، رقم: ۴۵۳۔

والا نہیں، اور اگر وہ تمہیں کوئی بھلائی پہنچانا چاہے، تو وہ ہر چیز پر پوری قدرت رکھنے والا ہے۔“

۳۸۔ اَلْمُنْجِي

معانی:..... نجات دینے والا۔

معارف:..... سورۃ الانبیاء میں ارشاد فرمایا:

﴿فَاسْتَجِبْنَا لَهُۥ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذٰلِكَ نُثَجِّي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۸۸﴾

(الانبیاء: ۸۸)

”پس ہم نے ان (یونس) کی دعا قبول کر لی اور ان کو غم سے نجات دی، اور ہم مومنوں کو اسی طرح نجات دیتے ہیں۔“

۳۹۔ اَلدَّيَّانُ

معانی:..... محاسبہ کرنے والا، بدلہ دینے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿مَلِكٍ يَوْمَ الدِّينِ ۝۳﴾ (الفاتحہ: ۳)

”اللہ تعالیٰ ہی جزا اور سزا کے دن کا مالک ہے۔“

۴۰۔ اَلشَّدِيدُ

معانی:..... سختی کرنے والا۔

معارف:..... ذیل میں دیئے گئے مقامات سے استدلال کرتے ہوئے ”الشدید“ کو

بطور اسم بیان کیا ہے۔

﴿اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۱۹۶﴾ (البقرہ: ۱۹۶)

”بے شک اللہ سخت سزا دینے والا ہے۔“

اور سورۃ الرعد میں ہے:

﴿وَهُوَ شَدِيْدُ الْحٰكَمِ ۝۱۳﴾ (الرعد: ۱۳)

”وہ بہت ہی زبردست اور شدید گرفت کرنے والا ہے۔“

۴۱۔ الْقَائِمُ

معانی:..... نگہبان۔

معارف:..... سورۃ الرعد سے فرمایا:

﴿هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ﴾ (الرعد: ۳۳)

”وہی باری تعالیٰ ہر شخص کے کیے کا نگہبان ہے۔“

۴۲۔ الْوَاقِ

معانی:..... مصائب سے بچانے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ﴾ (الرعد: ۳۴)

”اور اللہ تعالیٰ کے علاوہ ان کا بچانے والا کوئی نہیں۔“

۴۳۔ التَّامُّ

معانی:..... اپنی ذات میں مکمل اور مکمل کرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ﴾ (الصف: ۸)

”اور اللہ اپنے نور (دین) کو مکمل کرنے والا ہے۔“

۴۴۔ الْأَكْبَرُ

معانی:..... سب سے بڑا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ عیدین کے موقع پر یوں تکبیرات کہا کرتے تھے:

((اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، وَ

لِلَّهِ الْحَمْدُ)) ❶

”اللہ سب سے بڑا ہے، اللہ سب سے بڑا ہے، اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں، اور اللہ سب سے بڑا ہے، اللہ سب سے بڑا ہے اور ہر قسم کی تعریف کے لائق بھی اللہ ہی ہے۔“

۴۵۔ اَلذَّارِعُ

معانی:..... کھیتی اگانے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے۔

﴿اَفَرَأَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُونَ ﴿۳۵﴾ اَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهُ اَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿۳۶﴾﴾

(الواقعة: ۶۳-۶۴)

”کیا تم نے اس بیج کے بارے میں غور کیا ہے جسے تم بوتے ہو۔ اسے پودے کی شکل میں تم اگاتے ہو، یا اسے ہم اگانے والے ہیں۔“

۴۶۔ اَلسَّيِّئِرُ

معانی:..... پردہ ڈالنے والا۔

معارف:..... سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی کریم ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((لَا يَسْتُرُ عَبْدٌ عَبْدًا فِي الدُّنْيَا إِلَّا سَتَرَهُ اللَّهُ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ))

”کوئی بندہ کسی بندے کے عیوب پر پردہ ڈالتا ہے تو اللہ تعالیٰ روزِ قیامت اس کے عیوب پر پردہ ڈالے گا۔“

۴۷۔ اَلشَّفِيعُ

معانی:..... سفارشی۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ﴾ (الانعام: ۵۱)

”اس ذاتِ باری تعالیٰ کے علاوہ ان کا نہ کوئی دوست ہوگا اور نہ کوئی سفارشی۔“

۴۸۔ الصّٰنِعُ

معانی:..... کاریگر۔

معارف:..... ارشاد فرمایا:

﴿وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدًا وَهِيَ تَمُورُ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ كُلُّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ﴾ (النمل: ۸۸)

”اور (اس دن) آپ پہاڑوں کو دیکھیں گے تو انہیں ساکن و جامد گمان کریں گے، حالانکہ وہ بادل کی سی تیزی کے ساتھ گزر رہے ہوں گے، یہ سب اس اللہ کی کاریگری ہوگی جس نے ہر چیز کو مضبوط و محکم بنایا ہے۔ بے شک وہ تمہارے تمام کاموں کی پوری خبر رکھتا ہے۔“

۴۹۔ الْغَيُورُ

معانی:..... انتہائی غیرت مند۔

معارف:..... سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے نبی کریم ﷺ سے سنا، آپ ﷺ فرما رہے تھے:

((إِنَّ اللَّهَ يُغَارُ، وَغَيْرَةُ اللَّهِ أَنْ يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ اللَّهُ))^①

”بے شک اللہ انتہائی غیرت مند ہے، اور مومن بندہ اللہ تعالیٰ کے حرام کردہ کاموں کا ارتکاب کرے تو گویا وہ اللہ کی غیرت کو لاکارتا ہے۔“

۵۰۔ الدَّهْرُ

معانی:..... زمانے والا۔

معارف:..... سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: اللہ

عز وجل فرماتا ہے:

((يَسْبُ بَنَى آدَمَ الدَّهْرَ وَآنَا الدَّهْرُ بِيَدِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ))^②

① صحیح بخاری، کتاب النکاح، رقم: ۵۲۲۳۔

② صحیح بخاری، رقم: ۶۱۸۱۔

”آدم کا بیٹا زمانے کو گالی دیتا ہے حالانکہ زمانے والا تو میں ہوں۔ کیونکہ دن اور رات کی گردش میرے ہاتھ میں ہے۔“

۵۱۔ الدَّائِمُ

معانی:..... ہمیشہ سے ہے، اور رہے گا۔

معارف:..... سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((لَا تَسْبُوا الدَّهْرَ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الدَّائِمُ وَاللَّهُ هُوَ الدَّهْرُ)) ❶

”تم زمانے کو گالی نہ دو کیونکہ اللہ زمانے والا ہے اور وہ ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا۔“

۵۲۔ ذُو الْمَعَارِجِ

معانی:..... بلند درجات والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿مَنْ اللَّهُ ذِي الْمَعَارِجِ﴾ (المعارج: ۳)

”وہ بلند درجات والے اللہ کی جانب سے ہے۔“

”ذی المعارج“ اللہ کی صفت ہے یعنی وہ عذاب اللہ کی جانب سے ہے جو ”معارج والا“ ہے۔ مفسرین نے اس کلمہ کے تین معانی بیان کیے ہیں: ایک روایت میں سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے اس کا معنی ”ذی السماوات“ مروی ہے، یعنی آسمانوں والا، اس لیے کہ فرشتے ان آسمانوں کی طرف چڑھتے ہیں۔ دوسری روایت قتادہ سے ہے کہ اس کا معنی ”ذی الفواضل و النعم“ ہے۔ یعنی وہ اللہ جو نعمتوں اور احسانات والا ہے۔ تیسرا قول یہ ہے کہ ”معارج“ سے مراد جنت کے وہ درجات ہیں جو اللہ کی طرف سے اس کے اولیاء اور صالحین کو ملیں گے۔ ❷

❶ صحیح مسلم، کتاب الالفاظ من الادب، رقم: ۵/۲۲۴۶۔ کتاب التوحید لابن مندہ، رقم: ۲۶۱۔

❷ تیسیر الرحمن، ص: ۱۶۳۸۔

۵۳۔ ذُو الْفَضْلِ

معانی:..... فضل والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝﴾

(البقرة: ۱۰۵)

”اور اللہ جس کو چاہتا ہے اپنی رحمت کے لیے خاص کر دیتا ہے، اور اللہ عظیم فضل والا ہے۔“

۵۴۔ فَارِجَ الْهَمِّ

معانی:..... مصائب اور مشکلات کو ٹالنے والا۔

معارف:..... رسول اللہ ﷺ کی یہ دعا ہوا کرتی تھی:

((اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيمَهُمَا اَنْتَ تَرَحَّمْنِيْ فَارْحَمْنِيْ بِرَحْمَةٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ))^①

”اے اللہ! مصائب و مشکلات کو ٹالنے والے، لاچار اور بے کس لوگوں کی دعاؤں کو قبول کرنے والے، اور دنیا و آخرت میں رحم کرنے والے، نہایت ہی مہربان! تو مجھ پر اپنی رحمتیں نازل فرما اور مجھے اپنے سوا کی رحمت سے بے پرواہ کر دے۔“

۵۵۔ اَلْمُدَبِّرُ

معانی:..... تدبیر کرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مَقْدَارُهُ

① مستدرک حاکم: ۱/۵۱۵۔

أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٥﴾ (السجدة: ٥)

”وہی آسمان سے زمین تک ہر معاملے کی دیکھ بھال کرتا ہے، پھر ہر بات اس کے حضور اس دن پیش ہوگی جس کی مقدار تمہارے شمار کے مطابق ہزار سال ہوگی۔“

۵۶۔ الْمُبْرِمُ

معانی:..... فیصلہ کرنے والا۔

معارف:..... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: ﴿فَأَنَا مُبْرِمٌ﴾

”بے شک ہم نے ان کی تدبیروں کو ناکام بنانے کا فیصلہ کر لیا ہے۔“

۵۷۔ الْجَبِيلُ

معانی:..... حسن کثیر والا، خوبصورت۔

جمال، حسن کثیر کو کہتے ہیں۔ حسن کا اطلاق جسم و بدن پر بھی ہوتا ہے اور اقوال و افعال پر بھی۔ جمیل وہ ہے جو محاسن کثیر والا ہے۔ جمیل وہ ہے جس سے خیر کثیر دوسروں کو حاصل ہوتی ہے۔ (شرح اسماء اللہ الحسنی، ص: ۲۷۵)

معارف:..... حدیث میں آیا ہے:

((إِنَّ اللَّهَ جَمِيلٌ وَيُحِبُّ الْجَمَالَ)) ❶

”بے شک اللہ حسن و جمال والا ہے اور حسن و جمال کو پسند کرتا ہے۔“

۵۸۔ الرَّفِيقُ

معانی:..... نرمی والا، دوست۔

معارف:..... حدیث میں آیا ہے:

((إِنَّ اللَّهَ رَفِيقٌ يُحِبُّ الرَّفِيقَ)) ❷

”بے شک اللہ نرمی والا دوست ہے، نرمی کو پسند کرتا ہے۔“

❶ صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر و بیانہ، الرقم: ۱۴۷۔

❷ صحیح بخاری، کتاب استتابة المرتدین، رقم: ۶۹۲۷۔

صحیح مسلم کی روایت ہے کہ:

((وَيُعْطَى عَلَى الرَّفْقِ مَا لَا يُعْطَى عَلَى الْعُنْفِ))^❶

”اور اللہ تعالیٰ نرمی کی وجہ سے وہ کچھ عطا کرتا ہے جو ترش مزاجی اور سختی پر عطا نہیں کرتا۔“

سیدنا جریر رضی اللہ عنہ نبی کریم ﷺ سے بیان کرتے ہیں: آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((مَنْ يُحْرَمِ الرَّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ))^❷

”جو شخص نرمی سے محروم کیا گیا وہ ہر قسم کی بھلائی سے محروم کیا گیا۔“

۵۹۔ السُّبُوحُ

معانی: بہت پاکیزگی والا۔

معارف: حدیث میں یہ دُعا ہے:

((سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ))^❸

”بہت پاکیزگی والا، نہایت مقدس ہے تمام فرشتوں اور روح (جبریل علیہ السلام) کا رب۔“

﴿سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ﴾ (الصف: ۱)

”آسمانوں اور زمین میں جتنی چیزیں ہیں، سب اللہ کی پاکیزگی بیان کرتی ہیں۔“

آسمانوں اور زمین میں جتنے حیوانات، نباتات اور جمادات ہیں، سب اپنے رب کی پاکی اور بڑائی بیان کرتے ہیں۔ کوئی اپنی زبان سے تسبیح پڑھتا ہے جیسے فرشتے اور جن وانس، اور کسی کی ہیئت و حالت سے آشکار ہوتا ہے کہ اس کا خالق تمام عیوب و نقائص سے پاک ہے، جیسے آسمان و زمین، درخت، نباتات اور پہاڑ وغیرہ۔

❶ صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب فضل الرفق، الرقم: ۲۵۹۲۔

❷ صحیح مسلم، رقم: ۲۵۹۲/۷۴۔ سنن ابو داود، رقم: ۴۸۰۹۔

❸ صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما يقال في الركوع والسجود، الرقم: ۴۸۷۔

﴿وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَكُوتُ مِنْ خَيْفَتِهِ﴾ (الرعد: ۱۳)

”اور بجلی کی کڑک، اور فرشتے اس کے خوف سے اس کی حمد و ثنا اور پاکیزگی بیان کرنے میں لگے رہتے ہیں۔“

﴿تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۚ إِنَّكَ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا﴾

(بنی اسرائیل: ۴۴)

”ساتوں آسمان اور زمین اور جو مخلوقات ان میں پائے جاتے ہیں، سبھی اس کی پاکی بیان کرتے ہیں، اور ہر چیز صرف اس کی حمد و ثنا اور پاکی بیان کرنے میں مشغول ہے، لیکن تم لوگ ان کی تسبیح کو نہیں سمجھتے ہو، وہ بے شک بڑا بردبار، بڑا معاف کرنے والا ہے۔“

زجاج کہتے ہیں کہ نباتات و جمادات بھی زبانِ قال سے ہی تسبیح پڑھتے ہیں، لیکن ہم اسے سمجھ نہیں پاتے ہیں۔

۶۰۔ الشَّافِي

معانی:..... شفا عطا کرنے والا۔

معارف:..... حدیث میں مریض کے لیے یہ دُعا سکھائی گئی ہے:

((اِذْهَبِ الْبَاسُ رَبَّ النَّاسِ وَاَشْفِ اَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُعَادِرُ سَقَمًا)) ❶

”اے لوگوں کے رب! بیماری کو دور فرما، اور شفا دے کہ تو ہی شفا دینے والا ہے، نہیں ہے شفا سوائے تیری شفا کے ایسی شفا جو کسی بیماری کو نہ چھوڑے۔“

((بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ))

❶ صحیح بخاری، کتاب المرضی، باب دعاء العائد للمریض، الرقم: ۵۶۷۵۔

”اللہ کے نام کے ساتھ میں تجھے دم کرتا ہوں، ہر اُس چیز سے جو تجھ کو ایذا دے، اور ہر شریر نفس سے اور حاسد آنکھ سے۔ اللہ تجھ کو شفا دے۔ اللہ کے نام کے ساتھ میں تجھ کو دم کرتا ہوں۔“

فضیلت: جناب ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں: جبریل علیہ السلام نبی کریم ﷺ

کے پاس آئے اور عرض کیا: اے محمد! آپ کو درد ہے؟ تو آپ ﷺ نے فرمایا: ہاں! چنانچہ جبریل علیہ السلام نے آپ ﷺ کو دم کیا۔^①

امام احمد اور نسائی نے عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ سے روایت نقل کی ہے۔ اس میں ہے کہ آنحضرت ﷺ نے سیدنا عبادہ رضی اللہ عنہ سے ارشاد فرمایا: بلاشبہ جبریل نے مجھے دم کیا اور میں تندرست ہو گیا۔ اے ابن الصامت! کیا میں تمہیں وہ دم نہ سکھاؤں؟ میں نے عرض کیا: کیوں نہیں۔ تو آنحضرت ﷺ نے (یہی کلام) ارشاد فرمایا۔^②

اس اسم پاک کے ذریعے دعا:

((أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ، رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ))^③

”میں بڑی عظمت والے اللہ سے جو عرش عظیم کا رب ہے دعا کرتا ہوں کہ وہ تجھے شفاء عطا فرمائے۔“

۶۱۔ الطَّيِّبُ

معانی: پاک۔

معارف: حدیث میں ہے:

((إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ وَلَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا))^④

① صحیح مسلم، کتاب السلام، رقم: ۵۶۹۹۔

② مسند أحمد، رقم: ۲۲۷۵۹۔ السنن الكبرى للنسائی، رقم: ۱۰۷۷۶۔ شیخ شعبان نے اسے ”صحیح لغیرہ“ قرار دیا ہے۔

③ صحیح الجامع الصغیر، رقم: ۲۰۸۳۔

④ صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب قبول الصدقة من الکسب الطیب و ترتیبها، الرقم: ۱۰۱۵۔

”بے شک اللہ پاک ہے، اور صرف پاک کو قبول فرماتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ طیب ہے، پاکیزہ چیزیں کھانے کا حکم فرماتا ہے۔

﴿يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ

عَلِيمٌ ۝﴾ (المؤمنون: ۵۱)

”اے میرے پیغمبرو! پاکیزہ چیزیں کھاؤ، اور نیک عمل کرو، بے شک میں

تمہارے اعمال کو خوب جانتا ہوں۔“

چنانچہ انبیاء علیہم السلام نے بھی اکل حلال کا شدید التزام کیا۔ کہا جاتا ہے کہ سیدہ مریم علیہا السلام

دھاگہ بائٹی تھیں، اور اس کی آمدنی سے دونوں ماں بیٹے کا گزر بسر ہوتا تھا۔

سیدنا داؤد علیہ السلام اپنے ہاتھ کی کمائی کھاتے تھے۔

صحیح حدیث سے ثابت ہے کہ نبی کریم ﷺ چند ٹکوں کے عوض اہل مکہ کی بکریاں

چراتے تھے۔

اللہ تعالیٰ طیب ہے، اس نے اہل ایمان کو بھی اکل حلال کا حکم دیا۔

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ﴾ (البقرة: ۱۶۸)

”اے لوگو! زمین میں جتنی حلال و پاکیزہ چیزیں ہیں انہیں کھاؤ، اور شیطان کے

نقش قدم کی اتباع نہ کرو۔“

احادیث سے چند اسماء کے ذکر کرنے کا مقصد صرف اور صرف یہ ہے تاکہ پتہ چل سکے

کہ اسمائے حسنیٰ قرآن ہی کی طرح احادیث میں بھی ہیں، تو یہ اسماء ہم نے صرف بطور افادہ

ذکر کیے ہیں۔

ضابطہ:..... اسمائے حسنیٰ کے متعلق یہ قاعدہ ذہن نشین کر لیں کہ اللہ تعالیٰ کے لیے جو

اسم پاک قرآن مجید سے یا کسی صحیح سند سے مروی حدیث سے ثابت ہو جائے وہ بلا شک اللہ

تعالیٰ کا اسم شمار ہوگا۔



صفاتِ علیا کا بیان

صفاتِ الہیہ دو قسم پر مبنی ہیں۔ (۱) ذاتی۔ (۲) فعلی۔

(۱) **ذاتی** :..... ایسی صفات جو اللہ تعالیٰ کی ذات سے کبھی بھی جدا نہیں ہوتیں، اور نہ ہی ان میں کوئی نقص واضح ہوتا ہے۔ جیسا کہ ”نفس“، ”وجہ“، ”کلام“، ”قدم“ وغیرہ۔

(۲) **فعلی** :..... صفاتِ فعلی سے مراد ایسی صفات ہیں جو اللہ رب العالمین کی مشیت اور قدرت کے ساتھ تعلق رکھتی ہیں۔ جب اللہ تعالیٰ چاہے وہ ایسا کرنے پر قدرت رکھتا ہے۔ مثلاً: استواء، النزول، الضحك اور الرضى وغیرہ۔

فائدہ :..... یاد رہے کہ صفات پر ایمان کے اعتبار سے ذاتی اور فعلی میں کوئی فرق نہیں ہے، جیسے ذاتی صفات پر بلا تاویل، بلا تشبیہ اور بلا تعطیل ایمان لانا ضروری ہے، بعینہ فعلی صفات پر ایمان رکھنا بھی لازمی امر ہے۔ پس ان کی تاویل کی جائے اور نہ تشبیہ اور تعطیل۔ مذکورہ تمہیدی کلمات کے بعد مناسب ہے کہ چند صفات کو بیان کر دیا جائے، تاکہ فائدہ مکمل ہو جائے۔

(1) موت و حیات کا مالک:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿فَلَوْ لَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۙ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۙ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ ۚ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۙ فَلَوْ لَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۙ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۙ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۙ﴾

(الواقعہ: ۸۳ تا ۸۸)

”پس جب کسی کی روح حلق تک پہنچ جاتی ہے۔ اور اُس وقت تم اسے (مجبور محض بن کر) دیکھ رہے ہوتے ہو۔ اور تمہارے بہ نسبت ہم اُس سے زیادہ قریب ہوتے ہیں، لیکن تم مجھے دیکھ نہیں پاتے ہو۔ پس اگر تم کسی کے تابع فرمان نہیں ہو۔ اگر تم (اس دعوے میں) سچے، تو اس کی روح کو واپس کیوں نہیں لے آتے۔ پھر اگر وہ مرنے والا اللہ کے مقرب بندوں میں سے ہے۔“

(2) خالص دودھ عطا کرنے والا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَ دَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ۝﴾ (النحل: ۶۶)

”بے شک تمہارے لیے چوپایوں میں بھی عبرت ہے، ان کے پیٹ میں جو گوبر اور خون ہے ان کے درمیان سے خالص دودھ نکال کر ہم تمہیں پلاتے ہیں جو پینے والوں کے لیے بڑا ذائقہ دار ہوتا ہے۔“

(3) بیج کو پودے کی شکل اُگانے والا:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۚ ؕ أَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الذَّارِعُونَ ۚ ؕ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۚ ؕ إِنَّا لَنَبْغِزُمُونَ ۚ ؕ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۚ ؕ﴾ (الواقعة: ۶۳ تا ۶۷)

”کیا تم نے اُس بیج کے بارے میں غور کیا ہے جسے تم بوتے ہو۔ اُسے پودے کی شکل میں تم اُگاتے ہو، یا اسے ہم اُگانے والے ہیں۔ اگر ہم چاہتے تو اُسے بھس بنا دیتے، پھر تم حسرت ہی کرتے رہ جاتے۔ اور کہتے کہ ہم یقیناً خسارے میں پڑ گئے ہیں۔ بلکہ ہم محروم ہو گئے ہیں۔“

(4) تخلیق انسانیت کے مختلف مدارج:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۖ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعُلُقَةَ مِضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ۖ ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝﴾ (المؤمنون: ١٢ تا ١٤)

”اور ہم نے انسان کو مٹی کے ٹھیکرے سے پیدا کیا۔ پھر ہم نے اُسے نطفہ کی شکل میں ایک محفوظ جگہ پر پہنچایا۔ پھر نطفہ کو منجمد خون بنایا، پھر اُس منجمد خون کو گوشت کا ایک ٹکڑا بنایا، پھر اُس ٹکڑے سے ہڈیاں پیدا کیں، پھر اُن ہڈیوں پر گوشت چڑھا دیا، پھر ہم نے تخلیق کے ایک دوسرے مرحلہ سے گزار کر اسے پیدا کیا، پس بابرکت ہے اللہ جو سب سے عمدہ پیدا کرنے والا ہے۔“

(5) بارش برسانے والا:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۚ ؕ ءَأَنْتُمْ أَتْرَلْتَهُوهُ مِنَ الْهَيْزِلِ أَمْ نُحْنُ الْمُبْرِوُونَ ۚ ؕ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۚ ؕ﴾

(الواقعه: ۶۸ تا ۷۰)

”کیا تم نے اُس پانی کے بارے میں غور کیا ہے جسے تم پیتے ہو۔ اُسے بادل سے تم نے اُتارا ہے، یا ہم اُتارنے والے ہیں۔ اگر ہم چاہتے تو پھر اُسے کھارا بنا دیتے، پھر تم شکر کیوں نہیں ادا کرتے ہو۔“

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَلَيْنُ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا﴾

لَيَقُولَنَّ اللَّهُ قُلُّ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

(العنکبوت: ۶۳)

”اور آپ ان سے پوچھیں گے کہ آسمان سے پانی کس نے اُتارا ہے، جس کے ذریعہ وہ مُردہ زمین کو زندہ کر دیتا ہے، تو وہ کہیں گے: اللہ، آپ کہیے کہ ساری تعریفیں اللہ کے لیے ہیں، لیکن اکثر مشرکین عقل سے کام نہیں لیتے ہیں۔“

(6) قوت سماعت و بصارت عطا کرنے والا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَ أَبْصَارَكُمْ وَ خَتَمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَاتِيكُمْ بِهِ ۚ أَنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذِقُونَ ﴿٦٤﴾﴾

(الانعام: ۴۶)

”آپ پوچھئے تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ تمہارے کان اور تمہاری آنکھیں لے لے، اور تمہارے دلوں پر مہر لگا دے، تو کیا اللہ کے علاوہ کوئی معبود ہے جو وہ چیزیں تمہیں دوبارہ عطا کر دے، آپ دیکھ لیجئے کہ ہم نشانیوں کو کس طرح مختلف انداز میں پیش کرتے ہیں، لیکن وہ پھر بھی اعراض سے ہی کام لیتے ہیں۔“

(7) نظام لیل و نہار کا خالق:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مِّنْ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَاتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۚ أَفَلَا تَسْهَوْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مِّنْ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَاتِيكُمْ بِاللَّيْلِ لَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾﴾ (القصص: ۷۱ تا ۷۲)

”اے میرے نبی! آپ مشرکین سے پوچھئے، تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ قیامت تک کے لیے تم پر رات مسلط کر دے، تو اللہ کے سوا کون تمہارے لیے

روشنی لے آئے گا، کیا تم سنتے نہیں ہو۔ آپ مشرکین سے پوچھئے، تمہارا کیا خیال ہے، اگر اللہ قیامت تک کے لیے تم پر دن کو مسلط کر دے، تو اللہ کے سوا کوئی تمہارے لیے رات کو لے آئے گا جس میں تم آرام کرتے ہو، کیا تم دیکھتے نہیں ہو۔“

(8) زمین و آسمان کی تخلیق

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝﴾ (المومنون : ۸۶-۸۷)

”اے پیغمبر! آپ ان سے پوچھئے کہ ساتوں آسمانوں کا رب کون ہے، اور عرش عظیم کا رب کون ہے۔ وہ یہی جواب دیں گے کہ اللہ، آپ کہیے، تو پھر تم اللہ سے ڈرتے کیوں نہیں ہو۔“

(9) دریاؤں اور پہاڑوں کا خالق:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿أَمْنُ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَافَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ إِنَّ اللَّهَ فَاعٍ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝﴾ (النمل : ۶۱)

”یا وہ ذاتِ برحق بہتر ہے جس نے زمین کو رہنے کی جگہ بنائی ہے، اور اس میں نہریں جاری کی ہیں، اور اس پر پہاڑ بسا دیے ہیں، اور دو سمندروں کے درمیان ایک آڑھڑی کر دی ہے، کیا اللہ کے ساتھ کسی اور معبود نے بھی یہ کام کیا ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ اکثر مشرکین نادان ہیں۔“

(10) انسان کو خوبصورت بنانے والا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ (آل عمران: ٦)

”وہی ماں کے پیٹ میں تمہیں جیسی چاہتا ہے صورت عطا کرتا ہے، اس کے علاوہ کوئی معبود نہیں، جو زبردست، حکمت والا ہے۔“
دوسری جگہ ارشاد فرمایا:

﴿اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَ السَّمَاءَ بِنَاءً ۚ وَ صَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ ۚ فَتَبَرَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾ (المؤمن: ٦٤)

”اللہ نے ہی تمہارے لیے زمین کو ثابت اور آسمان کو چھت بنا دیا ہے، اور تمہاری صورتیں بنائیں، تو تمہیں اچھی شکل و صورت دی، اور تمہیں بطور روزی عمدہ چیزیں عطا کی، وہی اللہ تمہارا رب ہے، پس اللہ عالی شان والا ہے، سارے جہان کا پالنہار ہے۔“

(11) لفظ ”کن“ سے جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ﴾ (یس: ٨٢)

”اس کی شان تو یہ کہ جب وہ کسی چیز کا ارادہ کرتا ہے تو اس سے کہتا ہے ”ہو جا“ اور وہ چیز ہو جاتی ہے۔“

(12) بانجھ عورت سے بچہ پیدا کرتا ہے:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿قَالَ رَبِّ ائْتِي بِكَ إِنِّي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ﴾ (آل عمران: ٤٠)

”زکریا نے کہا، اے میرے رب! مجھے لڑکا کیسے ہو سکتا ہے جبکہ میں بوڑھا ہو چکا ہوں، اور میری بیوی بانجھ ہے؟ کہا، اسی طرح اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے۔“

(13) بے موسے پھل عطا کر سکتا ہے:

ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۖ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۖ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَمْرِئُؤُا۟ لَّكَ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۳۷﴾

(آل عمران: ۳۷)

”تو اس کے رب نے اُسے شرفِ قبولیت بخشا، اور اُس کی اچھی نشوونما کی، اور زکریا کو اس کا کفیل بنایا، جب بھی زکریا اُس کے پاس محراب میں جاتے، اُس کے پاس کھانے کی چیزیں پاتے، وہ پوچھتے کہ اے مریم! یہ چیزیں کہاں سے تیرے لیے آئی ہیں، وہ کہتے کہ یہ اللہ کے پاس سے آئی ہیں، بے شک اللہ جسے چاہتا ہے بے حساب روزی عطا کرتا ہے۔“

(14) اصحابِ کہف کو تین سو نو سال سلانا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَكَيْفُؤُا۟ فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِآةٍ سِنِينَ ۖ وَازْدَادُوۡا تِسْعًا ۝۳۸ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَيْفُؤُا۟ لَهُ عِيبُ السَّجَّاتِ ۖ وَالْاَرْضِ ۖ اَبْصُرْ بِهٖ ۖ وَاسْمِعْ ۖ مَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِۦ مِّنْ وَّلِيٍّ ۖ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ۝۳۹﴾ (الكهف: ۲۵ تا ۲۶)

”وہ نو جوان اپنے غار میں تین سو سال اور مزید نو سال رہے۔ آپ کہہ دیجیے کہ ان کے اس حال میں رہنے کی مدت کو اللہ زیادہ جانتا ہے، آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتوں کو صرف وہی جانتا ہے، وہ کیا خوب دیکھنے والا اور کیا خوب سننے والا

ہے۔ بندوں کا اس کے سوا کوئی کارساز نہیں، اور وہ اپنے حکم میں کسی کو شریک نہیں کرتا ہے۔“

(15) بغیر باپ کے عیسیٰ علیہ السلام کی پیدائش:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَ لَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّئٌ ۖ وَلِنَجْعَلَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝﴾ (مریم: ۲۰ تا ۲۱)

”مریم نے کہا مجھے لڑکا کیسے ہوگا، جبکہ مجھے کسی انسان نے نہیں چھوا ہے، اور میں بدکار بھی نہیں ہوں۔ (جبریل نے) کہا، ایسا ہی ہوگا، تمہارا رب کہتا ہے کہ یہ کام میرے لیے آسان ہے، اور تاکہ ہم اسے لوگوں کے لیے (اپنی قدرت کی) ایک نشانی اور رحمت بنائیں، اور یہ ایک ایسی بات ہے جس کا فیصلہ ہو چکا ہے۔“

(16) سیدنا یونس علیہ السلام کو مچھلی کے پیٹ میں زندہ رکھا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَ ذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن لَّنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ ۖ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۚ وَبَجَيْنَاهُ مِنَ الْعَمِّ ۚ وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْوُجُوهَ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝﴾ (الانبیاء: ۸۷ تا ۸۸)

”اور یونس جب اپنی قوم سے ناراض ہو کر چل دیے، تو سمجھے کہ ہم ان پر قابو نہیں پائیں گے، پس انھوں نے تاریکیوں میں اپنے رب کو پکارا کہ تیرے سوا کوئی معبود نہیں ہے تو تمام عیوب سے پاک ہے، میں بے شک ظالم تھا، تو ہم نے ان کی دعا قبول کر لی اور ان کو غم سے نجات دی، اور ہم مومنوں کو اسی طرح نجات دیتے ہیں۔“

(17) اللہ کا علم تمام چیزوں کو محیط ہے:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝﴾

(المومن: ۱۹ تا ۲۰)

”اللہ آنکھوں کی خیانت اور اُن باتوں کو جانتا ہے جنہیں سینے چھپائے ہوتے ہیں۔ اور اللہ حق کے مطابق فیصلہ کرتا ہے، اور اللہ کے سوا جن باطل معبودوں کو یہ لوگ پکارتے ہیں، وہ تو کوئی فیصلہ نہیں کرتے ہیں، بے شک اللہ خوب سننے والا، دیکھنے والا ہے۔“

(18) دوسمندروں کے درمیان آڑ کھڑی کرنے والا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْقَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِي وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ إِنْ إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝﴾

(النمل: ۶۱)

”یا وہ ذاتِ برحق بہتر ہے جس نے زمین کو رہنے کی جگہ بنائی ہے، اور اس میں نہریں جاری کی ہیں، اور اسی پر پہاڑ بسا دیے ہیں، اور دوسمندروں کے درمیان ایک آڑ کھڑی کر دی ہے، کیا اللہ کے ساتھ کسی اور معبود نے بھی یہ کام کیا ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ اکثر مشرکین نادان ہیں۔“

(19) بعث بعد الموت کے اختیار والا:

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا ۚ قَالَ أَنَّى يُغِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۚ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۚ قَالَ

لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَ
شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانْظُرْ إِلَى جَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِئُهَا ثُمَّ تَكْسُوهَا لَحْمًا ۖ فَلَبَّاتَا تَبْتَيْنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾ (البقرہ: ۲۵۹)

”یا اُس آدمی کے حال پر غور نہیں کیا، جو ایک ایسی بستی سے گزرا جو اپنی چھتوں
سمیت گری پڑی تھی، اُس نے کہا کہ اللہ اب کس طرح اس بستی کو مرجانے کے
بعد زندہ کرے گا، تو اللہ نے اُسے سو سال کے لیے مردہ کر دیا، پھر اُسے اٹھایا،
اللہ نے کہا کہ تم کتنی مدت اس میں رہے، اس نے کہا کہ ایک دن یا دن کا کچھ
حصہ اس حال میں رہا ہوں، اللہ نے کہا بلکہ سو سال رہے ہو، پس اپنے کھانے
پینے کی چیزوں کو دیکھو وہ خراب نہیں ہوئی ہیں، اور اپنے گدھے کو دیکھو، اور تاکہ
ہم تمہیں لوگوں کے لیے ایک نشانی بنا دیں، اور (گدھے کی) ہڈیوں کی طرف
دیکھو کہ ہم انہیں کس طرح اٹھا کر ایک دوسرے سے جوڑتے ہیں، پھر اُن پر
گوشت چڑھاتے ہیں، جب حقیقت اس کے سامنے کھل گئی تو کہا میں جانتا ہوں
کہ بے شک اللہ ہر چیز پر قادر ہے۔“

(20) مچھلی زندہ ہو کے غائب ہو گئی:

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ
حُقُبًا ۚ فَلَبَّا بَلَدًا مَّجْمَعًا بَيْنَهُمَا نِسْيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ
سَرَبًا ۚ﴾ (الكهف: ۶۰ تا ۶۱)

”اور جب موسیٰ نے اپنے خادم سے کہا کہ میں سفر جاری رکھوں گا۔ یہاں تک
کہ دو دریاؤں کے ملنے کی جگہ پہنچ جاؤں، یا مدت دراز تک چلتا رہوں گا۔ پس
جب وہ دو دریاؤں کے ملنے کی جگہ پہنچ گئے تو وہاں اپنی مچھلی بھول گئے، اور مچھلی

نے سمندر میں ایک سوراخ کی طرح راستہ بنا لیا۔“

(21) نفس:

اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ﴾ (آل عمران: ۲۸)

”اور اللہ تعالیٰ تمہیں اپنے نفس ”ذات“ سے ڈراتا ہے۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ﴾ (الأنعام: ۱۲)

”اس نے رحمت کو اپنے نفس کے اوپر لازم کر لیا ہے۔“

اور حدیث قدسی ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

((إِنْ ذَكَرْنِي فِي نَفْسِي ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي .)) ❶

”اگر میرا بندہ مجھے اپنے نفس میں یاد کرتا ہے تو میں بھی اس کو اپنے نفس میں یاد کرتا ہوں۔“

(22) الحب والفرح:

اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کے اچھے اور نیک اعمال کی بنیاد پر ان سے محبت کرتا ہے اور بہت خوش ہوتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ﴾ (آل عمران: ۳۱)

”آپ کہہ دیجیے کہ اگر تم اللہ سے محبت کرتے ہو تو میری اتباع کرو، اللہ تم سے محبت کرے گا۔“

اور رسول اللہ ﷺ کا ارشاد ہے:

((وَاللَّهُ لَلْأَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ أَحَدِكُمْ يَجِدُ ضَالَّتَهُ

❶ الترغيب والترهيب: ۳۹۳/۲، مختصر العلو، رقم: ۹۴.

بِالْفَلَاةِ)) ❶

”اللہ کی قسم! اللہ تعالیٰ اپنے بندے کی توبہ پر بہت خوش ہوتا ہے، حتیٰ کہ اس آدمی سے بھی زیادہ جو اپنی گم شدہ سواری کو پالیتا ہے۔“

(25) کراہت و غضب:

اسی طرح اللہ رب العزت اپنے بندوں کے بعض اعمال کو ناپسند کرتا ہے اور ان کے کرنے والوں سے ناراض ہوتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعِدًّا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ﴾ (النساء: ۹۳)

”اور جو شخص کسی مسلمان کو جان بوجھ کر قتل کر دے گا، تو اس کا بدلہ جہنم ہوگا، جس میں وہ ہمیشہ رہے گا، اور اس پر اللہ کا غضب ہوگا۔“

مزید فرمایا:

﴿وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ﴾

(التوبة: ۴۶)

”اور اگر ان کا ارادہ نکلنے کا ہوتا تو اس کے لیے تیاری کرتے، لیکن اللہ نے (جہاد کے لیے) ان کی روانگی کو پسند نہیں کیا۔“

(26) الرضی:

اللہ تعالیٰ کے لیے صفت رضی ثابت ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿وَالسُّقُونَ إِلَّا كُنْ مِنْ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ﴾ (التوبة: ۱۰۰)

”اور مہاجرین اور انصار میں سے وہ اولین لوگ جنہوں نے ہجرت کرنے اور ایمان لانے میں دوسروں پر سبقت کی، اور وہ دوسرے لوگ جنہوں نے اُن

سابقین کی اخلاص کے ساتھ پیروی کی، اللہ ان سب سے راضی ہو گیا، اور وہ سب اللہ سے راضی ہو گئے۔“

اور سیدنا انس بن مالک رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ہم رسول اللہ ﷺ کے ساتھ ابوسیف اور ہار کے ہاں گئے اور وہ (رسول اللہ ﷺ کے صاحبزادے) سیدنا ابراہیم رضی اللہ عنہ کے رضاعی باپ تھے تو رسول اللہ ﷺ نے سیدنا ابراہیم رضی اللہ عنہ کو لے لیا اور انھیں بوسہ دیا اور ان کے اوپر منہ مبارک رکھا، پھر اس کے بعد ابوسیف کے ہاں گئے اور سیدنا ابراہیم رضی اللہ عنہ حالت نزع میں تھے، تو رسول اللہ ﷺ کی آنکھوں میں آنسو آ گئے تو سیدنا عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ نے آپ ﷺ سے عرض کیا کہ یا رسول اللہ! آپ بھی (روتے ہیں؟) تو آپ ﷺ نے فرمایا: اے ابن عوف! یہ رونا تو ایک رحمت ہے۔ پھر آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

((اِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ وَلَا نَقُولُ اِلَّا مَا يَرْضٰ رَبُّنَا اِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا اِبْرٰهِيْمَ لَمَحْزُوْنُوْنَ .))

”آنکھیں رو رہی ہیں اور دل رنجیدہ ہے، لیکن ہم زبان سے وہی بات کہیں گے جس سے ہمارا رب راضی ہو، اور اے ابراہیم! ہم تمہاری جدائی سے بڑے غمگین ہیں۔“^①

پچھڑا کچھ اس ادا سے کہ رُت ہی بدل گئی
اک شخص سارے شہر کو ویراں کر گیا!

(27) الرحمة:

رحمت بھی رب تعالیٰ کی صفت ہے، اہل ایمان اس کی رحمت کا یقین رکھتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ﴾ (البقرة: ۲۱۸)

”وہی لوگ اللہ کی رحمت کی اُمید رکھتے ہیں۔“

اللہ رب کائنات نے اپنے اوپر رحمت کو لازم کر لیا ہے:

① صحیح بخاری، کتاب الجنائز، رقم: ۱۳۰۳۔

﴿كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ﴾ (الأنعام: ٥٤)

”تمہارے رب نے اپنے اوپر رحمت کو لازم کر لیا ہے۔“

رحمت کی قسمیں:

اللہ تعالیٰ کی رحمت دو طرح کی ہے: (۱) رحمت عامہ۔ (۲) رحمت خاصہ۔

(۱) **رحمت عامہ** :..... اللہ تعالیٰ کی رحمت عامہ ہر ایک کے لیے عام ہے، اس میں

مسلم اور کافر کی تمیز نہیں ہے، اور نہ انسان اور حیوان کی۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾ (الاعراف: ١٥٦)

”اور میری رحمت ہر چیز کو شامل ہے۔“

(۲) **رحمت خاصہ** :..... رحمت خاصہ سے مراد وہ رحمت ہے جو انبیاء علیہم السلام، اولیاء

کرام اور اہل ایمان کے ساتھ خاص ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَءَوُّفٌ رَّحِيمٌ﴾ (البقرة: ١٤٣)

”بے شک اللہ لوگوں کے لیے بہت ہی شفقت اور رحمت والا ہے۔“

یاد رہے کہ آیت کریمہ میں ”الناس“ سے مراد اہل ایمان خاص لوگ ہیں۔ جنہوں نے

رسول کریم ﷺ کے ساتھ تحویل قبلہ سے قبل بھی نمازیں پڑھی تھیں۔

(28) خوشی دے کر ہنسنا اور غم دے کر رلانا:

اللہ رب العالمین کی ذات ہے جس نے انسان میں ”ہنسنے اور رونے“ کی قوت ودیعت

کی ہے۔ پس اللہ تعالیٰ نے دنیا میں جسے چاہا خوشی دے کر ہنسیا، اور جسے چاہا غم دے کر

رونے پر مجبور کیا۔ اللہ رب العالمین کا ارشاد ہے:

﴿وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى﴾ (النجم: ٤٣)

”اور یہ کہ وہی ہنساتا ہے اور رلاتا ہے۔“

(29) علو:

”علو“ اللہ تعالیٰ کی صفت ہے، جس کا معنی یہ ہے کہ وہ اپنی تمام مخلوقات سے بلند ہے۔

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ (البقرة: ۲۵۵)

”وہی بلندی اور عظمت والا ہے۔“

یہی وجہ ہے کہ فرشتے اور جبریل اللہ عزوجل کی طرف چڑھتے ہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے:

﴿تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ﴾ (المعارج: ۴)

”فرشتے اور روح (جبریل) اس کے پاس چڑھ کر جاتے ہیں۔“

ابن جریر نے اس آیت کریمہ کی تفسیر یہ بیان کی ہے کہ ”فرشتے اور جبریل اللہ عزوجل کی جانب عروج کرتے ہیں، بایں طور کہ ایک دن میں ساتویں زمین کی آخری تہہ سے ساتویں آسمان کے اوپر..... اُن کے چڑھنے کی تیز رفتاری مخلوقات کے پچاس ہزار سال کی رفتار کے برابر ہوتی ہے۔ (تفسیر طبری)

علو کا انکار:

اہل سنت والجماعت کے برعکس جہمیہ نے اللہ تعالیٰ کی صفت ”علو“ کا انکار کیا ہے۔ ان کا کہنا ہے کہ اللہ تعالیٰ فوق السموات سے لے کر تحت الثریٰ تک ہر جگہ موجود ہے۔

((اَللّٰهُ فِي كُلِّ مَكَانٍ لَا يَخْلُو مِنْهُ مَكَانٌ)) ❶

”اللہ تعالیٰ تو ہر جگہ موجود ہے، کوئی جگہ بھی اس کے وجود سے خالی نہیں ہے۔“

نوٹ:..... جہمیہ کے اس قول سے اسلام میں وحدۃ الوجود، وحدۃ الشہود اور حلول جیسے مشرکانہ اور باطل نظریات و عقائد نے جگہ پکڑی۔

وحدۃ الوجود:..... جہمیہ کے قول سے صوفیاء نے عقیدہ وحدۃ الوجود کو اخذ کیا، اور اسے اسلام کے اندر داخل کرنے کی کوشش کیں۔ حالانکہ نظریہ وحدۃ الوجود سے تو اسلام کی بنیاد ہی ہل کر رہ جاتی ہے۔

❶ الرد علی الجہمیۃ، ص: ۳۴.

وحدة الوجود کا مطلب یہ ہے کہ تمام کائنات کا وجود عین اللہ تعالیٰ کا وجود ہے، اور کوئی بھی چیز اللہ تعالیٰ کے وجود سے باہر نہیں۔ اگرچہ دیکھنے میں یہ الگ الگ وجود نظر آتے ہیں مگر حقیقت تمام کی ایک ہے جو حقیقت اللہ تعالیٰ کا ہی وجود ہے۔^①

ان عقائد و نظریات کے حاملین کے ہاں خالق و مخلوق میں کوئی فرق نہیں۔ چنانچہ بعض صوفیاء نے توحید کی تعریف یوں کی ہے کہ بشریت کے دور کرنے اور اپنے اوپر الوہیت ثابت کرنے کا نام توحید ہے۔^②

قرآن و حدیث اس عقیدہ و نظریہ کی بھرپور تردید اور مخالفت کرتے ہیں، اور واضح بیان کرتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ اپنی مخلوق سے بلند اور بآئن یعنی جدا ہے، اور وہ عرش پر مستوی ہے۔ وہ مخلوق کے ساتھ متحد ہے اور نہ ہی مخلوق میں حلول کرتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ﴾ (الملک: ۱۷)

”یا تم اس کی طرف سے مطمئن ہو گئے ہو جو آسمان میں ہے۔“

اور رسول مکرم ﷺ نے اس لوٹڈی سے دریافت کیا جس کو سیدنا معاویہ بن حکم سلمی رضی اللہ عنہ نے آزاد کرنے کا عندیہ ظاہر کیا تھا:

((أَيْنَ اللَّهِ؟ قَالَتْ: فِي السَّمَاءِ، قَالَ: مَنْ أَنَا؟ قَالَتْ: أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ. قَالَ: أَعْتَقَهَا فَإِنَّهَا مُؤَمَّنَةٌ.))^③

”اللہ کہاں ہے؟ اس نے کہا: آسمان میں ہے۔ پھر آپ نے اس سے سوال کیا کہ میں کون ہوں؟ تو اُس نے کہا: آپ اللہ کے رسول ہیں۔ چنانچہ رسول مکرم ﷺ نے سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کو فرمایا: اس کو آزاد کر دو، یہ مومنہ ہے۔“

مذکورہ بالا حدیث پاک سے یہ بات روزِ روشن کی طرح عیاں ہے کہ نبی کریم ﷺ

① امداد المشتاق از اشرف علی تہانوی، ص: ۱۰۱، دین تصوف، ص: ۱۱۶.

② دین تصوف، ص: ۸۰.

③ صحیح مسلم، کتاب المساجد، رقم: ۱۱۹۹.

نے اس لونڈی کے ایماندار ہونے کا سرٹیفکیٹ دیا کہ وہ تسلیم کرتی تھی کہ اللہ تعالیٰ آسمان میں ہے..... اور اس کے بدلہ میں آپ نے اسے آزاد کرنے کا حکم دیا۔

امام مالک رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((اَللّٰهُ فِي السَّمَاءِ وَعِلْمُهُ فِي كُلِّ مَكَانٍ)) [كتاب السنة]

”اللہ تعالیٰ آسمان میں ہے، اور اس کا علم ہر جگہ میں ہے۔“

وحدة الشهود:..... یہ نظریہ باطلہ بھی پہلے نظریہ وحدۃ الوجود سے ملتا جلتا ہے۔ اس نظریہ کی تردید سیدنا موسیٰ علیہ السلام کے اس قصے سے ہو جاتی ہے، جس میں سیدنا موسیٰ علیہ السلام نے اللہ تعالیٰ سے درخواست کی کہ اے اللہ! میں تجھے دیکھنا چاہتا ہوں۔ تو اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿كُنْ تَرَبُّنِيْ وَلٰكِنْ اَنْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنْ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرٰبُنِيْ ۚ

فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسٰى صَعِقًا ۝﴾ (الأعراف: ۱۴۳)

”تو مجھے نہیں دیکھ سکتا، لیکن اس پہاڑ کی طرف دیکھ، اگر یہ اپنی جگہ پر باقی رہ جائے تو تو مجھے دیکھ لے گا، پس جب اس پہاڑ پر ان کے رب کی تجلی کا ظہور ہوا تو اسے ریزہ ریزہ کر دیا، اور موسیٰ غش کھا کر گر پڑے۔“

امام ابن خزمیہ رحمہ اللہ اس مذکورہ آیت کی تفسیر میں رقمطراز ہیں: ”اے عقلمند! کیا علم محیط نہیں ہے اگر اللہ تعالیٰ بذات خود ہر جگہ ہر انسان اور ہر مخلوق کے ساتھ ہو جیسا کہ معطلہ کا زعم ہے، تو پھر ہر چیز کے لیے متجلی ہو۔ اس طرح تمام نرم و سخت زمین، پہاڑ اور میدان و جنگل اور ویرانے اور آبادیاں اور جو کچھ ان میں نباتات اور عمارتیں وغیرہ موجود ہیں، ان کے لیے بھی متجلی ہوا ہوتا تو ان کے بھی پر نچے اڑ گئے ہوتے، کیونکہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے کہ: فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا.....“ پس جب اس پہاڑ پر ان کے رب کی تجلی کا ظہور ہوا، تو اسے ریزہ ریزہ کر دیا۔“ (کتاب التوحید، از امام ابن خزمیہ رحمہ اللہ)

اس نظریہ کی حقیقت سید رشید رضا مصری رحمہ اللہ نے ”تفسیر المنار: ۱۰/۲۳۹“ میں کچھ

یوں بیان فرمائی ہے: ”فلسفہ وحدۃ الشہود کو عام طور پر لوگ ”فنائی اللہ“ سے تعبیر کرتے ہیں، اور اس کی حقیقت کچھ یوں بیان کی جاتی ہے کہ بندہ الہی ذات کے شہود کو فراموش کر دے اور اپنے عزم و احساس سے غافل ہو جائے، اور یہ سمجھنے لگ جائے کہ وہ صفاتِ الہیہ میں سے کسی ایک صفت کا مظہر ہے، اور اس کے اسماء میں سے کسی اسم کی جلوہ گاہ ہے اور امر الہی کے سامنے بالکل بے بسی کا اظہار کرے۔

اور جب کئی ابتدائی منازل اور مشکل ترین مراحل طے کرنے کے بعد کسی شخص کو یہ مقام حاصل ہو جاتا ہے تو وہ دائمی اور استقلالی نہیں ہوتا، بلکہ یہ سعادت کبھی کبھی اور گاہے گاہے ایک آدھ لمحہ کے لیے حاصل ہوتی ہے، اس مرتبہ کو ”وحدت الشہود“ کے نام سے موسوم کیا جاتا ہے۔ جو کہ ایک باطل مادی نظریہ ہے، جسے ہندو برہمنوں اور بدھ مت کے جوگیوں کے تخیلات سے مستعار لیا گیا ہے۔ اس عقیدہ کو اپنانے اور اختیار کرنے کے بعد انسان کافر اور جمیع انبیاء و رسل علیہم السلام کی ملل و ادیان سے خارج ہو جاتا ہے، اور نہایت افسوس سے کہنا پڑ رہا ہے کہ بہت سے مسلمان کہلانے والے صوفی منش لوگ بھی اسی فتنہ کی زد میں آ گئے۔

یقیناً اس نظریہ کے ایجاد کی غرض صرف یہی تھی کہ خالق و مخلوق، عابد و معبود کا فرق باقی نہ رہے، جو ذوقِ خدائی کی راہ میں سب سے بڑی رکاوٹ ہے۔ علی ہجویری التوفی (۴۶۵ھ) بھی اسی عقیدہ وحدۃ الشہود کے حامل تھے۔ چنانچہ اپنی تصنیف ”کشف المحجوب“ میں بایزید بسطامی کا ایک قول نقل کرتے ہیں، جو شطیحات کی قبیل سے ہے۔

بایزید بسطامی کہتے ہیں:

((سُبْحَانِي مَا أَعْظَمُ شَأْنِي))

”میں پاک ہوں، میری عظمت کے کیا کہنے۔“ العیاذ باللہ۔

حلول:

یہ عقیدہ یہودیوں، عیسائیوں اور عقائدِ ہندو مت کا اہم جزء ہے۔ یہ بات حتمی ہے کہ مسلمانوں کے درمیان اس عقیدے کا پرچار کرنے والا پہلا شخص

عبداللہ بن سبا یہودی ہے۔ (جس نے خلافت عثمانیہ رضی اللہ عنہ میں منافقانہ طور پر اسلام قبول کیا تھا۔)

اس نے دعویٰ کیا تھا کہ اللہ علی رضی اللہ عنہ کے اندر (داخل ہو گیا) حلول کر گیا ہے۔ ❶

اس کے بعد بہت سارے لوگوں نے اپنے اپنے مقتداء کے بارے میں دعویٰ کیا کہ اس

میں اللہ داخل ہو گیا ہے، اور کچھ نے کہا: اللہ خود ہمارے اندر داخل ہو گیا ہے۔ ❷

پھر حاجی بیکتاشی ۱۲۸۱ م / ۱۸۰۰ھ تا ۱۳۳۷ م / ۱۶۳۸ھ نے اس کو سلسلہ کے طور پر چلایا۔ اور پھر کچھ لوگوں نے دعویٰ کیا کہ اللہ ہر خوبصورت جسم میں داخل ہو جاتا ہے اور وہ ان کو سجدہ کرنے لگتے ہیں۔ ❸

اور پھر کچھ لوگوں نے دعویٰ کیا کہ کائنات کی ہر چیز میں (معاذ اللہ) اللہ حلول کیے ہوئے ہے۔ جس طرح کہ حسن رضوان متوفی ۱۳۱۰ھ اپنے ”دیوان روض القلوب“ میں یہ اشعار لکھتا ہے:

فَلَيْسَ فِي الْوُجُودِ شَيْءٌ يَشْهَدُ
سِوَاهُ فَالْأَشْيَاءُ بِهِ تَوَحَّدَ

”موجودات میں کوئی شے نہیں ہے، جس کا مشاہدہ کیا جاسکے، مگر وہی ذات الہیہ

ساری اشیاء کے اندر مضمحل ہے۔ (یعنی حلول کیے ہوئے ہے۔)“ ❹

حالانکہ شریعت اسلامیہ اس عقیدہ کا سختی سے رد کرتی ہے، سلف صالحین اس سے نالاں ہیں اور ہم اس سے برأت کا اظہار کرتے ہیں۔ چنانچہ علامہ ابن حزم اندلسی المتوفی سنہ ۴۵۴ھ رقمطراز ہیں:

((وَأَمَّا مَنْ قَالَ إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ هُوَ فُلَانٌ لَا إِنْسَانٌ أَوْ أَنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَحِلُّ فِي جِسْمٍ مِنْ أَجْسَامِ خَلْقِهِ، أَوْ أَنَّ بَعْدَ مُحَمَّدٍ ﷺ

❶ الفرق بین الفرق، ص: ۲۲۵-۲۳۸.

❷ الفرق بین الفرق، ص: ۲۲۵.

❸ الفرق بین الفرق، ص: ۲۲۶.

❹ تصوف کو پچا پیے، از نقی احمد ندوی، ص: ۱۸۰.

نَبِيًّا غَيْرَ عِيسَى بْنِ مَرْيَمَ فَإِنَّهُ لَا يَخْتَلِفُ اثْنَانِ فِي تَكْفِيرِهِ . ①
 ”جو شخص کسی معین انسان کے متعلق یہ عقیدہ رکھے کہ اللہ تعالیٰ وہی انسان ہے، یا
 یہ کہ اللہ تعالیٰ اپنی مخلوق میں سے کسی کے جسم میں حلول کر گیا ہے..... تو اس کی
 تکفیر میں آج تک دو آدمیوں نے بھی اختلاف نہیں کیا۔“

اور سید محمد نعیم الدین مراد آبادی لکھتے ہیں:

”اس میں نصاریٰ کا رد کہ الہ غذا کا محتاج نہیں ہو سکتا تو جو غذا کھائے جسم رکھے
 اس جسم میں تحلیل واقع ہو۔ غذا اس کا بدل ہے، وہ کیسے الہ ہو سکتا ہے۔“ ②
 اور مفتی عبدالقیوم خان ہزاروی لکھتے ہیں:

”..... یہ کہنا کہ فنا فی اللہ ہو کر بندہ خدا کے برابر ہو جاتا ہے، خالص شرک ہے،
 ایسے جاہل کو فوراً توبہ کرنا لازم ہے۔ ورنہ اسے چھوڑ دیں اس سے تعلق اس طرح
 رکھیں جیسے مسلمان اور مشرک کا تعلق۔“ ③

(30) استواء علی العرش:

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم، تابعین عظام اور ائمہ کرام رحمہم اللہ کا عقیدہ تھا کہ اللہ تعالیٰ عرش پر
 مستوی ہے۔ جس طرح اس کے مقام اعلیٰ اور عظمت و جلال کے لائق ہے، نہ اس کا انکار کیا
 جاسکتا ہے، نہ اسے تشبیہ دی جاسکتی ہے، اور نہ ہی اس کی کیفیت بیان کی جاسکتی ہے۔ اللہ تعالیٰ
 کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
 الْعَرْشِ ۚ﴾ (الأعراف: ۵۴)

”بے شک آپ کا رب وہ اللہ ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ (۶) دنوں

① الملل، لابن حزم: ۲ / ۲۶۹۔

② تفسیر خزائن العرفان مع کنز الإیمان، تفسیر سورة المائدة، رقم: ۷۵، حاشیہ، رقم: ۱۹۳۔

③ منهاج الفتاویٰ: ۱ / ۴۹۲۔

میں پیدا کیا، پھر عرش پر مستوی ہو گیا۔“

امام بخاری رحمہ اللہ نے اپنی کتاب ”الصحيح“ میں ﴿اُسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ﴾ کے مسئلہ میں جہمیہ پر رد کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ”استوی“ کا معنی ابو العالیہ نے ”ارتفع“ اور مجاہد نے ”علا“ کیا ہے۔^①

یعنی استوی کی بغیر کوئی مثال اور بغیر کوئی کیفیت بیان کیے ہوئے۔ اس کے بعد لکھا ہے کہ عرش وہ جسم ہے جو تمام کائنات کو محیط ہے، اور تمام مخلوقات سے عظیم تر ہے۔ اللہ تعالیٰ آسمانوں اور زمین اور ان کے درمیان کی تمام مخلوقات کی دیکھ بھال کرتا ہے، اُن کے لیے اپنے اوامر صادر فرماتا ہے، اور اپنی معلوم حکمتوں کے مطابق ان میں تصرف کرتا ہے۔

امام عثمان الدارمی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((عَلِمْنَا يَقِينًا بِلَا شَكٍّ أَنَّ اللَّهَ فَوْقَ عَرْشِهِ فَوْقَ سَمَوَاتِهِ وَصَفَ كَمَا بَأَيْنُ مِنْ خَلْقِهِ .))^②

”ہم پورے یقین سے کہتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ آسمانوں کے اوپر عرش پر ہے، جیسا کہ اس نے خود بیان کیا ہے، اور وہ مخلوق سے جدا ہے۔“

مزید فرماتے ہیں:

((فَمَنْ لَمْ يَقْصِدْ بِإِيمَانِهِ وَعِبَادَتِهِ إِلَى اللَّهِ الَّذِي اُسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ فَوْقَ سَمَوَاتِهِ وَبَانَ مِنْ خَلْقِهِ فَإِنَّمَا يَعْبُدُ غَيْرَ اللَّهِ وَلَا يَذَرِيَّ أَيْنَ اللَّهُ .))^③

”پس جو کوئی اللہ پر ایمان نہیں رکھتا، اس لحاظ سے کہ وہ عرش پر مستوی اور مخلوق سے الگ ہے تو وہ غیر اللہ کی عبادت کرتا ہے۔ اور اسے معلوم نہیں کہ

① صحيح بخاري، كتاب التوحيد، باب و كان عرشه على الماء، [هود: ٧] . وهو رب العرش العظيم،

التوبة: ٢٩ .

③ الرد على الجهمية، ص: ٥٥ .

② الرد على الجهمية، ص: ٣٦ .

اللہ کہاں ہے؟“

سورۃ یونس میں ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ﴾ (یونس: ۳)

”بے شک تمہارا رب وہ اللہ ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ دنوں میں پیدا کیا، پھر عرش پر مستوی ہو کر تمام امور کی دیکھ بھال کرنے لگا۔“

مزید ارشاد فرمایا:

﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ﴾ (طہ: ۵)

”وہ نہایت مہربان عرش پر مستوی ہے۔“

حافظ ابن کثیر لکھتے ہیں کہ ”قرآن و سنت میں اللہ تعالیٰ کی جو صفات ثابت ہیں، ان کے سلسلے میں سلف کا مسلک یہی رہا ہے کہ انھیں اسی طرح بغیر تاویل و تحریف، تشبیہ و تمثیل اور بغیر کوئی کیفیت بیان کیے ہوئے مان لیا جائے۔“ (تفسیر ابن کثیر)

امام مالک رحمہ اللہ سے جب پوچھا گیا کہ اللہ تعالیٰ کے فرمان ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ﴾ کا کیا معنی ہے؟ تو آپ نے جواب دیا:

((الْإِسْتِواءُ مَعْلُومٌ، وَالْكِيفِيَّةُ مَجْهُولٌ وَالْإِيمَانُ بِهِ وَاجِبٌ.)) ❶

”استواء معلوم ہے، اس کی کیفیت معلوم نہیں اور اس پر ایمان لانا واجب ہے۔“

(31) النزول:

اہل سنت والجماعت کا عقیدہ ہے کہ اللہ سبحانہ و تعالیٰ ہر رات کو آسمان دنیا پر نزول فرماتا ہے۔ بالکل حقیقی نزول جیسے اس کی ذات اقدس کے لائق ہے۔ سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

((يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ فَيَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ؟ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ وَمَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ؟)) ❶

”ہمارا رب اللہ تعالیٰ ہر رات آسمان دنیا کی طرف نزول فرماتا ہے جب رات کا آخری ایک تہائی حصہ باقی رہ جاتا ہے۔ پھر وہ ارشاد فرماتا ہے؟ کون ہے اس وقت جو مجھے پکارے تو میں اس کی پکار قبول کروں؟ اور کون ہے جو مجھ سے سوال کرے تو میں اسے عطا کروں؟ اور کون ہے جو مجھ سے بخشش طلب کرے تو میں اس کو معاف کر دوں۔“

حافظ ابن عبد البر رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((هُوَ حَدِيثٌ مَنْقُولٌ مِنْ طُرُقٍ مُتَوَاتِرَةٍ وَوُجُوهُ كَثِيرَةٍ مِنْ أَخْبَارِ الْعُدُولِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ .)) ❷

”یہ حدیث متواتر طرق، کثیر اسناد اور عادل رواۃ کے ذریعے نبی ﷺ سے منقول ہے۔“

حافظ ابن قیم الجوزیہ رحمہ اللہ رقمطراز ہیں:

((إِنَّ نُزُولَ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا قَدْ تَوَاتَرَتْ الْأَخْبَارُ بِهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ رَوَاهُ عَنْهُ نَحْوُ ثَمَانِيَةِ وَعَشْرِينَ نَفْسًا مِنَ الصَّحَابَةِ .))

”یقیناً رب تبارک و تعالیٰ کا آسمان دنیا کی طرف نزول فرمانا رسول اللہ ﷺ سے متواتر احادیث سے مروی ہے، جس کو تقریباً اٹھائیس (۲۸) صحابہ نے روایت کیا ہے۔“

❶ التمهيد: ۱۲۸/۷.

❷ الماتريديّة: ۳۶ / ۳.

نزولِ باری تعالیٰ کی کیفیت:

اللہ تبارک و تعالیٰ کا نزول برحق ہے، لیکن کیفیت معلوم نہیں ہے، وہ بلا کیف نزول فرماتا ہے۔ عبد اللہ بن مبارک، امام ابو حنیفہ، فضیل ابن عیاض اور اسحاق بن راہویہ کا یہی قول ہے۔ امام حماد بن زید سے ”نزول الی السماء الدنیا“ کے بارے میں سوال کیا گیا کہ وہ ایک مکان سے دوسرے مکان کی طرف منتقل ہوتا ہے؟ حماد بن زید ابتداءً تو خاموش رہے اور پھر فرمایا:

((هُوَ فِي مَكَانِهِ ، يَقْرُبُ مِنْ خَلْفِهِ كَيْفَ يَشَاءُ .))

”وہ اپنے مکان میں ہے، جیسے چاہتا ہے اپنی مخلوق کے قریب ہوتا ہے۔“

امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ سے اللہ تبارک و تعالیٰ کی صفت ”نزول الی السماء الدنیا“ کے بارے میں سوال کیا گیا تو آپ نے جواباً فرمایا:

((يَنْزِلُ بِلَا كَيْفٍ))

”رب تعالیٰ کا نزول مقدس بلا شک و شبہ ضرور ہوتا ہے، مگر ہمیں اُس نزول کی کیفیت معلوم نہیں۔“

امام ابو محمد احمد بن عبد اللہ المزنی فرماتے ہیں:

”نزول والی حدیث بہت سی صحیح اسناد کے ساتھ مروی ہے، اور اس کی تائید اللہ تعالیٰ کے اس فرمان ﴿وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا﴾ (الفجر: ۲۲)..... اے پیغمبر! اور تیرا رب تشریف لائے گا، اور فرشتے قطاریں باندھ کر حاضر ہوں گے۔“ سے بھی ہوتی ہے۔“^①

امام ابن تیمیہ رحمہ اللہ نے ”شرح حدیث النزول“ نامی ایک مستقل رسالہ تحریر فرمایا ہے۔ رسالہ کے شروع میں ہی تشبیہ کا رد کرنے کے لیے ایک سوال کیا۔ جو کہ مشبہہ کی طرف سے عام طور سے مجالس و محافل میں پیش کیا جاتا، پھر خود ہی جواب دیا ہے۔

① طریق الوصول الی العلم المامول، ص: ۸۵.

(32) اللہ تعالیٰ کی معیت:

اللہ تعالیٰ کا علم آسمانوں اور زمین میں وقوع پذیر ہونے والی تمام اشیاء کو محیط ہے، ایک ذرہ بھی کہیں اُس سے مخفی نہیں ہے۔ وہ اپنے علم کے ذریعے ہر جگہ اپنے بندوں کے ساتھ ہے، بر و بحر کے جس گوشے میں بھی ہوں، وہ ان کے اعمال و حرکات اور ان سے متعلق ہر چیز سے واقف ہے، جیسی تو وہ انھیں روزی پہنچاتا ہے، ان کی نگہداشت کرتا ہے، اور جب ان کی زندگی کے ایام پورے ہو جاتے ہیں تو انھیں موت کے گھاٹ اُتار دیتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝﴾

(الحديد: ٤)

”اُسی نے آسمانوں اور زمین کو چھ (٦) دنوں میں پیدا کیا، پھر عرش پر مستوی ہو گیا، وہ ہر اُس چیز کو جانتا ہے جو زمین میں داخل ہوتا ہے، اور جو اُسی سے نکلتی ہے، اور جو کچھ آسمان سے اُترتا ہے، اور جو اُس میں چڑھتا ہے، اور تم جہاں کہیں بھی ہوتے ہو، وہ تمہارے ساتھ ہوتا ہے، اور تم جو کچھ کرتے ہو، اسے اللہ خوب دیکھ رہا ہوتا ہے۔“

دوسرے مقام پر سورۃ الجادۃ میں ارشاد فرمایا:

﴿أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدْنَىٰ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝﴾ (المجادلة: ٧)

”اے میرے نبی! کیا آپ کو معلوم نہیں کہ اللہ ان تمام چیزوں کو جانتا ہے جو

آسمانوں میں ہے اور جو زمین میں ہے، جب بھی تین اشخاص آپس میں سرگوشی کرتے ہیں تو وہ چوتھا اُن کے ساتھ ہوتا ہے، اور جب پانچ اشخاص ایسا کرتے ہیں، تو وہ چھٹا اُن کے ساتھ ہوتا ہے، اور چاہے اس سے کم افراد ہوں یا زیادہ، اور جہاں کہیں بھی ہوں، وہ اُن کے ساتھ ہوتا ہے، پھر قیامت کے دن وہ اُن کے اعمال کی انھیں خبر دے گا۔ بے شک اللہ ہر چیز کا علم رکھتا ہے۔“

حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ رقمطراز ہیں: ”بہت سے لوگوں کا اس بات پر اجماع ہے کہ اس آیت کریمہ میں ”اللہ کے اپنے بندوں کے ساتھ ہونے“ سے مراد اپنے علم کے ذریعہ اُن کے ساتھ ہونا ہے۔ اسی پر بس نہیں، بلکہ وہ اپنی قوت سماع اور اپنی قوت دید کے ذریعہ بھی اپنے بندوں کو محیط ہے، یعنی وہ اُن سے پوری طرح باخبر ہے، کوئی بات بھی اس سے مخفی نہیں ہے۔“ (تفسیر ابن کثیر)

شیخ الاسلام ابن تیمیہ رحمہ اللہ نے اپنی کتاب ”شرح حدیث النزول“ میں لکھا ہے کہ ”سورة الحديد“ اور ”سورة المجادلة“ میں وارد جگہ ”معیت“ کی علمائے سلف کے نزدیک تفسیر یہ ہے کہ ”اللہ اپنے بندوں کے ساتھ اپنے علم کے ذریعہ ہے۔“

امام ابن عبدالبر اور دیگر ائمہ صحابہ کرام اور تابعین کا اس پر اجماع نقل کیا ہے۔ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما، ضحاک، مقاتل بن حیان، سفیان ثوری اور احمد بن حنبل وغیرہم سے یہی تفسیر مروی ہے۔ ابن ابی حاتم نے سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے اس آیت کی تفسیر میں روایت کی ہے کہ اللہ عرش پر ہے، اور اس کا علم ان کے ساتھ ہے۔ (تیسیر الرحمن، ص: ۱۵۳۵)

(33) کلام الہی:

اللہ رب العزت کی صفات میں سے ایک صفت ”کلام کرنا“ بھی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے جب چاہا کلام کیا، جب چاہتا ہے کلام کرتا ہے۔

یاد رہے کہ انبیاء و رسل علیہم السلام کے درمیان گونا گوں فضائل و صفات میں تفاوت رہا ہے، بعض انبیاء کو اللہ نے کوئی ایسی فضیلت دی جو دوسروں کو نہیں ملی۔ سیدنا ابراہیم علیہ السلام کو اللہ

نے اپنا خلیل بنایا اور سیدنا موسیٰ علیہ السلام سے بغیر کسی واسطے کے کلام کیا۔ ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

﴿تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَ رَفَعَ

بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ﴾ (البقرة: ۲۵۳)

”ہم نے ان رسولوں میں سے بعض کو بعض پر فضیلت دی ہے، ان میں سے بعض

وہ ہیں جن سے اللہ نے بات کی اور بعض کو اللہ نے کئی گنا اور اونچا مقام دیا۔“

دوسرے مقام پر ارشاد فرمایا:

﴿وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا﴾ (النساء: ۱۶۴)

”اور اللہ نے موسیٰ سے بول کر بات کی۔“

ڈاکٹر لقمان سلفی حفظہ اللہ رقمطراز ہیں: ”اس آیت کے آخر میں اللہ نے فرمایا ہے کہ ”اللہ

نے موسیٰ سے بات کی“، یعنی اللہ تعالیٰ بغیر کسی واسطہ کے موسیٰ علیہ السلام سے مخاطب ہوا۔ اور یہ اللہ کی طرف سے موسیٰ علیہ السلام کی انتہائے تکریم تھی۔

اللہ تعالیٰ نے اسی آیت میں اپنے لیے صفت ”کلام“ کو ثابت کیا ہے۔ جمہور سلف اور

اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ قرآن اللہ کا کلام ہے، جسے اُس نے اپنے رسول محمد ﷺ پر نازل کیا، اور یہ غیر مخلوق ہے، اس لیے کہ یہ اللہ کی صفت ہے۔

معتزلہ اور بعض دوسرے گمراہ فرقوں نے اس کا انکار کیا ہے، انہی معتزلہ میں سے ایک

آدمی کے بارے میں ابوبکر بن عیاش کو معلوم ہوا کہ اس نے اس آیت میں تحریف کر کے ﴿وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا﴾ پڑھا، یعنی کلمہ ”اللہ“ کو مفعول بنا دیا، تاکہ معنی یوں ہو جائے

کہ ”موسیٰ نے اللہ سے بات کی“، یعنی اللہ نے موسیٰ سے بات نہیں کی، تو ابوبکر نے کہا کہ ”

اس طرح ایک کافر ہی پڑھے گا“ اسی لیے علماء نے کہا ہے کہ یہ لوگ قرآن کی آیت: ﴿وَلَمَّا

جَاءَ مُوسَىٰ لِبِيعَاتِنَا وَ كَلَّمَهُ رَبُّهُ﴾ (الاعراف: ۱۴۳) کو کیا کریں گے۔ اس میں تو فاعل

”رب“ ہے، اور یہاں تحریف کی کوئی گنجائش نہیں ہے۔“ (تیسیر الرحمن، ص: ۳۱۵، ۳۱۶)

اور سورۃ الاعراف میں ارشاد فرمایا:

﴿يُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي ۖ وَبِكَلَامِي ۖ فَخُذْ مَا آتَيْنَاكَ وَ
كُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ﴾ ﴿١٤٤﴾ (الأعراف: ١٤٤)

”اے موسیٰ! میں نے آپ کو اپنی پیغامبری اور ہم کلام ہونے کے لیے لوگوں کے مقابلہ میں چن لیا ہے۔ پس جو میں نے آپ کو دیا ہے، اسے لے لیجیے اور شکر ادا کرتے رہیے۔“

گویا کہ اللہ تعالیٰ نے سیدنا موسیٰ علیہ السلام کی تکریم کے طور پر انھیں خوشخبری دی کہ میں نے اپنا رسول بنانے اور آپ سے ہم کلام ہونے کے لیے آپ کو اوروں کے مقابلہ میں چن لیا ہے۔ اس لیے اسی نعمت کو قبول کیجیے اور اللہ کا شکر ادا کیجیے۔

اسی طرح احادیث مبارکہ سے یہ بات ثابت ہوتی ہے کہ اللہ تعالیٰ کلام فرماتا ہے۔ جیسا کہ نبی مکرم علیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ اللہ تعالیٰ روزِ قیامت سیدنا آدم علیہ السلام کو آواز دے گا:

((إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكَ أَنْ تُخْرِجَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ بَعْثًا إِلَى النَّارِ .)) ❶

”اللہ تجھے حکم کرتا ہے کہ تو اپنی اولاد سے جہنم کے لیے ایک گروہ نکال دے۔“

مذکورہ بالا حدیث شریف سے روزِ روشن کی طرح عیاں ہو گیا کہ اللہ تعالیٰ کلام کرنے پر قادر ہے۔ اس نے زمانہ ماضی میں کلام کیا بھی ہے۔ اور کرتا ہے اور آئندہ مستقبل میں بھی کرے گا۔ اور وہ کلام حروف، الفاظ اور سنی جانے والی آواز پر مبنی ہوتی ہے۔ امام ابن قیم رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((وَاللَّهُ رَبِّي لَمْ يَزَلْ مُتَكَلِّمًا وَكَلَامُهُ لَمَسْمُوعٌ بِالْأَذَانِ .)) ❷

”میرا رب ہمیشہ سے کلام کرتا رہا ہے۔ اور اس کا کلام کانوں سے سنا جاتا ہے۔“

(34) علم:

اللہ تعالیٰ کا علم تمام کائنات کو محیط ہے، کسی بھی مخلوق کا ماضی، حال اور مستقبل اس

کے وسیع علم سے خارج نہیں۔ جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے فرشتوں کے بارے خبر دیتے ہوئے ارشاد فرمایا:

﴿وَمَا تَنْزِيلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۖ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾ (مریم: ۶۴)

”یعنی ہم بغیر آپ کے رب کے حکم کے اتر نہیں سکتے۔ ہمارے آگے پیچھے اور ان کے درمیان کی کل چیزیں اس کی ملکیت میں ہیں، اور آپ کا پروردگار بھولنے والا نہیں۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ﴾

(البقرة: ۲۵۵)

”وہ تمام وہ کچھ جانتا ہے جو لوگوں کے سامنے اور اُن کے پیچھے ہے، اور لوگ اُس کے علم میں سے کسی بھی چیز کا احاطہ نہیں کرتے ہیں۔“ کوئی بھی شخص اتنا ہی علم رکھتا ہے، جتنا اللہ نے اُسے دیا ہے، جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے فرشتوں کی زبان میں فرمایا:

﴿سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا﴾ (البقرة: ۳۲)

”یعنی اے اللہ! تیری ذات پاک اور بے عیب ہے، ہمارے پاس کوئی علم نہیں، سوائے اسی علم کے جو تو نے دیا ہے۔“

اللہ تعالیٰ کا علم آسمان اور زمین کو گھیرے ہوئے ہے، جیسا کہ اللہ رب العزت نے فرشتوں کی دُعا کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا:

﴿رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا﴾ (غافر: ۷)

”اے ہمارے رب! تیری رحمت اور تیرا علم ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے۔“ آسمانوں اور زمین کی کوئی چیز اس کے علم سے مخفی نہیں۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ﴾ (آل عمران : ۵)

”اللہ سے آسمانوں اور زمین میں کوئی چیز مخفی نہیں ہے۔“

یہاں تک بھی فرمادیا کہ:

﴿قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَاتِيَنَّكُمْ ۖ عَلَيْهِ الْغَيْبُ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي

السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ﴾

(سبا : ۳)

”آپ کہہ دیجیے کہ ہاں، میرے رب کی قسم! جو غیب کی باتیں جانتا ہے وہ یقیناً تم پر آ کر رہے گی، اُس سے ایک ذرہ کے برابر بھی کوئی چیز آسمانوں اور زمین میں چھپی ہوئی نہیں ہے، اور نہ اسی سے چھوٹی اور نہ بڑی، ہر چیز اور ہر بات ایک روشن کتاب میں لکھی ہوئی ہے۔“

اس علام الغیب سے آسمانوں اور زمین کے درمیان ایک ذرہ کے برابر بھی کوئی چیز مخفی نہیں ہے، ہر چیز اور ہر بات اس کے علم میں ہے اور لوح محفوظ میں درج ہے۔ انسانوں کی ہڈیاں اور ان کے جسموں کے ٹکڑے، جہاں بھی ہوں اور جتنے بھی بکھر گئے ہوں، اسے ایک ایک ذرے کی خبر ہے، اور روز قیامت ایک لفظ ”کُنْ“ کے ذریعے ان سب کو آن واحد میں جمع کر کے اُسی طرح زندہ کر دے گا، جس طرح اس نے انھیں پہلی بار پیدا کیا تھا۔

(35) مشیت:

اللہ تعالیٰ جو چاہتا ہے سو کرتا ہے، اس کے ارادہ و مشیت میں کوئی رکاوٹ نہیں ڈال سکتا اور نہ ہی کسی ایک کا دخل ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿خُلِدَ بَيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ

لِّمَا يُرِيدُ﴾ (ہود : ۱۰۷)

”جب تک آسمان و زمین رہے گی، اسی میں ہمیشہ رہیں گے، مگر یہ کہ آپ کا رب (اپنی مرضی و مشیت سے کسی کو نکال دے) بے شک آپ کا رب جو چاہتا

ہے کرتا ہے۔“

(36) قدرت و اختیار:

اللہ تعالیٰ نے سات آسمان، سات زمینیں اور اُن کے درمیان کی تمام مخلوقات کو پیدا کیا، دینی احکام و شرائع نازل فرمائے۔ اور پوری کائنات کو چلانے کے لیے ضابطے اور قوانین قائم کیے، اور ان تمام کا مقصد یہ ہے کہ اس کے بندے اُسے پہچانیں، اس کی معرفت حاصل کریں، اور اس بات کا یقین کر لیں کہ اس کا علم اور اس کی عظیم قدرت تمام چیزوں کا احاطہ کیے ہوئی ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَتْلُوَ عَلَيْكُمْ آيَاتِهِ قَدِيرٌ ۚ وَ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝﴾

(الطلاق: ۱۲)

”وہ اللہ ہے جس نے سات آسمان پیدا کیے ہیں، اور انہی کی مانند زمین۔ ان آسمانوں اور زمینوں کے درمیان اللہ کا حکم اُترتا رہتا ہے، تاکہ تم جان لو کہ اللہ ہر چیز پر قادر ہے، اور یہ کہ بے شک اللہ اپنے علم کے ذریعہ ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے۔“

کفار مکہ کا یہ عقیدہ و نظریہ تھا کہ وہ مرکزِ گل سڑ جائیں گے، ان کا وجود ہمیشہ کے لیے ختم ہو جائے گا، اور اللہ تعالیٰ ان کی ہڈیاں زمین سے نکال کر انہیں جمع کر کے دوبارہ زندہ کرنے پر قادر نہیں۔ تو اللہ تعالیٰ نے ان کی تردید میں یہ آیات نازل فرمائیں:

﴿أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَكُنَّ نَجْعًا عِظَامُهُ ۝ بَلَىٰ قَدِيرِينَ ۚ عَلَيَّ أَن تُسْوَىٰ بَنَاتُهُ ۝﴾ (القيامة: ۳-۴)

”کیا انسان یہ سمجھتا ہے کہ ہم اُس کی ہڈیوں کو جمع نہیں کریں گے۔ ہاں! ہم تو اس پر قادر ہیں کہ اس کی انگلیوں کے پوروں کو درست کریں۔“

کفار مکہ کا یہ بھی نظریہ و عقیدہ تھا کہ جن بتوں کی وہ عبادت کرتے ہیں اور پکارتے ہیں

وہ نفع و نقصان کا اختیار رکھتے ہیں تو اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کی زبانی اس عقیدہ کی نفی فرمائی کہ وہ پتھر کے بے جان صنم ہیں، آسمانوں اور زمین میں پائی جانے والی چیزوں میں سے ایک ذرہ کے بھی مالک نہیں ہیں، نہ ہی ان کی تخلیق و ملکیت میں وہ اللہ کے کسی بھی حیثیت سے شریک ہیں، اور نہ کارہائے کائنات کے چلانے میں اللہ رب العزت کو ان کی مدد کی ضرورت ہے۔

﴿قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ دَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۚ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِنَّ مِنْ شَرِكٍ ۚ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيرٍ ۝۱﴾

(سبا: ۲۲)

”اے میرے نبی! آپ مشرکوں سے کہیے کہ جنہیں تم اللہ کے سوا معبود بنا بیٹھے ہو انھیں پکارو تو سہی، وہ تو آسمانوں اور زمین میں ایک ذرہ کے برابر چیز کے بھی مالک نہیں ہیں، اور نہ ان دونوں کی تخلیق میں ان کا کوئی حصہ ہے، اور نہ ان لوگوں میں سے کوئی اس کا مددگار ہے۔“

نفع اور نقصان کے مالک انبیاء علیہم السلام بھی نہیں ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کی زبانی ارشاد فرمایا:

﴿قُلِ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝۱﴾ (الحج: ۲۱)

”آپ کہہ دیجیے! میں تمہارے لیے کسی نقصان یا نفع کا مالک نہیں ہوں۔“
دوسروں کے نفع و نقصان کے مالک و مختار تو کیا، وہ تو اپنے بھی نفع و ضرر پر اختیار اور قدرت نہیں رکھتے ہیں:

﴿قُلِ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۝۱﴾ (الأعراف: ۱۸۸)

”آپ کہہ دیجیے کہ میں تو اپنے نفع و نقصان کا مالک نہیں ہوں، سوائے اس کے جو اللہ چاہے۔“

ہدایت کی توفیق دینا بھی اللہ تعالیٰ کے اختیار میں ہے، کسی اور کے نہیں۔ ابوطالب نے

رسول مکرم ﷺ کا بڑا ساتھ دیا، لیکن ایمان کی عظیم نعمت سے محروم رہا اور حالت کفر و شرک میں فوت ہو گیا، جس پر نبی کریم ﷺ کو بڑا سخت صدمہ پہنچا۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ﴾ (القصص: ۵۶)

”آپ جسے چاہیں ہدایت نہیں دے سکتے ہیں، مگر اللہ جسے چاہتا ہے ہدایت دیتا

ہے، اور وہ ہدایت قبول کرنے والوں کو خوب جانتا ہے۔“

(37) وَجْهَهُ (اللہ تعالیٰ کا چہرہ اقدس):

اللہ تعالیٰ کے لیے چہرہ کی صفت ثابت ہے۔ جس کا ذکر قرآن مجید میں متعدد مقامات

پر موجود ہے۔ چند ایک ملاحظہ ہوں:

﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ﴾ (القصص: ۸۸)

”اس کے چہرہ کے سوا ہر چیز فنا ہو جائے گی۔“

دوسرے مقام پر فرمایا:

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۖ وَيَبْقَىٰ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۚ﴾

(الرحمن: ۲۶-۲۷)

”ہر چیز جو زمین پر ہے ختم ہو جانے والی ہے۔ اور آپ کے رب کا چہرہ باقی رہ

جائے گا، جو جلال اور عزت والا ہے۔“

امام بخاری رحمہ اللہ نے اپنی صحیح ”کتاب التوحید والرد علی الجہمیۃ

وغیرہم“ میں باب قائم کیا ہے: ((بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا

وَجْهَهُ﴾ (القصص: ۸۸))..... ”باب سورہ قصص میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد ”اللہ کے چہرہ

کے سوا تمام چیزیں مٹ جانے والی ہیں۔“

علامہ داؤد دراز دہلوی رحمہ اللہ رقمطراز ہیں: ”غرض امام بخاری رحمہ اللہ کی یہ ہے کہ منہ (چہرہ)

کا اطلاق پروردگار پر قرآن و حدیث میں آ رہا ہے اور گمراہ جہمیہ نے اس کا انکار کیا ہے۔

انھوں نے ”منہ“ سے ذات، اور ”ید“ سے قدرت کے ساتھ تاویل کی ہے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ نے اس کا رد کیا ہے۔^①

اور اس کے تحت سیدنا جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے مروی حدیث لائے ہیں کہ ”جب یہ قرآن کریم کی آیت نازل ہوئی:

﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ﴾ (الأنعام: ۶۵)

”آپ کہہ دیجیے کہ وہ قادر ہے اس پر کہ تم پر تمہارے اوپر سے عذاب نازل کرے۔“

تو نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ .))

”میں تیرے چہرہ کی پناہ مانگتا ہوں۔“

پھر آیت کے یہ الفاظ نازل ہوئے:

﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ (الأنعام: ۶۵)

”یا تمہارے پاؤں کے نیچے سے عذاب آجائے۔“

تو آنحضرت ﷺ نے پھر یہ دُعا کی کہ:

((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ .))

”میں تیرے چہرہ کی پناہ مانگتا ہوں۔“

پھر یہ آیت نازل ہوئی:

﴿أَوْ يُلْهَيْكُمْ شِيعًا﴾ (الأنعام: ۶۵)

”یا تمہیں فرقہ بندی میں مبتلا کر دے۔“ (کہ یہ بھی عذاب کی قسم ہے۔)

تو آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ: یہ آسان ہے بہ نسبت اگلے عذابوں کے۔^②

① شرح صحیح بخاری از داؤد راز دہلوی: ۵۳۹ / ۸.

② صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم: ۷۴۰۶.

(38) عین و بصیر:

جب عذاب کا آنا یقینی ہو گیا تو اللہ تعالیٰ نے سیدنا نوح علیہ السلام کو کشتی بنانے کا حکم صادر فرمایا اور اس کی تعلیم دی، تاکہ وہ ان کے ماننے والے مسلمان طوفان سے محفوظ رہ سکیں، اور کفار کی نجات اور جان خلاصی کے لیے سفارش کرنے سے روک دیا، کیونکہ ان کے متعلق اللہ رب العزت کا فیصلہ ہو چکا تھا کہ انھیں طوفان کی نذر ہو جانا ہے۔

﴿وَأَصْنَعُ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيُنَا وَلَا تَخَافُنِي فِي الدِّينِ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ﴾ (ہود: ۳۷)

”اور آپ ہماری نگرانی میں ہماری وحی کے مطابق کشتی بنائیے، اور ظالموں کی نجات کے سلسلے میں ہم سے بات نہ کیجیے وہ بلاشبہ ڈبو دیئے جائیں گے۔“

صاحب ”فتح البیان“ رقمطراز ہیں کہ ”أَعْيُنَ“ عین کی جمع تعظیم اور مبالغہ کے لیے استعمال کیا گیا ہے، نہ کہ کثرت کے لیے۔ اور عین یعنی آنکھ بھی اللہ کی صفات میں سے ایک صفت ہے، جس کی کیفیت ہم نہیں جانتے ہیں، لیکن اس پر ایمان لانا واجب ہے۔“ اتنی سیدنا عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما نے ”بِأَعْيُنِنَا“ کی تفسیر ”بنظر منا“ کی ہے۔^①

مزید دیکھیں کہ سورۃ الطور، آیت نمبر: ۴۸، سورۃ القمر، آیت نمبر: ۱۳-۱۴، سورۃ طہ، آیت نمبر: ۳۹ اور المؤمنون، آیت نمبر: ۲۷۔

تمام مخلوقات اللہ تعالیٰ کی نگاہ میں ہے، کوئی بھی چیز اس کی نظروں سے اوجھل اور مخفی نہیں۔ وہ ہر چیز کو خواہ وہ قریب ہو یا دور دیکھ رہا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ﴾ (آل عمران: ۵)

”اللہ سے آسمان اور زمین میں کوئی چیز مخفی نہیں۔“

مزید فرمایا:

﴿وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا تَعْمَلُونَ﴾ (الحجرات: ۱۸)

① تفسیر ابن عباس، ص: ۲۳۵۔

”اور اللہ، جو تم عمل کرتے ہو انہیں دیکھتا ہے۔“

(39) سمع (کان):

”سمع“ اللہ تعالیٰ کی صفت ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ (آل عمران: ۳۴)

”اور اللہ خوب سننے والا، بڑا جاننے والا ہے۔“

(40) یدان (دو ہاتھ):

اللہ تعالیٰ کے دو ہاتھ ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا:

﴿بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ﴾ (المائدہ: ۶۴)

”بلکہ اس کے تو دونوں ہاتھ کھلے ہیں، وہ خرچ کرتا ہے جیسے چاہتا ہے۔“

اللہ تعالیٰ اپنے نبی سے فرماتا ہے کہ کہہ دیجیے:

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعْزِزُ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

(آل عمران: ۲۶)

”اے اللہ اے مالک بادشاہی کے! تو ہی دیتا ہے بادشاہی جس کو چاہے، اور چھین لیتا ہے بادشاہی اس سے جس سے چاہے، اور تو ہی عزت دیتا ہے جس کو چاہے، اور تو ہی ذلت دیتا ہے جس کو چاہے، تیرے ہی ہاتھ میں سب بھلائی، یقیناً تو اوپر ہر چیز کے قادر ہے۔“

سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما تلبیہ میں یہ الفاظ زائد کیا کرتے تھے:

((لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ ، وَسَعْدَيْكَ ، وَالْخَيْرُ بِيَدَيْكَ)) ①

”اے اللہ! میں حاضر ہوں، اے اللہ! میں حاضر۔ ہر قسم کی بھلائی تیرے ہاتھوں

میں ہے.....“

① صحیح مسلم، کتاب الحج، رقم: ۲۸۱۱.

نوٹ:..... اللہ تعالیٰ کے دونوں ہاتھ دائیں ہیں، جیسا کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا: ((وَكَلَّمَا يَدَيْهِ يَمِينٌ))..... ”اور اس کے دونوں ہاتھ دائیں ہیں۔“
(41) کف (تھیلی):

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾ (الزمر: ۶۷)

”اور نہیں قدر کی انھوں نے اللہ کی جیسا کہ حق ہے، اس کی قدر کرنے کا، اور زمین سب اس کی مٹھی میں ہوگی دن قیامت کے، اور آسمان لپٹے ہوں گے اس کے دائیں ہتھیلی میں، وہ پاک ہے اور بلندی سے جو وہ شریک ٹھہراتے ہیں۔“

عبدالرحمن سعدی رحمہ اللہ رقمطراز ہیں: ”اللہ تبارک وتعالیٰ فرماتا ہے: کہ ان مشرکین نے اپنے رب کی قدر اور تعظیم نہیں کی جیسا کہ اس کی قدر و تعظیم کا حق ہے بلکہ اس کے برعکس انھوں نے ایسے افعال سرانجام دیے جو اس کی تعظیم سے متناقض ہیں، مثلاً ایسی ہستیوں کو اللہ تعالیٰ کا شریک ٹھہرانا جو اپنے اوصاف و افعال میں ناقص ہیں۔ ان کے اوصاف ہر لحاظ سے ناقص ہیں اور ان کے افعال ایسے ہیں کہ وہ کسی کو نفع دے سکتی ہیں نہ نقصان، وہ کسی کو عطا کر سکتی ہیں نہ محروم، وہ کسی کا کوئی اختیار نہیں رکھتیں۔ پس انھوں نے اس ناقص مخلوق کو خالق کائنات ربّ عظیم کے برابر ٹھہرا دیا جس کی عظمت باہرہ اور قدرت قاہرہ یہ ہے کہ قیامت کے روز، تمام رحمن کی مٹھی میں ہوگی اور ساتوں آسمان اپنی وسعتوں اور عظمتوں کے باوجود اس کے دائیں ہاتھ پر لپٹے ہوئے ہوں گے۔ اس شخص نے اللہ کی تعظیم نہیں کی، جیسا کہ اس کی تعظیم کرنے کا حق ہے، جس نے دوسری ہستیوں کو اس کے مساوی ٹھہرا دیا۔ جس نے یہ کام کیا اس سے بھی بڑھ کر کوئی ظالم ہے؟ ﴿سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾..... ”اللہ تعالیٰ ان کے شرک سے منزہ، پاک اور بلند ہے۔“ ❶

اور رسول اللہ ﷺ کا ارشاد گرامی ہے:

((مَا تَصَدَّقَ أَحَدٌ بِصَدَقَةٍ مِنْ طَيِّبٍ، وَلَا يَقْبَلُ اللَّهُ إِلَّا الطَّيِّبَ، إِلَّا أَخَذَهَا الرَّحْمَنُ بِيَمِينِهِ— وَإِنْ كَانَتْ تَمَرَةً— فَتَرَبُّوا فِي كَفِّ الرَّحْمَنِ حَتَّى تَكُونَ أَعْظَمَ مِنَ الْجَبَلِ.....))^①

”جب کوئی شخص اپنے پاکیزہ مال سے صدقہ کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ پاکیزہ مال کو ہی قبول کرتا ہے مگر اللہ تعالیٰ اس کو دائیں ہاتھ میں پکڑتا ہے، اگر وہ کھجور ہو تو وہ اللہ کی ہتھیلی میں بڑھتی رہتی ہے، حتیٰ کہ وہ پہاڑ سے بھی بڑی ہو جاتی ہے.....“

(42) ساق (پنڈلی):

اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

﴿يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ﴾^②

(القلم: ٤٢)

”جس دن کھولا جائے گا پنڈلی سے اور بلائے جائیں گے وہ سجدے کی طرف تو نہیں استطاعت رکھیں گے وہ۔“

شیخ عبدالرحمن سعدی رحمہ اللہ اس آیت کریمہ کے تحت رقمطراز ہیں: ”یعنی جب قیامت کا دن ہوگا اور ایسے زلزلے اور ہولناکیاں ظاہر ہوں گی جو وہم و گمان میں بھی نہیں آ سکتیں، باری تعالیٰ اپنے بندوں کے درمیان فیصلے کرنے اور ان کو جزا و سزا دینے کے لیے تشریف لائے گا۔ پس وہ اپنی مکرم پنڈلی کو ظاہر کرے گا، جس سے کوئی چیز مشابہت نہیں رکھتی، لوگ اللہ تعالیٰ کا جلال و عظمت دیکھیں گے جس کی تعبیر ممکن نہیں۔ یہی وہ وقت ہوگا جب ان کو سجدے کے لیے کہا جائے گا، مومن اللہ تعالیٰ کے سامنے سجدہ ریز ہو جائیں گے جو (دنیا میں) اپنی مرضی اور اختیار سے سجدہ کیا کرتے تھے۔“^②

① صحیح مسلم، کتاب الزکاة، رقم: ۲۳۴۲۔

② تفسیر سعدی: ۲۸۲۴ / ۳۔

حافظ صلاح الدین یوسف حفظہ اللہ لکھتے ہیں: ”بعض نے ”کشف ساق“ سے مراد قیامت کے شہداء اور اس کی ہولناکیاں لی ہیں، لیکن ایک صحیح حدیث میں اس کی تفسیر اسی طرح بیان ہوئی ہے کہ قیامت والے دن اللہ تعالیٰ اپنی پنڈلی کھولے گا، (جس طرح کہ اس کی شان کے لائق ہے) تو ہر مؤمن مرد اور عورت اس کے سامنے سجدہ ریز ہو جائیں گے، البتہ وہ لوگ باقی رہ جائیں گے جو دکھلاوے اور شہرت کے لیے سجدے کرتے تھے، وہ سجدہ کرنا چاہیں گے لیکن ان کی ریڑھ کی ہڈی کے منکے، تختے کی طرح ایک ہڈی بن جائیں گے، جس کی وجہ سے ان کے لیے جھکنا ناممکن ہو جائے گا۔“ ① اللہ تعالیٰ کی یہ پنڈلی کس طرح کی ہوگی؟ اسے وہ کس طرح کھولے گا؟ اس کی کیفیت ہم جان سکتے ہیں نہ بیان کر سکتے ہیں۔ اس لیے جس طرح ہم بلا کیف و بلا تشبیہ اس کی آنکھوں، کان، ہاتھ وغیرہ پر ایمان رکھتے ہیں، اسی طرح پنڈلی کا ذکر بھی قرآن اور حدیث میں ہے، اس پر بلا کیف ایمان رکھنا ضروری ہے۔ یہی سلف اور محدثین کا مسلک ہے۔“ ②

(43) رجل (ٹانگ):

سیدنا انس رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا:
 ((يُلْقَى فِي النَّارِ، وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ
 فَتَقُولُ: قَطُّ قَطُّ.)) ③

”جہنم میں دوزخیوں کو ڈالا جائے گا اور وہ کہے گی کہ کچھ اور بھی ہے؟ یہاں تک کہ اللہ رب العزت اپنا قدم اس پر رکھے گا اور وہ کہے گی کہ بس بس۔“
 علامہ داؤد راز دہلوی رحمہ اللہ لکھتے ہیں: ”قسطلانی نے اس مقام پر پچھلے متکلمین کی پیروی سے تاویل کی ہے اور کہا ہے قدم رکھنے سے اس کا ذلیل کرنا مراد ہے یا کسی مخلوق کا قدم مراد

① صحیح بخاری، تفسیر سورة ن والقلم.

② تفسیر احسن البیان، ص: ۱۳۳۲.

③ صحیح بخاری، کتاب التعبير، رقم: ۴۸۴۸.

ہے۔ اہلحدیث اس قسم کی تاویلیں نہیں کرتے بلکہ ”قدم“ اور ”رجل“ کو اسی طرح تسلیم کرتے ہیں جیسے ”سمع“ اور ”بصر“ اور ”عین“ اور ”وجہ“ وغیرہ کو اور ابن فورک نے لاعلمی سے ”رجل“ کا انکار کیا، اور کہا: ”رجل“ کا لفظ ثابت نہیں ہے، حالانکہ صحیحین کی روایت میں ”رجل“ کا لفظ بھی موجود ہے۔ ان حدیثوں سے جہموں کی جان نکلتی ہے اور اہلحدیث کو حیات تازہ حاصل ہوتی ہے۔

امام محی السنہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

((الْقَدَمُ وَالرَّجْلُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ مِنْ صِفَاتِ اللَّهِ تَعَالَى فَالْإِيْمَانُ بِهَا فَرَضٌ وَالْإِمْتِنَاعُ عَنِ الْخَوْضِ فِيهَا وَاجِبٌ فَالْمُهْتَدِي مَنْ سَلَكَ فِيهِمَا طَرِيقَ التَّسْلِيمِ وَإِنَّمَا نَصُّ فِيهَا زَائِعٌ وَالْمُنْكَرُ مُعْطَلٌ وَالْمُكَيِّفُ مُشَبَّهٌ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ.))

”قدم اور رجل اس حدیث میں اللہ تعالیٰ کی صفات بیان ہوئی ہیں۔ پس اُن کے ساتھ ایمان لانا فرض ہے اور اُن میں فضول بحث ممنوع ہے۔ پس وہ ہدایت یافتہ ہے جو اسماء الصفات کے منج میں تسلیم کے راستے پر چلے۔ اُن میں نصوص واضح ہیں لہذا ان کا منکر معطلہ میں سے اور کیفیت بیان کرنے والا مشبہ میں سے ہوگا کیونکہ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ. (یعنی اُس کے ہم مثل کوئی نہیں)“ ①

اسمائے حسنیٰ اور صفاتِ علیا کے بارے بقدر فہم و استطاعت اولو متناثرہ و ازہار منتشرہ کو جمع کر دیا ہے۔ اللہ تعالیٰ کے حضور سر بسجود ہو کر دعا گو ہیں کہ وہ عملی حیثیت سے ہمیں اسماءِ حسنیٰ کے انوار و معارف سے فیض یاب ہونے کی توفیق ارزانی فرمائے۔

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ .



مطبوعات ادارہ

- اللہ اور اس کے رسول ﷺ سے محبت کے تقاضے
- ایمان اور عمل صالح
- ہم پر نبی کریم ﷺ کے حقوق
- سنت نبوی ﷺ اور ہم
- مسنون وظائف واذکار اور شرعی طریقہ علاج
- شان صحابہ جنہمہ زبان مصطفیٰ ﷺ
- خوف الہی سے بچنے والے آنسو
- اولیاء اللہ کی پہچان
- تو بہ مگر کیسے؟ حقیقت، فضائل، شروط اور طریقہ کار
- اسلام کا نظام حقوق و فرائض
- شرکے چور و رازے
- اسلام کا نظام اخلاق و ادب
- نماز مصطفیٰ ﷺ
- خواتین اسلام کے لیے نبی رحمت ﷺ کی
- 500 نصیحتیں
- منہج سلف صالحین
- شان مصطفیٰ ﷺ
- ریاکاری کی ہلاکتیں
- پیارے رسول ﷺ کی پیاری نماز تراویح
- محبت، کیوں، کس سے اور کیسے
- علم اور تقویٰ
- کلمہ طیبہ (لا الہ الا اللہ) سے محبت اور اس کے تقاضے
- صحیح فضائل اعمال
- پیارے رسول پیارے اذکار (مع پنج سورۃ)
- اللہ عزوجل کی پہچان
- تقلید کی حقیقت، ائمہ اربعہ کی نظر میں
- عقیدہ اہل سنت والجماعت
- اسمائے الہی



انصار السنہ پبلیکیشنز لاہور

اسلامی اکادمی الفضل مارکیٹ، 17- اردو بازار لاہور فون: 042-37357587

www.ircpk.com